we love

।। श्री गणेशाय नमः ।।

जनता

सचित्र विशाल

हस्त सामुद्रिक शास्त्र

★

(हस्त तथा शरीर के अन्य भागों से [illegible]बन्धित ज्योतिष शास्त्र की प्रमाणि[illegible] [illegible]स्तक)

★

लेखक :

श्री बसन्त लाल व्यास

★

प्रकाशक : दूरभाष : २६५५१६

जनता प्रकाशन (पंजि०)

खारी बावली, दिल्ली-६

तृतीय [illegible]रण २२००] जनवरी, १९७६ [मूल[illegible]

○ प्रकाशक :

जनता प्रकाशन (पंजिकृत)

खारी बावली, दिल्ली-११०००६

○ लेखक :

श्री बसन्त लाल व्यास

○ मूल्य रुपये

○ © सर्वाधिकार प्रकाशक द्वारा सुरक्षित ।

○ तृतीय संस्करण २२००

○ जनवरी, १९७६

● मुद्रक : वेद प्रिंटिंग एजेन्सी, ११३६, कूचा हरजसमल, बाजार सीताराम द्वारा यादव प्रेस, दिल्ली-६

सामुद्रिक शास्त्र

लेखक :
बसन्तलाल व्यास

दो शब्द

कनिष्ठा देशिन्यंतुष्ठ, मूलान्यंग्र करस्य च।
प्रजापति पितृ ब्रह्म देव तीर्थान्यनुक्रमात।

भारतीय विद्वानों का मत है कि हाथ में न केवल ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि देवताओं का ही निवास है वरन् समस्त तीर्थों का वास भी हाथ में है। इस प्रकार हाथ की रेखाओं चिन्हों तथा पर्वतों का बहुत अधिक महत्व है। यही कारण है कि इसे सामुद्रिक विज्ञान कह कर पुकारते हैं।

इसका तात्पर्य यह नहीं है कि यह विज्ञान अपने देश में ही माना जाता है वरन् यह संसार के समस्त देशों में प्रचलित है। कारण भी स्पष्ट है कि ये हस्त रेखायें तथा अन्य चिन्ह तो संसार भर के सभी लोगों के हाथों में होते हैं। उन पर स्वरूप, रंग, आकृति, धर्म, देश, भूगोल आदि बातों का कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

भारत इस विज्ञान में संसार के अन्य समस्त देशों से आगे रहा है। चाहे भारत अन्य बातों में संसार के अन्य देशों से पीछे हो किन्तु ज्योतिष-विज्ञान में वह आंज भी संसार के समस्त देशों से आगे है। यदि हम यह कहें कि संसार के अन्य देशों का ज्ञान इस क्षेत्र में, भारत के ज्ञान के समक्ष नगण्य ही है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति नहीं होगी। किन्तु अत्यधिक खेद का विषय तो यह है कि आजकल दिन प्रति-दिन इस विज्ञान में भारतीयों की रुचि भी कम होती जा रही है। इसके कई एक कारण हो सकते हैं। यदि हम इन कारणों का विवेचन करें तो अनेक बातें हमारे समक्ष आसानी से स्पष्ट हो सकती हैं। यदि हम इन कारणों की व्याख्या करके उन्हें दूर करने का प्रयत्न करें तो

कोई कारण नहीं कि फिर से यह विज्ञान भारत में उन्नति करने न लग जाये। अतः हम संक्षेप में इन कारणों का अवलोकन करते हैं :—

सर्वप्रथम कारण तो यह है कि भारत में इस विद्या के समुचित शिक्षण का प्रबंध नहीं है। कोई भी विद्या तब तक कैसे विकसित हो सकती है जब तक कि उसकी शिक्षा-दीक्षा का प्रबन्ध न हो। प्राचीन काल में फिर भी थोड़ी बहुत शिक्षा आश्रमों में दी जाती थी। आज-कल कोई विद्यालय या कालेज इस विद्या की शिक्षा नहीं देता है। सरकार को चाहिए कि इस विद्या को भी अन्य अनेक विद्याओं के साथ पाठ्यक्रम में स्थान दें। ऐसा करने से फिर उन नवयुवकों पर इस विद्या का प्रभाव होकर उनमें रुचि जागृत होगी जो कि आजकल विदेशी सभ्यता और संस्कृति के प्रभाव में आकर इसे हीन दृष्टि से देखते हैं।

दूसरा प्रमुख कारण हमारे नीम हकीम ज्योतिषी, पण्डित तथा भाँड़र हैं जो कि फुट-पाथ पर बैठकर लोगों की जेबों से पैसा निकालना भी जानते हैं या गलत-सलत जन्म कुण्ड़लियां बनाकर और उल्टा-सीधा भविष्य बताकर लोगों को भारी हानी का शिकार बना देते हैं या थोड़ा भूत बताकर भविष्य की अटकलें लगाना या तिथियां बताना ही उन्होंने अपनी जीविका का साधन बना रखा है। इन लोगों के कारण जनता का विश्वास इस विज्ञान से उठ गया है। सरकार का कर्त्तव्य है कि इस विद्या तथा विज्ञान के प्रचार और प्रसार के लिए कुछ साधनों को प्रयोग में लावे ताकि जनता का विश्वास फिर से इस विज्ञान में जम सके। सरकार को इस नीम हकीम ज्योतिषियों पर भी कुछ रोक लगानी चाहिए।

एक तीसरा प्रमुख कारण इस विज्ञान में उपयुक्त पुस्तकों का सर्वथा अभाव है। यदि कोई इस विज्ञान का क्रमानुसार तथा पूरा अध्ययन करना भी चाहे तो उसे ऐसी पुस्तकें नहीं मिलती हैं जो कि उसकी इस जिज्ञासा को अच्छी प्रकार से शान्त कर सकें। वैसे पुस्तकों

की बाजार में कमी नहीं है परन्तु वे सब पुस्तकें उस स्तर की नहीं हैं अतः वे जिज्ञासु लोग अपनी उस ज्ञान पिपासा को शान्त नहीं कर पा सकते ।

मैंने इस पुस्तक की रचना इन तीनों कारणों को ध्यान में रखते हुए की है । मैं बहुत दिन से ऐसी पुस्तक की आवश्यकता का अनुभव स्वयं भी कर रहा था तथा मेरे अनेक इष्ट मित्रों द्वारा भी मुझे इस प्रकार की पुस्तक लिखने के लिए अनेक बार कहा गया था । मैं आपके समक्ष जो कुछ इस समय रख रहा हूँ वह सब उन मित्रों की प्रेरणा अनेक विद्वान लेखकों की पुस्तकों के अध्ययन तथा अपने बाईस वर्ष के दीर्घकालीन अनुभव के आधार पर ही पूरा कर पाया हूँ । वैसे मैं आत्मश्लाघा को अच्छा नहीं समझता हूँ फिर भी अपने अनुभव तथा परिश्रम के आधार पर यह विश्वास पूर्वक कह सकता हूँ कि यह पुस्तक उन जिज्ञासुओं, विद्यार्थियों तथा उस व्यवसाय में पड़ने वाले लोगों का सही मार्ग दर्शन कर सकेगी ।

इसका विश्वास का कारण भी है और वह यह कि मैंने विषय वस्तु का विश्लेषण करके इस क्रम से रखा है कि पाठक बिना गुरु या शिक्षक की सहायता के भी इस विद्या में निपुणता प्राप्त कर सकता है । सम्पूर्ण विषय वस्तु को ऐसे ढंग से इस पुस्तक के अन्दर संजोया गया है कि हर पाठक हर अंग, रेखा, चिन्ह पर्वत तथा शरीर के महत्वपूर्ण भागों का सही तथा विस्तृत ज्ञान प्राप्त कर सके । प्रयत्न यह भी किया गया है कि इस विज्ञान से सम्बन्धित कोई बात छूट न जाये और पाठक का ज्ञान अधूरा ही न रह जाये ।

मेरे साथियों, मित्रों तथा सहयोगियों की इस राय का भी मैंने स्वागत किया है कि हिन्दी के नामों और शब्दों के साथ उनके समक्ष अंग्रेजी के शब्दों को भी स्थान दिया जाये । उनकी इस राय का मैं काइल हूँ, क्योंकि कई बार ऐसे लोगों को भी इस विद्या को सीखाने

की इच्छा होती है। जो कि क्लिष्ट हिन्दी समझने में असमर्थ हैं। मैंने इस हेतु अनेक विदेशी विद्वानों की इस विद्या पर आधारित पुस्तकों पर अध्ययन किया तथा अपने उन कृपालु सहयोगियों की इच्छा को पूरा करने का प्रयास किया।

मैं अपने साथियों तथा इष्टमित्रों का जिन्होंने मुझे इस पुस्तक के लिखने की प्रेरणा दी, उन विद्वान लेखकों का जिनके ग्रन्थों के अध्ययन तथा सहयोग से मैं यह ग्रन्थ लिख सका तथा अपने सहयोगियों का जिन के अमूल्य सुझावों के द्वारा पुस्तक के कलेवर में नवीनता आ सकी, आभार प्रदर्शन करता हूँ! तथा उन्हें धन्यवाद के अतिरिक्त और कुछ दे तो सकता नहीं हां उनकी भलाई की कामना उस परमपिता परमात्मा से अवश्य कर सकता हूँ।

अन्त में मैं इस पुस्तक के प्रकाशक सर्वश्री जनता प्रकाशन तथा उसके स्वामी ला० हजारी लाल जी गुप्ता का भी हृदय से आभारी हूँ जिन्होंने मेरी इस कृति का स्वागत किया तथा जिस प्रकार मैंने इसके लिखने में परिश्रम किया था उसी प्रकार इसके प्रकाशन में भी उन्होंने मनोयोग का परिचय दिया है। यही नहीं मेरी इच्छानुसार उन्होंने छपाई, ब्लाक, कागज आदि का प्रयोग किया है। यह उन्हीं के अथक् परिश्रम तथा लागत का परिणाम है कि यह पुस्तक आज इस मंहगाई के समय में भी आपके हाथ में इस रूप में उपलब्ध है।

यद्यपि ला० हजारी लाल जी प्रकाशन के क्षेत्र में नये हैं किन्तु फिर भी उन्होंने थोड़े से समय में ही इतना काम कर लिया है कि टैक्नीकल, इण्डस्ट्रियल तथा ज्योतिष विज्ञान के क्षेत्र में इनकी पुस्तकों को देखकर तथा उनके अदम्य उत्साह एवं परिश्रम को देखकर लोग दांतों तले अंगुली दबा लेते हैं, मैं परमात्मा से उनकी और अधिक सफलता की कामना करता हूँ।

पं० बसन्त लाल व्यास
राया (मथुरा)

जनवरी १९७६

परिशिष्ट

ज्योतिषशास्त्र एक विस्तृत तथा गहन विद्या है। इस बात का परिचय आपको इस तथ्य से भली भांति लग जायेगा कि संसार के विभिन्न देशों ने इस शास्त्र में अपने आप को आगे लाने का प्रयत्न किया किन्तु जिन्होंने भारत को ही इस क्षेत्र में गुरु मानकर उससे मदद प्राप्त करने का प्रयत्न किया।

यह तो सर्वविदित ही है कि ज्योतिष एक बहुत ही कठिन विषय है। इसका कारण यह है कि केवल पुस्तक पढ़ने से ही यह विषय पाठक को तब तक नहीं आ सकता जब तक वह अपने मस्तिष्क का सम्पूर्णतः प्रयोग न करे। इस विषय को जानने के लिए अथक परिश्रम, अदम्य, उत्साह, लगन, समय एवं तीव्र बुद्धि की आवश्यकता है। इनके अभाव में कोई भी इस विषय को हृदयमय नहीं कर सकता है।

इसका पता इस बात से भी लगता है कि ज्योतिष शास्त्र के कई एक विभाग हैं। सम्पूर्ण ज्योतिष को सीखने के लिए तो मनुष्य यदि सैकड़ों वर्ष तक भी परिश्रम करे तो भी इसे पूरी नहीं जान पा सकता।

ज्योतिष शास्त्र के प्रमुखतः तो दो ही भेद माने जाते हैं :—एक गणित ज्योतिष तथा दूसरा फलित ज्योतिष। गणित ज्योतिष में ग्रह आदि का गणित लगाया जाता है तब उसके अनुसार शुभाशुभ का बोध होता है किन्तु फलित ज्योतिष में रेखाओं, ग्रहों, पर्वतों तथा अन्य ऐसी ही अनेक बातों को देखकर शुभाशुभ फल की घोषणा की जाती है।

इन दोनों प्रकार के ज्योतिष के फिर उपभेद भी होते हैं :—

१. रमल प्रयोग
२. स्वरोदय
३. जफर
४. जातक
५. सामुद्रिक

इन्ही भेदों द्वारा संसार भर की प्रत्येक चल-अचल व अन्य प्राकृतिक बातों के तीनों कालों के रूप को बताया जा सकता है। ये तीन काल होते हैं—(१) भूतकाल (२) भविष्यत काल तथा (३) वर्तमान काल।

(१) **भूतकाल**—यह भूत वह समय है जो कि बीत चुका है। ज्योतिष शास्त्र जब कि बीते हुये समय की बातें बताता है तब उन्हें भूत-कालीन बातें कहते हैं।

(२) **भविष्यत काल**—यह भविष्य वह समय है जो कि आगे आवेगा। जो ज्योतिष शास्त्र के द्वारा आगे आने वाले समय में होने वाली बातों की पूर्व घोषणा करता है तो उन्हें भविष्य-कालीन बातें कहते हैं। वास्तव में ज्योतिष शास्त्र का मुख्य कार्य भविष्य की पूर्व घोषणा करना ही है। यही सबसे कठिन कार्य है। अनेक ज्योतिषी भूतकाल की बातों को तो आसानी से बता देते हैं किन्तु भविष्य बताना उन्हें कठिन लगता था।

(३) **वर्तमान काल**—वह समय जो इस समय चल रहा है। जो घटनाय इस समय घट रही हैं। उनके बारे में भी ज्योतिष शास्त्र बताता है।

ज्योतिष शास्त्र के ऊपर बताये हुए अंगों में से सामुद्रिक शास्त्र सबसे सरल विद्या है। इसका ज्ञान प्रातः करना सबसे आसान कार्य

है। सबसे बड़ी बात तो यह है कि इस शास्त्र के अध्ययन में गणित की आवश्यकता भी नहीं है तथा कोई विशेष यन्त्र-मन्त्रों की आवश्यकता भी नहीं होती है।

सामुद्रिक शास्त्र क्या है इस विषय में माता पार्वती ने स्वयं ही कहा था—

"जिस शास्त्र की सहायता से मानव स्वयं अपने ही अंगों की बनावट, हस्त रेखाओं तथा पर्वतों को देखकर अपने भूत, भविष्य तथा वर्तमान का ज्ञान प्राप्त कर सके उसे सामुद्रिक शास्त्र कहते हैं।

इस शास्त्र का नाम सामुद्रिक शास्त्र क्यों पड़ा इस सम्बन्ध में सबसे प्रमुख बात तो यह है जो कि भारतीय विद्वानों ने बताई है कि भगवान विष्णु ने सामुद्रिक नाम के ब्राह्मण के नाम से स्वयं अवतार लेकर इस शास्त्र का ज्ञान लोगों को दिया था अतः इस शास्त्र को सामुद्रिक शास्त्र कहते हैं।

कुछ लोग कहते हैं कि हाथ में ही समस्त देवों, तीर्थों तथा धामों का वास है तथा इसमें रेखायें, ग्रह, नक्षत्र तथा पर्वत भी हैं जो कि इस प्रकार हाथ के अन्दर समाये हुए हैं जिस प्रकार समुद्र के अन्दर अनेकानेक प्रकार के रत्न तथा अन्य पदार्थ समाये हुए हैं। यही कारण है कि इन सब बातों का ज्ञान बताने वाले शास्त्र को सामुद्रिक शास्त्र कहते हैं।

मनुष्य के जिस हाथ को देखकर तीनों कालों का विवरण दिया जा सकता है वह कलाई या मणिबंध से ऊपर का भाग है। इसमें मणिबंध, हथेली, चारो उंगलियाँ तथा अंगूठा और उसके बीच में बने हुए चिन्ह रेखायें तथा पर्वत सभी कुछ देखा जाता है। नाखूनों की बनावट उंगली की बनावट और लम्बाई मोटाई, पीछे की ओर दी गई रेखायें भी सामुद्रिक शास्त्र के अध्ययन के अन्तर्गत आती हैं।

हाथ भी चूंकि अनेक प्रकार के होते हैं। हाथ की बनावट के अनुसार साधारणतः हाथों के दो ही भेद होते हैं :—

१. कोमल हाथ

२. कठोर हाथ।

इसके अतिरिक्त भी हाथ के अन्य कई प्रकार होते हैं जिसमें लम्बा, चौड़ा, नुकीला, समकोण वृत्ताकार अथवा गोल चमसाकार आदि अनेक प्रकार के हाथ होते हैं। इन सभी प्रकार के हाथों के लक्षणों के अनुसार उनके शुभाशुभ अनेक प्रकार के काल होते हैं।

यही नहीं अन्य भेद के अनुसार हाथों के प्रकार और भी होते हैं। दार्शनिक हाथ, कलाकार हाथ, व्यवसायिक हाथ, निकृष्ठ हाथ, आदर्शवादी हाथ, मिश्रित हाथ, अतिविदग्ध हाथ आदि अन्य अनेक प्रकार के हाथ हैं। इन हाथों के अनुसार ही व्यक्ति अपने जीवन में उसी प्रकार के व्यवसाय करते पाये जाते हैं।

सामुद्रिक शास्त्र में हाथों की बनावट के बाद उंगलियों और अंगूठे की बनावट, नाखूनों का आकार प्रकार आदि देखे जाते हैं तत्पश्चात् हाथ में दिये हुए अनेक चिन्ह, ग्रह स्वरूप तथा ग्रह क्षेत्र देखे जाते हैं।

हाथ देखने वाले का कर्तव्य है कि पहले वह हाथ की उपरोक्त सभी बातों को भली प्रकार देख ले तत्पश्चात् अपने मन को शान्त करके, बिना शीघ्रता किए, खूब सोच-विचार कर, धीरे-धीरे एक-एक बात कहे हाथ देखने वाले का यह भी कर्तव्य है कि यदि वह हाथ में कोई अनिष्टता की बात देखे तो वह उस बात को स्पष्ट नहीं कहें क्योंकि ऐसा करने से उस व्यक्ति को बहुत आघात लगेगा और उसकी आशाओं पर कुठाराघात हो जाएगा। उसे चाहिए कि ऐसी बातों को बहुत सोच-समझकर प्रत्यक्ष रूप से कहे ताकि वह भविष्य के लिए सचेत हो जाये।

पुरुष का दांया और स्त्री का बांया हाथ ही अधिक बली होता है यही कारण है कि पुरुष का दांया हाथ और स्त्री का बांया हाथ ही

देखना चाहिए। हां, ऐसी स्त्रियां जो पुरुष का सा स्वभाव रखने वाली स्त्रियां हों उनका दांया हाथ ही बली होगा अतः वही देखना चाहिए। कुछ पुरुष ऐसे भी होते हैं जिनका बांया हाथ अधिक बली होता है जैसे—

१—वे पुरुष जो कि स्त्री स्वभाव रखते हैं तथा वैसी ही झिझक, लज्जा, डर आदि होता है उनका बांया हाथ देखना चाहिए।

२—चौदह वर्ष की आयु तक के बालक का हाथ भी बांया ही देखना चाहिए क्योंकि इस आयु तक बालक में भी स्त्री जैसे ही लक्षण पाये जाते हैं।

हाथ देखने वाले का चित्त बहुत स्थिर होना चाहिए। यदि ऐसा नहीं होगा तो भूल होने की सम्भावना रहती है। मनुष्य के बांयें से लक्ष्मी, राज्य, दाहनादि का विचार और दाहिने से ज्ञान, ऐश्वर्य, पुत्रादि का विचार करना चाहिए।

हाथ के लिए समय और स्थान का भी ध्यान रखना चाहिए। हाथ रात्री में या मध्यान्ह में नहीं देखना चाहिए। यात्रा में चलते-चलते अथवा सवारी में तथा वहाँ जहां हँसी हो हाथ नहीं देखना चाहिए। हाथ देखने के लिए कोई फल-फूल या द्रव्य साथ रखकर ही हाथ देखने चाहिए।

धूर्त, मूर्ख तथा दरिद्री का हाथ देखना निषिद्ध बताया गया है। अतः ऐसे लोगों का चाहे वह पण्डित ही क्यो न हों हाथ नहीं देखना चाहिए।

हाथ देखने वाले व्यक्ति में हंसमुखता, साहसी, धीरवान होना चाहिए। हाथ को अपनी स्वभाविक दशा में होना चाहिए।

हाथ को मजबूती से पकड़कर इस प्रकार दबाकर देखना चाहिए कि रेखायें स्पष्ट हो उठें तथा उनके रक्त प्रवाह की दिशा ज्ञात हो सके।

हमें विश्वास है कि उक्त बातों को ध्यान में रखकर हस्त रेखायें देखने वाला व्यक्ति अवश्य ही सफल होगा।

श्री सूरजभान अग्रवाल
एम० ए० एल० टी०

विषय-सूची

विषय पृष्ठ

प्रथम भाग

प्रथमाध्याय

प्रथम परिच्छेद

हाथ १०

द्वितीय परिच्छेद

मणिबन्ध ३५

तृतीय परिच्छेद

अंगुष्ठ ४०

चतुर्थ परिच्छेद

हाथ की अंगुलियाँ ५६

अंगुलियां और उसका स्वरूप ८५

अंगुलियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान ११२

अंगुलियों के चिन्ह १२८

अंगुष्ठ चक्र का विशेष फल १३१

शंख विचार १३२

अंगुलियों में शंख १३५

द्वितीय भाग

प्रथम परिच्छेद

नाखूनों के अनेक प्रकार और उनके फल १३८

द्वितीय परिच्छेद

कर पृष्ठ १५७

तृतीय परिच्छेद

हस्त चिन्ह १६९

विषय	पृष्ठ
चतुर्थ परिच्छेद	
ग्रह क्षेत्र	१८०
पंचम परिच्छेद	
सूर्य क्षेत्र	२०८
चन्द्र का क्षेत्र	२१४
बुध का क्षेत्र	२२२
गुरु का क्षेत्र	२२६
शुक्र का क्षेत्र	२३०
शनि का क्षेत्र	२३३
षष्ठम परिच्छेद	
हाथ की प्रमुख रेखायें और उनका स्वरूप	२३८
रेखाओं का परिणाम	२५६
सप्तम परिच्छेद	
मणिबन्ध और उसकी रेखायें	२६१
मणिबन्ध रेखा से आयु तथा भाग्योदय का ज्ञान ...	२६४
अष्ठम परिच्छेद	
जीवन रेखा	२७३
प्रगूढ़ रेखा से आयु ज्ञान	२७८
जीवन रेखा पर चिन्ह	२९३
जीवन रेखा का रंग	२९६
जीवन रेखा से रोग ज्ञान	२९७
नवम परिच्छेद	
मस्तष्क रेखा	३०२

विषय पृष्ठ

मस्तष्क रेखा से आयु ३०५
मस्तष्क रेखा और ग्रह क्षेत्र ३१४
मस्तष्क रेखा तथा अन्य रेखायें ३२०
समय निर्णय ३२८

भाग ३

प्रथम परिच्छेद

हृदय रेखा ३३०
हृदय रेखा से आयुमान ३३६
हृदय रेखा से अन्य-तिथि ३३८
अन्य आचार्य मत ३३९
तिथि ध्रुवांक ३४२
इष्टकाल जानने की विधि ३४३
हृदय रेखा का उद्गम स्थान ३४८
हृदय रेखा तथा अन्य रेखायें ३५१
हृदय रेखा का रंग ३५८

द्वितीय परिच्छेद

भाग्य रेखा ३६४
भाग्य रेखा के उद्गम स्थान ३६७

तृतीय परिच्छेद

सूर्य रेखा ३८५

चतुर्थ परिच्छेद

स्वास्थ रेखा ४०२

विषय				पृष्ठ
स्वास्थ रखा पर चिन्ह	...	...	...	४१४

पंचम परिच्छेद

विवाह रेखा	...	...	...	४१७
विवाह रेखा पर चिन्ह	...	...	...	४२७
विवाह रेखा के अन्य लक्षण	...	...	...	४३०

षष्ठम परिच्छेद

वृहस्पति की मुद्रिका	...	...	...	४३१
शुक्र की मुद्रिका	...	...	...	४३८

सप्तम परिच्छेद

सन्तान रेखा	...	...	...	४४२
भ्रात रेखा	...	...	...	४४६

अष्ठम परिच्छेद

चन्द्र रेखा	...	...	...	४५३
चन्द्र रेखा और गृह क्षेत्र	...	...	...	४५६

नवम परिच्छेद

समय निर्णय	...	...	...	४६५

दशम परिच्छेद

योग प्रकरण	...	...	...	४७०
अन्य विशेष जातक	...	...	...	४७३

एकादश परिच्छेद

शारीरिक लक्षण	...	...	...	४९६

द्वादश परिच्छेद

हस्त चित्र उतारना	...	...	...	५००

॥ श्री ॥

प्रथम परिच्छेद

हाथ (HAND)

(The Mirror of Man)

सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष शास्त्र का एक प्रमुख अंग है। सामुद्रिक शास्त्र को संसार के कल्याण के हेतु माता पार्वती से कहा था "जिसमें मानव स्वयं अपने ही अंगों तथा रेखाओं के द्वारा अपने भावी भविष्य का ज्ञान करता है," कुछ भारतीय विद्वानों का मत है कि भगवान विष्णु ने सामुद्रिक नाम के ब्राह्मण का अवतार लेकर स्वयं इस शास्त्र का वर्णन किया।

मानव जीवन के हाथ का प्रमुख स्थान है जीवन के प्रथम क्षेत्र में मानव अपने हाथ पर ही निर्भर रहता है अपने प्रत्येक विचार, प्रत्येक भावना तथा प्रत्येक मन के आवेश को कार्य रूप में कहा जाये तो हाथ मानव जीवन के सतर्क प्रहरी, स्वामीभक्त अनुचर तथा आज्ञानुवर्ती साथी है। हाथ ही सामुद्रिक शास्त्र की कसौटी पर परखे जाने पर मानव जीवन का मानचित्र बन जाता है जिसके द्वारा मानव जीवन की प्रत्येक घटना और उसका प्रभाव आदि का स्पष्ट परिचय मिल जाता है।

भारतीय संस्कृति में हाथ में लक्ष्मी, सरस्वती तथा ब्रह्माजी का वास है। इस कारण प्रातः काल निन्द्रा से उठते ही सर्वप्रथम हाथ दर्शन का आदेश देती है।

कराग्रे वसते लक्ष्मीः करमध्ये सरस्वती।
करमूले स्थितो ब्रह्मा प्रभाते कर दर्शनम्॥

हस्त सामुद्रिक

प्रथम भाग

१. हाथ के भेद
२. अंगुष्ठ
३. अंगुलियां
४. नाखून
५. हाथ के चिन्ह
६. ग्रह का स्वरूप
७. ग्रह क्षेत्र

हाथों के अग्रभाग में लक्ष्मी, मध्य भाग में सरस्वती और मूल में ब्रह्माजी का वास है इस कारण प्रात:काल हाथों का ही दर्शन करना चाहिए। इतना ही इससे आगे जप करने का विधान भी पर्वों पर (हाथ पर) करने का विज्ञान है।

पर्वभिस्तु जपेद्देवी माला काम्य जपे स्मृता।
गायत्री वेद मूलत्त्वेद: पवसु गीयते ॥ गायत्री कल्प ॥

गायत्री का मूल वेद है, जैसे मूल गान पर्वों पर (हाथ की अंगुलियों का भाग) होता है। इसलिए देव माता गायत्री का जप पर्वों पर भी करें।

हाथ में तीर्थों का वास भी है देव तीर्थ, पितृ तीर्थ प्रजापति तीर्थ हाथ के मध्य में ही वास है।

कनिष्ठा देशिन्यतुष्ठ, मूलान्यग्रं करस्य च।
प्रजापति पितृ ब्रह्म देव तीर्थान्यनुक्रमात ॥ आचारादर्श ॥

प्रजापति तीर्थ अथवा कार्यतीर्थ-कनिष्ठ का मूल भाग, पितृतीर्थ—तर्जनी का मूल भाग, ब्रह्मतीर्थ: अंगुष्ठा का मूल भाग देवतीर्थ अंगुलियों का अग्रभाग—इस प्रकार हाथों में तीर्थ वास है।

यह तो अपने देश की बात है, अपने देश में और संसार में भौगोलिक दृष्टि से मनुष्यों के अनेकों वर्गों में विभाजित है। स्वरूप, रंग, आकृति, धर्म, देश के आधार पर विश्व में मानव सैकड़ों वर्ग, जातियों, उपजाति में विभाजित है। परन्तु इस सामुद्रिक विज्ञान के अनुसार इन भौगोलिक, सामाजिक, धार्मिक भेदों का कोई भी सम्बन्ध नहीं है। यह विज्ञान मानव को सर्वप्रथम मानव मानता है और मानव का ही अध्ययन करता है। मानव पृथ्वी पर किसी देश तथा समाज का घटक क्यों न हो परन्तु सामुद्रिक शास्त्र की कसौटी पर उसके हाथ की परीक्षा करने पर उसके स्वभाव का उसकी मन की वृति का तथा मानसिक भावनाओं का पूर्व वृत्तान्त ज्ञात हो जावेगा क्योंकि यह सामुद्रिक शास्त्र विज्ञान

है और विज्ञान के सभी परिणाम एक प्रकार के होते हैं। यह उन्हें अल्प-बुद्धि और ज्योतिष का अपमान करने वाले का एक उत्तर है।

इन सब बातों के साथ ध्यान रखना परमआवश्यक है कि स्वास्थ्य सम्बन्धी नियम अथवा व्यायाम विशेषों के अथवा अन्य किसी कारण से हाथ में कुछ कठोरता अथवा चौड़ापन या मोटापन हो सकता है। परन्तु हाथ की मौलिक आकृति, स्वरूप, अथवा आकार प्रकार में कोई अन्तर नहीं आ सकेगा। अब आप अपने इस शास्त्र के विषय में विदेशी धर्म ग्रन्थ तथा विद्वानों का मत ज्ञात करें।

"The Hand, like a Mirror reflects the mind of a man birth to Death."

"God caused signs or seals on the hand of all the sons of men that the sons of men might know their works."

"Length of days in her right hand, riches and honour in her left."

And God made marks upon the hands of men that the sons of men might know them.

What evil is in mine hands.

And receive his mark in his free hand or in his hand.

Palmistry is a science, which in its highest and trust conception has for its aim the motto of the ancients "know Thy Self," the simplest but grandest sermon that can ring in human ears."

Why should not the hand give the characteristics of man's physiognomy Since hand is the medium of manifestation of human action.

विश्व के सन्त ही नहीं राजनीति के चतुर खिलाड़ी भी इस विद्या में विश्वास रखते थे, हिटलर को इस शास्त्र पर पूर्ण विश्वास था, इसी के सहारे उसने महान कार्यों में सफलता प्राप्त की। नैपोलियन वोनापार्ट भी इस विद्या के सहारे ही एक साधारण सिपाही से नैपोलियन महान हो गया और उसने इस विषय में कहा था—

"The study is worth the while of an elevating and inquiring mind. It is through palmistry that one canlobserve the vast ponorma of a human personality. One can acquire a penetrating discernment of individual character. It can become a fas-cinating. Hobby, that will lead you deep into intimate lives of people around you."

यही नहीं नैपोलियन वोनापार्ट के गुरु अरस्तु ने इस विद्या के विषय में लिखा है :

"I now proceed to give judgment from these several lines. And is the firest place take notice that in palmistry the left hand chiefly to be regarded, because therein the lines are most visible and have the strictest communication with the heart and brain."

इस विज्ञान में हाथ का देखना सबसे अधिक महत्वपूर्ण भाग है। वैसे तो जो सामुद्रिक शास्त्र में मानव के प्रत्येक अंग का अध्ययन किया

जाता है और उसका फल कहा जाता है, परन्तु हाथ उन सबसे महत्व-पूर्ण है यदि सर्वप्रथम हाथ को ठीक प्रकार से देख लिया गया तो फिर फल कहना आसान है।

सामुद्रिक शास्त्र के विशाल भवन की नीव प्रथम ईंट हाथ ही है। साधारणतः हाथ दो प्रकार के होते हैं।

१. कोमल हाथ Soft Hand

२. कठोर हाथ Hard Hand

कोमल हाथ (Soft Hand)

कोमल हाथ वाला मनुष्य उत्साही, आलस्य प्रिय, आकर्मण्य तथा साधारण सी मुसीबत ऊपर आने पर घबड़ा जाते हैं तथा भीरू हुआ करते हैं।

कठोर हाथ (Hard Hand)

कठोर हाथ वाला मनुष्य उत्साही, साहसी, धैर्यशाली, विचारवान तथा पराक्रमी होता है तथा कम आराम प्रिय होता है। इस प्रकार के हाथ वाले मनुष्य निडर होते हैं और समय पड़ने पर यह मृत्यु से टक्कर लिया करते हैं।

इस भेद के अलावा हाथ को दो भागों में और भी विभाजित किया जा सकता है।

१. लम्बा हाथ (Long Hand)

२. चौड़ा हाथ (Broad Hand)

लम्बा हाथ (Long Hand)

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियां लम्बी होती हैं और हथेली भी लम्बी होती है, इस प्रकार के हाथ वाले मनुष्य प्रायः बुद्धि जीवी हुआ करते हैं। गुरुजन, क्लर्क, पत्रकार आदि इसी प्रकार के हाथ वाले मनुष्य हुआ करते हैं।

चौड़ा हाथ (Broad Hand)

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियां लम्बी नहीं होती है, परन्तु हाथ

की हथेली की लम्बाई और चौड़ाई प्रायः समान होती है। इस प्रकार के हाथ वाले मनुष्य कलाकार एवं श्रमिक हुआ करते हैं।

इसके अतिरिक्त हाथ के तीन भेद होते हैं।

२. नुकीला हाथ

२. समकोण हाथ

३. वृताकार अथवा गोल हाथ।

नुकीला हाथ

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियाँ प्रायः पतली, लम्बी और नोकदार हुआ करती हैं। हाथ कोमल, लाल वर्ण तथा पुष्ट होता है।

नुकीले हाथ वाला मनुष्य बुद्धिमान, विचारवान, सुन्दरता प्रिय, कामी, स्त्रियों से प्रेम करने वाला, ऐश्वर्यवान तथा सम्पन्न, धनवान तथा सज्जन होता है, नुकीले हाथ वाले मनुष्य की कल्पना और विचार शक्ति प्रबल हुआ करती है, यह अपने विचारों को पूर्ण-रूप से कार्य-रूप में परिणीत नहीं कर पाता है, यह योजनाओं का निर्माण बहुत अच्छी प्रकार से कर सकते हैं, परन्तु उनको साकार करना इनका काम नहीं होता है। यह रचनात्मक कार्य नहीं कर पाते हैं, इस प्रकार का कार्य यह प्रायः दूसरों की सहायता द्वारा ही कर पाते हैं।

समकोण हाथ

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियां प्रायः लम्बी होती हैं। यह लम्बाई हथेली की लम्बाई के समान होती है। अंगुलियों के अग्रभाग लम्बे न होकर चौड़े हुआ करते हैं, इस प्रकार के हाथ को अपनी अवस्था में सीधा किया जावे तो संधि-स्थान पर प्रकाश दिखाई देता है, अर्थात् अंगुलियाँ पूर्ण रूप से आपस में मिली हुई नहीं हुआ करती हैं, अंगुलियाँ कुछ मोटी होती हैं, इस प्रकार के हाथ को स्पर्श करके देखा जावे तो कुछ कठोर प्रतीत होता है, अंगुलियों के जन्म स्थान कुछ चौड़े होते हैं।

समकोण हाथ वाला मनुष्य ज्ञान की इच्छा रखने वाला, परिश्रमी, सदा काम में तत्पर, लोकप्रिय, परोपकारी, सर्वप्रिय, दृढ़ निश्चयी, वाद-विवाद करने वाला, कुशल, वैज्ञानिक अनुसन्धान करने वाला होता है इस प्रकार के हाथ वाले मनुष्य की कल्पना शक्ति कमजोर होती है, परन्तु कार्य-शक्ति प्रबल होती है यह किसी बात को स्वीकार करने से उन्हें तर्क, सिद्धान्त तथा बहुत ही बारिकी से कसौटी पर परख करता है और जब वह स्वीकार कर लेता है तो उन्हें कार्य-रूप दे देता है, इस प्रकार के व्यक्ति पर किसी बाहरी बात का प्रभाव नहीं पड़ता है, यह शान्ति प्रकृति के मनुष्य होते हैं, और किसी प्रकार के उत्तेजनात्मक विचारों को स्वीकार नहीं करते हैं।

वृताकार हाथ (Cylindrical Hand)

इस हाथ में दोनों प्रकार के हाथों की एक समानता दिखलाई देती है, इसके करतल में गड्ढा अथवा नीचे की ओर धंसा हुआ होता है। इस प्रकार के हाथ की अंगुलियाँ छोटी और टेड़ी होती हैं, अंगूठा कुछ छोटा तथा सीधा नहीं होता है, अंगुलियाँ मोटी और भद्दी होती हैं, हाथ का स्पर्श करने पर इसमें अधिक कठोरता मालूम होती है। इस प्रकार के हाथ का रंग गुलाबी न होकर कुछ श्यामता लिए होता है।

इस प्रकार के हाथ वाला मनुष्य कठिन परिश्रम करने वाला, मन्द बुद्धि, निर्धन तथा अधिक भोजन करने वाला होता है, इस प्रकार के मनुष्य का काम करने में बहुत ही मन लगता है, हर समय कुछ न कुछ करता ही रहता है। यह व्यर्थ में समय को बर्बाद नहीं करता है। वह प्रत्येक स्थिति में परिश्रम करता ही रहता है। जीवन में कठोर परिश्रम करना इस हाथ वाले की प्रमुख विशेषता रहती है।

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियों की लम्बाई हाथ के करतल की लम्बाई के समान होती है तो ऐसे मनुष्य की मस्तिष्क की शक्ति प्रबल होती है वह जिस बात का विचार करता है उसे कार्यरूप में परिणित

वृताकार हाथ

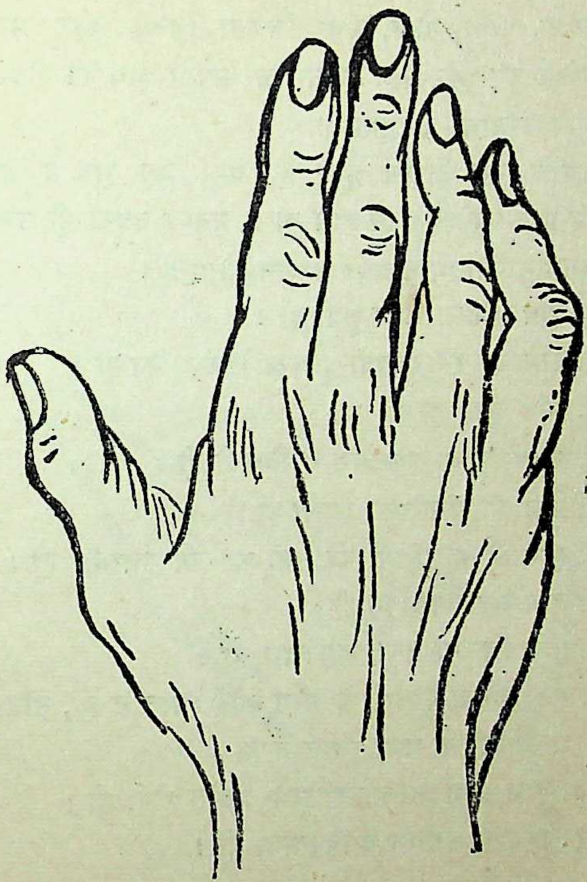

भी किया करता है, यह प्रत्येक कार्य अपने ऊपर ही प्रारम्भ करते हैं और स्वयं ही पूर्ण किया करते हैं।

इस प्रकार का हाथ लम्बा और चौड़ा दोनों ही प्रकार का हो तो ऐसे हाथ वाला मनुष्य कठिन परिश्रम करने वाला, शक्तिशाली होता है।

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के अनुसार हाथ, अन्य हाथ के लक्षण भी बताये गए हैं।

अबहस्तं कर पुष्ठं विस्तीर्ण पनिमुन्नतं स्निग्धम् ।
विनिगूढ़शिरं परितः क्षोणिपतेः फणि दुणाकारम् ।।

अच्छा, चौड़ा, मोटा, ऊंचा, चिकना जिसके छोर चारों ओर से मांस से डूबे हुए और सांप के फण के आकार हाथ की पीठ (कर पृष्ठ) वाला हाथ राजाओं का होता है ।

हाथ के दस लक्षण होते हैं, यह जिस हाथ में जितनी अधिक संख्या में पाये जाते हैं उस हाथ वाला मनुष्य उतना ही उच्च, विशाल-हृदय धनवान कीर्तिमान तथा सम्पन्न होता है ।

१. हाथ विशाल फैला हुआ हो ।
२, हाथ का रंग गुलाबी (ताम्र के रंग) का हो ।
३. माँस युक्त हो ।
४. पतला रूखा तथा नश न दिखती हो ।
५. हाथ की अंगुलियां लम्बी हों ।
६. हाथ की अंगुलियों की नसों का रंग गुलाबी हो ।
७. हाथ बहुत बड़ा न हो ।
८. हाथ चिकना तथा चमकदार हो ।
९. हाथ की अंगुलियों के मध्य कोई स्थान न हो, सीधा करने पर अंगुलियों के मध्य स्थान न हो ।
१०. हाथ स्पर्श करने पर उष्ण प्रतीत होता हो ।
११. हाथ से पसीना न निकलता हो ।

१ समकोण हाथ

यह हाथ सबसे श्रेष्ठ होता है । यह समकोण की तरह होता है । इस हाथ की लम्बाई एवम् चौड़ाई प्रायः करीब-करीब बराबर होती हैं । अगर इस हाथ की अंगुलियों को एवम् हथेली को नापो तो प्रायः बराबर होती हैं । इस हाथ की अंगुलियां सरल एवम् सपाट तथा मुलायम और हथेली में सुड़ौल जुड़ी हुई होती हैं । मध्यमा अंगली की

समकोण हाथ

(Square Hand)

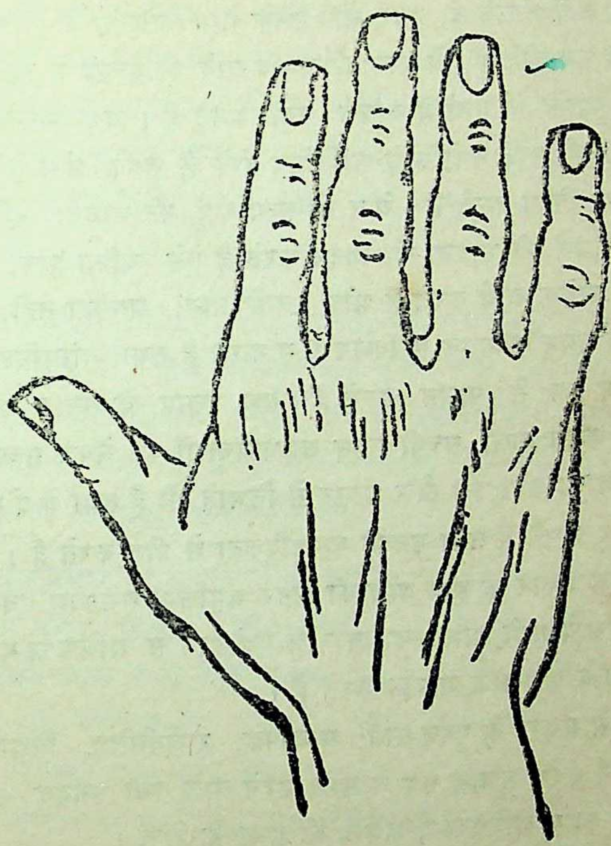

बीच की गांठ प्रायः आकार से कुछ बड़ी रहती है इसके नाखून छोटे तथा चोकोर होते हैं ।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति प्रायः अनुशासन प्रिय होते हैं वे स्वयं अनुशासन में रहना चाहते हैं तथा और लोगों से प्रायः ऐसी आज्ञा करते हैं । ऐसे हाथ वाला पुरुष मिलनसार, कोमल स्वभाव वाले प्रत्येक मनुष्य के साथ प्रेम तथा नम्रता का व्यवहार करने वाले, आज्ञा को

शिरोधार्य करने वाले तथा प्रत्येक के साथ प्रेम का वातावरण बनाये रखने वाले ऐसे व्यक्ति प्राय: सिद्धान्त के पक्के एवम् किसी के मध्य में बेकार नहीं बोलते हैं, अगर कोई उनके मध्य बोलता है तो वे उस पर अधिक गर्म होते हैं। वे प्राय: उच्च-पद पाने की इच्छा में रहते हैं तथा किसी व्यक्ति के मार्ग में बाधक नहीं बनते हैं। यह झगड़े आदि में प्रसन्न नहीं रहते क्योंकि ये शांतिप्रिय होते हैं तथा प्रेम से ही सबसे व्यवहार किया करते हैं। ये न तो स्वयं अहं की भावना वाले होते हैं, और न अहं की भावना का आदर करते हैं ऐसे व्यक्ति प्राय: क्रियाशील होकर प्रत्येक कार्य करते हैं और उसमें प्राय: असफल नहीं होते। ये विज्ञान एवम् अध्ययन से विशेष प्रेम करते हैं तथा सांसारिक कर्तव्यों का पूर्ण रूप से पालन करते हैं। यह प्रताप के समान प्रतिज्ञा का पालन करने वाला, सच्ची एवम् सद्भावनाओं को लेकर सच्ची मित्रता करने वाला और उसे ठीक प्रकार से निभाते भी हैं तथा ये प्रेम को प्रेम मानकर चलते हैं तथा उनकी वास्तविकता से प्रीत करते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले की अगर अंगुलियां समकोण एवम् गठीली हों तो सत्यभाषी, शांत स्वभाव वाले एवं सत्य से अधिक प्रेम करते हैं तथा सत्य की खोज में रहा करते हैं।

इस प्रकार के पुरुष प्राय: अध्यापक, राजनीतिज्ञ, विद्या विषयी, नियमित एवम् सुचारू रूप से काम करने वाले तथा भगवत भक्त अच्छे विचार एवम् चरित्रवान, कर्म प्रेमी हुआ करते हैं।

२. चम साकार हाथ

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियाँ या तो कुछ टेढ़ी एवम् उभरी हुई होती हैं या फिर बिल्कुल ठीक सीधी। या तो यह हाथ में कलाई के पास अधिक चौड़ा होगा तो अंगुलियों के पास कम चौड़ा होता है अगर नीचे के हिस्से में कलाई के पास कम चौड़ा होगा तो अंगुलियों के पास अधिक चौड़ा होगा।

अगर इस प्रकार के हाथ की अंगुलियों के पास अधिक चौड़े हों और नीचे के भाग में कम हैं तो ऐसा पुरुष अधिक कार्य करने वाला तथा व्यवहार में अति कुशल होता है। अगर इस प्रकार का व्यक्ति विज्ञान के क्षेत्र में कार्य करता है तो विज्ञान में एटमबम का निर्माण नहीं करता परन्तु इस प्रकार की वस्तुओं का अविष्कार किया करता है जो मानव को मानव बनाने में तथा सभ्यता की ओर ले जाने में अग्रसर होता है। यह मानव के विनाश के लिए नहीं बल्कि विकाश के लिए कार्य करता है।

अगर इस प्रकार का हाथ कलाई के पास अधिक चौड़ा है और ऊपर कम तो इस प्रकार का मनुष्य उपयोगी कार्य करेगा अगर इस प्रकार के मनुष्य ने धार्मिक क्षेत्र में कार्य किया है तो वह नवीन प्रकार के भजन एवम् सारे धार्मिक समाज को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। इस प्रकार के व्यक्ति संसार का मार्ग दर्शन करते हैं।

अगर इस प्रकार की उंगलियाँ गांठदार हों तो इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति सुन्दर स्वभाव, अधिक परिश्रम करने वाले, शांत प्रिय, क्रोध पर विजय प्राप्त करने वाले, प्रत्येक कार्य की पूर्ति करते हैं, वीर एवम् निडर और धैर्यवान हुआ करते हैं। प्रात: शिकार खेलना, दौड़ना कूदना, खेल खेलना, धनुष आदि चलाना तथा अश्व की सवारी अधिक करना तथा वीरतापूर्ण कार्यों में अधिक रुचि रखते हैं।

इस प्रकार के हाथ की अंगुलियां सरल चिकनी तथा गांठदार नहीं हों तो इस प्रकार के हाथ वाला पुरुष दस्तकार तथा और लोगों को इसके सीखने के लिए प्रोत्साहित देते हैं तथा सिखाते भी हैं परन्तु वह इसमें ख्याति प्राप्त नहीं कर सकते। अगर इस प्रकार की अंगुलियां हों और लम्बी हों तो ऐसे पुरुष प्रायः कृषिक तथा पेड़ पौधों के कार्य में विशेष प्रेम करते हैं।

चमसाकार हाथ

(The Sptulate Hand)

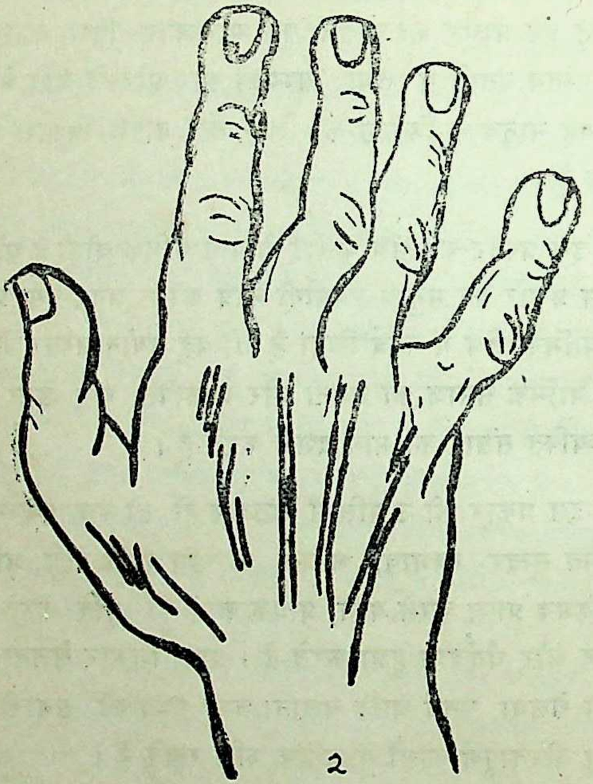

2

अगर इस प्रकार के हाथ कठोर न होकर मुलायम हों तो ऐसे पुरुष और लोगों के दबाव में नहीं रहना चाहते परन्तु अन्य लोगों पर शासन करने की इच्छा रखते हैं इस प्रकार के कार्य किसी हद तक सफल नहीं हो पाते। यह वीर तथा झगड़े आदि करने में सफल तथा समाज में कुछ न कुछ इस प्रकार की नवीन बात खोज कर दिया करते हैं जिसके कारण कुछ समय के लिए समाज में उथल-पुथल मच जाती है। इस

प्रकार के मनुष्य नवीन विचार तथा नव-जीवन की ओर अग्रसर हुआ करते हैं ।

अगर इस प्रकार का हाथ कठोर एवम् मजबूत प्रतीत हो अंगुलियां गांठदार हों तो इस प्रकार के हाथ वाले पुरुष प्राय: कठिन परिश्रम करने वाले हर समय किसी न किसी कार्य में रत रहने वाले, व्यर्थ एक पल भी नहीं खोया करते हैं। अगर ये शारीरिक दृष्टि से कुछ नहीं करते प्रतीत होंगे तो मानसिक दृष्टि से खाली नहीं रहेंगे उस समय लम्बी-चौड़ी गम्भीर योजना बनाने में रत रहा करते हैं। यह अपने ऊपर किसी का बन्धन स्वीकार नहीं करते अगर इनके विचारों से किसी पुरुष के विचार नहीं मिला करते हैं तो उसका अन्तिम क्षण तक जब तक कि वह स्वीकार न कर ले विरोध किया करते हैं ।

इस प्रकार के हाथ वाला पुरुष दयावान, शांति प्रिय मानसिक दृष्टिकोण से कमजोर। अच्छे तथा सुन्दर विषयों पर मनन करने वाले, व्यर्थ कार्य से प्रेम नहीं करते, गायन विद्या के प्रेमी, रसिक सौंदर्य प्रिय, दूसरों का उपकार करने वाले, समाज सेवक हुआ करते हैं ।

३. दार्शनिक हाथ

यह हाथ लम्बा तथा मध्य कुछ झुका हुआ और उसकी अंगुलियाँ चिकनी तथा सपाट नहीं होती जोड़ स्थान पर कुछ उठे हुए प्रतीत होते हैं। नाखून प्राय: लम्बे कोणदार तथा बीच में कुछ झुका हुआ प्रतीत होता है ।

ऐसे हाथ वाले पुरुष प्राय: दार्शनिक, लेखक, वैज्ञानिक, ज्योतिषी, नीति-शास्त्र के पण्डित, शांति स्वभाव तथा गुण विचार वाले, विवेकी भोग की साधना वाले, चिकित्सक, शिक्षा शास्त्री, अध्यापक, क्रोध करने वाले, भगवत भक्त, ज्ञानवान, कर्त्तव्य परायण नेता आदि इसी प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति ही हुआ करते हैं ।

इस प्रकार के हाथ वाले पुरुष धनवान नहीं होते उनके पास प्राय:

दार्शनिक हाथ
(Philosophic Hand)

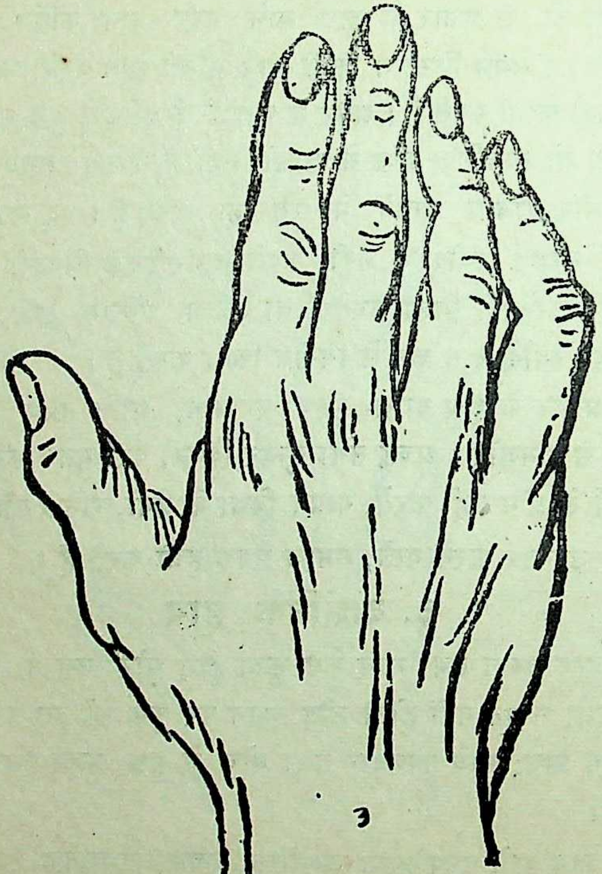

धन का संग्रह नहीं हो पाता। अगर भगवान की कृपा से अधिक धन हो तो उसे परोपकार में लगा दिया करते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति धन की चिन्ता ही नहीं किया करते। यह धन को खर्च करने के लिए चाहने वाले होते हैं। यह अच्छे साधु एवं विद्वान पुरुषों की संगति करना पसन्द करते हैं और उनसे गुणों तथा ज्ञान का संग्रह करते हैं।

इनकी विचारधारा पवित्र होती है। यह आत्मा और परमात्मा की ओर अधिक झुकते हैं सांसारिक विचारधारा से इन्हें कम प्रेम होता है। यह यह विचारों में गम्भीर होते हैं तथा स्वार्थमान के लिए किसी भी हालत में नहीं जाने देते। इनके मित्र प्राय कम होते हैं और प्रत्येक से घनिष्ठता प्रायः कम हो पाती है। यह पीछे चलने वाले नहीं होते, बहुत विवेक के साथ किसी विचार को सुनकर अपनी सम्मति कायम करते हैं और उसकी कमी जब तक नहीं मानते जब तक कि पूर्ण रूप से कोई समझा न दे। यह मानव से प्रेम करते हैं तथा ईश्वर को साक्षात्कार करने में लीन रहते हैं। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति प्रायः ब्राह्मण, साधु, योगी एवं दार्शनिक हुआ करते हैं। अगर अंगुली का जोड़ समतल है, नुकीला है तो कम विचारवान् होते हैं।

ऐसे हाथ वाले पुरुष एक ही विषय का अध्ययन करते हैं और उसका सम्पूर्ण ज्ञान करना अपना ध्येय समझते हैं अगर यह प्रचार भी करते हैं और राजनीति में कार्य करते हैं तो धर्म के अनुसार ही राजनीति को चलाने का प्रयत्न करते हैं अन्यथा वह दूर-दूर रह कर अध्यात्मिक क्षेत्रों में कार्य किया करते हैं।

४. कलाकार व्यवसायिक हाथ

यह हाथ प्रायः लम्बाई-चौड़ाई की दृष्टि से समकोण हाथ से मिलते हुए होता है। यह न विशेष अधिक लम्बा ही होता है न चौड़ा ही। इस प्रकार की हाथ की अंगुलियां ऊपर की ओर यानी ऊर्ध्वभाग में पतली और अधोभाग में मोटी होती है।

इस प्रकार के हाथ वाले पुरुष धैर्यवान नहीं होते तथा अपने विचारों में प्रायः उच्च नहीं होते तथा प्रत्येक विषय पर अपना निश्चय मत नहीं रखते हैं। इस कारण इस प्रकार के लोग मार्ग ज्ञानी नहीं हुआ करते तथा विभिन्न मार्गों पर चलते हैं। पूर्ण रूप से किसी पर सफलता प्राप्त नहीं कर पाते न वे किसी को विचार के साथ ही आरम्भ करते हैं उनका

ध्येय वही है कि फिर पछताये होत क्या जब चिड़िया चुग गई खेत । अन्त उसके हाथ असफलता ही प्राप्त होती है ।

यह बात चीत करने में अति निपुण होते हैं । मगर उनसे किसी विषय पर बोलने के लिए कहा जावे तो उस पर काफी समय तक बोल सकते हैं तथा प्रत्येक विषय के मतलब में पूर्णरूपेण समझने में चतुर

कलाकार व्यवसायिक हाथ

(Artistic Hand)

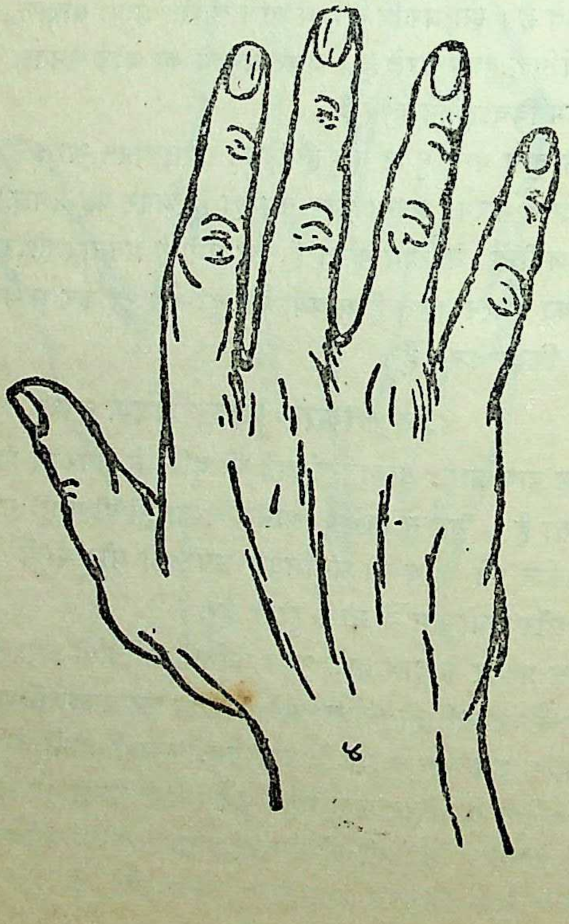

होते हैं। अगर ऐसे व्यक्ति को कूटनीतिज्ञ कहा जावे तो अतिशयोक्ति नहीं होगी। इस प्रकार के व्यक्ति पर अन्य व्यक्ति का प्रभाव बहुत जल्दी पड़ता है। यह समाज बहती हुई विचारधारा के साथ ही चला करते हैं उनके अन्य पुरुष साथ मिल जाया करते हैं इस प्रकार के हाथ वालों को हम कन्या राशि के स्वामी बुध की तरह कहें तो कोई गलती नहीं यह क्रोधी होते हैं और क्रोध के आवेश में इन्हें अपना कुछ भी ज्ञान नहीं रहता। जो कुछ इनकी जबान पर आता है उसे बिना सोचे समझे ही कर डालते हैं। अपने मतलब साधन में पूर्ण रूप से चतुर होते हैं और फिर अपने स्वार्थ साधन के लिए प्रत्येक वस्तु का बलिदान कर देते हैं। अगर भाग्यवश ये किसी से प्रेम करने लग जाते हैं तो उसके लिए अन्तिम समय तक निभाते जाते हैं इस पर प्रत्येक बात का प्रभाव जल्दी जमाया जा सकता है।

अगर इस प्रकार के हाथ में गांठ है तो वह सुन्दरता से प्रेम करने वाले तथा स्वरूपवान होते हैं। अगर ये लम्बे कद के नहीं होते तो धनवान बनने के लिए नाना प्रकार के उद्योग किया करते हैं परन्तु भाग्यवश वे उनके लिए सफलता प्राप्त नहीं कर पाते।

अगर इस प्रकार के हाथ लम्बे हैं तो ऐसे व्यक्ति झूठ बोलने वाले, धोखा देने वाले, यह अपनी कामवासना की तृप्ती के लिए नीच पुरुष से भी मित्रता कर लिया करते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति प्रायः कामी, गुणवान, भावुक, आलसी, दूसरों की बातों पर चलने वाले, नेता, भाषण करने वाले अधिक दुःखी तथा छोटे सुख में काफी संतोष मानने वाले हुआ करते हैं।

५. निकृष्ट हाथ

यह हाथ आवश्यकता से अधिक मोटा, भारी तथा देखने में सुन्दर लगा करता है। इस प्रकार के हाथ का अंगूठा प्रायः छोटा तथा मोटा एवम् चौकोर प्रतीत हुआ करता है। इस हाथ की अंगुलियां प्रायः मोटी एवम् खुरदरी नाखून कम चौड़े एवम् लम्बे हुआ करते हैं।

निकृष्ट हाथ
(The Elementary Hand)

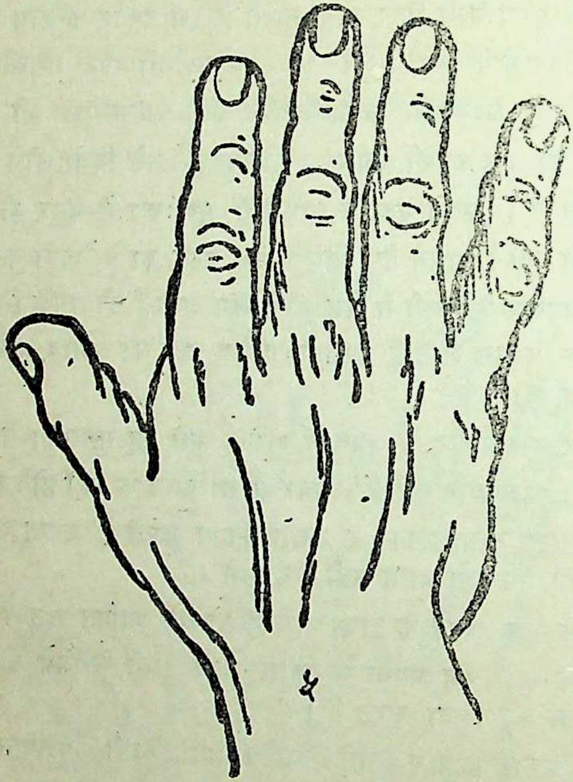

ऐसे हाथ वाले पुरुष प्रायः दुष्ट स्वभाव वाले एवम् दुष्ट बुद्धि वाले हुआ करते हैं। यह बुद्धि के द्वारा समाज के कल्याण की योजनाओं का निर्माण किया करते हैं। यह बहुत क्रोधी होते हैं तथा साहस की मात्रा कम हुआ करती है इस कारण साहस पूर्ण कार्यों को नहीं किया करते हैं। वह सदा कामवासनाओं की तृप्ती के लिए मनुष्य से पशु जैसा व्यवहार करने में नहीं चूकते। इस प्रकार के प्राणी का प्रायः सिद्धान्त होता है। इसलिये ये पुरुष सांसारिक व अन्य कोई सामाजिक, राजनैतिक

समस्या पर कोई विचार करना नहीं जानते हैं केवल धन के लिए दुष्कर्म किया करते हैं।

अगर इस प्रकार के हाथ की अंगुलियां मोटी हों उर्ध्वभाग ठीक हो एवम् हथेली कठोर हो तो ऐसा पुरुष प्रायः चंचल हृदय का बोध करता है यह किसी के आधीन नहीं रहता है तथा स्वयं अपने पर विश्वास करने वाला तथा स्वतन्त्र विचारक होता है। मानसिक कार्य प्रायः अधिक करता है। गाना, बजाना, पढ़ना, लिखना, व्यापार करना कारखाने आदि चलाना एवं कार्य करना, सत्य बोलने वाला और जो कुछ कह देता है उसके लिये पालन करता है तथा किसी के ऊपर निर्भर नहीं रहता है।

अगर इस प्रकार के हाथ कठोर न हो तो ऐसा पुरुष चंचल स्वभाव वाला, क्रोध में अन्धा, आलसी, कम काम करने वाला तथा और पुरुषों से अनेक प्रकार की अभिलाषा करने वाला तथा निगरानी सम्बन्धी कार्य अधिकता से करता है।

६ आदर्शवादी अपरिपुष्ट विषम हाथ
(Idealistic Hand)

यह देखने में सुन्दर और दार्शनिक हाथ की तरह लम्बा तथा छोटा होता है। इस हाथ की उंगलियों का उर्ध्व भाग प्रायः पतला अथवा मोटा होता है उभरा तथा नोंकदार नाजुक भी तथा नाखून बादामी रंग के पतले होते हैं। उंगलियां ऊपर की ओर पतली तथा नीचे की ओर क्रमशः मोटी होती हुई चलती हैं। इस प्रकार का हाथ आसानी से पहिचाना जा सकता है।

इस प्रकार के हाथ वाला मनुष्य न व्यवहार में कुशल होता है न तर्क बुद्धि प्रबल हुआ करती है इनके ऊपर समय का कोई प्रभाव नहीं पड़ा करता है वह दूसरों के अनुसार चलने लग जाते हैं स्वयं उस पर

आदर्शवादी हाथ
(The Idealistic Hand)

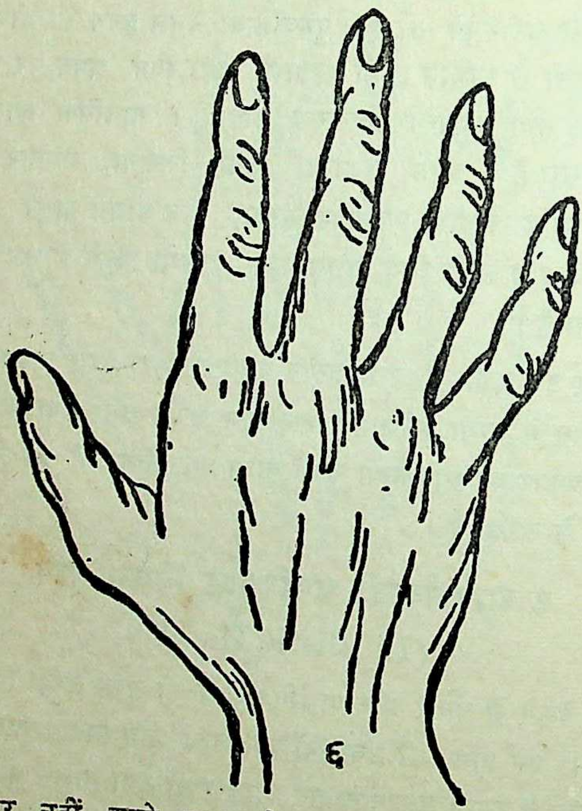

६

कोई विचार नहीं करते तथा प्रत्येक व्यक्ति पर विश्वास कर लेना इनका साधारण गुण है तथा अन्त में उससे धोखा खा जाते हैं और दुःखी हुआ करते हैं। इन पर राग-रंग शोक दुःख का बहुत कम प्रभाव पड़ता है। यह खुशी में अधिक खुश तथा दुःख में अधिक दुःखी हुआ करते हैं। यह भगवान में विश्वास रखने वाले तथा अपने इष्टदेव की सब प्रकार से पूजा अर्चना करने वाले होते हैं। इस प्रकार के मनुष्य प्रायः नाना प्रकार की स्वर्णमयी योजनाओं का निर्माण किया करते हैं।

और उन पर विचार भी किया करते हैं परन्तु कुछ करना और कार्य रूप में परिणित करना इनकी शक्ति के विषय के परे हैं। यह स्वभाव के शांतिप्रिय तथा सन्तोषी हुआ करते हैं। इनसे कोई व्यक्ति अगर मीठा बोले तो वह उसके दास हो जाते हैं। यह अधिक एवम् कठिन परिश्रम करने में मुंह मोड़ते हैं, यही कारण है कि यह ठीक प्रकार से जीवन-यापन में कठिनइयां महसूस करते हैं। यह दिखावे आदि के विषय से प्रेम करते हैं।

यह परिश्रमी, बलशाली, कम पढ़े लिखे, मूर्ख अल्प और मन्द बुद्धि हित-अनहित को न जानने वाले, ज्ञान से शून्य, क्रोध आने पर आगा-पीछा न सोचने वाले थोड़े धन तथा प्रेम में प्रसन्न होने वाले, कम धनी आदि गुण पाए जाते हैं।

इस प्रकार के हाथ वाले पुरुष छोटा व्यवसाय करने, मजदूर, किसान तथा फेरी लगाने वाले, पल्लेदार, बोझ ढोने वाले कुली, कारीगर, शिल्प कर्म करने वाले आदि आदर्शवादी हाथ के पुरुष हुआ करते हैं।

७ मिश्रित हाथ

इस हाथ में प्राय: सभी प्रकार के हाथों के लक्षण पाये जाते हैं इस कारण इसको मिश्रत हाथ कहते हैं। इसकी पहली उंगली नोंकदार आदर्शवादी हाथ की तरह दूसरी कुछ झुकी हुई टेढ़ी आनामिका सम-कोण अथवा अन्य प्रकार के हाथ की तरह होती है।

इस प्रकार के हाथ वाले पुरुष बिना सोचे समझे ही कार्य को प्रारम्भ कर दिया करते हैं और फिर उसके लिए मध्य ही में छोड़ कर दूसरे कार्य को आरम्भ कर देते हैं इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति पूर्ण रूप से किसी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाते हैं। यह इनका स्वभाविक गुण होता है।

अगर इस प्रकार के हाथ में निकृष्ट एवम् व्यवसायक हाथ के लक्षण

मिश्रित हाथ
(The Mixed Hand)

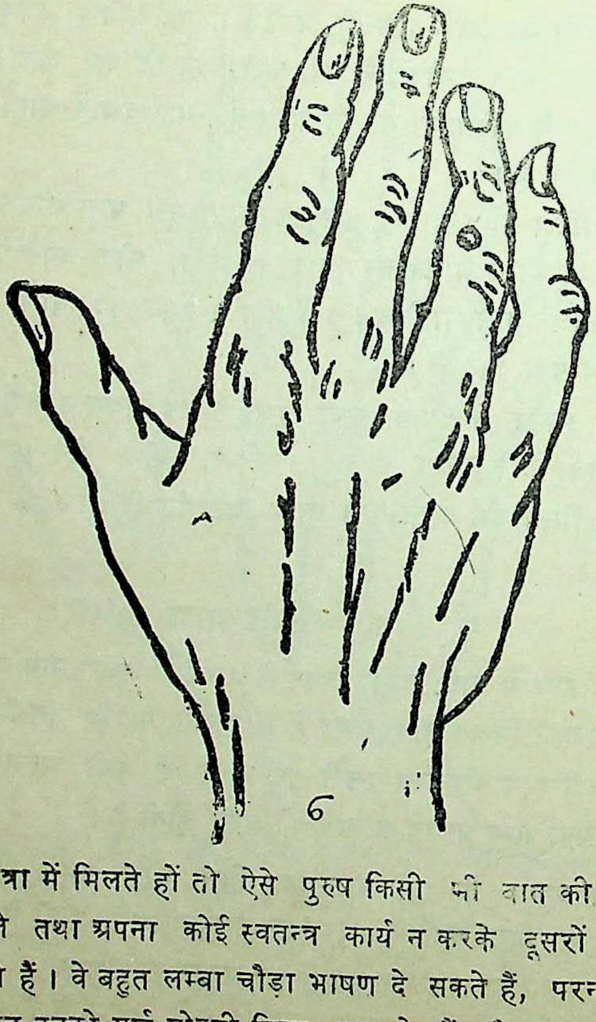

6

अधिक मात्रा में मिलते हों तो ऐसे पुरुष किसी भी बात की परवाह नहीं करते तथा अपना कोई स्वतन्त्र कार्य न करके दूसरों के सहारे कार्य करते हैं। वे बहुत लम्बा चौड़ा भाषण दे सकते हैं, परन्तु सुनने वाले व्यक्ति इनको मूर्ख मोहनी विद्या समझते हैं और उन पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है। यह किसी भी कार्य का पूर्ण रूप से सम्पादन नहीं कर पाते, परन्तु इनके हाथ वैसे ही भाग्यवश कुछ ख्याति हाथ लग

जाती है। यह धन को अधिक महत्व नहीं देते इनकी दृष्टि में नाम यश का महत्व अधिक है इस कारणवश यह प्रिय बोलने वाले तथा प्रिय बनने का प्रयास किया करते हैं। यह प्रत्येक कार्य का ज्ञान करते हैं और प्रत्येक प्रकार की विद्या का अध्ययन करते हैं परन्तु किसी में पूर्ण सफल नहीं हो पाते। वह अनेक विषयों की खोज करते हैं परन्तु उनका सामंजस स्थापित कर बड़ी सावधानी से कार्य करते हैं। इनकी विचार-धारा में सदैव परिवर्तन हुआ करता है कभी स्थाई नहीं हो पाती है। इनके साथ यह चतुर प्रतिभाशाली तथा दूसरों का विषय समझने तथा समझाने में कुशल होते हैं।

अगर इस प्रकार के हाथ की वालों की उंगलियाँ समकोण होकर ऊपर से नोंकदार हों तो इस प्रकार का पुरुष अपने मतलब साधन में कुशल, झूठ बोलने वाले एवम् धोखा देने वाले, चतुर तथा आंखों में धूल झोंकने में कुशल हुआ करते हैं।

जिस पुरुष का हाथ सर्प के फण के समान होता है आगे अधिक चौड़ा और कलाई के पास कम चौड़ा इस प्रकार के हाथ वाला व्यक्ति अनेक प्रकार से धन संग्रह करने वाला धनवान पुत्रवान होकर कंजूसी के साथ जीवन व्यतीत करता है।

जिस पुरुष का हाथ गोल हुआ करता है वह पुरुष न धनवान हुआ करता है न विशेष ख्याति ही प्राप्त करता है, परन्तु अन्य लोगों की सेवा करके जीवन का पालन करता है।

८. अति विदग्ध हाथ

(The Clevrest Hand)

इस हाथ की बनावट बहुत ही विचित्र होती है, यह हाथ प्रायः चौड़ा और लम्बा होता है, और इस प्रकार के हाथ में रेखायें बहुत ही टेढ़ी मेढ़ी हुआ करती हैं, इस प्रकार के हाथ की रेखाओं को देखकर हस्त परीक्षक दैवज्ञ अनुमान करते हैं कि वह मनुष्य अति दरिद्री होगा

परन्तु जर्मन सामुद्रिकाचार्यों का मत इसके विरुद्ध है। उनके मत से इस प्रकार के हाथ वाला मनुष्य युग पुरुष नवीन आविष्कर्ता होते हैं, जर्मन के महान शासक के विषय में एक दैवज्ञ ने लिखा है—'Hitlar has a smilling face and good carved hand of six inches which shows Hitlars greateness of his time" (The Hand)

इस दैवज्ञ ने हिटलर का हाथ बेलजियम की जेल में देखा था, और जेल से मुक्त होने पर अपनी पुस्तक "हाथ" में लिखा, कि हिटलर एक मुस्कुराता चेहरा और अति विदग्ध हाथ वाला व्यक्ति था यह हाथ छः इन्च का था जिस कारण हिटलर अपने समय में इतनी उच्चता प्राप्त कर सका और तीसरे विश्व युद्ध की लहर छोड़ सका।

अतिविदग्ध हाथ वाला मनुष्य दूसरों की बनावटी बातों को भली प्रकार से जान लेता है, और इस प्रकार की बातों में नहीं फंसता है। यह अपने शत्रु तथा मित्रों की भली प्रकार परख करता है कि किस व्यक्ति से मुझे लाभ होगा तथा कौन सा व्यक्ति नुकसान कर सकता है इस प्रकार के हाथ वाला मनुष्य हर समय अपना लाभ सामने रख कर ही दूसरों के दुःख दर्द में शामिल होता है। यह प्रत्येक बात में लाभ, अपना स्वार्थ सर्वोपरि रखता है। देश हित की बात भी दूसरा स्थान पाती है। समाज में शीघ्र ही लोकप्रियता प्राप्त कर लेता है। जनता ऐसे हाथ वाले मनुष्य का सम्मान भी बहुत किया करती है। इस प्रकार के हाथ वाले व्यक्ति की सबसे प्रमुख बात होती है कि यदि यह किसी की सहायता करने लग जावे तो अपने प्राणों के मूल्य को भी उसकी सहायता के लिए लगा देता है। इस प्रकार के हाथ की उंगलियां सीधी होती हैं, उंगलियों के ऊपर के पोर कठोर और न झुकने वाला होता है।

—:o:—

दूसरा परिच्छेद

मणि बन्ध (Rascitte)

आधार के बिना संसार में कोई वस्तु नहीं है और न कोई वस्तु दीर्घकाल तक अपना अस्तित्व बिना आधार के रख सकती है। जितना आधार बलवान, मजबूत तथा सुन्दर होगा उतना ही उस वस्तु का जीवन स्वस्थ, दीर्घ और आपदाओं से रहित होगा, क्या तो जड़ क्या चेतन और क्या भौतिक वस्तु प्रत्येक कुछ आधार रखती हैं और उसके सहारे आगे बढ़ती है, वैसे कहा जाता है कि अमर बेल अमर है, और उसकी जड़ नहीं होती है यह ठीक है सत्य, परन्तु अमर बेल को अमरत्व प्राप्त करने के लिए वृक्ष, पौधा, झाड़, घास आदि का आधार के सहारे ही अमर बेल बल पाती है, पनपती है और हरी रहती है पन्च तत्व निर्मीत इस संसार में प्रत्येक वस्तु को आधार चाहिए, आधार ही जीवन तथा पोषण का रहस्य है। इसलिए हाथ के लिये पोषण प्राप्त हो तो उसको भी आधार की आवश्यकता है, हाथ का पोषण है मानव शरीर, सही रूप में मानव शरीर को पोषण प्राप्त करता है। परन्तु हाथ और मनुष्य के मध्य में है और जहां पर सन्धि ही आधार बन जाती है। हाथ और मानव शरीर के मध्य सन्धि को साधारण भाषा में कलाई कहते हैं और सामुद्रिक शास्त्र के अनुसार इस कलाई को मणिबन्ध कहते हैं।

"मणि बन्ध" का अर्थ है मणि बांधने का स्थान अर्थात जहां पर मणि बन्ध हो, वास्तव में मणिबन्ध, और मणिबन्धन (मणिबांधने का स्थान) दो बात हैं, और यह सत्य ही है इसके दो रूप हैं। जिस स्थान को मणि बन्धन कहा जा सकता है यह मानव शरीर में वह स्थान है जहां पर दैवज्ञ, पंडित कलावा, रक्षा सूत्र बांधता है। इसमें

मणि बन्ध

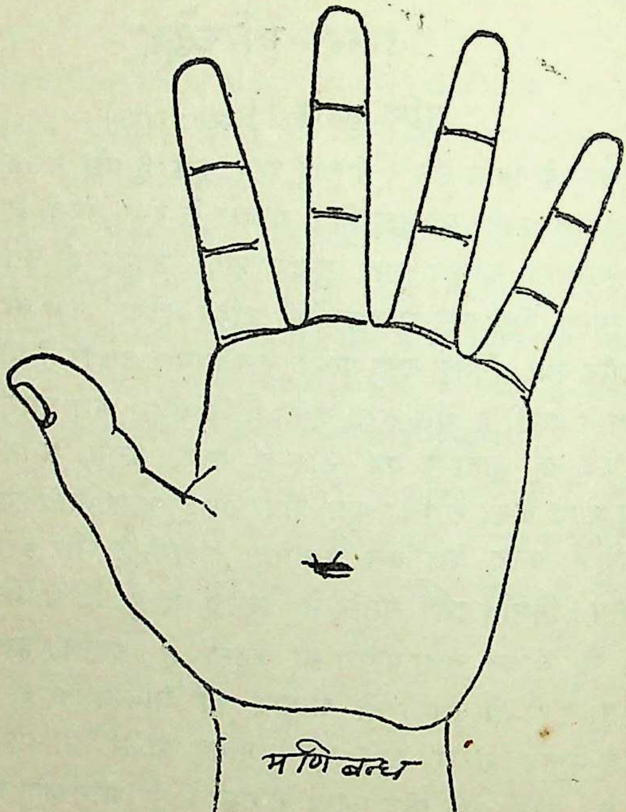

फिग ८

माँस, रक्त, मज्जा आदि सभी सम्मिलित हैं। सामुद्रिक शास्त्र इस स्थान का अध्ययन मणि बन्धन के नाम से नहीं करता है। वह स्थान इस ऊपर हाथ की ओर है। इस स्थान पर माँस, रक्त, मज्जा के अतिरिक्त भांति-भांति की रेखायें होती हैं, अत: जिस स्थान पर यह रेखायें होती हैं वह स्थान सामुद्रिक में मणिबन्ध है। मणिबन्ध की रेखायें इस स्थान पर अध्ययन का विषय नहीं है, इन रेखा विभाग में मणि-

बन्ध की रेखाओं के अन्तर्गत होगा, यहाँ पर तो मणि बन्ध की बनावट उसके निर्माण के प्रकार का अध्ययन किया जायेगा। इसके अतिरिक्त अन्य विषय चिन्ह आदि का अध्ययन "केतु के पर्वत" के नाम से पर्वतों के अन्तर्गत किया जायेगा, यह स्थान केतु के पर्वत के नाम से जाना जाता है।

मणिबन्ध हाथ का सर्वप्रथम भाग है, इस स्थान को सामुद्रिक शास्त्र में "पणि मूल" हाथ की जड़ अथवा दूसरे शब्दों में हाथ का प्रारम्भ भी कहते हैं। इस मणिबन्ध पर रहने वाली रेखाओं को मणिबन्ध की रेखा कहते हैं।

हस्त संजीवनी का मत है:—

मणि बन्ध र्नैनिगूढै र्हढैश्चित सुश्लिष्ट संधि भिर्भू या ॥
हीनै र्हस्तच्छेदाः श्लयैः सशद्वै श्च निर्द्र व्या ॥ १ ॥
द्वाभ्याँ च यव मालाभ्याँ राजा मन्त्री धनी बुधः ।
एक यायव पंक्त या च श्रेष्ट वटु धनोजियत ॥ २ ॥
मणि वन्धे यव श्रेण्य स्तिस्त्रश्चेप्स नृपो भवेत् ।
यदिता पाणि पुष्टेपि ततोधिक तरं फलम् ॥ ३ ॥

मणिबन्ध के छः भेद होते हैं :—

१. निगूढ़ मणिबन्ध या स्पष्ट मणिबन्ध
२. दृढ़ मणिबन्ध
३. सुश्लिष्ट सन्धि मणिबन्ध
४. हीन मणिबन्ध
५. सिथिल मणिब्रन्ध
६. सशब्द मणिबन्ध

१. निगूढ़ मणिबंध

जिस मणिबन्ध में जोड़ (संधि स्थान) न मालूम हो, ऐसा प्रतीत होता है मानो इस स्थान पर कोई जोड़ नहीं है। मणिबन्ध के स्थान

पर मांस समुचित मात्रा में होता है, मणिबन्ध के स्थान को हथेली से नीचे नहीं होने देता है। ऐसे मणिबन्ध तथा हथेली दोनों का धरातल सम होता है।

निगूढ मणिबन्ध वाला मनुष्य राजा होता है ऐसे मणिबन्ध वाला मनुष्य समाज में विशेष सम्मान प्राप्त करता है, इसे सभी प्रकार के सुख साधन प्राप्त होते हैं। भार्या भी योग्य और शुभ तथा सुन्दर प्राप्त होती है।

२. दृढ़ मणिबंध

दृढ़ मणिबन्ध पुष्ट होता है, यह मणिबन्ध आकार प्रकार से सुडौल होता है तथा यह मणिबन्ध देखने में सुन्दर लगता है। इस प्रकार के मणिबन्ध को दृढ़ मणिबन्ध कहते हैं।

दृढ़ मणिबन्ध वाला मनुष्य भाग्यवान होता है। यह अधिक परिश्रम करता है, और सर्वदा और हर परिस्थिति में सुखी रहता है। यह अपने ही द्वारा काफी धन कमाता है तथा समाज में मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यह अपना धन धर्म में व्यय करता है। इस प्रकार का मनुष्य काफी विशाल परिवार वाला होता है।

सुश्लिष्ट संधी मणिबंध

सुश्लिष्ट सन्धी मणिबन्ध उत्तम रीति से जुड़ा हुआ होता है, इसका सन्धि स्थान न मालूम हो तो ऐसे भविष्य को सुश्लिष्ट मणिबन्ध कहते हैं।

सुश्लिष्ट मणिबन्ध वाला मनुष्य यशवान होता है। यह जीवन के प्रारम्भ काल से उन्नति करता चला जाता है। यह मनुष्य विद्वान होता है, राज्य सभा में सम्मान प्राप्त करता है। यह नितिज्ञ पराक्रमी तथा यशवान होता है।

हीन मणिबन्ध

मणिबन्ध देखने में ऐसा मालूम होता है कि हाथ और कलाई

मध्य का जोड़ बहुत ही ढीला है तो ऐसे मणिबन्ध को हीन मणिबन्ध कहते हैं। वास्तव में मनुष्य के हाथ में मणिबन्ध होता ही नहीं है, इसलिए इस प्रकार के हाथ को मणिबन्ध हीन हाथ कहा जाये तो ठीक रहेगा।

हीन मणिबन्ध वाला मनुष्य भाग्यहीन, निर्धन, कमजोर, रोग से पीड़ित रहता है। यह उतना ही दुःखी रहता है कि मानो इसके हाथ न हों, यदि इस प्रकार के मणिबन्ध वाले मनुष्य के हाथ में अन्य लक्षण शुभ न हों तो ऐसा मनुष्य चोर होता है और राज दण्ड भोगता है, इसके हाथ राजा के द्वारा कटवा दिये जाते हैं।

शिथिल मणिबंध

मणिबन्ध अत्यन्त कोमल (कमजोर) शिथिल, ढीला लटकता हुआ दिखाई देता है। यह थोड़ा कठिन परिश्रम, अथवा तनिक से झटके से यह मणिबन्ध व्यर्थ सिद्ध होता है। इस प्रकार के मणिबन्ध को शिथिल मणिबन्ध कहते हैं।

ऐसे मणिबन्ध वाला अपने जीवन में कभी भी उन्नति नहीं कर पाता है, हर समय नोन, तेल, लकड़ी की चिन्ता में फंसा रहता है। निर्धन होने के कारण बुरे कर्म करता है इस कारण राज दण्ड का भागी अथवा कारावास भोगा करता है।

सशब्द मणिबंध

मणिबन्ध असुन्दर, कमजोर हो, जब हाथ को हिलाने पर कुछ 'कट-कट' की आवाज करता है। हड्डी के जोड़ पुष्ट न हो तो ऐसे मणि-बन्ध को सशब्द मणिबन्ध कहते हैं।

सशब्द मणिबन्ध वाले मनुष्य भाग्यहीन होते हैं, इनका जीवन कलहपूर्ण होता है, यह पग पग पर दुर्घटनाओं के शिकार हुआ करते हैं, जिस कारण यह जीवन में उन्नति नहीं कर पाते हैं। यह जीवन में हमेशा धन की कमी में रहा करते हैं। कठिन परिश्रम करने पर भी यह अपनी प्रारम्भिक आवश्यकताओं की पूर्ति नहीं कर पाते हैं।

तृतीय परिच्छेद

अंगुष्ठ (Thumb)

हाथ में अंगूष्ठा अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है। मानव जीवन के अध्ययन के लिए हाथ अपना महत्वपूर्ण स्थान रखता है और हाथ में अंगुष्ठ भी हस्त-परीक्षा में अपना विशेष स्थान रखता है। अंगुष्ठ के द्वारा मानव की स्वाभाविक मनोवृत्ति, शक्ति तथा कमजोरी का पूर्ण-रूप से ज्ञान होता है, अंगुष्ठ के विषय में 'Cheiro' ने लिखा है—

I hold to be one of the most important guides in the study of the hand. Cheiro."

इस विषय में ग्रीस के दार्शनिक विद्वान 'अस्तु' का मत है—

The superiority of man over animals lies in the hand. This superiority over other men in thumb. Aristotle."

अन्य अंग्रेजी विद्वान का मत है :—

The thumb consideration of this most wonderful member should be undertaken with a full appreciation of his power, and a realization of how much it can mean to you if properly understood. "William G. Benham."

दूसरे में अन्य अंग्रेजी सामुद्रिकाचार्य का मत है:—

Thumb which is the least important and constant digit of the anterior extermty of the res of the animals, becomes in man the most important element segment and that which makes its a hand property so called. "Sir-Richard Owen"

मनुष्य का चरित्र, स्वरूप, भावनायें, मनोवृत्ति का बहुत अधिक मात्रा में केवल गम्भीर भाव से अंगुष्ठ के अध्ययन से ही मालूम हो जाता है। मानव के अनेकों समुदाय और सभ्यताओं में विशिष्ट स्थान प्राप्त है।

यदि अंगुष्ठ का वैज्ञानिक दृष्टि से अध्ययन किया जाये तो यह स्पष्ट हो जायेगा कि अंगुष्ठ से मस्तिष्क का एक आश्चर्यजनक नाड़ी द्वारा सम्बन्धित है, जिसे अंगुष्ठ मस्तिष्क (Thumb Brain) कहा जाता है। इस स्थान को अंगुष्ठ स्थान कहा जाता है, और किसी कारण मस्तिष्क के अंगुष्ठ स्थान पर यदि अनावश्यक रूप से दबाव पड़ता है तो शरीर में उनके प्रभाव से एक विशेष प्रकार की कम्पन्न पैदा होती है, अथवा हलचल होती है और मनुष्य के नख से सम्बन्ध रखने वाली छोटी हड्डी बढ़ने लगती है और अंगुष्ठ की हड्डी के बढ़ने का लक्षण है कि शीघ्र ही शरीर में कोई विशेष रोग प्रकट होगा यह सूचना है। यह सूचना कभी भी मिथ्या सिद्ध नहीं होती है, इस सूचना पर विज्ञान भी असत्य नहीं कर सकता है हाँ यह सम्भव है कि मस्तिष्क के अंगुष्ठ स्थान पर भार के अनुसार इस रोग के उत्पन्न होने में समय का अन्तर हो सकता है। परन्तु रोग का होना निश्चित है। सामुद्रिक शास्त्र मानव शरीर को एक महत्वपूर्ण भाग मानकर उसका अध्ययन करता है और मानव के लिए भूत के अनुभव वर्तमान के कार्य तथा भविष्य के लिए मार्ग दर्शन करता है। यह विज्ञान पूर्व ही निश्चय तथा मार्ग-दर्शन करा देता है, यह आग लगने पर कुआ खोदने का उपदेश नहीं देता है। यह तो पूर्व ही कुआ खोदने का आदेश तथा आग लगने का अन्देशा पूर्व ही बता देता है।

मानव के मानसिक तथा मस्तिष्क सम्बन्धी अनेक बातों का ज्ञान अंगूठे से होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठे की बनावट से मानव के भाग्य के अनेकों रहस्यों का पता चलता है।

भाग्येन भवन्ति यगः पुंसश्चां गूष्ठपर्वसु स्पष्ठा ।
पोष विशेष निमित्तात्कर्मकृतं यशस्तुरंगी स्यात् ॥१॥
सुत वन्तः श्रुतवन्तो जायतेऽऽगुष्ठ भू लगैस्तु यवैं ।
मध्यागतैर्धन काच्चन रत्नास्या भोगिन सततम् ॥२॥
त्रिपरिक्षेपा मूलेड गुष्ठ गता भवति यरंच यवमाला ।
द्विप सुसमृद्धः स पुमानृजा वा राज सचिवो वा ॥३॥
यस्य द्वि परिक्षेपा सैव नरौ राज पूजितः स स्यात् ।
यस्ययैक परिक्षेपा यवमाला सोऽपि वित्ताढय ॥४॥
यस्यां गुष्ठाधस्तात्काकषदं भवति विस्पष्टम् ।
स नर पश्चिम काले शूलेन विपद्यते सद्य ॥५॥

भाग्यवश जिस मनुष्य के हाथ के अंगुष्ठ में जौ का चिन्ह प्रकट हो तो बड़े परिवार का पालक विशेष कारण से कर्मजन्य यशवाला तथा घोड़े आदि से युक्त होता है। जिसके अंगूठे की जड़ में जौ का चिन्ह हो तो ऐसा मनुष्य पुत्रवान विद्वान होता है, जिसके अंगुष्ठ के मध्य में जौ का चिन्ह हो तो धन, रत्न, स्वर्ण करके युक्त तथा सर्वदा सुख भोगने वाला होता है। जिस मनुष्य के अंगूठे की जड़ में जौ की माला की तिलड़ी हो तो ऐसा मनुष्य राजा या राजा का मंत्री होता है। यदि इस प्रकार की यव माला दुलड़ी हो तो ऐसा मनुष्य राजा को पूज्यनीय होता है, यदि एक यव माला हो तो ऐसा मनुष्य बहुत धनवान होता है। अंगुष्ठ के नीचे कौवे का चिन्ह हो तो ऐसा मनुष्य पिछली अवस्था में शीघ्र ही मर जाता है।

ऋज्वुरंगुष्ठ स्त्रिग्धस्तुंङ्गो वृत्त पदाक्षेणावर्त्त ।
अंगुष्ठेऽ धननत्तां सुधनानि समानि पर्वाणि ॥

सीधा, चिकना, ऊंचा, गोल और झुका हुआ अंगुष्ठ वाला मनुष्य धनवान, यशवान होता है। अंगुष्ठ कठिन तथा पोर बराबर के हों तो ऐसा मनुष्य धनवान होता है।

अंगुष्ठ के भेद

अंगुष्ठ की बनावट तथा अध्ययन की दृष्टि से हम अंगुष्ठ को दो भागों में बांट सकते हैं, क्योंकि अंगुष्ठ से मानव भाग्य तथा जीवन यात्रा के महत्वपूर्ण पहलू सामने आते हैं एक विशेष अंग्रेजी सामुद्रिक विज्ञान किरो का मत है: 'In India its is also regarded as supreme, and great attention is paid to its position, shape, power, angle and curves,

The thumb also represents the three great powers that control the world Love lagic and will.

अंगुष्ठ प्राय: दो प्रकार के होते हैं।

१. सीधा या सुदृढ़ अंगुष्ठ ।

२. कोमल एवं झुका हुआ अंगुष्ठ ।

सीधा या सुदृढ़ अंगुष्ठा

इस प्रकार के अंगुष्ठ की आकृति सुडौल तथा दर्शनीय होगी, यह अंगुष्ठ मानव के स्वभाव की अनिश्चता का दर्शन करता है इस प्रकार के जातक स्वेच्छाचारी, हठ करने वाले तथा कम बोलने वाले हुआ करते हैं। इस प्रकार के जातक की मस्तक रेखा सीधी हो तो जातक का स्वभाव स्थिर हो जाया करता है।

जातक की भावना तथा मनोवृति की दशा का रहस्य जाना जा सकता है। अत: किसी भी जातक के स्वभाव, मनोवृति तथा भावना तथा मनोवृति की दशा और आत्मशक्ति की अंगुष्ठ द्वारा ज्ञान होने पर भी मस्तष्क रेखा का विशेष ध्यान रखना चाहिए। जातक के स्वभाव आदि पर मस्तष्क रेखा का विशेष प्रभाव पड़ता है। वैसे जातक के उत्थान और पतन का निर्णय मस्तष्क रेखा ही किया करती है।

कोमल एवं झुका हुआ अंगुष्ठ

इस प्रकार के अंगुष्ठ वाले जातक अस्थिर स्वभाव वाले, यान में प्रत्येक पुरुष से मेल करने वाले चतुर तथा हठप्रिय नहीं होते हैं औ हठ करने वाले जातक को भी अच्छी दृष्टि से नहीं देखा करते हैं।

हस्त रेखा विज्ञान में हाथ की अंगुलियाँ, अंगुष्ठ बहुत ही मह

उर्ध्व भाग अत्यन्त स्थूल तथा वृत्ताकार अंगुष्ठ

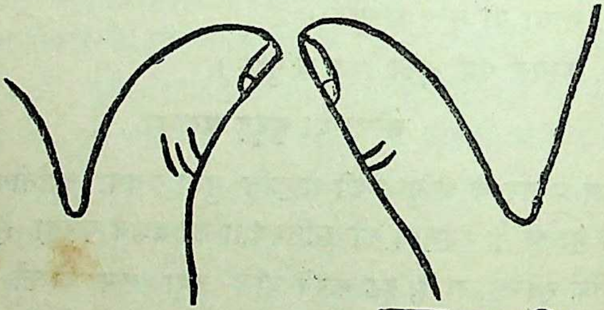

सुदृढ़ तथा सीधा अंगुष्ठ

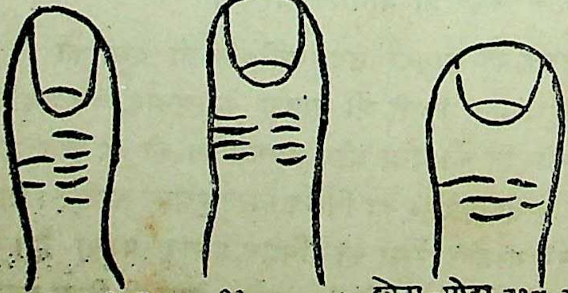

अत्यन्त नोकीला अंगुष्ठ — वर्गाकार अंगुष्ठ — छोटा-मोटा तथा भद्दा अंगुष्ठ

रखता है अंगुलियों की बनावट, डील-डौल तथा मोड़ पैतृक स्वभाव, जातक का चरित्र आचरण का द्योतक होता है। रेखाओं का परिवर्तन, विकास जातक के मंत, स्वभाव और आचरण का तथा जीवन की घटनाओं और जीवन की परिस्थितियों का वर्णन तथा प्रकाश डालती है। किसी जातक का अंगुष्ठ अपने पिता के समान होता है तो ऐसे जातक की प्रकृति, स्वभाव निश्चित रूप से उसके पिता के समान होगी।

अंगुष्ठ के अन्य भेद होते हैं। कोई-कोई अंगुष्ठ वर्तुलाकृति के होते हैं और कोई-कोई अंगुष्ठ मांसल आकृति के होते हैं, कोई-कोई अंगुष्ठ अति छोटे होते हैं तो कोई-कोई लम्बे होते हैं तो कोई कोई अंगुष्ठ अति कोमल होते हैं तो कोई कोई अंगुष्ठ अति कठोर होते हैं। जातक के हाथ के अंगुष्ठ का स्वरूप कमर की सी आकृति का होता है, किसी जातक के हाथ का अंगुष्ठ गद्देदार होता है तो किसी जातक का अंगुष्ठ मध्य में मोटा और बेडौल होता है।

अंगुष्ठ के अन्य भेद निम्न प्रकार है :—

चौड़ा अंगुष्ठ (Broad Thumb)

यह अंगुष्ठ देखने में चौरस और चौड़ा प्रतीत होता है तथा ठीक मजबूत प्रतीत होता है। यह अंगुष्ठ जातक के स्वभाव का प्रतीक है ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक जिस कार्य को करने लग जाता है उसे पूर्ण होने पर ही छोड़ता है। मध्य में कितनी ही कठिनाईयां क्यों न आयें यह लक्ष्य प्राप्त कर ही लेता है।

मजबूत अंगुष्ठ (Strong Thumb)

इस प्रकार के अंगुष्ठ वाले जातक की तर्क शक्ति ही प्रधान होती है। ऐसा जातक निश्चित विचारधारा वाला, बुद्धिमान, लगन का पक्का होता है प्रत्येक कार्य को ठीक प्रकार से विचार कर तथा धैर्य धारण करके कार्य प्रारम्भ करता है और अन्त में पूर्ण सफलता प्राप्त कर ही लेता है।

लचिला अंगुष्ठ (Flexldle Thumb)

लचीले अंगुष्ठ वाला जातक अधिक और व्यर्थ में खर्च करने वाला विशाल बुद्धि वाला, उदार हृदय, दूसरों के संकट में सहायता करता है, और ललित कला प्रेमी होता है।

भीरु अंगुष्ठ (Nervous Thumb)

इस प्रकार का अंगुष्ठ चपटा होता है। इसका सिर कोमल तथा रेखादार होता है। इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला जातक बिना विचार किये कर्म करने वाला तथा प्रत्येक कार्य को जल्दी समाप्त करने का प्रयास करता है, चाहे उस कार्य में सफलता प्राप्त न हो, ऐसा जातक बहुत कम सफलता प्राप्त कर पाता है। जीवन में कभी भी पूर्व सफल नहीं हो पाता है।

कठोर अंगुष्ठ (Stiff Thumb)

इस प्रकार का अंगुष्ठ कठोर होता है ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक कम व्यय करने वाला, कर्मशील, शान्त स्वभाव वाला, विचार करके प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने वाला, प्रत्येक बात को सुनकर शीघ्र उस पर कर्य को प्रारम्भ कर देते हैं और जल्दी ही अपना निर्णय दे दिया करते हैं।

प्रारम्भिक अंगुष्ठा (Elementary Thumb)

इस प्रकार के अंगुष्ठ की कोई निश्चित आकृति नहीं हुआ करती है यह केवल एक मांस के टुकड़े की तरह होता है। यह देखने में भी सुन्दर नहीं लगता है। इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला जातक व्यवहार कुशल नहीं होता है तथा ऐसे जातक की बुद्धि भी मन्द हुआ करती है।

साधारण अंगुष्ठा (General Thumb)

यह अंगुष्ठा अनेक प्रकार का होता है। इस प्रकार का अंगुष्ठ लम्बा हो तो जातक कला से प्रेम करने वाला तथा चंचल बुद्धि वाला

होता है। इस प्रकार का अंगुष्ठा यदि छोटा हो तो जातक कर्मशील होता है। कार्य करने में चतुर होता है। यदि इस प्रकार का अंगुष्ठा यदि चौरस होता है तो ऐसा जातक अधिक बात करने वाला होता है। कार्य से प्रेम करता है कभी भी बेकार बैठना पसन्द नहीं करता है।

पैडिल अंगुष्ठा (Paddle Thumb)

इस प्रकार का अंगुष्ठ नाखून की तरफ अधिक चौड़ा होता है। इस प्रकार का अंगुष्ठा न तो विशेष पतला और न विशेष चौड़ा होता है, इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला जातक अध्यात्मवाद की ओर अधिक झुकाव रखता है। ऐसे जातक के विचार प्रायः निश्चित हुआ करते हैं।

ढीला कोमल अंगुष्ठा (Soft Thumb)

इस प्रकार के अंगुष्ठा वाला जातक अधिकांशतः अस्थिर स्वभाव वाला होता है। यदि इस प्रकार के जातक की मस्तष्क रेखा सीधी न हो तो ऐसा जातक प्रकृति का इतना निर्बल होता है कि वह सहज ही में दूसरों के प्रभाव में आ जाता है और अपने सभी विचारों को समाप्त कर देता है।

यह ढीलापन पूर्ण अंगुष्ठ में न होकर किसी एक विशेष स्थान में भी हो सकता है। ढीलापन कभी अंगुष्ठ के नख वाले भाग में होता है तो कभी-कभी नीचे वाले भाग में होता है।

ढीलापन यदि अंगुष्ठ के नाखून वाले भाग में हो तो ऐसा जातक अनायस ही दूसरों से प्रभावित हो जाता है और उनकी कामना के अनुसार कार्य करना प्रारम्भ कर देता है। इस प्रकार के जातक की प्रकृति स्वभाव अस्थिर तथा दुर्बल होता है।

ढीलापन यदि अंगुष्ठ के निचले भाग में होता है तो ऐसा जातक परिस्थितियों का दास होता है, यह दूसरों के प्रभाव में आकर अपने विचारों में परिवर्तन कर दिया करता है। ऐसा जातक समय और परिस्थितियों के अनुरूप अपने विचारों में परिवर्तन कर लिया करता है।

अंगुष्ठ के प्रायः दो पर्व हुआ करते हैं।

१. उर्ध्व पर्व (ऊपर का भाग)
२. अधो पर्व (नीचे का भाग)

उर्ध्व पर्व

जिस जातक का उर्ध्व पर्व कोमल हो तो ऐसा जातक अत्यधिक उदार, अधिक तथा अनावश्यक कर्मों में धन का व्यय किया करते हैं। इस प्रकार के जातक दूसरों के प्रभाव में आकर अपने धन आदि का नुकसान कर लिया करते हैं। यदि यह मार्ग कठोर हो तो जातक चतुर, अपने कार्य में चालाकी से दूसरों को प्रभावित करके अपना कार्य निकाल लिया करते हैं।

अधो पर्व

जिस जातक का अधो पर्व (नीचे का भाग) कोमल हो तो ऐसा जातक विशाल हृदय होता है। अपनी स्वतन्त्रता को प्रिय मानता है, किसी का अपने ऊपर प्रभाव नहीं चाहता है। ऐसे जातक को अनायास ही धोखा नहीं दिया जा सकता।

अंगुष्ठ के प्रायः दो जोड़ हुआ करते हैं।

१. प्रथम अंगुष्ठ के नाखून के बाद का जोड़।
२. दूसरा अंगुष्ठ की जड़ का जोड़।

प्रथम अंगुष्ठ का जोड़

अंगुष्ठ प्रथम जोड़ पर झुका हो तो ऐसा जातक शीघ्र बहकावे में आ जाता है। कुछ काल में ऐसा जातक दूसरों के विचारों के अनुसार कार्य करने लग जाता है।

दूसरा अंगुष्ठ का जोड़

अंगुष्ठ का दूसरा जोड़ झुका हो तो ऐसा जातक बड़ा ही दूरदर्शी होता है, वह अपने अनुकूल परिस्थिति देख कर कार्य करेगा और सफलता प्राप्त करेगा यदि परिस्थिति अनुकूल नहीं हुई तो ऐसा जातक

कार्य प्रारम्भ नहीं करेगा यह कभी भी प्रतिकूल स्थिति का मुकाबला नहीं करना चाहता है, जो भी पक्ष प्रबल होता है उसी का पक्ष लेता है।

जिस जातक के अंगुष्ठ का प्रथम जोड़ मुड़ा हो तो ऐसा जातक अपने विचारों पर विशेष विश्वास नहीं रखता है, यह अनेक बार दूसरों के काम से अपनी हानि कर लिया करता है। व्यर्थ खर्चों में अपना धन व्यय किया करता है तथा अपने पैतृक धन को नष्ट कर दिया करता है। ऐसा जातक जीवन में पूर्ण सफलता प्राप्त करने में असफल रहता है।

ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक कभी किसी का उपकार नहीं करता है उपकार भी करता है तो किसी के कहने से अथवा दबाव में आकर ही करता है। यह स्वयं किसी कार्य को नहीं करते हैं। यह दूसरों के धोखे में शींघ्रता से आ जाते हैं, कभी २ तो बड़ी २ विपत्तियों में पड़ जाते हैं।

ऐसे जातक का अंगुष्ठ यदि धनुष की शकल का हो गया है तो वह शीघ्र ही किसी के कहने में नहीं आता है। यह धन व्यय के प्रश्न पर खूब विचार करता है, और बहुत ही सावधानी से काय करता है।

अंगुष्ठ में तीन भाग और भी होते हैं। जिस प्रकार अंगुलियों के तीन भाग होते हैं, ठीक इसी तरह अंगुष्ठ के तीन भाग होते हैं।

१. प्रथम भग (First phalauge) (ऊपरी भाग)

२. द्वितीय भाग (Second phelage)

३. तृतीय भाग (Third phalauge) (निचला भाग अथवा मूल भाग)

अंगुष्ठ के यह तीनों भाग जातक की मानसिक कलाओं, इच्छा-शक्ति, विचार शक्ति तथा प्रेम की घोषणा किया करते हैं जो भाग जितना सुन्दर होगा जातक की वही शक्ति उतनी प्रबल होगी।

प्रथम भाग (First Phalauge)

यह जातक की इच्छा शक्ति का केन्द्र है, इसके द्वारा जातक की इच्छा शक्ति के प्रत्येक रहस्य का ज्ञान होता है यदि यह भाग मध्य भाग से बड़ा होगा या मोटा होगा तो जातक की विचार शक्ति से उसकी इच्छायें और प्रबल होंगी, ऐसा जातक दूसरों पर बिना कारण अकड़ने वाला, व्यर्थ की अधिक बातें करने वाला होता है, व्यर्थ में झगड़ा मोल ले लिया करता है। यह भाग जितना अधिक लम्बा और चौड़ा होगा जातक उतना ही विचारों में स्वतन्त्र होगा, स्वछन्द तथा निरंकश होगा।

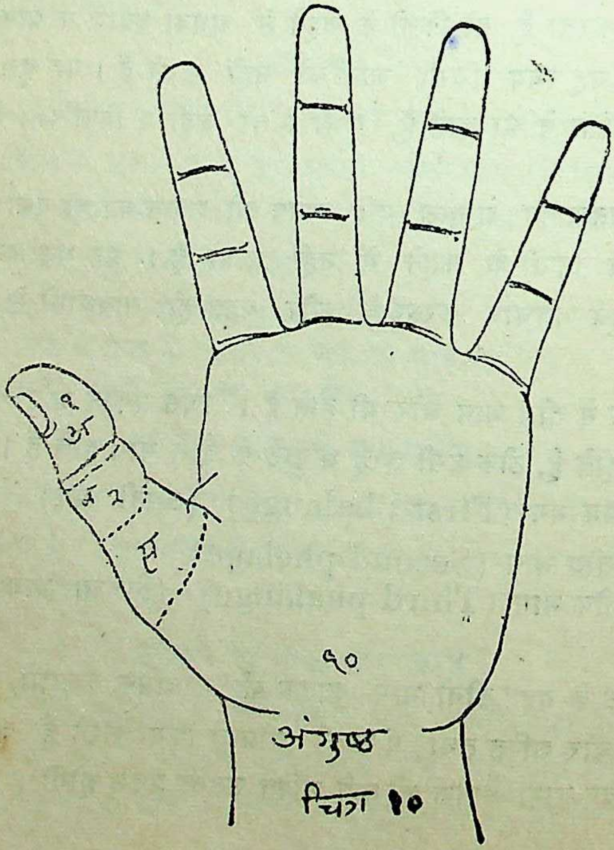

चित्र १०

यदि प्रथम भाग मध्य भाग से छोटा होगा तो ऐसे जातक का स्वभाव निर्बल होता है यह अपने ऊपर विश्वास नहीं करता है। तथा ऐसा जातक असफलताओं का बन्डल ही मात्र रह जाता है। ऐसे जातक के स्वभाव में चंचलता और कमजोरी होती है। यह भाग जितना छोटा होगा उतना ही दुर्बल होगा, उसे कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होगी। ऐसे जातक के स्वभाव में चंचलता आ जाती है। और यह भाग दृढ़ प्रतिज्ञ भी नहीं होता है। यह जितना छोटा होगा जातक की प्रवृत्ति में उतनी ही अधिक अस्थिरता, अविश्वास, चंचलता का समावेश हो जाता है। दे० चि० १०

यदि अंगुष्ठ का उर्ध्व भाग यदि नोंकदार हो वा चौकोर हो तो यह भी विशेष अच्छा नहीं रहता है। यह प्रथम भाग देखने में सुन्दर हो जाता है।

दूसरा भाग (Second phalauge)

मध्य भाग ऊपर के भाग के बराबर हो तो जातक जहां हठी होगा वहाँ विचारशील भी होगा। यह प्रत्येक कार्य में दूरदर्शिता से कार्य लेगा, और प्रायः सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेता है। यहां तक सुन्दर स्त्रियाँ सुन्दर लड़कियाँ भी इसके कार्य में रुकावट पैदा नहीं कर पाती हैं।

यह भाग प्रथम भाग से बड़ा होगा तो जातक की इच्छा शक्ति अधिक प्रबल होगी, ऐसे जातक की विचार शक्ति सर्वदा बाधा डालती है, किसी कार्य में यह सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है। ऐसे जातक को व्यापार आदि में भी सफलता कठिनाई से प्राप्त होती है।

यदि यह भाग प्रथम भाग के समान हो तो जातक साधारणतः अच्छा होता है, ऐसा अंगुष्ठ इस बात का प्रमाण है कि यह जातक स्वच्छन्द प्रकृति होने के साथ ही साथ विचारशील भी उसी सीमा का है। जिस सीमा में यह स्वेच्छाचारी होता है उसी सीमा का विचारशील

भी अतः इसका परिणाम अच्छा होता है। इस प्रकार ऐसा जातक किसी के प्रेम में पागल नहीं होता है। यह अपनी इच्छा शक्ति और विचार शक्ति के संयोग के कारण सभी कार्यों में सफलता प्राप्त कर लेता है।

तीसरा मूल भाग (Third Phalauge)

इस स्थान का स्वामी शुक्र है यह प्रेम का स्थान है, यह भाग शुक्र के पर्वत से सम्बन्धित है और मानव के ऊपर सभी ग्रहों की अपेक्षा शुक्र का प्रभाव अधिक रहता है और अधिक मात्रा में पड़ता है। इसी ग्रह के प्रभाव के कारण जातक प्रवृति संगीत तथा अन्य ललित-कलाओं की ओर आकर्षित होता है। ऐसे जातक को प्रत्येक मानव के प्रेम पात्र बनने की अभिलाषा रहती है। अतः इस भाग का प्रभाव जातक के जीवन पर अधिक रहता है। मानव जीवन में ममता और विषमता का होना इसी भाग पर निर्भर करता है।

अंगुष्ठ का यह भाग बड़ा हो और अंगुष्ठ के दोनों भाग प्रथम और द्वितीय छोटे हों तो जातक के ऊपर विशेष प्रभाव पड़ता है। ऐसे जातक का स्वभाव बहुत ही विचित्र हो जाता है। यह प्रेम के साम्राज्य में रहता है परन्तु यह प्रेम स्थायी नहीं होता है। ऐसे जातक का प्रेम केवल प्रेम मात्र, और केवल आमोद-प्रमोद तक ही सीमित रहता है। ऐसा जातक प्रेम पुजारी नहीं होता। परन्तु प्रेम का खिलाड़ी होता है। यह बहुत से स्त्री-पुरुषों से केवल स्वार्थ के लिए ही प्रेम करता है।

यह भाग अधिक प्रबल हो तो जातक अपने जीवन में किसी से भी प्रेम होने पर उसे सभी पर प्रकट कर देता है। वह प्रेम के विषय में बहुत हठ-धर्मी से कार्य लेता है, अपने विपक्षियों को प्रत्येक कीमत पर नीचा दिखाना चाहता है, और अन्त में गाली-गलौज भी कर बैठता है।

यदि यह भाग प्रबल हो और ऊपर का भाग कमजोर हो अथवा पतला हो तो ऐसा जातक प्रेम तो करता है, परन्तु भोग-विलास में

अधिक रुचि लेता है। यदि ऊपर का भाग अधिक छोटा हो अथवा सर्प की आकृति का हो तो ऐसा जातक दूसरों को धोखा दिया करता है, और अनेक बार स्वयं भी धोखा खा जाता है। यह अपने गलत कार्य को ठीक सिद्ध करने का प्रयास करता है, यह अपने विरोधियों को दबाने का भी षड्यंत्र करता है और जब यह देखता है कि उसका कार्य सिद्ध नहीं हो रहा है तो वह दूसरों से झगड़ा भी करता है। यह कभी-कभी अपनी भूल भी स्वीकार कर लेता है और ऐसा मानता है कि उसने विशेष गलती कर दी है और उसकी विशेष हानि हो रही है।

यदि यह भाग मध्यम प्रकार का हो तो जातक की प्रेम भावना पवित्र रूप से जागृत रहेगी और प्रेम, प्रेम के लिए नहीं, त्याग जीवन के लिए भी होता है।

यदि यह भाग अधिक छोटा हो अथवा पिचका हो तो प्रेम की भावना नहीं रहती है। ऐसे जातक की वीर्य शक्ति बहुत ही निर्बल रहती है। ऐसा व्यक्ति अपने में ही अधिक गम्भीर रहता है तथा दूसरों से भी अपनी सहानुभूति नहीं रखता है।

अंगुष्ठ के अन्य भेद

मध्य के भाग में मोटा जोड़ वाला भद्दा अंगुष्ठ :—ऐसा जातक अदूरदर्शी होता है तथा ऐसे जातक के विचार सूक्ष्म नहीं हो पाते हैं, वह बिना विचारे कोई भी काम करते हैं और सफलता न मिलने पर दुःखी होते हैं और एक बार कुछ भी असफलता मिलने पर अथवा अधिक परिश्रम आने पर कार्य को छोड़ देते हैं। यह ज्ञान शून्य तथा हठधर्मी किया करते हैं।

मध्य का भाग पतला अंगुष्ठ :—इस प्रकार के अंगुष्ठ वाले जातक बहुत दूर की सोच लिया करते हैं। किसी कार्य के अन्तिम परिणाम को ज्ञात करके ही कार्य प्रारम्भ करते हैं। ऐसे जातक की वीर्य शक्ति निर्बल होती है।

ऊपरी भाग अधिक पतला अंगुष्ठ :—ऐसे अंगुष्ठ वाले जातक की शक्ति निर्बल होती है, जातक के विचार अस्थिर होते हैं। इसकी इच्छा शक्ति बहुत ही निर्बल होती है, यह थोड़े ही परिश्रम से परेशान हो जाता है।

उर्ध्व भाग अधिक मोटा अंगुष्ठ :—ऐसे जातक का स्वभाव बहुत ही क्रोधी तथा बहुत ही विचित्र होता है, ऐसा जातक दया करना तो जानता ही नहीं है।

उर्ध्व भाग मोठा अंगुष्ठ :—ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक बहुत ही जिद्दी, हठी और झगड़ा करने वाला होता है, यह प्रत्येक बात पर झगड़ा करता है।

नोंकदार अंगुष्ठ :—ऐसे अंगुष्ठ वाले जातक का हृदय और दिमाग अपने में नहीं रहता है तथा ऐसे जातक का स्वभाव बहुत तेज होता है, हर समय कोई न कोई फितूर दिमाग में रहता ही है।

लम्बा और वर्गाकार अंगुष्ठ :—इस प्रकार के अंगुष्ठ वाला जातक बहुत ही चतुर होता है। प्रत्येक कार्य को शीघ्र ही स्वयं उस कार्य को करने लग जाता है, प्रत्येक कार्य में अपनी बुद्धि तथा परिश्रम से सफलता प्राप्त कर लेता है।

बहुत चपटा अंगुष्ठा :—ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक स्वयं कोई भी अपना कार्य नहीं कर सकता है। यह हमेशा दूसरों के सहारे कार्य किया करता है।

छोटा और मोटा तथा भद्दा अंगुष्ठ :—ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक अत्यन्त मूर्ख होता है, यह विचार नहीं करता है परन्तु हर समय झगड़े किया करता है, इस प्रकार यह प्रत्येक को सफलता प्राप्त करने से पूर्व ही क्रोध और झगड़ा करके समाप्त कर दिया करता है।

वर्गाकार तथा सिरे पर कुछ मोटा अंगुष्ठ :—ऐसे अंगुष्ठ वाला जातक अच्छे विचार वाला होता है। प्रत्येक कार्य को लगन से करता है परन्तु यह अपने को विशेष होशियार मानता है, इस कारण कुछ हद तक हठधर्मी की मान्यता में वृद्धि हो जाती है।

अंगुष्ठ का कोण

१. विषम कोण। २. अधिक लम्बा व चौड़ा कोण।

विषम कोण :—अंगुष्ठ और करतल के सन्धि क्षेत्र विषम हों अर्थात् कम चौड़ा हो तो ऐसा जातक उत्साहीन निर्बलात्मा, कायर, भास हृदय, निश्चेष्ट और पराधीन मनोवृति वाला होता है। यह आवश्यकता से अधिक सतर्कता व्यवहार में लाता है, परन्तु यह स्वतन्त्र आचरण वाला नहीं हुआ करता है। प्रत्येक विचारों का स्वागत करने लग जाता है भले ही उसका अहितकर क्यों न हो।

अधिक लम्बा चौड़ा कोण :—कोण जितना विस्तृत होगा जातक उतना ही अधिक स्वतन्त्र विचार, स्वेच्छाचारी वीर और उदार होगा। यह प्रत्येक कार्य को कार्य के अनुरूप दृष्टि से काम किया करता है।

कोण को देखते समय यह बात अवश्य देख लेनी चाहिए कि तर्जनी अंगुली और अंगुष्ठ के मध्य के भाग में अधिक निशान हो अथवा चौकर चिन्ह हो अथवा अंगुष्ठ मध्य भाग पर दोनों रेखायें आपस में न मिलें तो जातक का जन्म शुक्ल पक्ष में होता है। यदि इस प्रकार का नहीं तो जातक का कृष्णपक्ष में जन्म होता है।

अंगुष्ठ पर यव चिन्ह

अंगुष्ठ में यदि यव चिन्ह हो तो जातक धनवान होता है, यदि यह यव चिन्ह अंगुष्ठ के मूल भाग में है तो जातक धनवान होता है।

दाहिने हाथ के अंगुष्ठ के मध्य में यदि यव का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म शुक्लपक्ष तथा दिन में होता है।

बांये हाथ के अंगुष्ठ के मध्य में यव का चिन्ह हो तो जातक का जन्म कृष्णपक्ष तथा रात्रि में हुआ करता है।

दोनों ही अंगुष्ठ के मध्य में यव चिन्ह हो तो जातक का जन्म कृष्ण-पक्ष तथा दिन में होता है।

दाहिने हाथ के अंगुष्ठ में जितने यव चिन्ह होते हैं जातक के उतने ही पुत्र होते हैं।

बांये हाथ में जितने यव चिन्ह होते हैं जातक के उतनी कन्या होती हैं।

दाहिने हाथ के अंगुष्ठ में यव चिन्ह हो तो जातक की जननेन्द्रिय पर दाहिनी ओर बांये हाथ के अंगुष्ठ में यव चिन्ह हों तो जातक की जननेन्द्रिय की बाईं ओर तिल होता है।

चतुर्थ परिच्छेद

हाथ की अंगुलियां

(Fingers of Hand)

मानव के हाथ का एक प्रमुख भाग है मानव के हाथ की अंगुलियां। हाथ की अंगुलियों वाले भाग को महर्षियों ने "देव तीर्थ" का नाम दिया और देव पूजा, अर्चन वन्दन में हाथ की अंगुलियां ही प्रधानता रखती हैं। यह सिद्धान्त सामुद्रिक शास्त्र के आचार्यों ने ही नहीं कर्मकाण्ड के आचार्य ने भी माना और उन्हें स्पष्ट लिखा है।

कनिष्ठादेशिन्यं गुष्ठ, मूलान्य ग्रं कनस्य च।
प्रजापति पितृ ब्रह्मदेव तीर्थान्यनु कुमात्॥ आचारादर्श

प्रजापति तीर्थ अथवा कार्य-तीर्थ कनिष्ठा का मूल भाग में पितृतीर्थ तर्जनी के मूल भाग में, ब्रह्मतीर्थ अंगुष्ठ के मूल भाग में और इसी सिद्धान्त को स्वीकार करने में इस आधुनिक भौतिक तथा वैज्ञानिक अणु युग के वैज्ञानिकों का उन्नीस शताब्दी का समय लग गया। आधुनिक विज्ञान ने भी यह मान लिया है कि अंगुलियों के उर्ध्व भाग में अधिकांश में मस्तिष्क की अन्तिम सीमा है। इस बात से स्पष्ट सिद्ध है कि अंगुलियों से मस्तिष्क का सीधा सम्बन्ध है। अतः अंगुलियों के अच्छा अथवा बुरे का सम्बन्ध सीधा मस्तिष्क से है।

भारतीय कर्मकाण्ड के आचार्य ने स्पष्ट कहा है—

"पर्वमिस्तु जपे देवी माला काम्य जपे स्मृता।
गायत्र्या वेद मूलत्त्वाद्वेदः पर्व सु गीयतै॥

"गायत्रीकल्प"

गायत्री का मूल वेद है, और वेद गान पर्वों पर होता है, इसलिए गायत्री का जप पर्वों पर भी करें, साथ ही।

अंगुल्यग्ते च यज्जप्तं यज्जप्तं मेरु लग्धनात् ।
पर्व सन्धिषु यज्जप्तं तत्सर्वं निष्फल भवेत् ॥

अंगुलियों के अग्रभाग (पोर) अथवा नख के पास का भाग तथा पर्व की लकीर पर और सुमेरु का उल्लंघन कर किया हुआ जाप निष्फल होता है । इस प्रकार ज्योतिष हस्त रेखा विज्ञान की दृष्टि से यह विषय महत्वपूर्ण नहीं है परन्तु धर्म, अर्थ, और मोक्ष के साधन के लिये संसार रूपी अथाह सागर में शरीर रूपी नाव की सबल पतवार अंगुलियां हैं ।

इस विषय पर किरो ने लिखा है—

The knotty fingers arrest the impetuousness of the disposition give reflection. Frim and stiff fingers indicate methodical stick-at-it quality of head and heart. Every kind and quality of fingers holds a treasure of purposeful meaning for those who have the eyes to see and ears to hear the oecult voices of Palmistry.

हाथ में अंगुलियों का महत्त्व तब और भी स्पष्ट हो जाता है जब कि प्रत्येक अंगुली अपना विशेष और स्पष्ट महत्त्व रखती है । यदि आप मानव के जीवन का अध्ययन करना चाहते हैं और आप मानव के विषय में स्पष्ट भविष्यवाणी करना चाहते हैं तो आपको प्रत्येक अंगुली को अत्याधिक विचार मनन और अध्ययन के बाद ही आपकी कसौटी पूर्ण होगी । जब ही भविष्यवाणी तथा मानव के जीवन का अध्ययन पूर्ण हो सकेगा ।

मानव की इच्छाओं का नाम ही जीवन है । जब तक मानव जीवित है, तब तक उसकी इच्छायें रहेंगी । जब इच्छा की समाप्ति हो जावे तो मानव के अपने जीवन महत्व की आवश्यकता भी समाप्त हो जाती है । मानव की इच्छा शक्ति पर एक मात्र मस्तिष्क का ही नियंत्रण होता

है। अथवा किसी विषय पर या किसी सम्बन्ध पर निर्णय की आवश्यकता हो तो यह सभी कार्य मस्तिष्क ही करेगा और निर्णय का प्रभाव मानव के वर्तमान तथा भावी जीवन पर प्रभाव होता है। चाहे यह प्रभाव अच्छा हो अथवा बुरा। वैसे भी मानव के वर्तमान कर्म से भविष्य का निर्माण होता है। मस्तिष्क का रहस्यमय सम्बन्ध अंगुलियों से है। अतः हाथ की अंगुलियों का जैसा स्वरूप और स्थिति होगी ठीक उसी प्रकार की स्थिति मस्तिष्क की होगी। अतः मानव के वर्तमान क्रिया-कलापों से उसका भविष्य तथा हाथ की अंगुलियों से मस्तिष्क और मस्तिष्क से वर्तमान इच्छा और क्रिया-कलाप तथा भविष्य की झांकी होती है। मानव जीवन का निर्माण हाथ की अंगुलियों से ही होता है।

इस शास्त्र का मुख्य उद्देश्य मानव को उसके जीवन के विषय में ज्ञान करना है, और अंगुलियों का भी अध्ययन मानव के जीवन का अध्ययन और उसे भावी जीवन के विषय में आने वाले संकटों का निवारण तथा उनका परिचय करना है। साधारणतः प्रत्येक मानव के हाथ में चार अंगुलियां हुआ करती हैं, परन्तु किसी-किसी के हाथ में पांच भी हुआ करती हैं। परन्तु ऐसा प्रायः बहुत कम देखने में आता है। सामुद्रिक शास्त्र के मतानुसार भी अंगुलियां चार ही होती हैं, पांचवीं अंगुली का कोई विशेष महत्व नहीं है, यदि है तो उसका फल उसी प्रकार का होगा जिस प्रकार से उसकी मां अंगुली का है अथवा जिस अंगुली से उसका जन्म है।

हाथ में अंगुलियां प्रायः एक-दूसरे से अलग होती है, यहां प्रत्येक अंगुली का नाम बतायेंगे, जिस नाम से वे अंगुलियाँ इस शास्त्र में प्रसिद्ध हैं। साथ ही आपको उनकी पहचान तथा अध्ययन में सुविधा रहे।

१. तर्जनी अंगुली (First Finger) (प्रथम अंगुली)
२. मध्यमा अंगुली (Second Finger) (द्वितीय अंगुली)
३. अनामिका अंगुली (Third Finger) (तृतीय अंगुली)
४. कनिष्ठा अंगुली (Forth Finger) (चतुर्थ अंगुली)

१. तर्जनी अंगुली

यह अंगुली हाथ में अंगुष्ठ के पास होती है। यह अंगुली अपने पास की मध्यमा अंगुली से छोटी होती है। मध्यमा अंगुली हाथ में सबसे बड़ी होती है।

३. अनामिका अंगुली

यह अंगुष्ठ की ओर से हाथ की तृतीय अंगुली तथा हाथ की सबसे बड़ी अंगुली मध्यमा के पास होती है। यह मध्यमा तथा तर्जनी से छोटी होती है। देखिये चित्र ११

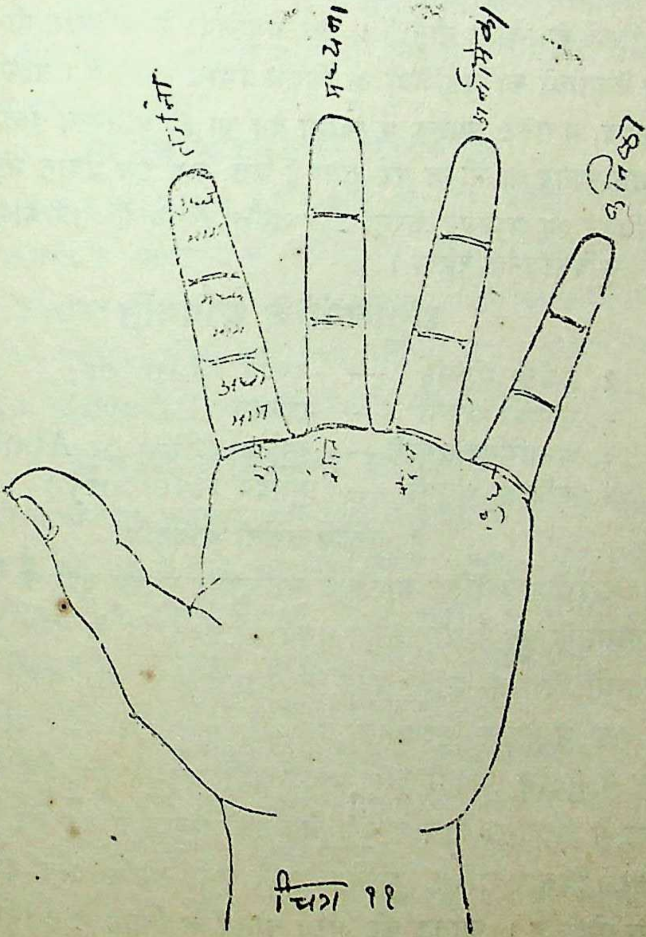

चित्र ११

४. कनिष्ठा अंगुली

यह हाथ की चतुर्थ अंगुली है। अंगुष्ठ के सबसे अन्त में तथा हाथ में बाहर की ओर से सबसे प्रथम तथा हाथ में सबसे कम लम्बी अर्थात् सबसे छोटी अंगुली को कनिष्ठा अंगुली के नाम से सामुद्रिक शास्त्र में पुकारा जाता है। देखिये चित्र ११

हाथ की अंगुलियों में देवताओं का वास होता है और वही देव उन अंगुलियों के स्वामी होते हैं। उन अंगुलियों के अधिपति होने के कारण इन देवताओं का अंगुलियों पर विशेष प्रभाव रहता है। प्रत्येक अंगुली के निर्माण, बनावट, स्वरूप में स्वामी देव का ही अधिपत्य होता है, उसका प्रभाव मानव के जीवन पर होता है अतः यहां इन प्रधान अंगुली पतियों के विषय का अध्ययन करना और उनके विषय में ज्ञान प्राप्त कर लेना और सुविधाजनक रहेगा।

अंगुलियों के अधिपति

१. तर्जनी अंगुली — गुरुदेव (Jupiter)
२. मध्यमा अंगुली — शनिदेव (Saturn)
३. अनामिका अंगुली— सूर्यदेव (Sun or Apollo)
४. कनिष्ठा अंगुली — बुधदेव (Mercury)

१. गुरुदेव तर्जनी अधिपति

भारतीय ज्योतिष शास्त्र के मतानुसार गुरुदेव बुद्धि के देवता हैं, यह देवताओं के गुरु हैं और समय-समय पर देवताओं के संकट काल में जब देवताओं की सभी शक्ति कार्य में असमर्थ होती थी, देवताओं के संकट की वेला में केवल गुरुदेव ही एक मात्र सहारा थे और उस संकट की बेला में गुरुदेव अपनी बुद्धि चातुर्य तथा अद्भुत सूझ-बूझ के द्वारा उस संकट से छुटकारा दिलाते थे। ठीक इसी प्रकार जातक की बुद्धि चातुर्य, विद्या, विचार शक्ति, शीलता आदि गुणों का अध्ययन इस अंगुली के द्वारा होता है। जातक की बुद्धि चातुर्य के विषय में तर्जनी अंगुली का अध्ययन करने के बाद ही कुछ कहना चाहिये।

२. शनिदेव मध्यमा अधिपति

गुरुता तथा स्थाई प्रभाव और क्रोध के शनिदेव सर्वप्रसिद्ध हैं, शनि के नाम से ही मानव के हृदय में स्वयं एक भय पैदा हो जाता है। इसी प्रकार शनि की मध्यमा अंगुली हाथ की प्रधान बड़ी तथा गुरुतापूर्ण बलिष्ठ अंगुली है। अनुकूल होने पर ही शनिदेव लाभदायक होते हैं, वैसे साधारणत: शनिदेव का प्रभाव हानिकारक तथा कष्टप्रद ही रहता है। अत: मानव के स्वभाव, स्थाई समाधान, मानव मनोवृति के अध्ययन के लिये मध्यमा अंगुली शनि की अंगुली के अध्ययन के बाद भविष्यवाणी करनी चाहिये।

सूर्यदेव अनामिका अधिपति

सूर्यदेव प्रकाश के अधिपति हैं। प्रकाश, तेज, यश, कीर्ति भाग्योदय, जीवन में उन्नति के अध्ययन में सूर्यदेव की प्रधानता रहती है, और जातक का उपरोक्त विषय में अध्ययन करना हो तो सर्वप्रथम अनामिका का मध्य रखना चाहिए, जातक की प्रतिमा का जितना स्पष्ट ज्ञान अनमिका से होता है, उतना किसी अन्य अंग से नहीं होता है।

बुधदेव कनिष्ठका अधिपति

बुध को साधारणत: व्यापार तथा बुद्धि के देवता के रूप में स्मरण किया जाता है, इस ग्रह के द्वारा मानसिक शक्ति, इच्छा शक्ति कल्पना शक्ति, विचारधारा के सम्बन्ध में ज्ञान किया जाता है। अत: हस्त परीक्षा के समय मानसिक शक्ति, कल्पना शक्ति जातक की विचार धारा का इस कनिष्ठा अंगुली से विचार करना चाहिये।

जब जातक के हाथ को सीधा फैला दिया जावे तो कनिष्ठका अंगुली अपनी विशेष और स्पष्ट स्थिति रखने वालों कनिष्ठा अंगुली मानव के चरित्र निर्माण की कुंजी है। इससे जातक की महत्वकांक्षा, प्रतिभा, विषयाशक्ति, प्रतिभा, प्रेम तथा दुर्गणों का स्पष्ट संकेत यह बुध की अंगुली दिया करती है।

प्रत्येक अंगुली में दो गांठे हुआ करती हैं और प्रत्येक अंगुली तीन भागों में बंटी होती है और इन भागों को पोर अथवा युग कहते हैं, इन भागों को उर्ध्व भाग, मध्यभाग अधोभाग के नाम से पुकारते हैं।

प्रथम भाग युग के उर्ध्व भाग में कुछ चिन्ह होते हैं इनको शंख, चक्र अथवा शिव के नाम से पुकारते हैं, कुछ विद्वान शिव के स्थान पर गदा नाम से पुकारते हैं। हर अंगुली के चिन्ह एक से भी हो सकते हैं, और भिन्न-भिन्न भी।

अधोभाग में अंगुलियां प्रायः एक दूसरे से कुछ दूर पर होती हैं, यह आपस में प्राय: बिल्कुल जुड़ी हुई बहुत कम पाई जाती हैं जड़ में अंगुलियों से एक दूसरे से जुड़ा होना बिल्कुल असम्भव तो नहीं है परन्तु देखा बहुत ही कम जाता है।

उर्ध्व भाग अंगुली के प्रथम पोर के पिछले भाग में नाखून होते हैं। यह अंगुली को अधिक सुन्दर बनाने में साथ दिया करते हैं। लम्बी, चपटी, भद्दी अंगुलियां नाखून की बनावट के ऊपर निर्भर होती है।

अंगुली को तीन भाग में बांटने के हेतु रेखायें होती हैं, इनको युगधारा कहते हैं, पोर (युग) भी बीच में कटे फटे सुन्दर तथा भद्दे होते हैं। कुछ अंगुलियां साफ हो सकती हैं।

अंगुलियों के भेद

साधारणत: जब किसी जातक का हाथ देखा जाता है तो उसका हाथ बनावट की दृष्टि से दो प्रकार का होता है। प्रथम सुन्दर कोमल हाथ; द्वितीय कठोर अथवा दृढ़ हाथ, इसी प्रकार हम जातक की अंगुलियों पर एक दृष्टि डालें तो वह भी दो प्रकार की दृष्टिगति होती है।

१. गठीली अंगुलियां।

२. चिकनी अंगुलियां।

१. इस प्रकार की अंगुलियों में जोड़ों पर छोटी २ गांठें सी उभरी दिखाई देती हैं। इस प्रकार अंगुलियों में बहुत कम लोच पाई जाती है, इस प्रकार जातक हर बात को बहुत शीघ्र समझ लेता है भविष्य की बात सोचने वाला, बुद्धिमान, चतुर तथा बीते समय से शिक्षा ग्रहण करने वाला होता है। यह सामाजिक कार्यों में रुचि रखता है। यह कभी किसी की चाल में नहीं फंसता है, यह जातक अपना रास्ता स्वयं चुनता है। और अपने ही परिश्रम से यह निर्माण करता है, परन्तु अपने स्वार्थ को सर्वोपरि रखता है तथा भौतिक पदार्थों में इस प्रकार के जातक की विशेष रुचि होती है।

प्रत्येक अंगुली में प्राय: दो गांठें होती हैं।

१. ऊपर वाली गांठ=उर्ध्वपोर के पास की गांठ।

२. नीचे वाली गांठ=मध्य पोर तथा अधोपोर के मध्य की गांठ।

ऊपर वाली गांठ

यह गांठ बुद्धि से सम्बन्धित है। यह जातक की मानसिक तथा बौद्धिक शान्ति के विषय में दिग्दर्शन कराती है। यदि गांठ बड़ी हो तो जातक विचारवान, गुणवान तथा कलाकार होता है। यह किसी को धोखा नहीं देता है, न इस जातक की ईमानदारी पर सन्देह किया जाता है। यह स्वयं अपनी ही मानसिक चिन्ताओं का शिकार रहता है, काल्पनिक तथा स्वप्नलोक में विहार करना अच्छी और विशाल योजनाओं का निर्माण करना आदि इसके स्वभाव की साधारण बात हुआ करती है।

नीचे की गांठ

जिस जातक की नीचे की गांठ बड़ी हो तो वह भौतिक वस्तुओं से प्रेम करने वाला, सौन्दर्य प्रिय होता है, जातक के हृदय में स्वभाविक प्रेम भरा होता है। यह अपने शरीर को सुन्दर रखना प्रथम कार्य मानता है।

सुन्दर तथा भड़कीले वस्त्र पहनना, बन ठनकर रहना आभूषण पहनना, नित्य प्रति नवीन वस्त्रों को परिवर्तित करके पहनते रहना ही

इसका साधारण: स्वभाव होता है, धार्मिक कार्यों में भी इसका प्रेम होता है, यह देवालय में जाकर प्रार्थना करना, वहां अधिक समय व्यतीत करने में आनन्द प्राप्त करता है।

भाग्यवश दोनों ही गाँठें प्राय: समान हों तो जातक में निम्न लक्षण दिखाई देते हैं।

यह संसार में आदर्श स्थापित करता है परन्तु स्वयं उन पर नहीं चलता है। यह व्यभिचार प्रिय होता है और इस दुष्कर्म को भी यह इस प्रकार से समाज में प्रकट करता है, यह कर्म तो उस अमुक की तृप्ति को किया था इसमें मेरा कोई दोष नहीं है।

यह जातक अपने मन की बात किसी को प्रकट नहीं करता है। समाज के साथ अपने जीवन के सच्चे चित्र को प्रकट नहीं होने देता है। केवल जीवन के आदर्श भाग को प्रकट करता है।

यह जातक धार्मिक कार्यों में रुचि रखता है, परन्तु इसमें भी यह अपना स्वार्थ सर्वोपरि रखता है। यह अपने परिवार, भार्या तथा बाल गोपालों से विशेष प्रेम नहीं रखता है। परन्तु दूसरी स्त्रियों से प्रेम तथा प्रेम की सफलता में विशेष आनन्द तथा सफलता महसूस करता है।

ऐसा जातक देश तथा विदेश भ्रमण की इच्छा रखता है। परन्तु यह अपनी इच्छा को कभी भी पूर्ण नहीं कर पाता है। और जीवन के अन्तिम समय में तीर्थ यात्रा को अपनी बहुत बड़ी सफलता मानता है। ताजमहल जैसी प्रेम समाधियों से विशेष प्रेम करता है।

अपने मित्र वर्ग से भी अपने स्वार्थ साधन के लिए ही प्रेम करता है। यदि भाग्यवश मित्र से स्वार्थ सिद्ध नहीं हो पाता है तो अपने मित्र को किसी न किसी बहाने त्यागने का विचार बना लेता है और अन्त में त्याग कर ही देता है।

यह जातक अपनी बुद्धि पर अधिक विश्वास करता है और अपने पर अधिक विश्वास तथा अभिमान करता है। अभिमान के कारण प्रायः शत्रु वर्ग बना लेता है और नुकसान उठाया करता है। कभी कभी तो

यह विदेश यात्रा में शत्रु बना लेता है। और यह इसको विशेष हानिप्रद सिद्ध होती है।

ऐसा जातक प्रायः सूर्य तथा दुर्गा उपासना में विश्वास करता है। वह उपासना केवल स्वार्थ के लिए करता है, और जब स्वार्थ सिद्ध हो जाता है तो उसके बाद वह उपासना से भी हट जाता है।

ऐसे जातक में उदारता, दया, प्रेम, नम्रता आदि इसके चरित्र के केवल दिखावटी गुण होते हैं। किन्तु यह हृदय में सर्वदा दूसरों को समाप्त करने, हानि पहुँचाने आदि की कामना करता है तथा दूसरों को हानि पहुँचा कर अपने स्वार्थ का साधन कर अपनी सिद्धि मानता है।

ऐसा जातक दलबन्दी, गुटबन्दी में विश्वास रखता है तथा दल भी बनाता है, जब भाग्यवश इन बड़े २ षडयन्त्रों में स्वयं फंस जाता है और छुटकारा पाना कठिन हो जाता है तो यह अपनी आत्महत्या करने में भी सफलता मान लिया करता है और आत्महत्या भी कर लेता है।

अनेक बार ऐसा देखने में भी आया है कि समान गांठों वाले जातक सूर्य आदि की उपासना में उल्टे फंस जाते हैं, क्योंकि ऐसे जातक दूसरों को हानि पहुँचाने के लिए ही उपासना किया करते हैं। और अपने जीवन को नष्ट कर लेते हैं।

यदि प्रथम गांठ दूसरी गांठ से बड़ी हो तो जातक विचार कर ही कार्य प्रारम्भ करता है। ऐसा जातक कुशल कलाकार भी हो सकता है। यह दूसरों का आदर करता है तथा दूसरों से ग्रहण कर लाभ उठाता है यह जीवन में सदा अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति में लगा रहता है। ऐसे जातक के मन में यह विचार रहते हैं कि किस प्रकार और कैसे अपने कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त करे। यह जातक दूसरों के दुख में दुखी होता है और उसके दुख में सहायक होकर उसको लाभ पहुँचाया करता है। तथा उसके सुख में स्वयं सुखी भी होता है।

ऐसे जातक की धार्मिक प्रकृति सदा जागृत रहती है तथा गीता,

रामायण आदि धर्म ग्रन्थों को सुनना तथा दूसरों को सुनाने में ऐसा जातक प्राय: अपना पुण्य मानता है। जीवन के प्रथम भाग में साधुओं की सेवा तथा सत्संग किया करता है। और जीवन के दूसरे भाग में सुन्दर भार्या के कारण सदा जवानी में मस्त रहता है। किसी कार्य के बिगड़ जाने अथवा नष्ट हो जाने पर कभी भी विचलित नहीं होता है, यह इतना गम्भीर होता है कभी भी नहीं घबराता है। तथा धैर्य से दूसरों को साहस ही देता है।

यदि प्रथम गांठ बड़ी न हो अथवा दूसरी गांठ बड़ी हो तो जातक केवल दस्तकार अथवा कलाकार ही हो पाता है। ऐसा जातक किसी भी कार्य में पूर्ण सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है। केवल छोटी सी सफलता प्राप्त कर लेता है। यह जातक न व्यापार में पूर्ण सफल हो पाता है न पूर्ण कलाकार ही बन पाता है। यह किसी कार्य को अपनी शक्ति से प्रारम्भ नहीं करता है। प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व अपने सहयोगियों से विचार करता है और पूर्ण सफलता मान लेता है। यह जीवन में प्राय: मध्यम कोटि में रहा आता है।

चिकनी अंगुली :—इस प्रकार की अंगुली वाले जातक स्वभाविक कार्यों को करने वाले तथा जिस कार्य को प्रारम्भ कर देते हैं उसे जब तक नहीं छोड़ते हैं जब तक पूर्ण सफलता प्राप्त न हो जावे। भले ही इन के मार्ग में कितने ही संकट क्यों न आ जावें। कभी २ ऐसे जातक को मिथ्याभिमान हो जाया करता है, जिसके कारण संकटों से घिर जाता है।

अंगुलियों के अन्य स्वरूप

भारतीय दैवज्ञों के मतानुसार अंगुलियों के भेद तथा फल निम्न हैं।

सततं भवन्ति वालिता: सौभाग्यवतां सुमेधसां सूक्ष्मा: ।
पार्ष्यंगुलय: सरला दीर्घा दीर्घायुषां पुंसाम् ॥ १ ॥
नियतं कानिष्ठकां लिरनामिका पर्वं उल्लङ्घ्य ।
गद्यधिकतरा पुंसा वन मधिकं जालते प्रात: ।
दीर्घायुरं गुलीमि: सौभाग्य: पुत: सुदीर्घ पर्वाभि: ॥ २ ॥

स्थूला धनोज्झितानां शस्त्र युतानां बहिर्नताः पुंसाम् ।
ह्रस्वां गुल्याश्चि पिटाश्चेटानां हन्त जायन्ते ।। ३ ।।
अंगुष्ठां सुल्यो वा संख्यान्यू नाधिकाः स्फूटं यस्य ।
धन धान्यैः परिदीन सोऽल्यपायु भूर्तले भवाति ।। ४ ।।

भाग्यवान पुरुष (जातक) की अंगुलियाँ निरन्तर मिली हुई रहती हैं। और जिस जातक की दीर्घ आयु होती है उसकी अंगुली सीधी और बड़ी होती हैं। जिस जातक की कनिष्ठा अंगुली हाथ की सबसे छोटी अंगुली निरन्तर अनामिका के उलांधिकर आगे बढ़ी हो तो ऐसा व्यक्ति अधिक धनवान होता है। जिस जातक की अंगुली लम्बी होती है तो वह दीर्घायु होता है। जिस जातक की अंगुलियों के पोर बड़े २ हों तो वह धनवान होता है, जिस जातक की अंगुली टेढ़ी, सीधी छेद युक्त, पतलो होती है तो यह धनहीन दरिद्री होता है। जिस जातक की अंगुली मोटी और भद्दी होती है यह धन रहित ही रहता है, जिस जातक की अंगुली बाहर की ओर झुकी हों तो वह कठिन परिश्रम करने वाला तथा हथियार रखने वाला होता है। जिस जातक की अंगुली छोटी और चपटी हो तो यह जीवन भर दूसरों की सेवा किया करता है। और दास कर्म में रत रहता है।

प्रत्येक जातक के हाथ की अंगुली की बनावट भिन्न २ प्रकार की होती हैं। प्रत्येक जातक की अंगुली दूसरे जातक से भिन्न देखने में होती हैं। हाथ की अंगुलियों की बनावट से जातक के जीवन पर उतना ही प्रभाव पड़ता है जितना हाथ की बनावट का अथवा किसी विशेष रेखा या चिन्ह का। प्रत्येक अंगुली चाहे किसी बनावट की हो किसी प्रकार के गठन की हो तथा किसी भी स्वरूप तथा आकृति में क्यों न हो जातक के जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, हस्त परीक्षा करते समय अथवा सामुद्रिक के अध्ययन की दृष्टि से इसे भुलाया नहीं जा सकता। सामुद्रिकाचार्यों के मत से अंगुलियों की बनावट, स्वरूप आकृति आदि के निम्न भेद हुआ करते हैं।

लम्बी अंगुली

ऐसा जातक किसी भी बात को पूर्ण विचार करने पर ही स्वीकार करता है। यह उसी कार्य को प्रारम्भ करते हैं जिसको बिल्कुल ठीक मानते हैं। किसी भी कार्य में असफलता को देखकर व्याकुल हो जाना इनका साधारण कार्य है।

जिस जातक की अंगुलियाँ बड़ी २ और लम्बी हों तो इसका भाग्य सुन्दर होता है। माता पिता का इस पर विशेष प्रेम रहता है। इसके जीबन में दुखों की कमी रहती है। यह अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों से सहायता प्राप्त करता रहता है। ऐसी अंगुली लचीली होना भी आवश्यक है।

जातक की अंगुलियां विशेष लम्बी हों और चिकनी तथा सुन्दर न हों तो यह मध्यम भाग्यशाली होता है। यह एक स्थान पर नहीं रहता है, यह अनेक स्थानों पर भ्रमण करने वाला होता है। दूसरे मनुष्य भी इस जातक के कठिन परिश्रम से प्रेरणा लेते हैं।

जिस जातक की अंगुली लम्बी हों तो वह जीवन में अपने ऊपर विशेष अभिमान किया करते हैं। वह किसी आदमी को अपने से आगे बढ़ते नहीं देख सकता है। यह प्रत्येक पर अपना आधिपत्य देखना चाहता है। यहाँ तक उनके सम्बन्धी, मित्र, परिवारजनों पर भी अपना आदेश चलाया करते हैं। यह चाहते हैं कि उनकी आज्ञा के बिना कोई भी कार्य न करे यहां तक कि पत्ता तक बिना इनकी इच्छा के न हिले।

लम्बी अंगुली वाले जातक दार्शनिक व्यक्ति हुआ करते हैं। इनके जीवन में सन्देह का स्थान रहा करता है वह अपनी भार्या से भी कम प्रेम करते हैं, यह दूसरों का विश्वास बहुत कम करते हैं। यह विज्ञान में अपना नाम चाहते हैं, और विज्ञान के कार्य किया करते हैं। यह धार्मिक स्वभाव के होते हुए भी धर्म पर कम विश्वास किया करते हैं।

इस प्रकार की अंगुलियों वाला जातक अपने भाग्य पर अधिक भरोसा नहीं करता है। यह अपने इष्ट मित्र सहयोगियों की प्रायः उनके

पीछे बुराई किया करते हैं। हमेशा षडयन्त्र का निर्माण किया करते हैं, परन्तु प्रायः इनके षडयन्त्र असफल हो जाते हैं। कभी विशाल षडयन्त्र बना दिया करते हैं ऐसे समय में इनका भाग्य इनका साथ नहीं देता है, जिस कारण सभी योजनायें असफल हो जाती हैं।

लम्बी अंगुलियों वाला जातक प्रायः पार्टीबन्दी, गुटबन्दी को अधिक पसन्द किया करते हैं। यह दूसरे आदमियों में फूट डालकर अपना कार्य निकालता है। यह किसी के दुख दर्द में भाग नहीं लिया करता है। परन्तु ऐसें अवसर में भी अपने स्वार्थ का लक्ष्य रखकर ही कार्य किया करते हैं।

अधिक लम्बी अंगुलियां प्रायः धनहीनता का परिचय देती हैं। यह जातक जीवन में अधिक दृष्टि से प्रायः असफल सिद्ध हुआ करते हैं। यह संघर्ष तथा युद्ध में विशेष योग्यता रखते हुए भी आर्थिक दृष्टि में प्रायः असफल रहा करते हैं। आमदनी तथा धन की चिन्ता इन्हें हर समय कष्ट दिया करती है।

ऐसे जातक पर प्रायः जब भी संकट आ जाते हैं उस समय यह घबरा जाते हैं तथा दूसरों की सहायता पर निर्भर हो जाते हैं, यह स्वयं उस समय कोई भी कार्य नहीं कर पाते हैं। ऐसी अवस्था में इनके शत्रु पक्ष को अच्छा अवसर मिल जाता है।

लम्बी अंगुली वाले जातक प्रायः नास्तिक ही होते है तथा ऐसे जातकों में आस्तिकता होती है तो वह निराकार ब्रह्म की परन्तु इस प्रकार का जातक नास्तिक विचारों का प्रतिपादन नहीं करता है और इस पर न चर्चा ही करता है और न वार्तालाप में आनन्द ही लेता है।

लम्बी अंगुली वाले जातक के हाथ की अंगुली में गांठें भी हों तो ऐसे जातक पर विश्वास नहीं किया जाता है यह हमेशा समय पर धोखा ही दिया करता है तथा ऐसे जातक का चरित्र उज्जवल नहीं होता है। पर स्त्री पर धन में यह प्रेम करता है और उसकी प्राप्ति के लिए उपाय भी प्राप्त हो जाने पर अपने जीवन की बहुत बड़ी सफलता मानता है।

छोटी अंगुली :—छोटी अंगुली वाले जातक किसी भी विषय पर शीघ्र विचार कर लेते हैं। तथा किसी भी कार्य को ठीक समझकर तथा शीघ्र ही प्रारम्भ कर देते हैं।

कुछ जातकों के हाथ की अंगुलियां बहुत छोटी होती हैं तो ऐसा जातक सदा अपने ही घर के कार्य में लगा रहता है। ऐसी अंगुलियाँ प्राय: स्त्री जातकों की हुआ करती हैं। स्त्री जातकों की अंगुली प्राय: पुरुषों से छोटी होती हैं। साधारणत: आर्ध-विश्व पर स्त्रियों का शासन है। भारतवर्ष के विद्वानों ने स्त्री को पुरुष के आधे भाग का स्वामी माना हैं तथा भारत में तो घर के अन्दर का पूर्ण अधिकार स्त्रियों के हाथ में होता हैं।

ऐसा जातक हर समय घर में ही रहना पसन्द करता है। उसकी घर से बाहर निकलने की चाह पैदा ही नहीं होती है। यह हमेशा यही सोचता है कि किसी प्रकार घर में रहकर कार्य चल जावे बाहर जाकर कार्य न करना पड़े। व्यापार आदि करने वाला ऐसा जातक बाहर जाना पसन्द नहीं करता है। परन्तु उसकी इच्छा यही रहती है कि व्यापार घर में ही हो जावे ऐसे जातक अपने घर से दूर दुकान खोलना पसन्द नहीं करते हैं।

छोटी अंगुली वाला जातक विशेष लज्जाशील होता है ! यह किसी भी आदमी से बात करने से कतराता है। यह अपने प्रेमियों को दूर ही से देखकर प्रसन्न हो जाता है। यह कभी भी अपने प्रेमियों के पास स्वयं जाना पसन्द नहीं करता है। भाग्य से यह अपने प्रेमी के पास चला भी जावे तो यह प्रसन्नता में भर जाता है अथवा इतना अधिक लज्जाशील बन जाता है जो कुछ भी नहीं कह पाता है। परन्तु जाकर चुपचाप बैठ जाता है और किंकर्त्तव्यविमूढ़ की भांति देखता रहता है।

इस प्रकार की अंगुली वाला जातक दिल से साफ होता है खोटा नहीं होता है परन्तु यह अपने हृदय का भेद किसी को बताना पसन्द नहीं

किया करता है, यह अपने हृदय की बात केवल अपनी भार्या अथवा प्रियतम से प्रकट किया करता है अथवा उस मनुष्य से प्रकट करता है जिसका इसे पूर्ण विश्वास होता है और इसे यह भी ज्ञात हो जावे कि यह किसी भी बात को किसी भी परिस्थिति में किसी पर प्रकट नहीं करेगा तो उसे यह अपना भेद प्रकट कर दिया करता है। यह किसी भी अवस्था में किसी भी बात को नहीं भूलता है तथा जो इसके साथ जैसा व्यवहार करता है, यह भी उसके साथ उसी रूप में कार्य करता है।

ऐसी अंगुली वाला जातक हर समय इसी विचार में रहता है कि उस का अमुक सहयोगी किस प्रकार का व्यवहार कर रहा है तथा उसको कितना चाहता है। कितना प्रेम तथा स्नेह करता है।

छोटी अंगुली वाले जातक की परिश्रम करने की शक्ति अधिक होती है। यह कभी परिश्रम से थकता नहीं है। यह अपने हृदय में इतना निश्चित कर लेता है कि मैं जब तक परिश्रम करता रहूँगा तब तक सफ-लता प्राप्त न हो जावे और यह पूर्ण सफलता तक कार्य में लगा रहता है।

छोटी अंगुली वाले जातक जीवन में बहुत ही कम सफल हो पाते हैं। तथा जीवन में प्रसन्नता के अवसर भी कम प्राप्त हो पाते हैं। इस जातक को अधिक कष्ट सहने पड़ते हैं। इसके जीवन में जब भी कोई प्रसन्नता का अवसर आता है तभी कोई न कोई विपत्ति आ जाती है। जीवन में कभी कभी बहुत बड़ी लाचारी आ जाया करती है। इस कारण आत्महत्या का विचार तय कर लेता है। ऐसा जातक ५० या ५५ वर्ष में गृहस्थ को त्याग दिया करते हैं।

जहां तक जातक के चरित्र का सम्बन्ध है छोटी अंगुली वाला जातक सदा अच्छे चरित्र वाला होता है। दूसरों की स्त्रियों से प्रेम करना तथा परस्त्री गमन करना इनके स्वभाव के विरुद्ध होता है। इनके हृदय में हमेशा उच्च-विचार रहा करते हैं, इसके मस्तिष्क में यह विचार रहा करता है कि यदि किसी व्यक्ति ने इनके ऊपर लांछन लगा दिया अथवा

चरित्र पर दोष लगा दिया तो उनके परिवार की सारी इज्जत नष्ट हो जावेगी।

बस जातक के विषय में भारतीय शास्त्रकारों का मत है—

लघव अंगुलियं जीवने साहमिक्य स चरित्रं व दर्शयान्ति पर स्त्री गमंन पर नारी दर्शनं गपांपं। अस्ति जुरुषोण हष्टि दोष नर कनुम्यं मन्यते।

अर्थात छोटी अंगुली वाला जातक चरित्रवान होता है। यह परस्त्री गमन तथा पर नारी दर्शन को पाप मानता है। तथा पर स्त्री को गमन करना तो दूर रहा देखने की मान्यता को भी पाप मानते हैं। इस प्रकार के विचार सामुद्रिकाचार्य गार्डनन ने अपनी पुस्तक में प्रकट किये हैं—

The tery finger always show that man has a good nature and coolness in the maind. The person thanks that where eves the goes, gets, respect and reception.

मध्यवर्ती अंगुली :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियां मध्य कोटी की होती हैं अर्थात न तो बहुत बड़ी हों और न छोटी ही, वह सदा प्रसन्नचित्त रहता है, इसके मस्तिष्क में क्रोध अथवा किसी भी मनुष्य से घृणा बहुत ही कम रहती है।

मध्यवर्ती अंगुली वाला जातक सर्वदा यह विचार अपने मन में रखता है कि वह किसी का अहित न करे, यह अपने सम्बन्धियों, साथियों से अधिक से अधिक निकट का सम्बन्ध बनाना चाहता हैं। ऐसा जातक हमेशा शान्ति प्रिय हुआ करता है, यह विश्व शान्ति की कामना करता है, युद्ध आदि से विशेष डरता है। युद्ध काल में जन सेवा तथा शान्ति का कार्य प्रारम्भ कर देता है स्थान-स्थान पर शान्ति समितियां बनाता है और जनता से शान्ति से रहने के लिए कहता है। ऐसे जातक शान्ति के लिए आन्दोलन भी किया करते हैं। देश के सामने अन्न संकट अथवा अन्य किसी प्रकार का संकट आता है तो

ऐसा ज तक तन मन, धन से देश सेवा तथा संकट के निवारण में पूर्ण शक्ति लगा दिया करते हैं तथा उस संकट के निवारण के हेतु श्री हरि की विशेष उपासना पूजा तथा उपवास प्रारम्भ कर दिया करते हैं।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक का आर्थिक पक्ष सर्वदा ही सबल रहता है यह स्वयं इतना धन कमा लिया करते हैं जिससे स्वयं का तथा परिवार का भरण पोषण कर लिया करते हैं। कभी २ ऐसे जातक को पैतृक धन तथा गड़ा हुआ धन प्राप्त हो जाता है, जनता से भी उन्हें खूब चन्दा आदि प्राप्त होता ही रहता है। परन्तु यह किसी की अमानत को अपने हित में व्यय नहीं किया करता है।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक की अंगुली में गांठें हों तो ऐसा जातक भिन्न स्वभाव वाला होता है, संघर्ष करना इसके स्वभाव के विरुद्ध होता है, जब कभी भी संघर्ष होता है तो यह उससे बचना चाहता है और उस संघर्ष स्थान तक को त्याग देता है।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक के हाथ में यदि सूर्य, मंगल तथा बुध के स्थान श्रेष्ठ हो, अथवा इन ग्रहों के स्थान उभरे हुए हों तो यह जातक जीवन में उच्च स्थान प्राप्त कर लिया करते हैं इनके द्वारा चलाये गये आन्दोलनों में जनता असंख्य संख्या में बिना विचारे भाग लेती है, और यह आन्दोलन प्रायः ही सफल होते हैं। ऐसे जातक मन्त्री परिषद में तथा राज्यपाल आदि के पद प्राप्त कर लिया करते हैं।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक में एक विशेष गुण यह भी होता है कि यह कला प्रवीण होते हैं, इनके नेत्रों में सदा गम्भीरता रहती है, यह हर समय मस्तिष्क, हृदय दोनों ही से विचारकर कार्य किया करते हैं। किसी भी परिस्थिति में विचलित नहीं हुआ करते हैं। यह जीवन में युद्धप्रिय नहीं होते हैं परन्तु भाग्यवश इन पर युद्ध लाद दिया जाता है तो यह बड़े धैर्य से कार्य लेते हैं। और इस युद्ध में विजय प्राप्ति के लिए अपनी पूर्ण शक्ति (सफलता के लिये लगा दिया

करते हैं। यह अपने माता पिता के प्रिय पात्र होते हैं, मां-बाप के प्रत्येक कष्ट में पूर्ण सामर्थ्य के अनुसार उनके संकट निवारण के हेतु कार्य करते हैं। यहाँ तक अपने जीवन को न्योछावर करने को तैयार हो जाते हैं।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है परन्तु यह रोगी नहीं रहा करता है। साधारणतः निरोग रहते हुए भी कमजोर मध्य श्रेणी का होता है। बहुत कम अवसर ऐसे आते हैं जब ऐसे जातक को कष्ट भोगने पड़ते हैं कष्टमय समय में भी यह प्रसन्न चित्त रहा करते हैं।

मध्यवती अंगुली वाले जातक के मंगल, शनि के उभार (पर्वत) श्रेष्ठ हों तो ऐसा जातक अपने पिता परमपिता की कमाई हुई पूंजी से ऐश करते हैं और सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

यदि भाग्यवश मंगल शनि का पर्वत चपटा हो अथवा बैठा हो तो ऐसे जातक को अपने पितृपक्ष से धन का त्याग नहीं हुआ करता है और न किसी की सहायता से इन्हें लाभ हुआ करता है परन्तु यह जातक अपने भाग्य का निर्माण स्वयं किया करता है।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक की अंगुली में भाग्य से अधिक अन्तर हो तो ऐसा जातक भाग्यशाली होते हुए भी लक्ष्मीवान नहीं हो पाते हैं। धन की अधिकता होते हुए भी धन की आवश्यकता और कमी ही रहा करती है।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक की अंगुली गांठदार न हो, केवल लचीली और पतली हो, इनमें मध्यम श्रेणी का मोटापन भी न हो ऐसा जातक आर्थिक स्थिति में उन्नति नहीं कर पाते हैं तथा ऐसे व्यक्ति व्यापार आदि में पूर्ण उन्नति नहीं कर पाते हैं और न पूर्ण सफलता ही प्राप्त होती है।

मध्यवर्ती अंगुली वाले जातक के हाथ में गुरु का पर्वत उच्च हो

तो ऐसा जातक लेखन कला में निपुण होता है, ऐसा जातक लेखकों में अच्छा नाम पैदा कर लेता है, इसके द्वारा रचित ग्रन्थों को संसार में अच्छा मान प्राप्त होता है।

मध्यवर्ती अंगुली वाला जातक अपनी आशा और अभिलाषाओं के अनुरूप ही कार्य किया करते हैं, कभी कभी तो इनके जीवन का स्वरूप ही बदल जाता है। और एक नवीन दिशा में चलना प्रारम्भ कर देते हैं। यह जीवन में सुखी रहते हैं, इनका यश सभी ओर फैलता है।

बिल्कुल सीधी और चौरस अंगुली

इस प्रकार की अंगुलियां जड़ से लेकर ऊपर तक सीधी होती हैं। इनके तीनों पोर (युग) समान होते हैं, यह किसी स्थान पर न तो मोटी होती है और न किसी विशेष स्थान पर पतली ही होती है। यह अंगुली किसी ओर झुकी हुई भी नहीं होती है और टेढ़ी ही होती हैं। इसका ऊपरी भाग इसकी बनावट के अनुरूप ही होता है। इस प्रकार की अंगुली प्राय: स्त्री जातक की हुआ करती हैं। इसके नाखून प्राय: सुन्दर तथा चमकदार हुआ करते हैं। कामी पुरुष कोमल स्वभाव तथा स्त्री स्वभाव वाले पुरुष जातकों के हाथ में इसी प्रकार की अंगुलियां होती हैं।

ऐसी अंगुली वाला जातक प्राय श्रृंगार प्रिय, सुन्दर वस्तुओं से प्रेम करने वाला, खूब सजधज कर रहने वाला, मिलनसार, शीघ्र ही गर्म तथा शीघ्र ही सन्तुष्ट होने वाला होता है, अपने प्रियतम के हेतु सब कुछ करने को तैयार हो जाते हैं इनकी मित्रता बहुत कम ही स्थाई होती है।

इसी प्रकार की अंगुली वाले जातक के हाथ को बिलकुल सीधा करा दिया जावे तो अंगुलियों के बीच में स्थान अवश्यमेव दिखाई देता है। यह हो सकता है कि अन्तर कुछ कम हो अथवा अधिक हो, अथवा कुछ अंगुलियों के बीच में हो और कुछ बीच में बिलकुल ही अन्तर

न हो। यह छिद्र जिस अनुपात में होंगे, उसी अनुपात में फल भी प्राप्त हो सकेगा भाग्यवश यह छिद्र बड़े बड़े और स्पष्ट दिखाई दें तो ऐसा जातक धनहीन होता है। तथा जीवन भर आर्थिक संकट से घिरा रहता है।

कनिष्ठा और अनामिका अंगुली के मध्य में ऐसा छिद्र न हो तो ऐसा जातक वृद्धावस्था में सुखमय जीवन व्यतीत करता है। यह छिद्र हो और कम हो ऐसा जातक स्वतन्त्रता प्रिय होता है और वृद्धावस्था कष्टमय व्यतीत करता है।

अनामिका और मध्यमा के बीच अंगुली में स्थान न हो तो ऐसा जातक युवावस्था में सुखमय जीवन व्यतीत करता है। यदि यह छिद्र सूक्ष्म हो तो ऐसे जातक का स्वभाव स्थिर प्रकृति का होता है। इसकी बुद्धि उत्तम तथा विचारवान होता है, इच्छा शक्ति प्रबल होती है, यह प्रत्येक कार्य को खूब विचार कर प्रारम्भ करता है। तथा मध्य में संकट आने पर छोड़ता नहीं है। यदि यह छिद्र अच्छी प्रकार से दिखाई दे तो जातक का युवा काल संकटमय व्यतीत होता है प्रियजनों से मतभेद रहा करते हैं मध्यमा और तर्जनी के मध्य में इस प्रकार का छिद्र न हो तो ऐसा जातक बाल्यावस्था में सुख प्राप्त होता है। ऐसे जातक का प्रारम्भ काल सुखमय व्यतीत होता है। इसे माता पिता का पूर्ण सुख प्राप्त होता है। यदि यह छिद्र हो तो ऐसे जातक का बाल्यकाल कष्टमय व्यतीत होता है। इसके बाल्यकाल में माता-पिता का स्वर्गवास भी हो जाता है। जातक स्वप्न विचार वाला होता है। यह विशाल योजनाओं का निर्माण करता है। परन्तु वह सफल नहीं हो पाता है।

पतली चौरस किन्तु टेढ़ी अंगुली:—इस प्रकार की अंगुलियां बिलकुल सीधी तो नहीं होती है। किन्तु पतली और चौरस अवश्य होती है, यह झुकी हुई होती है। झुकाव आगे, पीछे और दांये तथा बांये किसी भी ओर हो सकता है। ऐसी अंगुली देखने में सुन्दर

नही लगती है देखने पर लगता है इस अंगुली पर किसी प्रकार का बोझ डाला गया है अथवा अन्य किसी प्रकार से कार्य लिया गया है। जिसके कारण इसकी बनावट तथा आकृति में इतना अन्तर आ गया है। यह दांये बांये झुकी भी हो सकती है। वैसे प्रत्येक अंगुली के झुकाव का फल पृथक होता है।

यदि हाथ की समस्त अंगुलियों का झुकाव एक ही ओर हो तो ऐसा जातक चंचल हृदय अस्थिर स्वभाव वाला होता है। ऐसा जातक किसी कार्य को स्थाई रूप से नहीं कर पाता और न इसका मन ही एक कार्य में लगता है।

ऐसी अंगुली वाले जातक की अधोपर्व, जड़ वाला भाग सीधा हो और ऊपर का भाग भी सीधा हो परन्तु मध्यम के भाग से अंगुलियों का झुकाव आगे की ओर हो तो ऐसे जातक का स्वभाव चंचल तथा हठीला होता है। यह अपने निश्चित किये हुए विचार पर भी स्थिर नहीं रहता है। यदि इसके निश्चित विचार के विपरीत कुछ कहा जाये तो यह अपने पक्ष में हठ का सहारा ले लेता है और जब अपनी हठ को पूर्ण कर लेता है जब ही इसे शान्ति प्राप्त होती है।

इस प्रकार का जातक चंचल हृदय, मन्द बुद्धि अस्थिर मनोवृति हठी, साहसहीन, एकान्त से विशेष प्रेम करने वाला, कम बोलने वाला सर्वथा मौन रहने की अभिलाषा रखने वाला, स्वयं अपने विचारों में रत रहने वाला निर्बल इच्छा शक्ति तथा अस्पष्ट विचार वाला होता है।

किसी जातक की केवल अंगुली देखकर भविष्यवाणी रहीं करनी चाहिए परन्तु हाथ के अन्य लक्षणों को भी देखना चाहिए, साथ ही हाथ की रेखा तथा शरीर के अन्य लक्षणों को ध्यान में रखना चाहिए, केवल हाथ की अंगुली का स्वरूप देखकर सभी भविष्यवाणी करना हो सकता है यह आपके उपहास का कारण बन सकता है।

जातक की सभी अंगुलियों का झुकाव पीछे की ओर हो तो जातक चालक होता है, उसकी प्रकृति गम्भीर होती है अंगुलियाँ मूल भाग में सीधी हों और समान हों और ऊपर की तरफ बढ़ती हुई पीछे की ओर झुक जावे तो जातक कूटनीतिज्ञ, धूर्त मायावी, छली, लम्पट अनेक प्रकार से छल करने में चतुर प्रबल इच्छा शक्ति वाला स्वालम्बी होता है। ऐसा जातक स्वयं अपने मार्ग का निर्माण करता है। यह एक वस्तु त्याग कर उससे अच्छी वस्तु पाने की इच्छा रखता है। इसकी इच्छाओं की पूर्ति कभी भी नहीं हुआ करती है।

ऐसे जातक की समस्त अंगुलियां कनिष्ठ अंगुली की ओर झुकी हों तो ऐसा जातक दुष्ट स्वभाव वाला दुष्ट मनोविचार युक्त निर्बल स्वास्थ, शक्तिहीन, अपनी बात पर अड़ जाने वाला होता है। इसके शरीर में शक्ति कम होने के कारण इसे क्रोध भी अधिक आता है, परन्तु यह अपने को अधिक शक्तिशाली मानता है। इस कारण प्रत्येक से हर बात पर लड़ने तथा मरने को तैयार हो जाता है।

यदि हाथ की समस्त अंगुलियां अंगुष्ठ की ओर झुकी हों तो ऐसा जातक विचारवान होता है। इसका हृदय भी विशाल तथा कोमल होता है। प्रत्येक बात को सोच समझकर कार्य प्रारम्भ करता है। यह अपने मित्र तथा सहयोगियों का समुचित आदर किया करता है। यदि यह भाग्यवश लेखक हो तो साहित्य विषय पर लेख लिखा करता है। यदि चित्रकार हो तो विशेष रूप से देवी देवताओं के धार्मिक चित्र बनाने में कुशल होगा। यह दानी तथा प्रतिभा सम्पन्न, आस्तिक हुआ करता है।

६. पतली किन्तु गोलाई युक्त अंगुलियां:—इस प्रकार की अंगुलियां पतली तो होती हैं परन्तु इनका स्वरूप भी गोल होता है! कुछ जातकों की अंगुली धनुष की तरह भी होती है, परन्तु साधारणतः जातकों की अंगुलियां साधारण गोली होती हैं। इस प्रकार के जातक बहुत ही

कठिन परिश्रम कर परिवार का भरण पोषण कर पाते हैं यह हर समय अपनी आवश्यकताओं की पूर्ति के कार्यों में लगा रहता है, यह विचारवान होता है। प्रत्येक कार्य चाहे अच्छा हो अथवा बुरा उस पर भली प्रकार विचार करते हैं। और जब ही कार्य करते हैं।

इस प्रकार की अंगुलियों में झुकाव होता है, यह झुकाव कभी आगे की ओर हथेली की तरफ होता है तो कभी पीछे की ओर भी हो सकता है।

जिस जातक की अंगुलियों का झुकाव आगे की ओर होता है तो जातक श्रमजीवी, परिश्रम करके स्वयं तथा परिवार का भरण-पोषण करने वाला अव्यवसायी होता है। ऐसा जातक कठोर से कठोर परिश्रम करके भी अपने परिवार का पालन-पोषण करने की क्षमता रखता है। ऐसा जातक कम विचारशील होता है, किसी भी विषय पर गम्भीर होकर विचार नहीं करता है, यह किसी विषय पर अपना निर्णय शीघ्र कर लेता है और कार्य भी प्रारम्भ कर देता है। यह समझदार होता है किसी भी प्रकार की बात जो इसके लिए उपयुक्त हो उस पर दूसरों की सलाह मान लेता है और कार्य भी उसी के अनुसार करता है ऐसे जातक की आवश्यकताएं अधिक होती हैं और उनकी पूर्ति ही में लगा रहता है, इसके व्यय के साधन सर्वदा आय से अधिक रहा करते हैं। यह अपने मनोवांछित फल और सफलता के हेतु सर्वदा कार्य करता रहता है परन्तु सफलता ९०% ही प्राप्त होती है।

इस प्रकार की अंगुली वाला जातक मध्य वर्ग का होता है, यह सदैव अपने विचार के अनुसार कार्य किया करता है। यह धन के लिए मृग-तृष्णा की तरह ही विचार करता रहता है।

जिन जातकों की अंगुलियों का झुकाव पीछे की ओर अर्थात हाथ के पीठ (कर पृष्ठ) की ओर रहता है तो इनकी योग्यता तथा प्रेरणा शक्ति से भी ऐसी हुआ करती है।

इस प्रकार का जातक मन्द बुद्धि कम सोचने की शक्ति वाला तथा मूर्ख ही होता है। यह किसी भी विषय पर कार्य से पूर्व विचार करने में सर्वदा असमर्थ रहता है। यह कार्य को प्रारम्भ करके कार्य की प्रक्रिया के अनुरूप ही सोच पाता है, और फिर उसी से प्रेरित होकर कार्य किया करता है।

ऐसे जातक में साहस तो नाम मात्र को भी नहीं होता है, किसी कार्य को करने से पूर्व ही इसकी हिम्मत टूट जाती है, और उधर से अपना हाथ ही खींच लेता है। किन्तु कभी कभी बड़ी योजनाओं का स्वप्नवत निर्माण अवश्य कर लेता है।

यह जातक भीरू तथा डरपोक होता है। इसे अपने बल तथा शक्ति पर बिल्कुल भी विश्वास नहीं होता है। इसलिए यह अपनी दुर्बलता को छिपाने के लिए प्राय: चुप ही रहा करता है।

इस जातक में कार्य करने की शक्ति बहुत कम मात्रा में होती है, इसलिए उस कार्य पर विचार ही किया करता है कार्य रूप में परिणित नहीं करता है। इसके कार्य करने की शक्ति प्राय: इसे धोखा दे दिया करती है।

७. मूल भाग में मोटी किन्तु ऊपर पतली अंगुली :—कुछ अंगुलियाँ मूल भाग जिस स्थान से अंगुली प्रारम्भ होती हैं। ये मोटी होती है किन्तु ऊपर का भाग पतला होता है। ऐसा जातक बुद्धिमान होनहार तथा चतुर और विद्वान होता है। यह जातक किसी न किसी कला में पूर्ण रूप से पंडित हुआ करता है यह ललित कलाओं का प्रेमी होता है और इसमें भी क्रियात्मक दक्षता प्राप्त कर लेता है।

यदि ऐसे जातक के हाथ के अन्य लक्षण अशुभ होते हैं तो यह चालाक, मक्कार तथा धन का लोभी होता है। यह जेब कटी भी करने लग जाता है। यह धन के लिए कत्ल तथा चोरी भी किया करता है।

यह जातक अपने विषय में बहुत कम विचार करता है। कोई भी कार्य कितना भी कठिन हो कितना मुश्किल क्यों न हो, यह धन के लोभ में सब कुछ करने को तैयार हो जाता है।

८. बिल्कुल सीधी किन्तु मोटी अंगुली :—यह अंगुली एकदम सीधी होती है और पर्याप्य मोटी होती है। ऐसी अंगुली के दोनों ओर दोनों छोर मोटे होते हैं, मध्यम भाग भी इन्हीं के अनुरूप होता है। इस प्रकार अंगुली समान रूप से मोटी दिखाई देती है। ऐसा जातक कठोर स्वभाव वाला, नित्य कलह प्रिय और निर्दयी होता है।

६. जड़ के पास मोटी और बीच में पतली अंगुली :—इस प्रकार की अंगुली बीच-बीच में पतली तथा गांठों पर मोटी होती हैं अर्थात गांठें अच्छी होती हैं।

इस प्रकार का जातक मिलनसार, अपने सम्बन्धियों से प्रेम पूर्वक व्यवहार करता है। प्रत्येक कार्य को प्रारम्भ करने के बाद पूर्ण करने पर ही त्यागता है।

१०. लचकीली अंगुलियां :—इस प्रकार अंगुलियां काफी लचकीली होती हैं। यह तनिक से झटके में लचक जाती हैं, यह दोनों ओर झुक जाती हैं।

ऐसी अंगुली वाला जातक अस्थिर स्वभाव वाला कोमल हृदय, थोड़े ही परिश्रम से थक जाता है। इसका साहस बहुत कम होता है। यह किसी कार्य के मध्य कुछ भी अड़चन आने पर कार्य को वहीं समाप्त कर देता है।

अंगुलियों का परिणाम

अंगुलियाँ हाथ के करतल (हथेली) के अनुसार छोटी तथा बड़ी भी होती हैं।

जिस जातक की हथेली चपटी हो और बड़ी हो और अंगुलियाँ बहुत लम्बी हों अथवा बहुत छोटी हों तो ऐसा जातक किसी भी आदर्श तथा व्यक्ति में विश्वास नहीं करते हैं, न यह जातक आशीर्वाद पर ही विश्वास रखते हैं। यह जातक ईश्वर पर विश्वास कम रखते हैं तथा ईश्वर के विषय में अनेक प्रकार कपोल-कथायें प्रचारित किया करते हैं। विशेष रूप से अपने ही कार्य पर बिचार किया करते हैं। यह किसी

कार्य पर जब तक पूर्ण विचार न कर लें तब तक उस कार्य को प्रारम्भ नहीं करते हैं और कार्य जब तक प्रारम्भ नहीं करते हैं जब तक कि इनकी अन्तर आत्मा इनको कार्य करने के लिए प्रेरणा न दे।

जिन जातकों की अंगुलियाँ लम्बी हों और पतली हों तो यह ईश्वर भक्त तथा आस्तिक होता है। जिन जातकों की अंगुलियाँ दोनों ओर लम्बी होंगी तो यह अपने ही में मस्त रहते हैं, यह किसी बात को जो इनके अनुरूप न हो तो उसे नहीं माना करते हैं।

जिन जातकों की अंगुलियाँ सीधी तथा पतली और लम्बी होती हैं तो यह जातक दूसरों के कार्य में अड़चन पैदा करते हैं तथा साथ ही अपने कार्य में किसी की सलाह तथा दखल स्वीकार करना भी नहीं चाहते हैं।

लम्बी अंगुली वाले जातक दूसरों पर अधिक विश्वास करते हैं, यह किसी भी कार्य को करने से पूर्व खूब सोचा करते हैं। यह प्रशंसा स्वयं ही किया करते हैं। यह थोड़ी सी बात पर घबरा जाते हैं। यह जब किसी व्यक्ति को अपने विषय में कहते सुनते देख लेते हैं तो यह मन में बहुत व्याकुल हो जाते हैं और अपने ऊपर लगाये गये दोषों के विरुद्ध में लम्बी चौड़ी वार्तायें सुनाया करते हैं, और जब तक वह आरोप दूर न हो जावे तब तक यह किसी न किसी प्रकार से अपना प्रयत्न जारी रखना अपना कर्त्तव्य मान लेते हैं।

छोटी अंगुली वाले जातक शीघ्र ही किसी विषय पर निर्णय ले लेते हैं, और शीघ्रता से कार्य में जुट जाते हैं। ऐसे जातक को किसी भी कार्य के लिए शीघ्र ही उकसाया जा सकता है। किसी भी कार्य को तत्काल करने में अपनी बुद्धिमानी मान लेता है और कार्य को शीघ्रता से करने में अपनी सफलता मान लेते हैं। यदि ऐसे जातक के हाथ भी यदि वर्गाकार हो तो यह बहस में खूब भाग लेता है। ऐसे हाथ वाला तथा अंगुलियों वाला जातक आमतौर पर भाषणकर्ता, व्याख्यानदाता, कथा वाचक तथा वकील के रूप में देखे जाते हैं।

मोटी और लम्बी अंगुलियों वाला जातक क्रूर स्वभाव, निर्दयी, क्रोधी तथा व्यर्थ में शत्रुता मोल ले लिया करता है तथा शत्रुता निभाने में काफी परिश्रम किया करता है। इसके स्वयं के दिमाग में इतना उतावलापन होता है कि जब किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त नहीं होती है तो अपने मित्रवर्ग पर व्यर्थ में ही आरोप लगा दिया करता है। यह उच्चपदाधिकारियों से मित्रता रखने का प्रयास किया करता है। यह अपने अधिकारी वर्ग के आगे अपने सहयोगियों तथा निम्नवर्ग के मनुष्यों की बुराई चुगलियाँ किया करता है जिस कारण अधिकारी वर्ग में अच्छी स्थिति बन जावे। अनेक बार इसको इस कार्य में सफलता प्राप्त होती है और जब असफलता मिलती है तो अपने अधिकारी पर दोष लगा दिया करता है।

भारतीय सामुद्रिकाचार्यों ने अंगुलियों को सोलह भागों में बाँटा है

१. अवलित अथवा सुस्पष्ट अंगुली :—सूक्ष्म अंगुली वाला जातक भाग्यवान, धनवान तया यशवान होता है।

२. सूक्ष्म अथवा छोटी अंगुली—सूक्ष्म अंगुली वाला जातक किसी बात को शीघ्र समझने वाला तथा मेधावी बुद्धि वाला होता है।

३. दीर्घ अंगुली—दीर्घ अथवा सरल अंगुली वाला जातक बड़ी आयु वाला तथा बहुत संतान तथा बड़े परिवार वाला होता है।

४. चपटी अंगुली—जातक क्रोधी निर्धन तथा दीर्घायु वाला होता है।

५. बाहर झुकी अंगुली—चंचल हृदय, किसी बात को शीघ्र और शीघ्र ही कार्य को समाप्त कर देता है।

६. चपटी अंगुली—यह अपने कार्य में लगा रहता है। ऐसा जातक निर्धन तथा विशेष परिश्रम किया करता है।

७. फटी हुई अंगुली—ऐसी अंगुली वाला जातक निर्धन कठिन परिश्रम करके अपने परिवार का भरण पोषण करता है।

८. छोटी अंगुली—ऐसा जातक अपने घर के कार्य में व्यस्त रहता है तथा विशेष लज्जावान हुआ करता है।

९. रूखी अंगुली—रूखी अंगुली वाला जातक अनिश्चित विचार वाला तथा क्रोधी स्वभाव का होता है।

१०. पृष्ठ भाग पर रोम अथवा केश युक्त अंगुली—पृष्ठ भाग पर रोम युक्त वाला जातक धनहीन कठिन परिश्रम करने वाला होता है।

११. ऊंची नीची अंगुली—ऊंची नीची अंगुली वाला जातक कठिन परिश्रम से धन कमाने वाला तथा बड़े परिवार वाला होता है।

१२. बाँकी टेढी अंगुली—बाँकी टेढी अंगुली वाला जातक कठिन परिश्रम करने वाला हथियार रखने वाला होता है।

१३. बहुत छोटी अंगुली—बहुत छोटी अंगुली वाला जातक अधिक परिश्रम न थकने वाला, अन्तिम सफलता तक कार्य करता है। यह विपत्ति में घबड़ा जाता है।

१४. पतली अंगुली—पतली अंगुली वाला जातक हठी, मन्द बुद्धि निर्धन तथा स्वयंलीन रहने वाला होता है।

१५. अलग अलग रहने वाली अंगुली—अलग अलग अंगुली वाला जातक धनहीन, स्पष्ट विचार वाला तथा चंचल हृदय होता है।

१६. सघन अथवा पास जुड़ी हुई अंगुली—सघन अंगुली वाला जातक कम बुद्धिमान तथा धन प्रेमी तथा धन संग्रह करने वाला होता है।

स्त्री जातकों की अंगुलियाँ टेढ़ी हों झुकी हों अथवा बांकी हों तो यह वैधव्य तथा हीनता चिन्ह है। यह अंगुली हाथ तथा पैर दोनों की हो सकती है।

यह हमने अब तक अंगुलियों से पूर्ण अध्ययन किया परन्तु ऐसा देखने में आता है कि जातक की हाथ की अंगुलियाँ एक प्रकार की नहीं परन्तु वह एक दूसरे से भिन्न हैं। अतः यहाँ पर एक एक तथा प्रथम प्रथम अंगुलियों के अध्ययन के लिए विवेचन की आवश्यकता है।

अंगुलियां और उनका स्वरूप

तर्जनी अंगुली प्रथम अंगुली (First Finger)

गुरु की अंगुली

तर्जनी अंगुली यदि छोटी होगी तो ऐसा जातक दूसरों से प्रेम से वालने वाला, मिलन-सार, बहुत ही चतुर होता है, प्रत्येक काम को शीघ्रता से पूर्ण करने वाला तथा फुर्ती करने वाला होता है। शील स्वभाव मिला चतुर लग्नशील तथा उत्तरदायित्वहीन होता है। इस अंगुली की परीक्षा करते समय इसके पर्वों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है। क्योंकि पर्वों की आकृति तथा स्थिति का बिशेष प्रभाव होता है। यह पर्व सारे के सारे फल को समाप्त कर देता है। अंगुलियों के पूर्व कुरूप, विकृत, विषम हो तो इसका फल भनायक होता है। यह अंगुली यदि लम्बी हो तो जातक स्वभाव से अभिमानी, विलासी, विलास का वस्तुओं से प्रेम करने वाला, ललित कलाओं का प्रेमी, उत्तम सुन्दर तथा भड़कीले वस्त्रों से प्रेम करने वाला, नाना प्रकार के व्यंजनों से प्रम करता है। ऐसा जातक १६ से २० वर्ष तक की स्त्रियों से प्यार करने को व्याकुल रहता है, यह जातक प्रेम के कारण प्रेम अभियोग में पकड़ा जाता है और जेल का मुंह भी देख लेता है। यह अपनी भार्या से आशा रखता है कि वह उसके साथ २४ घन्टे प्यार करती रहे तथा उसे अन्य लड़कियों के साथ प्यार करने की खुली छूट दे तथा स्वयं अपने ऊपर प्रतिबन्ध रखे।

तर्जनी अंगुली वाला जातक साहसी होता है। यह स्त्रियों को भगा ले जाने में बहुत चतुरता का प्रयोग करते हैं। चोर, डाकू तथा प्रेमी बदमाशों की अंगुलियां इसी प्रकार की होती हैं।

तर्जनी अंगुली का ऊपर का भाग गोल हो तो जातक अनुभवी और दूरदर्शी होता है। यदि अंगुली का उर्ध्व भाग वर्गाकार हो तो

जातक विचारशील, दूरदर्शी, मेधावी, बुद्धिमान तथा अनुभवी होता है।

तर्जनी अंगुली अग्र भाग से नोकदार हो तो जातक चंचल स्वभाव वाला, अस्थिर मनोवृत्ति वाला, विचारहीन, अदूरदर्शिता से युक्त तथा बुद्धिहीन होता है, ऐसा जातक प्रत्येक कार्य को बिना ही विचार किये प्रारम्भ कर देता है।

तर्जनी अंगुली समुचित हो तो ऐसा जातक स्वभाव से शान्ति प्रिय विद्वान, यशवान, भाषणकर्ता, प्रतिभाशाली, प्रबल मानसिक शक्ति सम्पन्न, समाज में प्रिय, प्रभावशाली, अध्यापक, सम्पादक, कथा-वाचक, ज्ञानवान होता है, यह अपने मार्ग का निर्माण स्वयं करता है तथा निश्चित रूप से ध्येय निर्माण कर कार्य करता है।

लम्बी तर्जनी अंगुली—ऐसा जातक शक्ति की उपासना करने वाला दान देने में उत्साही, शासनकर्ता, समाजिक नेता, शक्ति सम्पन्न, ऐश्वर्य-शाली, ऊंचे पद पाने की अभिलाषा वाला, भोग-विलासी प्रिय, अभि-मानी, परोपकारी तथा व्यवहार कुशल होता है।

विशेष लम्बी तर्जनी अंगुली—ऐसा जातक निष्ठुर स्वभाव वाला, आन्दोलनों में विशेष भाग लेने वाला, उपद्रव करने-करान में चतुर, पाशविक मनोवृति से युक्त, निर्दयी, हृदय हीन, दमन प्रिय, स्वयं ही अपनी प्रशंसा करने वाल तथा दूसरों से भी अपनी प्रशंसा कराने में रुचि रखने वाला विप्लवी, धूर्त तथा दुष्ट आत्मा तथा धार्मिक कार्यों में बहुत कम रुचि लेता है।

टेढ़ी तर्जनी अंगुली—जिस जातक की अनामिका अंगुली टेढ़ी होती है तो यह जातक शासन करने के लिए व्याकुल रहता है। अस्थिर विचार वाला, निर्बल इच्छा शक्ति वाला, अस्थिर मनोवृति तथा अनिश्चित विचार वाला, अस्त-व्यस्त भावनाओं से युक्त, प्रत्येक समय इसके दिमाग में आन्दोलनों की विचारधारा काम किया

करती है। यह किसी भी विषय पर निश्चित विचार नहीं रखता है तथा हर समय बदलता रहता है। इसके जीवन का कोई विशेष उद्देश्य नहीं होता है।

मध्यमा अंगुली (Second Finger) शनि की अंगुली

हाथ की दूसरी अंगुली को मध्यम अंगुली कहते हैं। इसका स्वरूप न तो बहुत बड़ा ही होना चाहिए और न बहुत छोटा ही मध्यमा अंगुली मध्यम श्रेणी की उत्तम रहती है। इस अंगुली का स्वामी शनि है।

मध्यम अंगुली लम्बी हो तो जातक एकान्तप्रिय, विद्याभ्यासी, स्वाध्यायी स्वभाव वाला और अपने में ही लगे रहने वाला होता है। यह जातक गम्भीर, आत्माभिमानी तथा बुद्धिमान होता है। इसकी रुचि गुप्त विद्याओं में होती है।

यह जातक चिन्ताओं से ग्रस्त तथा भाग्यवादी होता है। यह जातक आये दिन रोगी बना रहता है। कभी कार्य को भाग्य के अधीन छोड़ देता है और स्वयं किसी कार्य में हाथ डालने का प्रयास नहीं करता है। इच्छा शक्ति निर्बल होने के कारण यह किसी भी कार्य में उत्साह तथा साहस भी नहीं करता है। यह जो कार्य प्रारम्भ करता है उसी कार्य में असफल ही रहता है।

हाथ में कोई शुभ चिन्ह हो तो ऐसा जातक का प्रत्येक कार्य असफल सिद्ध होता है; साधारण कार्य, साधारण परिश्रम से उत्साह की समाप्ति हो जाती है। शनि का प्रभाव भी ऐसे जातक के उत्साह को समाप्त ही करता है। इसमें साहस पैदा ही नहीं होता है। इसके प्रत्येक कार्य में नीच मनोवृति का समावेश रहता है। ऐसे जातक छोटे-छोटे व्यक्ति अथवा निर्बल व्यक्तियों की सम्पत्ति पर अधिकार कर लिया करते हैं।

मध्यमा अंगुली लम्बी हो किन्तु वर्गाकार हो तो ऐसा जातक पशुओं तथा जानवरों से प्रेम करता है। ऐसे जातक का हाथियों तथा

घोड़ों से विशेष प्रेम होता है। ऐसा जातक आमतौर पर तांगे वाला तथा हाथीवान महावत होता है।

ऐसे जातक की अंगुली तर्जनी अंगुली के समान लम्बी हो तो जातक की मृत्यु भी हाथी अथवा अन्य किसी पशु के द्वारा ही होती है।

हाथ की मध्यमा अंगुली लम्बी हो साथ ही हाथ की तृतीय अंगुली अनामिका भी इनके समान हो तो ऐसा जातक जुआ खेलने वाला, बाजी लगाने वाला, सट्टेबाज, बटेर उड़ाने वाला होता है। यह अधिक से अधिक धन शर्त पर लगा कर बहुत खुश होता है। ऐसा जातक जुआ में अपनी सभी प्रकार की सम्पत्ति बाजी पर लगा देता है। इस प्रकार का जातक जो अपनी स्त्री तथा बच्चों को भी दाव पर लगा देता है।

इस प्रकार के जातक की हाथ की अंगुलियों के प्रथम पर्व लम्बे हों अथवा दोनों पर्व से बड़े हों तो जातक में उपरोक्त गुणों का अभाव रहता है। इसके विरुद्ध यह जातक सद्गुण सम्पन्न और आदर्शवादी, उत्तम चरित्रवान तथा समाज में प्रिय तथा आदर्श पुरुष हुआ करते हैं।

हाथ की अंगुलियों के पर्व लम्बे हों तो जातक अपने ही में अधिक मस्त रहा करता है। यह सदैव इसी विचार में रहता है कि मैं जो कुछ भी कहूँ वह सत्य हो और उसी का सभी अनुकरण करें, अर्थात वह वाक्य हो। ऐसा जातक किसी कार्य में असफल हो जावे तो यह बहुत ही दुखी हुआ करते हैं।

ऐसे जातक के जीवन में बहुत दुर्घटनायें हुआ करती हैं, जिनसे ये बच निकला है। परन्तु इसकी मृत्यु सहसा (यकायक) ही हो जाया करती है। इसकी मृत्यु पेट दर्द, सिर दर्द, अथवा हृदयगति के रुकने से हो जाया करती है।

मध्यमा अंगुली छोटी हो तो जातक सभा कार्य करने में उतावला रहा करता है। ऐसे जातक में गम्भीरता जैसी वस्तु नाम मात्र को भी नहीं हुआ करती है।

मध्यमा अंगुली छोटी हो और साथ में नुकीली हो तो जातक बुरे तथा कमीने विचार वाला होता है। ऐसा जातक विचारशील नहीं होता है।

मध्यमा अंगुली टेढ़ी हो तो जातक दूषित मनोवृत्ति वाला, बुरे विचार वाला चरित्रहीन होता है। ऐसा जातक आये दिन रोगी रहा करता है।

मध्यमा अंगुली का प्रथम पर्व लम्बा हो तो जातक निराशावादी होता है। यह अपने जीवन से भी मोह नहीं रखता है और न किसी कार्य में उत्साह रखता है। यह जातक एक प्रकार से मृत्यु के उपासक ही होते हैं, यह हर क्षण मृत्यु का आवाहन किया करते हैं।

मध्यम अंगुली का द्वितीय पर्व लम्बा हो तो जातक गुप्त विद्याओं का प्रेमी होता है। वेदान्त ज्योतिष हिप्साटिज्म, मिस्मेरिजम, परलोकवाद आदि में विशेष रुचि तथा प्रेम करता है। यह विद्याओं की साधना में रत रहता है।

मध्यम अंगुली का तृतीय पर्व लम्बा हो तो जातक जनप्रिय मितव्ययी, धनवान, योग्य चतुर, व्यवहार कुशल तथा प्रतिभा सम्पन्न तथा समाज में उच्च स्थान प्राप्त कर लेता है।

मध्यमा अंगुली समुचित हो—मध्यमा अंगुली समुचित हो तो जातक हृदय में यश कीर्ति की अभिलाषा रखता है। कलाकौशल प्रिय वस्तुओं से विशेष प्रेम रखता है। यह अपनी जीविका स्वयं पैदा करता है तथा किसी का सहारा लेना पसन्द नहीं करता है।

मध्यमा अंगुली लम्बी हो—मध्यमा अंगुली लम्बी हो तो जातक एकान्तप्रिय गुप्त विद्याओं से प्रेम करने वाला, स्वार्थ में रत रहने वाला धूर्त, कूटनीतिज्ञ तथा साहसी होता है। यह हर काम में चौकन्ना रहता है। यह स्वयं को समाज में साधु महात्माओं के समान प्रदर्शित करता है। यह धार्मिकता में रुचि रखता है तथा उसमें भी अपना स्वार्थ साधन करता है।

लम्बी मध्यमा अंगुली—स्त्री जातक के हाथ में हो तो यह काम प्रिय काम कला ने निपूर्ण तथा दृढ़ होती है। ऐसी स्त्री बाल अवस्था में विधवा हो जाती है और काम तृप्ति के लिए व्याभिचार प्रारम्भ कर देती है और अपने ही घर में व्यभिचार का अड्डा बना लेती है। इसकी काम वासना इतनी प्रबल होती है कि यह स्वयं की सन्तान आदि की चिन्ता न कर काम वासना शान्त कर लिया करती है।

मध्यमा अंगुली विशेष लम्बी—मध्यमा अंगुली विशेष लम्बी हो तो ऐसा जातक शारीरिक स्थिति में कमजोर रहता है। भोग-विलास की अभिलाषा बहुत ही कम होती है। ऐसा जातक विद्या अध्ययन की विशेष इच्छा रखता है। तथा स्वाध्याय में विशेष लगा रहता है तथा भाग्यहीन होता है। ऐसे जातक का यश विद्वता में चारों ओर फैल जाता है परन्तु आर्थिक दृष्टि से हमेशा कमजोर रहता है।

मध्यमा अंगुली टेढ़ी हो तो ऐसा जातक कलुषित विचार वाला, नीचे स्वभाव, पाशविक मनोवृति तथा नीच प्रकृति का होता है।

यह टेढ़ापन मध्यमा के मध्यम भाग में हो तो ऐसे जातक व्यभिचारी होते हैं। अनैतिक तथा अप्रकृतिक व्यभिचार में ऐसे जातक विशेष रुचि रखा करते हैं। यह स्त्रियों की अपेक्षा किशोरावस्था के बालकों के साथ अधिक व्यभिचार किया करते हैं। ऐसा जातक आतशय सुजाक, आदि गुप्त जननेद्रीय (गुदा लिंग) सम्बन्धि रोगों से विशेष रूप से ग्रसित रहता है। ऐसे जातक के विचार हमेशा सर्वदा व्यभिचार, में रहा करते हैं। इसका मुख्य कार्य किशोर सुन्दन युवा को ले जाना तथा उनसे व्यभिचार करना और बालक को अपने ही समान दुराचारी, व्यभिचारी बना देना इस अंगुली वाले जातक का मुख्य कार्य हुआ करता है।

मध्यमा अंगुली मध्य में टेढ़ी हो और ऊपर के भाग में नोकदार हो तो जातक की मनोवृति कमीनपने की होती है, प्रत्येक कार्य में ओछापन प्रकट करता हैं और न किसी बात पर किसी व्यक्ति पर विश्वास करता है।

अनामिका अंगुली, तृतीय अंगुली (Third Finger)

शनि की अंगुली

यह हाथ की तृतीय अंगुली है। इसका नाम अनामिका है इसका सम्बन्ध विशेषत: व्यापार दस्तकारी, धन धान्य से है।

अनामिका अंगुलियां लम्बी हो तो जातक यश की अभिलाषा रखने वाला, कला-कौशल से प्रेम करने वाला होता है।

अनामिका विशेष लम्बी हो तो जातक व्यापार में कौशल चतुर, बुद्धिमान, जुआ से प्रेम करने वाला, धन की लालसा रखने वाला होता है।

अनामिका अंगुली छोटी हो तो जातक उदासीन प्रकृति वाला तथा कला कौशल के कार्यों से प्रेम नहीं करता है।

अनामिका अंगुली टेढ़ी हो तो जातक कितने ही शुभ तथा अच्छे कर्म क्यों न करे परन्तु कभी यश प्राप्त होता है, परन्तु अपयश ही प्राप्त होता है।

अनामिका अंगुली का ऊपरी भाग पतला तथा नोकदार हो तो ऐसा जातक दस्तकारी, हस्तकला में प्रवीण होता है, किसी भी कार्य में सफलता प्राप्त करने के लिए धन व्यय करता है। यह धार्मिक कार्यों में खूब धन का व्यय करता है, यह अपने इष्ट, मित्र, बन्धुओं तथा सहयोगियों की खूब सहायता करता है।

अनामिका अंगुली तर्जनी अंगुली से छोटी हो तो जातक अपने दाम्पत्य जीवन में विशेष सफलता प्राप्त करता है। इसे व्यापार के क्षेत्र में अच्छी सफलता तथा ख्याति प्राप्त हो जाती है। यह व्यापार के सम्बन्ध में किसी का विश्वास नहीं करता। यहां तक अपने व्यापार में सहयोगियों (मुनिम आदि) पर विश्वास नहीं करता है। यह अपने परिवार के लोग बन्धु-बान्धव, इष्ट मित्र आदि की व्यापार में साझेदारी आदि नहीं करता है और न विश्वास ही करता है।

यदि इस प्रकार की अनामिका अंगुली वाले जातक को शुक्र तथा मंगल के पर्वत अच्छे न हो तो परिणाम तथा फल इसके विरुद्ध होगा। तब जातक को व्यापार क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं होती है और न भार्या से पटती है, परन्तु आये दिन क्लेश, मनमुटाव बना रहता है। यदि यह जातक हिन्दू धर्म का न होकर ईसाई अथवा मुसलिम धर्म का हो तो तलाक भी ले लेता है।

मंगल का पर्वत ठीक न हो तो जातक को व्यापार के क्षेत्र में सफलता प्राप्त नहीं होती है, भले ही धन और यश क्यों न प्राप्त कर ले व्यापार में सफलता के लिए मंगल का पर्वत शुभ होना आवश्यक है।

दाम्पत्य जीवन में सफलता के लिए शुक्र का पर्वत शुभ होना आवश्यक है।

अनामिका अंगुली और तर्जनी अंगुली लम्बाई में दोनों समान हो तो जातक कला-कौशल से विशेष प्रेम करता है। यह अपने हाथ से नित्य प्रतिदिन कुछ न कुछ नवीन वस्तुओं का निर्माण करता ही रहता है। तथा निर्माण पर प्रशन्नता अनुभव करता है। अपने कार्य में इसे यशस्वी होने की तीव्र इच्छा होती है। ऐसे जातक को हमेशा यह चाह रहती है कि वह किसी न किसी कार्य में अवश्य ही सफलता प्राप्त कर लेगा। ऐसा जातक परिश्रम करने से नहीं घबराता है, परन्तु हां इस कठोर श्रम में उसकी प्रेरक शक्ति यशस्वी होने की अभिलाषा ही रहा करती है। इसलिए ऐसा जातक यश की प्राप्ति के लिए कठोर से कठोर परिश्रम करने से पीछे नहीं हटता है।

अनामिका अंगुली—यदि तर्जनी अंगुली लम्बी हो तो जातक की उन्नति में बाधा किया करती है। ऐसे जातक को कठोर परिश्रम करने के बाद भी सफलता प्राप्त नहीं हुआ करती है। ऐसा जातक सफलता प्राप्त करने के लिए कठोर से कठोर परिश्रम किया करता है और सफलता के अनेक प्रयत्न किया करता है किन्तु अन्त में इसके द्वारा किये गये प्रयत्न मार्ग में रोड़ा बन जाते हैं। कार्य के प्रारम्भ में जो

इसको सहयोग दिया करते हैं वे ही व्यक्ति अन्त में इसके विरुद्ध हो जाते हैं और सहयोग प्रदान नहीं करते हैं परन्तु उसका विरोध ही किया करते हैं। इस प्रकार इसको सफलता प्राप्त नहीं हुआ करती है।

अनामिका अंगुली मध्यमा अंगुली के समान लम्बी हो और अनामिका का द्वितीय पर्व उन्नत लम्बा हो तथा मंगल का पर्वत भी उच्च हो तो ऐसा जातक तर्क शक्ति से सम्पन्न जुआ खेलने वाला, नीलाम, लाटरी आदि से भाग्य की उन्नति तथा परीक्षा के स्वप्न देखा करता है।

अनामिका अंगुली मध्यम, अंगुली के समान लम्बी हो तथा बुध, मंगल के पर्वत उच्च हों और अनामिका द्वितीय पर्व उन्नत तथा लम्बा हो तो जातक जुआ का अड्डा चलाने वाला, सट्टे का व्यापारी होता है।

अनामिका अंगुली साधारण हो तो जातक हस्तकला प्रेमी, हस्तकला में निपुण कलाकार होता है, यह प्रसिद्धि पाने के लिए अभिलाषी रहा करता है, यह जातक परोपकार करने वाला, दूसरों को कला की शिक्षा देने वाला तथा कला का प्रचारक होता है।

अनामिका अंगुली लम्बी हो तो जातक प्रत्येक कार्य में उदासीन रहा करता है। इसका किसी भी कला कौशल में मन नहीं लगता है हमेशा इसके विचार अस्त-व्यस्त ही रहा करते हैं, कभी भी किसी कार्य पर अपना निश्चिय मन नहीं रखता है। इस कारण इसे सफलता प्राप्त नहीं हो पाती है।

अनामिका अंगुली विशेष लम्बी हो अर्थात इस अंगुली की लम्बाई ३ इन्च से अधिक हो तो जातक को यश प्राप्त करने की विशेष अभिलाषा रहा करती है। इसके विचारों में विरोधाभास रहा करता है। यह अपने सहयोगियों के विचार सुन लिया करते हैं और उसके अनुसार कार्य भी किया करते हैं।

अनामिका अंगुली छोटी हो तो जातक को यश की प्राप्ति के प्रति

अनिच्छा रहती है। यह उदासीन विचार वाला तथा यह कला का भी विशेष प्रेमी नहीं हुआ करता है।

अनामिका अंगुली टेढ़ी हो तो जातक की सभी कामों में सफलता प्राप्त करने की अभिलाषा बहुत ही प्रबल होती है, परन्तु ऐसा जातक उद्देश्य-हीन होकर कार्य प्रारम्भ करता है इसलिए प्रथम तो उसे सफलता ही मुश्किल से प्राप्त होती है, साथ सफलता प्राप्त भी हो जावे तो उद्देश्य-हीनता के कारण हाथ कुछ भी नहीं रह पाता है, इस कारण इस प्रकार की अंगुली वाले जातक यशस्वी तथा सफल नहीं हो पाते हैं।

कनिष्ठका अंगुली चतुर्थ अंगुली (Fourth Finger)
बुद्ध की अंगुली

हाथ की चौथी अंगुली जो हाथ की सबसे छोटी अंगुली है उसको कनिष्ठा अंगुली कहते हैं। इस अंगुली का स्वामी बुध है।

इस अंगुली से व्यवहार कुशलता, व्यापार, व्यवसाय आदि के विषय में ज्ञान किया जाता है।

कनिष्ठा अंगुली छोटी हो तो जातक मन्द बुद्धि वाला, अदूरदर्शिता से युक्त प्रत्येक कार्य में असफल रहने वाला, मूढ़ता तथा मूर्खता पूर्ण कार्य किया करता है। ऐसे जातक का चरित्र उज्जवल होता है, यह साधुता तथा सरलता और निष्कपट भाव से देश तथा समाज की सेवा किया करता है। ऐसे जातक को यश भी प्राप्त हो जाता है यदि हाथ में सुन्दर लक्षण हों तथा देखने में सुन्दर तथा चित्ताकर्षक हो।

कनिष्ठा अंगुली छोटी हो और हाथ भी लक्षणों से युक्त न हो तो जातक को स्वप्न में भी यश प्राप्त नहीं हो पाता है, शुभ कार्य में भी अपयश मिलता है तथा ऐसा जातक भाग्यहीन कठोर परिश्रम करने वाला, दूसरों के सहारे जीवन यापन करने वाला, पशुओं के समान जीवन व्यतीत करने वाला तथा दासपन द्वारा अपना कार्य किया करता है।

कनिष्ठा अंगुली बहुत छोटी हो तो जातक व्यापार में उन्नति प्राप्त कर लेता है, यह अपने साथियों को धोखा देने में बहुत ही चतुर होता है, धोखा देकर अपना कार्य बना लेना इसका मुख्य उद्देश्य होता है और धोखा देने को अपनी सफलता मान लेता है। चाहे शत्रु हो अथवा मित्र सभी को जाल में फंसाकर अपना स्वार्थ सिद्ध करता है। यह चोर, डाकू राष्ट्रद्रोहियों से मित्रता कर अपना कार्य पूर्ण किया करता है। ऐसा जातक चरित्र-हीन, धूर्त, लम्पट, व्यभिचारी तथा पर स्त्री हरण करने वाला होता है। ऐसा जातक व्यभिचारी, वेश्याओं के अड्डे चलाया करता है।

यदि अनामिका अंगुली कनिष्ठका अंगुली से छोटी हो तो ऐसा जातक धूर्तता, व्यभिचारी तथा वेश्यावृत्ति और लम्पटा की ओर देखता तक नहीं है, इसका चरित्र उज्जवल होता है तथा यह दूसरों को लाभ पहुँचाया करते हैं, जिससे यश प्राप्त होता है।

कनिष्ठका अंगुली साधारण आकार की हो तो जातक दूरदर्शी, तीक्षण बुद्धि, अनेक विद्या ग्रहण करने वाला तथा महात्माओं की संगति करता है और सादगी तथा सज्जनता से जीवन व्यतीत करता है। यह हमेशा नवीन भाषा को सीखने का प्रयास करता है।

कनिष्ठका अंगुली मध्य श्रेणी की हो तो जातक में विशेष क्षमा शीलता होती है ऐसा जातक अपने शत्रुतओं को भी क्षमा कर देता है, और न उनसे बदला लेना चाहता है। यह किसी के द्वारा स्वयं को हानि होने पर भी उसे क्षमा कर देना अपना धर्म मान लेता है। यह अपने मित्रों का विश्वास करता है और उनके हित तथा लाभ के लिए कार्य करता है तथा अपने सहयोगियों से लाभ भी उठा लिया करता है। यह किसी का अपकार करना बुरा समझता है तथा परोपकार तथा उपकार में प्रसन्न होता है।

कनिष्ठका अंगुली लम्बी हो तो जातक विद्वान, तर्क शक्ति से परिपूर्ण, दूरदर्शी, भाषणकर्ता, धर्म प्रचारक, अनेक भाषाओं का ज्ञान

रखने वाला प्रतिभा सम्पन्न तथा मेधावी होता है। यह अनेक भाषाओं में योग्यता प्राप्त कर लेता है। इसकी वाणी में ओज तथा प्रभाव होता है।

कनिष्ठका अंगुली अधिक लम्बी हो तो जातक बहुत चतुर, और धूर्त प्रकृति का होता है। विश्वासघात करने में चतुर, अपने शत्रु को भी बातों में फंसाकर संकट में फंसा देना तथा स्वयं को निर्दोष रखना तथा एकान्त और अज्ञातवासी तक को पकड़वा देना भी इसको आसान होता है। ऐसी अंगुली वाला जातक अपने स्वार्थ साधन के लिए किसी को भी अपनी कूटनीति का शिकार बना डालना इसका साधारण कार्य होता है। ऐसा जातक स्वार्थ की सिद्धी के लिए अपने अत्यन्त प्रिय मित्र, अन्यय आत्मीय आदि को भी शिकार बना लेना अपना कर्त्तव्य मानता है। यह स्वार्थ सिद्धी अर्थ साधन के लिए चोर. डाकुओं तथा राष्ट्र-विरोधी शत्रु, राष्ट्र के विनाश का नाटक रच दिया करते हैं।

ऐसी अंगुली वाले जातक का हाथ यदि सुन्दर आकृति वाला श्रेष्ठ हो तो जातक उदार, हृदय सहृदय, सहनशील, जिज्ञासु, अनेक प्रकारों के ज्ञान से परिपूर्ण होता है। ऐसे जातक की मनोवृत्ति विद्यार्थी के प्रकार की होती है। यह अधिक से अधिक ज्ञान प्राप्त करना चाहता है।

हाथ की आकृति सुन्दर न होकर बेढंगी हो तो जातक की अंगुली लम्बी हो या छोटी हो परन्तु उसका फल बुरा होगा। ऐसा जातक ९५ प्रतिशत कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है। इसके प्रत्येक कार्य का परिणाम उल्टा ही होता है व्यापार आदि के कार्यों में यह जातक कितनी ही होशियारी, चालाकी और धूर्तता से काम क्यों न ले परन्तु उसको सफलता प्राप्त नहीं होती है।

कनिष्ठका अंगुली टेढ़ी हो तो मनोवृत्ति दुर्बल होती है, इच्छा शक्ति निर्बल, विचार शक्ति शिथिल, नैतिक ज्ञान में सर्वदा कमी रहा

करती है, इसकी अपने सहयोगी, बन्धुओं के प्रति हमेशा उदासीनता ही रहती है, इसके विचार अस्त-व्यस्त तथा प्रत्येक के विचार सुनता है और उनका प्रभाव इस पर होता है, यह दूसरों के प्रभाव में अनायास ही आ जाता है। इस जातक को उचित-अनुचित का ज्ञान नहीं रहा करता है और न यह अवसर का लाभ ही उठा पाता है यह जिस से सभ्यता, पोषण प्राप्त करता है उसके प्रति उदासीनता तथा उपेक्षा का व्यवहार किया करता है ऐसा जातक निर्बल इच्छा शक्ति वाला, अस्थिर विचार वाला नैतिक शक्ति से हीन, पराधीन मनोवृत्ति वाला तथा शान्त स्वभाव वाला होता है।

कनिष्ठका अंगुली के अग्रभाग की नोक चपटी हो जातक शिक्षक होता है। यह अपने कार्य तथा अपने क्षेत्र में अच्छा यश प्राप्त कर लेता है, अपने शिष्य वर्ग से प्रेम प्राप्त करता है।

कनिष्ठका और मध्यमा अंगुली दोनों ही समान रूप से लम्बी हो तो ऐसा जातक विश्वास के योग्य नहीं होता है, यह अपने भेद को छिपाने में असमर्थ रहता है। जब तक कनिष्ठका और मध्यमा अंगुली दोनों ही समान रूप से लम्बी हों और बुध का पर्वत निर्बल हो, बुध पर्वत उठा न हो परन्तु चपटा हो नुकिला हो तो जातक विश्वास के योग्य होता है यह अपने रहस्यों को किसी भी अविश्वासनीय व्यक्ति को नहीं बताता है। परन्तु ऐसे जातक को सफलता बहुत ही कम प्राप्त हो पाती है। यह मध्यम श्रेणी के व्यक्तियों में ही रहता है।

कनिष्ठका अंगुली साधारण हो तो ऐसा जातक विद्वान, वक्ता, प्रतिभाशाली मध्यम व्याख्याता कथा वाचक, सम्पादक, अध्यापक, वृति-ग्रहण करके जीवन चलाया करता है। इनकी मानसिक शक्ति, प्रबल, ज्ञान सम्पन्न तथा सरस्वती का सेवक होता है। इसकी आर्थिक दशा सन्तोषप्रद नहीं रहती है, हर समय अर्थ की चिन्ता करना इसका मुख्य कार्य हो जाता है।

कनिष्ठका अंगुली लम्बी हो तो ऐसे जातक की मनोवृति चंचल हुआ करती है। यह प्रत्येक कार्य को शीघ्रता से करना चाहता है परन्तु शीघ्र कार्य करने की शक्ति ऐसे जातक में नहीं हुआ करती है। यह उच्छृंखल विचार वाले तथा आलसी हुआ करते हैं।

कनिष्ठका अंगुली विशेष लम्बी हो तो जातक बहुत चतुर होता है यह दूसरों को धोखे में डाल कर अपना कार्य निकाल लिया करते हैं। इनको छल कपट करने में आनन्द प्राप्त होता है। दूरदर्शी, कूट-नीतिज्ञ छली, अनेक प्रकार की माया रचने वाला सूक्ष्म विचार वाला होता है। हर समय सावधान रहता है तथा स्वाभिमान की विशेष मात्रा रहती है।

कनिष्ठका अंगुली छोटी हो तो जातक मन्द बुद्धि, विचारहीन तथा दुर्बल इच्छा शक्ति वाला होता है, यह प्रत्येक कार्य में असफल सिद्ध हुआ करते हैं। कठोर परिश्रम से भी सफलता प्राप्त न होना भी इनके भाग्य में नहीं होता है।

कनिष्ठका अंगुली टेढ़ी हो तो जातक कम बोलने वाला कम खर्च करने वाला होता है इसके विचार शिथिल हुआ करते हैं, वह शीघ्रता से दूसरों की बात में आकर बहक जाता है। अदूरदर्शी सरल तथा स्पष्ट विचार तथा यह हर समय असावधान रहा करता है।

अंगुलियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान

जातक की हाथ की अंगुलियां एक समान स्थान पर आकर जुड़ी हों उन सभी अंगुली की आकृति समान हो तो ऐसा जातक भाग्यशाली होता है उसकी सन्तान भी उसे सुख प्रदान किया करती हैं। उसके सम्बन्धी रिश्तेदार उसके अनुसार कार्य किया करते हैं उसका विरोध नहीं किया करते हैं। उसका सहयोग किया करते हैं। और यह जीवन में सफल हुआ करता है।

यदि यह अंगुलियां समान स्थान पर न मिले तो ऐसे जातक का भाग्य निर्णय अंगुलियां प्रधान नहीं रहा करती हैं परन्तु इसका निर्णय हाथ की रेखा तथा मंगल आदि के पर्वत किया करते हैं।

यदि हाथ की अंगुलियां छोटे अन्तर से हाथ में मिलेगी तो ऐसे जातक का भाग्य मध्यम कोटी का होता है ऐसे जातक का स्वभाव गर्म होता है। यह साधारण बातों पर गर्म हो जाता है परन्तु इसके मन में घृणा जाग्रत नहीं होती है।

यदि जातक की प्रथम अंगुली (तर्जनी) हाथ में साधारण स्थान से कुछ नीचे मिले तो ऐसे जातक का दूसरों पर प्रभाव डालने की शक्ति बहुत कम होती है ऐसे जातक का स्वभाव बहुत ही विचित्र होता है यह स्वभाव से मिलनसार नहीं होता है। यह सर्वदा दूसरों के दवाव में आकर कार्य किया करता है। यह स्वयं के किसी कार्य की असफलता में हमेशा दूसरों को ही दोष देता है और अपने स्वयं के कार्य में दूसरों की सलाह मान लेता है। और असफलता प्राप्त कर लेता है।

ऐसा जातक सभा समिति, राजनैतिक दल आदि में नवीन व्यक्तियों के मिलने के अवसर पर अस्त-व्यस्त सा हो जाता है। यह अपने विचार पूर्व दृढ़ता के साथ नहीं रख पाते हैं। समाज सेवा अंगों में भाग लेना और समाज सेवा करना इनके बस से बाहर है, यह तो समाज सेवकों की हंसी उड़ाया करते हैं साधारण भाषा में ऐसे जातक को दब्बू प्रकृति का मनुष्य समझा करते हैं और भेद खुल जाने पर ऐसे जातक से घृणा भी किया करते हैं। ऐसा जातक किसी भी अपरिचित से परिचय प्राप्त करने तथा उसके साथ सहयोग लेने और देने में घबराता है। यह किसी को भी अपना भेद देना नहीं चाहता।

इसके विरुद्ध यदि तर्जनी अंगुली के जोड़ का स्थान कुछ ऊँचा हो तो इसके विपरीत स्वभाव होता है। ऐसी अंगुली वाला जातक सबल विचार शक्ति वाला, अद्भुत कोटी का संगठन कर्ता तथा शासन कर्ता विद्वान, मिलनसार दूरदर्शी, साहस से काम लेने वाला होता है, यह

भी परेशानी तथा संकट के क्षण में धैर्य को धारण कर शक्ति के अनुसार कार्य करता रहता है और सफल सिद्ध होता है। ऐसे जातक का मस्तिष्क सर्वदा जाग्रत रहा करता है।

मध्यमा अंगुली साधारणत: अपने ही स्थान पर रहा करती है। इसका स्थान हाथ में साधारणत: अपने स्थान से प्राय: कभी भी प्रथक नहीं हुआ करती है। हाथ की गठन, हाथ की आकृति तथा बनावट में इस अंगुली को ऐसा स्थान प्राप्त है जिसके कारण इस अंगुली का स्थान बदलना प्राय: सम्भव नहीं रहता है। इस अंगुली के आकार में परिवर्तन में आ जाता है। हस्त रेखा के विद्वानों को इसके लिए हाथ की आकृति पर ध्यान देना चाहिए। मध्यमा अंगुली का जातक के स्वभाव से विशेष सम्बन्ध रहता है। अत: सावधानी से विचार करना चाहिए।

अनामिका अंगुली (हाथ की तृतीय अंगुली) हाथ की अंगुली मिलन के स्थान से कुछ नीची हो तो ऐसे जातक का स्वभाव तथा मनोवृति वहुत ही विचित्र होती है, यह बड़ी ही कठिनाई से सफलता प्राप्त करता है। यह जीवन में बहुत से कम ऐसे कार्य कर पाता है जिसके कारण इसकी प्रशंसा हो और यश प्राप्त हो कला-कौशल की ओर से ऐसा जातक उदासिन रहा करता है। यह जिस काम में हाथ डालता है उसमें सफलता नहीं मिल पाती है।

ऐसे जातक को किसी भी दस्तकारी का विशेष न प्रेम होता है और न किसी भी कला में पूर्ण रूप से ज्ञान ही कर पाता है। यह हमेशा अपूर्ण ज्ञान से ही कार्य करता है और जीवन में अभाव ही इसके साथी तथा मित्र होते हैं।

अनामिका अंगुली हथेली में कुछ ऊँचे स्थान में मिले तो ऐसा जातक यशवान, कला-कौशल से प्रेम करने वाला यशस्वी, कीर्तिवान तथा निति कुशल होता है। यह बहुत से मित्र बना लिया करता है।

कनिष्ठा हाथ की चतुर्थ अंगुली का हाथ में मिलन स्थान नीचा हो तो ऐसे जातक के जीवन में शान्ति ही पहुँचाया करती है इसका

भाग्य सदा हीन ही रहता है। यह व्यापार तथा आर्थिक विषय में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता हैं। आर्थिक दृष्टि से यह जातक हमेशा कष्ट में रहता है। यह धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि नहीं रखता है। यह अपने स्वार्थ में दूसरों का बलिदान नहीं दिया करता है। आर्थिक विषय में अनायास ही दूसरों के कहने में आ जाता है। अपने स्वार्थ के लिए नवीन-नवीन योजनायें बनाया करता है। परन्तु आर्थिक लाभ इसे बहुत कम हो पाता है।

कनिष्टका अंगुली हाथ में उच्च स्थान में सन्धी कर रही हो तो आर्थिक विषय में पूर्ण सफल सिद्ध होता है। व्यापार आदि से पूर्ण लाभ तथा मनोवांछित फल करता है। यह किसी के प्रभाव में कभी भी नहीं आते हैं, और सदैव सतर्क रहा करते हैं।

अंगुलियों का पृष्ठ भाग और उसका फल

जब हाथ को उल्टा करे, अर्थात हथेली को दूसरी ओर अथवा अंगुली का पृष्ठ भाग सभी का साधारण होता है परन्तु उसके पृष्ठ भाग में बाल होते हैं।

अंगुली के पृष्ठ भाग पर बिल्कुल बाल न हो तो ऐसा जातक कायर वीरता से शून्य पुरुषार्थ से हीन होता है, ऐसा जातक प्रायः नपुंसक (हिजड़ा) हुआ करता है। स्त्री जातकों की अंगुलियों पर बाल नहीं हुआ करते हैं इसका ध्यान अवश्य रखें। यह अपने जीवन में सदैव रत रहता है और प्रत्येक कार्य में असफल सिद्ध होता है। नवीन कार्य ऐसे जातक नहीं कर पाते हैं।

जिस जातक के अंगुलियों के पृष्ठ भाग पर अंगुलियों के दोनों पर्वों पर विशेष घने बाल हों तो ऐसा जातक क्रोधी स्वभाव वाला, क्रूर कर्म करने वाला, निर्दयी, दुष्टआत्मा कुटिल होते हैं।

यदि जातक की अंगुलियों के पृष्ठ भाग पर बाल हो परन्तु शून्य मात्रा में हों तो जातक का स्वभाव मिलनसार होता है। तथा क्रोध मात्रा भी नहीं रहा करती है।

जिस जातक के अंगुली के पृष्ठ भाग पर बाल हो परन्तु वह केवल अधो पर्व पर ही हो और बाल सूक्ष्म हो तो ऐसा जातक बुद्धिमान, दूरदर्शी, शक्तिशाली, उदार हृदय, उत्तम विचार वाला होता है। ऐसा जातक शीघ्र ही कार्य में सफलता प्राप्त कर लेता है।

जिस जातक के अंगुलियों के पृष्ठ भाग पर बाल हों और वह मध्यम पर्व पर ही हो तो ऐसा जातक अविचारी, विवेकहीन, विश्वासघात करने वाला धूर्त नीच स्वभाव वाला तथा नीच प्रकृति का होता है।

जिस जातक के अंगुलियों के पृष्ठ भाग पर बाल हों और वह उर्ध्व-पोर अर्थात सबसे ऊपर के पोर पर हो तो ऐसा जातक क्षण में क्रोधी तथा एक क्षण में संतुष्ट तथा प्रसन्न होने वाला होता है। यह प्रत्येक कार्य को सोच-विचार कर प्रारम्भ करता है परन्तु सफलता विशेष परिश्रम से प्राप्त हुआ करती है।

यदि किसी स्त्री जातक के हाथ में अंगुलियों के पृष्ठ भाग पर बाल हों अथवा भाग्य से मूंछ हों तो ऐसी स्त्री व्यभिचारिणी होती है। अथवा यह विधवा हो जाती है।

यदि बाल सूक्ष्म हों तो ऐसी स्त्री अपने पति के अतिरिक्त अन्य किसी से अधिक प्रेम नहीं किया करती है। यदि ऐसी स्त्री के हथेली के ऊपरी भाग पर (कर पृष्ठ) पर बाल हों तो ऐसी स्त्री अपने पति के अतिरिक्त अन्य से प्रेम किया करती है, और दूसरे पुरुषों से सम्बन्ध रखा करती है।

अंगुली पर सूक्ष्म बाल हो और कर पृष्ठ हथेली के ऊपर भाग पर बाल न हों तो ऐसी स्त्री पतिपरायण होती है। वह दूसरे पुरुष का दर्शन भी पाप मानती है।

पुरुष जातक की अंगुलियों के बाल भूरे रंग के होंगे तो ऐसा जातक अपने स्वयं में मस्त रहने वाले, शृंगार प्रेमी, सुन्दर वस्त्र, स्वादिष्ट भोजन प्रिय तथा अनेक आभूषणप्रिय हुआ करते हैं।

यदि बाल घने और काले रंग के हों तो जातक लोग गुणी, क्रोधी होते हैं, इनकी प्रकृति झगड़े, लड़ाई आदि में लगी रहती है। यह उच्चाटन आदि प्रयोग किया करते हैं। यदि यह विद्या अध्ययन करते हैं तो अस्त्र-शस्त्र की विद्या तथा मन्त्र विद्या में सफल होते देखे जाते हैं।

अंगुलियों के मध्य का अन्तर

मानव के हाथ की अंगुलियों को हम सीधे खड़ा करके देखें तो हमें कुछ हाथों में अंगुलियों के मध्य में अन्तर दिखाई देगा, कुछ स्थान खाली दिखाई देगा, इस अन्तर को अंगुलियों का मध्यान्तर कहा जाता है। इस अन्तर का सामुद्रिक दृष्टि से विशेष महत्व रहता है। यह मध्यान्तर मानव के आर्थिक मानसिक जीवन पर विशेष प्रभाव डालता है। यहां पर हम इसी अंगुलियों के मध्य भाग के विषय में प्रकाश डालेंगे।

यदि हाथ की अंगुलियों को सीधे करके देखा जावे और उसके मध्य में बिल्कुल भी अन्तर दिखाई न दे अर्थात अंगुलियों के मध्य में अन्तर न हो तो ऐसा जातक कोई भी ऐसा कार्य करना नहीं चाहता है जिससे उसका अपयश हो, अपकीर्ति फैले, ऐसे जातक के सामने अपने उच्च जीवन तथा उच्च आदर्श का प्रश्न रहता है। यह ऐसा कोई भी कार्य नहीं करते हैं जिसके कारण समाज में इनकी हंसी हो अपयश हो इनका जीवन शान्तमय, बिना किसी व्याधा और परेशानियों से रहित व्यतीत हुआ करता है। ऐसे जातक आर्थिक दृष्टि से ठीक रहा करते हैं।

अंगुष्ठ और हाथ की प्रथम तर्जनी अंगुली—तर्जनी अंगुली के माध्यम में अन्तर हो, यह अन्तर अधिक होतो जातक का स्वाभाव उदार विशाल हृदय, स्वतन्त्र विचार वाला, दयालु स्वभाव का, अनुभवी, चतुरता, निर्भीक, बुद्धिमान, महत्वाकांक्षी तथा स्थिर मत वाला होता है। यह दूसरों के लिए विशेष कष्ट सहन कर लिया करते हैं।

यह जीवन पर्यन्त अपने कर्तव्य का पालन करता है और समाज में इसका स्थान उच्च रहता है। विशेष रूप से ऐसे जातक जीवन में सफल रहा करते हैं। सामाजिक बन्धनों को मानने वाले धर्म के मार्ग पर चलने वाले अहंकार की भावना से परे रहने वाले होते हैं।

तर्जनी और मध्यमा के बीच में जितना अधिक अन्तर होगा, जातक उतना ही अधिक स्वतन्त्र विचार वाला होगा। ऐसा जातक अपने विचारों और स्वयं के निर्णय के अनुकूल कार्य करता है। ऐसा जातक अपना मार्ग स्वयं निर्णय कर लेता है, यह किसी के विचारों के अनुसार कार्य करना पसन्द नहीं करता है। यह दूसरों के पीछे नहीं चल सकता है ऐसे जातक का बाल्यकाल कष्टमय व्यतीत होता है। यह छिद्र दिखाई न दे तो बाल्यकाल सुखमय, आनन्दमय होता है।

मध्यमा और अनामिका के मध्य में जितना अधिक अन्तर होगा, जातक उतने ही पवित्र विचारों वाला होगा। इसका स्वभाव स्थिर तथा मनोवृति दृढ़ होगी, ऐसे जातक के विचारों में चंचलता बहुत कम पाई जाती है। यह प्रत्येक कार्य के करने से पूर्व उस पर विचार करता है और फिर स्थिर चित होकर एकाग्र मन से कार्य प्रारम्भ करता है। और सावधानी से कार्य करता है और सफलता तक करता ही रहता है। ऐसा जातक धैर्यवान धर्म से भय माना करता है। ऐसे जातक का युवाकाल कष्टमय व्यतीत होता है। यदि यह स्थान नहीं है तो जातक स्थिर स्वभाव वाला, सोच-विचारकर कार्य करने वाला तथा युवाकाल सुखमय व्यतित होता है। यह जातक सुन्दर स्वभाव वाला होता है।

अनामिका और कनिष्ठ में जितना अधिक अन्तर होगा जातक उतने ही अधिक स्वतन्त्र विचारों वाला होगा। यह प्रत्येक कार्य अपनी इच्छानुसार करता है परन्तु अपने साथियों, सहयोगियों से विचार करता है, सम्पति अवश्य लेता है परन्तु कार्य प्रणाली का निर्णय अपनी इच्छानुसार रखता है और सर्वदा जाग्रत अवस्था में ही रहा करता है। ऐसे जातक का अन्तिम काल वृद्धावस्था कष्टमय दुःखमय व्यतीत

होता है। यदि यह स्थान नहीं है, मध्यम में अन्तर नहीं है तो वृद्धावस्था सुखमय, शान्तिपूर्वक व्यतीत होती है। यह जातक स्वतन्त्रता प्रिय होता है।

यदि सभी अंगुलियां कोमल हैं और मध्य में अन्तर है तो जातक स्वतन्त्र विचार वाला सामाजिक, एवम् जातीय बन्धनों से मुक्त जो कुछ ठीक समझता है उसी को करने वाला तथा किसी का दबाव अपने ऊपर नहीं मानता है।

अंगुलियों का झुकाव

मानव का हाथ सीधा खोल दिया जावे और हाथ को अपनी स्वाभाविक स्थिति में रखा जाये तो प्रायः यह देखने में मिलेगा कि अंगुलियां झुक रही हैं। कुछ आगे की ओर हैं तो कुछ पीछे की ओर तथा कुछ अंगुलियां दूसरी अंगुली की ओर झुकी रहती हैं।

सामुद्रिक में अंगुलियों का 'झुकाव' अपना विशेष स्थान रखता है, और इसके अनुसार जातक के जीवन में उत्थान-पतन, सुख-दुःख, विकाश और विनाश की लीला सफलता तथा असफलता की कहानी चला करती है।

इन अंगुलियों के झुकाव से मानव जीवन के बहुत से रहस्य स्पष्ट हो जाते हैं।

हाथ की सभी अंगुलियों का झुकाव आगे की ओर अर्थात हथेली की ओर हो तो ऐसा जातक प्रायः हठ करने वाला, मन्द बुद्धि, चंचल स्वभाव वाला, एकान्तप्रिय, हमेशा चुप रहने वाला तथा किसी भी बात को बहुत कठिनाई के बाद ही समझ पाता है। ऐसा जातक हर समय अपने विचारों में डूबा रहता है और जो कुछ एक बार समझ लेता है निश्चय कर लेता है, उस पर निश्चय नहीं कर पाता है, यदि कोई अन्य पुरुष इसके विचारों के विरुद्ध कुछ कहता है तो फौरन ही हठ करना प्रारम्भ कर देता है। साथ ही ऐसा जातक साहसहीन तथा प्रकृति से डरपोक हुआ करते हैं।

हाथ की सभी अंगुलियां कोमल हों और इनका झुकाव पीछे की ओर हो तो ऐसा जातक किसी भी बात को बहुत शीघ्र समझ लेता है, और शीघ्र ही उसका हल निकाल लिया करता है। यह जातक विशेष उदार हृदय होते हैं और प्रत्येक कार्य में उदारता का परिचय दिया करते हैं। इनका स्वभाव स्थिर नहीं रहता है, हर समय बदलता रहता है। यह एक वस्तु को त्याग कर इससे अच्छी वस्तु प्राप्त करने की इच्छा में तत्पर रहा करते हैं। यह चंचल स्वभाव के होते हैं और अपना मार्ग स्वयं ही बना लिया करते हैं।

मध्यमा, अनामिका तथा कनिष्ठका का झुकाव हाथ की प्रथम गुरु की अंगुली तर्जनी की ओर झुक रही हो और तर्जनी अंगुली सीधी हो, ऐसा जातक महात्वाकांक्षी, स्वतंत्र विचार वाला तथा उत्साही होता है यह जातक लेखक, साहित्यकार, विचारवान, विशाल हृदय वाला तथा शीलवान होता है। यह प्रत्येक का आदर किया करता है तथा यह भगवत भक्त तथा दान प्रिय होता है। यह जीवन में सदैव अपने विचारों के अनुरूप अपने जीवन पथ का निर्माण करते हैं। हाथ की सभी अंगुलियाँ कनिष्टका की ओर झुकी हों तो ऐसा जातक मन्द बुद्धि दुष्ट स्वभाव वाला अपनी बात पर अड़ जाने वाला, कमजोर शरीर वाला, क्रोधी होता है।

हाथ की प्रथम अंगुली मध्यमा अंगुली की ओर झुक रही हो तो जातक उत्साह-हीन उदास रहने वाला एकान्तप्रिय तथा दूसरों के सहारे अपना जीवन यापन करता है।

हाथ की प्रथम अंगुली तर्जनी, अनामिका अंगुली, कनिष्टका अंगुली का झुकाव हाथ की मध्यमा अंगुली की ओर झुक रहा हो, और मध्यमा अंगुली एकदम सीधी हो तो ऐसा जातक उदास रहने वाला, चिन्ताओं से ग्रस्त, शोक ग्रस्त रहा करता है। ऐसे जातक के स्वभाव तथा मनोवृति पर शनि देव का परिणाम होता है। इस कारण

यह जातक हमेशा एकान्त में रहने की इच्छा रखता है। यह किसी भी व्यक्ति से बहुत कम मिलना चाहता है।

हाथ की दूसरी अंगुली मध्यमा हाथ की प्रथम अंगुली तर्जनी की ओर झुकी हो तो ऐसा जातक बुरे विचार वाला होता है। ऐसे जातक की आकांक्षायें, विचार धारा सदैव दूषित रहा करती है। समाज के लोग इससे तथा इसकी विचारधारा से घृणा करते हैं। ऐसा जातक प्राय: बुरे कर्मों में रत रहने वाला, लम्पट, लुच्चा लफंगा होता है। ऐसे जातक दूसरों को दुःख पहुँचाने, दूसरों को कष्ट देने तथा सताने के लिए दुष्टता पूर्ण कार्य किया करते हैं। ऐसे कार्य करने में इसे विशेष प्रसन्नता प्राप्त होती है।

हाथ की दूसरी अंगुली मध्यमा हाथ की तृतीय अंगुली अनामिका की ओर झुकी हो तो जातक के स्वभाव में विशेष अन्तर आ जाता है। ऐसा जातक अपने विचारों में बहता है। क्षण भर में विशेष उत्साही, विशेष प्रसन्न हो जाता है तो दूसरे क्षण उत्साहीन; क्षण में विशेष आशावान तथा दूसरे क्षण ही निराशावादी बन जाता है ऐसे जातक के विचार तथा मनो-भावनायें बदलती रहती हैं।

हाथ की अनामिका अंगुली मध्यमा अंगुली की ओर झुक रही हो तो ऐसा जातक अमानुषिक कार्यों में रत रहता है, और अनैतिक कार्यों की प्रेरणा देता है तथा स्वयं भी करता है। ऐसा जातक कुकर्म, दुष्ट कर्म तथा अनैतिक कार्यों में विख्यात होने की आशा किया करता है, और सफलता के लिए और दुष्ट तथा क्रूर कर्म किया करता है, यह प्राय: चोरी डकैती, हत्या, ठगी, लोगों के साथ विश्वासघात के कार्य किया करता है, और इन्हीं कर्मों में नाम पैदा किया करता है।

हाथ की अनामिका अंगुली यदि कनिष्ठका अंगुली की ओर झुक रही हो तो ऐसा जातक व्यापार में प्रसिद्धि प्राप्त करता है। कला-कौशल के अद्भुत कार्य किया करता है तथा ऐसा जातक कला प्रधान

व्यवसाय से व्यापार कर धनोपार्जन किया करता है, व्यापार के क्षेत्र में नवीन-नवीन आविष्कार कलात्मक वस्तुओं का निर्माण करता है।

कनिष्ठका हाथ की चौथी अंगुली अनामिका अगुंली की ओर झुक रही हो तो ऐसा जातक व्यापार कला कौशल से अपना सम्बन्ध रखता है और व्यापार भी कला कौशल की उन्नति के लिए किया करते हैं। ऐसा जातक उसी प्रकार के व्यापार को करता है जिससे कला कौशल की उन्नति हो।

भाग्यशाली जातक की अंगुलियां मिली होती है। सीधी और लम्बी अंगुलियां दीर्घ आयु की सूचक है। धनहीन जातकों की अंगुलियां छोटी होती हैं। सेवा करने वाले जातकों की अंगुलियां छोटी होती हैं। युद्ध भूमि में रत रहने वाले, सेना में कार्य करने वालों की अंगुलियां बाहर की ओर झुक रही होती हैं।

जिस जातक के हाथ में सात अंगुलियां हों तो वह भाग्यहीन, धन-हीन, एवम् अल्प आयुवान होता है।

हाथ की प्रथम अंगुली अगर लम्बी हो तो शासन की इच्छा रखने वाला उच्चपद पाने की अभिलाषा रखता है। यदि तर्जनी अंगुली मध्यमा के बराबर हो तो ऐसा जातक कलह करने वाला, निष्ठुर स्वभाव वाला, प्रशंसा एवम् अधिकार पाने की चेष्ठा किया करता है। यदि तर्जनी अंगुली छोटी हो तो जातक शान्त स्वभाव वाला तथा किसी भी बात की जिम्मेदारी न लेने वाला और न सम्मान ही प्राप्त कर पाता है। यदि अंगुली मध्यमा की ओर झुक रही हो तो अभिमान करने वाला और चपटी और नोकदार हो तो विचार करने की शक्ति कम होती है।

मध्यमा अंगुली लम्बी हो तो जातक एकान्तप्रिय ज्योतिष आदि गुप्त विद्याओं का ज्ञान रखने वाला, यदि यह अंगुली छोटी हो तो अविवेकी, नोकदार हो तो विचारहीन तथा मन्द बुद्धि होता है। यदि

मध्यमा अंगुली मोटी हो तो भाग्य प्रधान, कम इच्छा रखने वाला यदि टेढ़ी हो तो रोगी तथा बुरे विचार वाला होता है।

अनामिका अंगुली लम्बी हो तो जातक कला तथा दस्तकारी का ज्ञान रखने वाला तथा यशवान होता है। यदि अनामिका छोटी हो तो कला में अरुचि रखने वाला तथा अपयश का भागी होता है। यदि यह अंगुली अधिक लम्बी हो तो जातक जुआ तथा सट्टे आदि का कार्य करता है यदि टेढ़ा हो तो व्यर्थ के अपयश का भागी हुआ करता है।

कनिष्ठका अंगुली लम्बी हो तो जातक अनेक भाषाओं का ज्ञान रखने वाला तथा विद्वान होता है। अगर यह अंगुली छोटी हो तो जातक मन्द बुद्धि तथा सर्वदा कार्य की सफलता के विषय में सोचा करता है। यदि कनिष्ठका अंगुली अधिक लम्बी हो जातक तीव्र बुद्धि-वाला, चतुर, एवम् छल के द्वारा भी कार्य साधन कर लिया करता है। यदि यह टेढ़ा हो तो दूसरों के कहे अनुसार कार्य करने वाला, निर्बल विचार वाला तथा चुप रहने वाला होता है। यदि कनिष्ठका की उर्ध्व भाग चौरस हो तो जातक अध्यापक, लेखक, सम्पादक होता है। कभी-कभी ऐसा जातक लेखन कला द्वारा जीविका चलाने वाला क्लर्क भी होता है।

अंगुलियों के पर्व (भाग) पोर

हाथ की अंगुलियों को सीधा करके देखें तो उसमें कुछ भाग दिखाई देते हैं। इन भागों को सामुद्रिक की भाषा में पर्व कहते हैं और साधारणत: इन्हें पोर, पौरुआ पोस तथा युग भी कहा करते हैं।

इन पर्वों की आकृति, स्वरूप, गठन निर्माण तथा इसके ऊपर रेखाओं का मानव जीवन पर विशेष प्रभाव होता है।

आकृति, आकार प्रकार गठन तथा निर्माण की दृष्टि आदि से इन पर्वों के सात भेद होते हैं।

१. लम्बा पर्व = Long Phalanx

२. छोटा पर्व	=	Short Phalanx
३. मध्य पर्व	=	Medium Phalanx
४. मोटा पर्व	=	Thick Phalanx
५. पतला पर्व	=	Thims Phalanx
६. गठीला पर्व	=	Kuetted Phalanx
७. साधारण पर्व	=	Ordinary Phalanx

अंगुलियों के तीन पर्वों का फल

१. प्रथम पर्व, ऊर्ध्व पर्व :—इससे जातक को आध्यामिक विचार धार्मिक विचार, विद्या, कला कौशल, बौद्धिक ज्ञान का ज्ञान होता है। जातक की इन्हीं विचारधाराओं का ज्ञान अंगुलियों के प्रथम पर्व से होता है। इसे ज्ञान लाभ का पर्व भी कहते हैं।

२. द्वितीय पर्व मध्यपर्व:—इस पर्व से जातक की विचार शक्ति दूरदर्शिता किसी बात के निर्णय करने की शक्ति तथा विश्लेषण करने की शक्ति का ज्ञान हाथ की अंगुलियों के दूसरे पर्व से ज्ञात करना चाहिए।

३. तृतीय पर्व अधो पर्व:—इस पर्व से जातक के लौकिक व्यवहार, सामाजिक कार्य समाज में जातक की स्थिति, कार्यक्षमता आदि का ज्ञान होता है। इसे लौकिक भाग पर्व भी कहते हैं।

प्रथम पर्व (First Phalanx) ऊर्ध्व पर्व

प्रथम पर्व यदि लम्बा हो तो जातक आदर्शवादी आध्यमिक विचार वाला ईश्वरीज्ञान से सम्पन्न, उच्च अभिलाषी महत्वाकांक्षी तथा ईश्वरीय संकेतों पर चलने वाला होता है। ऐसा जातक प्रत्येक कार्य में सफल होता है।

यदि यह पर्व नुकिला हो तो जातक कला कौशल से विशेष प्रेम किया करता है। और कला की साधना के द्वारा ही धन पैदा करता है।

उर्ध्वं पर्व यदि मोटा हो तो जातक आशावादी होता है, प्रत्येक कार्य से अनुभव ग्रहण करता है। सफलता के लिए लगन से कार्य किया करता है।

उर्ध्व पर्व यदि पतला हो तो जातक भौतिक पदार्थो से विशेष रुचि रखता है। यह व्यभिचार को अधिक प्रिय मानता है और बहुत कम अवसर प्राप्त कर पाता है।

उर्ध्व पर्व यदि छोटा हो तो जातक की विचार शक्ति कमजोर होती है यह किसी बात को पूर्ण रूप से स्मरण नहीं रख पाता है।

उर्ध्व पर्व गठीला हो तो जातक का चरित्र विशेष अच्छा नहीं होता है। यह अवसर प्राप्त होने पर दुश्चरित्रता के हीनता कार्य करने से भी नहीं चूकते हैं। तथा ऐसे जातक कामान्ध हुआ करते हैं।

मध्यमा पर्व (Midium Phalanx)

मध्यम पर्व यदि लम्बा और पुष्ट हो तो ऐसा जातक विचारशील और अनुभवी होता है।

मध्यम पर्व छोटा हो तो जातक में विचार करने की शक्ति बहुत कम होती है वह प्रत्येक काम बिना ही विचारे प्रारम्भ कर देता है, और सफल नहीं होता है।

मध्य पर्व मोटा हो तो जातक विवेक से काम नहीं लेता है हमेशा इस प्रकार कार्य करता है कि कार्य बने या न बने परन्तु समाज का मनोरंजन हो जावे।

मध्यम पर्व बहुत लम्बा और पतला हो तो जातक बुद्धिमान होता है और प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करने का प्रत्यन करता है।

मध्यमपर्व उभरा हुआ हो इस पर्व पर खड़ी रेखायें हों तो ऐसा जातक किसी कार्य का निर्णय बहुत ही शीघ्रता से कर लेता है। इसमें दूरदर्शिता की भावना विशेष होती है, किसी भी बात को बहुत

ही सोच समझकर कहता है। इसके विचार सदा स्थिर रहा करते हैं। तथा वह विश्वास पात्र होता है।

अधो पर्व निचला भाग

अधो पर्व लम्बा हो और पुष्ट हो तो जातक चतुर, व्यवहार कुशल, नीतिवान तथा लौकिक कार्यों में निपुण होता है।

अधो पर्व यदि अधिक लम्बा हो तो जातक भौतिकवादी विलास प्रिय होता है।

अधो पर्व छोटा हो तो जातक टीम-टाम दीखावा आदि को पसन्द नहीं करता है।

अधो पर्व पतला हो तो जातक खान पान रहन-सहन में अत्यन्त साधारण होता है।

अधो पर्व सुन्दर हो तो जातक अपनी कार्य क्षमता के बल पर सभी को अपनी ओर आकर्षित कर लिया करता है। उत्तम वस्त्र, भोजन तथा ऐश्वर्य प्रिय होता है।

अंगुलियों के सम्बन्ध में विशेष ज्ञान

अंगुलियों में एक एक ऋतु का वास है, एक दृष्टि से हम विचार करें तो चार मुख्य ऋतु हैं। वर्षा, ग्रीष्म, शीत और वसन्त, यह ऋतु विभाजन में विश्व के लिए हैं परन्तु भारत में ६ ऋतु होती हैं। वर्षा, शरद, शीत, वसन्त, ग्रीष्म और हेमन्त वैसे साधारणत: ऋतु चार ही मान लें, क्योंकि हाथ में अंगुली चार ही हैं और यदि हम छः मानें तो भी कोई आपत्ति नहीं है क्योंकि अंगुलियों में मास वास भी है।

अंगुली	तर्जनी	मध्यमा	अनामिका	कनिष्ठका
ऋतु	वसन्त	शीत	ग्रीष्म	हेमन्त

पश्चिमी सामुद्रिकाचार्यों ने मास विभाजन किया है, जो उपरोक्त ऋतु विभाजन का समर्थन करता है। प्रत्येक पर्व पर एक मास का वास माना जाता है जो निम्न चार्ट से स्पष्ट है।

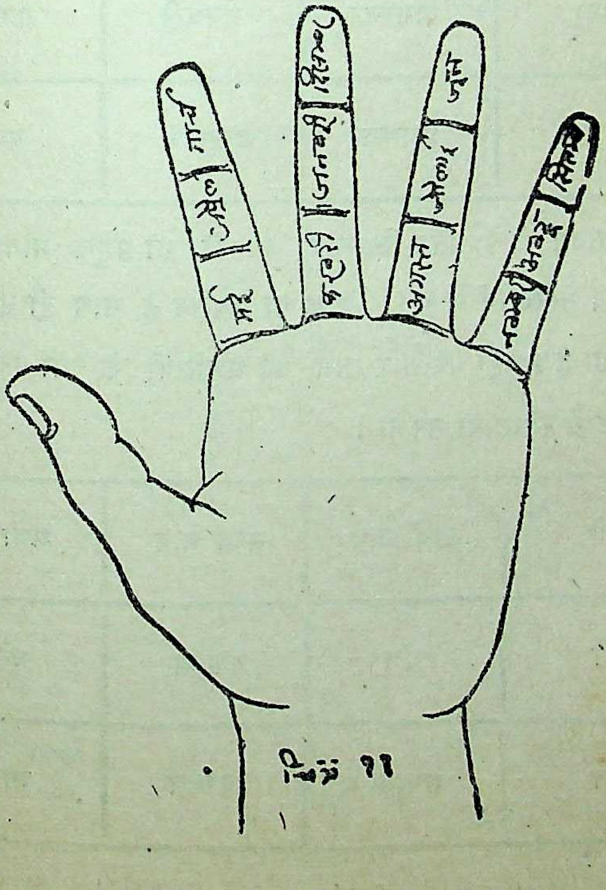

चित्र ११

अंगुली	उर्ध्व भाग १	मध्य भाग २	अधो भाग
तर्जनी	मार्च	अप्रैल	मई
अनामिका	जून	जौलाई	अगस्त
मध्यमा	दिसम्बर	जनवरी	फरवरी
कनिष्ठका	सितम्बर	अक्तूबर	नवम्बर

भारतवर्ष की ज्योतिष सितम्बर जनवरी को प्रमुख मानकर नहीं चलती है। भारतवर्ष में चैत, वैसाख का प्रचलन है, साथ ही सौर मास की प्रमुखता है। यहाँ पर सौर मास की अंगुलियों के पर्वों पर निवास निम्न चार्ट से स्पष्ट हो सकेगा।

अंगुली	उर्ध्व भाग	मध्य भाग	अधो भाग
तर्जनी	चैत्र	वैशाख	ज्येष्ठ
अनामिका	अषाढ़	श्रावण	भाद्रपद

मध्यमा	पौष	माघ	फाल्गुन
कनिष्ठका	क्वार अश्विन	कार्तिक	मार्गशीर्ष

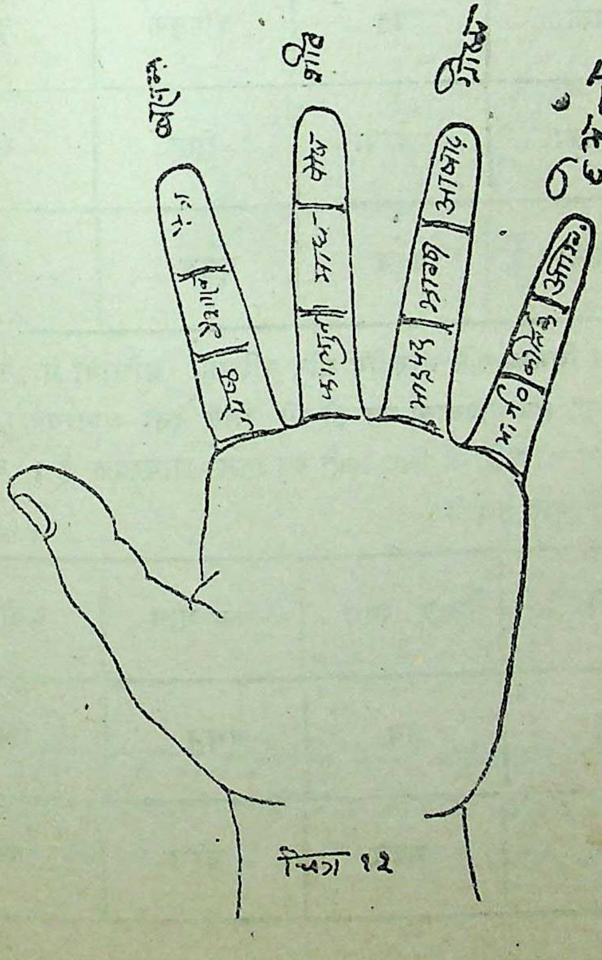

चित्र १२

अंगुलियों में राशियों का वास भी है जो भारतीय मत में निम्न है।

अंगुली	उर्ध्व भाग	मध्य भाग पर्व	अधो भाग पर्व
तर्जनी	मीन	कुम्भ	मकर
मध्यमा	धन	वृश्चिक	तुला
अनामिका	कन्या	सिंह	कर्क
कनिष्ठका	मिथुन	वृषभ	मेष

राशि विभाजन में भारतीय और पश्चिमी आचार्यों में मतभेद है, ज्ञान के लिए हम पाश्चात्य मत को भी लिख देना आवश्यक मानते हैं क्योंकि ज्ञान की वृद्धि के लिए सभी का ज्ञान आवश्यक है। यह निम्न रेखाचित्र से ज्ञात करें।

अंगुली	उर्ध्व भाग	मध्य भाग	अधो भाग
तर्जनी	मेष	वृषभ	मिथुन
मध्यमा	मकर	कुम्भ	मीन

अनामिका	कर्क	सिंह	कन्या
कनिष्ठ	तुला	वृश्चिक	धन

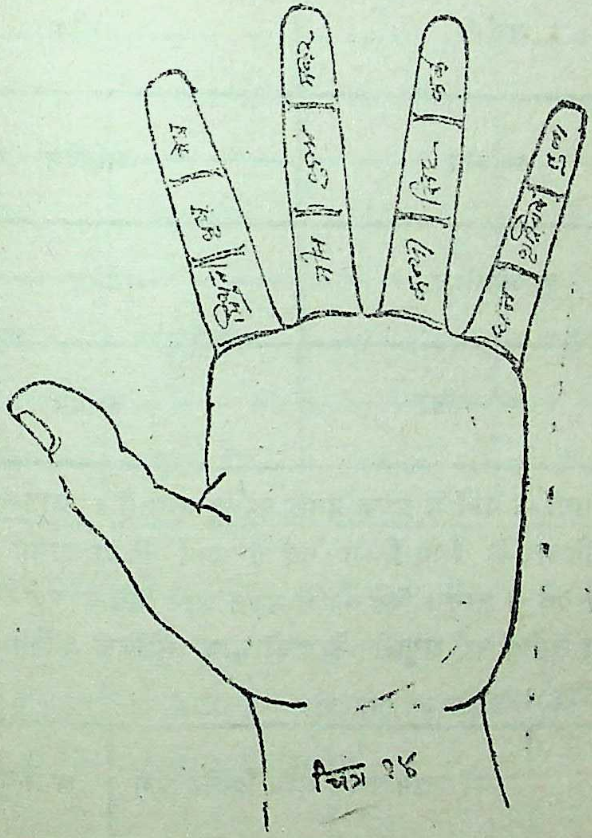

चित्र १४

प्रत्येक अंगुली का स्वामी पृथक, प्रथम है, यह अंगुलियां अपने स्वामियों के अनुरूप फल प्रदान करती हैं। जिस प्रकार प्रथम अंगुली तर्जनी का स्वामी गुरुदेव, दूसरी मध्यमा का स्वामी शनिदेव है। हाथ की तीसरी

अंगुली अनामिका के स्वामी सूर्य तथा चौथी अंगुली कनिष्ठका का स्वामी बुध है। इन अंगुलियों के मूल भाग इन्हीं ग्रहों के पर्वत हैं। (चित्र से)

अंगुली	स्वामी
१. तर्जनी	गुरुदेव
२. मध्यमा	शनिदेव
३. अनामिका	सूर्यदेव
४. कनिष्ठका	बुधदेव

अंगुलियों के पर्वों में प्रथक-प्रथक् शक्ति वास है। जातक की इस शक्ति के विचार के लिए निम्न पर्व से ज्ञान किया जाना चाहिए। प्रथम उर्ध्व पर्व से ज्ञान शक्ति का मध्ययम भाग द्वितीय पर्व से विचार-शक्ति तथा तृतीय पर्व अंगुली के अधो भाग लौकिक शक्ति का ज्ञान करना चाहिए।

पर्व	उर्ध्व प्रथम पर्व	मध्य द्वितीय पर्व	अधो तृतीय पर्व
शक्ति	शक्ति	विचार शक्ति	लौकिक शक्ति

अंगुलियों के पर्वों पर तीर्थ वास भी है।

अंगुली	उर्ध्व भाग	मध्य भाग	अधो भाग
अंगुष्ठ	अष्टपद पर्वत	पितृ तीर्थ	ब्रह्म तीर्थ
तर्जनी	शत्रुञ्जय तीर्थ	पितृ तीर्थ	ब्रह्म तीर्थ
मध्यमा	पितृ तीर्थ	देव तीर्थ	देव तीर्थ
अनामिका	अर्बुद तीर्थ	देव तीर्थ	अर्बुद तीर्थ
कनिष्ठका	ऋषि तीर्थ	देव तीर्थ	देद तीर्थ

हाथ की अंगुलियों को सीधा करके देखें तो कुछ आड़ी रेखायें दिखाई देती हैं। इनका अपना फल होता है। अत: इन रेखाओं को गिनकर फल ज्ञात किया जाता है। यदि इन रेखाओं को ठीक प्रकार से गिना गया तो फल ठीक ही प्राप्त होगा।

—:०:—

रेखाओं की गणना में निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए

१. रेखाओं को गिनना प्रारम्भ करें तो प्रथम हाथ को साफ कर लें।

२. जब रेखाओं को गिनने लगे तो उस समय अंगुलियों को सीधा रखें ताकि कटी, फटी रेखाओं में सन्देह न रहे।

३. कनिष्ठका अंगुलियों से रेखायें गिनना प्रारम्भ करें।

४. कोई भी रेखा को छोड़ा न जावे।

५. आधी आधी रेखाओं को भी गिनें और दो रेखाओं को एक पूर्ण रेखा मानें आधी रेखा को आधी रेखा मान कर गणना की जावे।

६. रेखाओं में कुछ तो बिल्कुल ही साफ होती हैं और कुछ कटी फटी—अर्थात् साफ, सीधी तथा पूर्ण रेखाओं को प्रथक जोड़ा जावे दोनों के योग का ज्ञात कर फल का ज्ञान करें।

७. रोगियों के दोनों ही भाग गिने जावें क्योंकि कोई रेखा सिरे पर तो साफ है और बीच में स्पष्टत: प्रथक दिखाई देती है। इन रेखाओं के मध्य के कटे, फटे तथा खंडित रेखाओं को न गिना जावे क्योंकि यह सब प्रधान रेखा के अंग हैं तथा प्रथक से इनका फल नहीं होता है।

८. किसी पोर पर रेखा स्वतन्त्र ढंग से प्रथक हो तो उसे प्रथक मान कर गणना करें। अन्यथा सभी हिसाब गलत सिद्ध होगा।

९. अंगुष्ठ के ऊपर भी रेखायें होती हैं गणना के समय केवल अंगुलियों की रेखाओं को गिना जावे, अंगुष्ठ को नहीं गिनना चाहिये।

१०. अंगुलियों के पर्व पर पड़ी आड़ी अर्थात् खड़ी रेखाओं को न गिना जावे, क्योंकि रेखाओं के सम्बन्ध विचार शक्ति, मस्तष्क या प्रगति शीलता से है।

११. ठीक प्रकार से रेखाओं की गणना कर निम्न प्रकार से फल जानें।

अंगुष्ठानां पृथक रेखा गण्यन्ते पृथक।
रेखा द्वादशक सौख्य धन्य धान्य प्रदायकम् ।।
रेखा पच्चदशे चौर पोडश धूर्त वंचन।
पापी सप्तदशे संज्ञेयों धर्मात्माष्ट दशे भवेत ।।

१२ **रेखायें** :—हाथ की कुल रेखाओं की संख्या १२ हों तो ऐसा जातक अनेक गुणों से युक्त, धनवान तथा जीवन में अनेकों प्रकार के सुखों को भोगा करता है।

१३ **रेखायें** :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या १३ हो तो यह जातक कपटी नहीं होता है। यह सदा सच्चा व्य-वहार किया करता है। यह दूसरों के दु:ख में दु:खी होता है और दु:खी की सहायता करना अपना धर्म मान लेता है, ऐसा जातक विशेष भावुक होता है इस कारण दु:खी रहा करता है, इसके लिए आर्थिक परेशानी बनी रहा करती है, ऐसा जातक अपने प्रियजन, सगे सम्बन्धी की मृत्यु में पागल भी हो जाते हैं। धार्मिक कार्यों में इनका मन कम लगता है परन्तु यह धर्म का विरोध भी नहीं करते हैं।

१४ **रेखायें** :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में १४ रेखायें हों तो ऐसा जातक अपने हृदय की बात किसी को भी नहीं कहता है। यह दूसरों को बाहरी दिखावा ही दिखाया करता है। यदि कोई बात इसको लग जाती है तो उसे बरसों तक नहीं भूलता है, यह बरसों तक बदला चुकाने की प्रतीक्षा में रहता है, भले ही परिणाम कैसा ही क्यों न हो, यह समय पर अपने शत्रु को सर्प की तरह काट लेता है यह कभी भी अपने शत्रु को क्षमा नहीं करता है।

ऐसा जातक धार्मिक कार्यों में विशेष रुचि रखता है। मन्दिर, मस्जिद, धर्मशाला आदि के निर्माण में विशेष रुचि रखता है। ऐसा

जातक विशेष दानी होता है, बिना बिचारे दान किया करता है, इसके जीवन का अन्तिम भाग बहुत ही कष्टमब हालत में व्यतीत होता है और इस अवस्था में कोई भी सहाबता नहीं दिया करता है।

१५ रेखायें :—जिस जातक की हाथ की अंगुलियों में १५ रेखायें हों तो ऐसा जातक विशेष साहस वाला होता है तथा निर्भीक होता है किसी भी कार्य को साहस से करता है, भले उसमें सफलता मिले और चाहे असफलता ही प्राप्त क्यों न हो।

ऐसा जातक प्राणों को संकट में डालकर कार्य किया करता है। कभी २ ऐसा जातक चोरी, डकैती आदि करने लग जाता है। यदि हाथ में शुभ लक्षण हों तो चोरी आदि नहीं करता है।

१५ रेखाओं वाले जातक का चरित्र अच्छा नहीं होता है तथा यह चरित्र को महत्व नहीं देता है। विचार प्राय: निर्बल ही होते हैं।

१६ रेखायें :—जिन जातकों की हाथ की अंगुलियों की रेखायें १६ हों तो जातक जुआ खेलने में निपुण तथा व्यभिचारी होते हैं।

लूट मार करना, आग लगाना, हत्या करना तथा डाके डालना, वेश्या गमन, व्यभिचारी, स्त्रियों को उठा ले जाना, अपनी औरत की हत्या, ऐसे जातक के लिये आसान कार्य होता है। मां बहन तथा पूज्य औरतों को भी यह बुरी दृष्टि से देखता है और व्यभिचार की भी चेष्टा करता है।

जनता को हानिकारक आन्दोलनों में उकसाना शासकों के प्रति विद्रोह की भावना को भड़काना, साथ जनता में जबरदस्ती नेता बनना आदि ऐसे जातक का धर्म होता है, और कुछ हद तक यह सफलता भी प्राप्त कर लेता है।

१७ रेखायें :—जिस जातक की हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या १७ हो तो यह अनेक प्रकार के पाप करने में दक्ष होता है। सुन्दरी रूपवान स्त्रियों से बिशेष प्रेम करता है। यह किसी भी बात को

अपने हृदय में नहीं रख पाता है, यह शीघ्र ही किसी न किसी से इन गुप्त बातों को भी कह देता है। अन्त में इस कारण इसको हानि उठानी पड़ती है।

ऐसा जातक चुगल खोरी के गुप्त भेद की जानकारी भी बहुत ही सरलता से कर लेता है। यह भेदिये का कार्य बहुत सुन्दरता से कर सकता है।

ऐसा जातक सभी कार्य छिप कर करना चाहता है और प्रकट में साधुता ही दिखाता है। यह सभी के सामने बुरे काम तथा पाप कर्म करने से डरता है। यह समाज में अपना स्थान ऊपर के दिखावे बनाया करता है।

१८. रेखायें :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में १८ रेखा हों तो ऐसा जातक अनेक धार्मिक कार्य करने वाला सदाचार का पालन तथा समाज के बन्धनों को मानकर कार्य किया करता है।

यह ईश्वर तथा भाग्य पर विश्वास करते हैं और कार्य के फल की इच्छा न कर कार्य किया करते हैं, फल ईश्वर देगा ही इनका विश्वास होता है।

ऐसा जातक किसी भी कार्य को नवीन ढंग से करने में संकोच किया करता है और जब वह देखता है कि कोई उस कार्य को उस तरह से कर रहा है तो यह करने को तैयार हो जाता है।

यह अपने परिवार के सदस्य पत्नी, भाई बन्धु तथा पुत्र आदि से विशेष प्रेम करता है, उन्हें कष्ट देना बुरा समझता है। अपने सहयोगियों के साथ भी यह परोपकार की भावना से कार्य किया करता है। उनसे बदले में कुछ इच्छा नहीं रखता है। ऐसे जातक पर जब विपत्ति का समय आता है उस समय यह घबराता नहीं है और ईश्वर पर विश्वास रख कार्य करता है और भगवान के सहारे समय को काट दिया करता है।

१९. रेखायें :—हाथ की रेखाओं की संख्या १९ हों तो ऐसा जातक साधु स्वभाव का होता है। यह अनेकों गुणों की खान होता है और समाज के कल्याण तथा राष्ट्र एवम् विश्वहित की कामना से कार्य करता है। बालकपन में घर तथा सगे सम्बन्धी तथा परिवार के लोगों का मोह त्याग देता है तथा सत् पुरुष, साधु सन्यासी तथा दार्शनिक पुरुषों से सत्संग किया करता है।

ऐसा जातक अपने हृदय में किसी बात को गुप्त नहीं रखता है यह न किसी से कपट का व्यावहार करता है। यह विचार रखता है कि यदि कोई कपट का अथवा बुरा व्यवहार कर्म करता है तो उसका फल वह भोगेगा इसी भावना के कारण किसी का विरोध नहीं करता है।

संसार को अपना हितु तथा अपने परिवार का सदस्य मानकर व्यवहार करता है।

यह जातक अत्यन्त ही विद्वान तथा प्रसिद्ध होता है। यह अध्यात्मिक आत्मशान्ति के लिये बहुत ही प्रयत्न करता है यह वेदान्त का ज्ञानी तथा समर्पक होता है। आत्मा की उन्नति में विशेष विश्वास रखता है और उसके लिए कार्य करता है। यह जातक धार्मिक सभा, सुसाइटी तथा उत्सवों में विशेष रूप से भाग लेता है तथा यह क्षेत्र इसका कार्य क्षेत्र होता है। यह अपने कार्य करता है तथा कर्मों का दूसरों पर प्रभाव बढ़ता देखकर प्रसन्न होता है और भगवान को विशेष रूप से धन्यवाद दिया करता है।

२०. रेखायें :—जिस जातक की हाथ के अंगुलियों की रेखाओं की संख्या २० हों तो ऐसा जातक धर्म-पथगामी तथा धनवान तथा पुत्रवान होता है।

यह जातक कभी अपने शत्रुओं का विश्वास नहीं करता है। परन्तु इसके मित्र भी इसके साथ विश्वासघात कर जाते हैं। यह बहुत बड़ी-बड़ी योजनायें बनाता है परन्तु उसे सफलता कम मिलती है।

यह आपत्ति काल में भगवान में विशेष विश्वास रखता है और जब आपत्तिकाल समाप्त हो जावे तो यह ईश्वर को फिर भूल जाता है। इसका जीवन संघर्षमय व्यतीत होता है।

ऐसा जातक पूंजीवादी विचार धारा का विरोध किया करते हैं यह भौतिक साधना तथा समस्याओं का पुजारी होता है और उन्हें पूर्ण करने के लिए संघर्ष करता है। संघर्ष से सफलता में विश्वास रखकर कार्य करता है।

२१ रेखायें :—जिस जातक की हाथ की अंगुलियों की रेखओं की संख्या २१ हो तो जातक भाग्यवान, तेजवान, लोक में प्रसिद्ध होता है। यह जातक अपनी उन्नति स्वयं ही करता है। इसके उच्चपद तथा उत्थान में इसके माता-पिता तथा भाई बन्धुओं के सहयोग की आवश्यकता नहीं रहा करती है तथा यह सहयोग भी बहुत कम ही दिया करते हैं।

यह जातक आशावादी होता है, इस कारण जीवन में कभी निराश नहीं होता है सदा सुखी रहा करता है। यह किसी से भी कितना ही सहयोग लेना चाहे परन्तु इसे सहयोग प्राप्त नहीं हो पाता है। इसको अपने ऊपर कम विश्वास होता है। यह प्रत्येक कार्य में दूसरों का सहयोग चाहता है परन्तु जब इसे सहायता प्राप्त नहीं होती है तो यह शीघ्र ही सबकी आशा त्यागकर अपने कार्य में लग जाता है और सफलता प्राप्त कर लेता है।

इसकी विचारधारा में बहुत कम परिवर्तन देखने को मिलता है। यह हमेशा एक ही मार्ग का अनुगामी बना रहता है भले ही इसे कष्ट क्यों न प्राप्त हों।

२२ रेखायें :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में २२ रेखायें होती हैं तो ऐसा जातक विशेष आशावादी तथा जीवन में भी आदर्श अपनाता है। यह प्रत्येक का सम्मान किया करता है भले ही किसी की भावनायें इसके प्रति बुरी ही क्यों न हो।

२३ **रेखायें** :—जातक के हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या २३ हो तो ऐसा जातक किसी का भी विश्वास नहीं करता है। यह अपनी भार्या पुत्र मित्र पर अविश्वास किया करता है।

२४ **रेखायें** :—हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या २४ हो तो ऐसा जातक आदर्शवादी होता है। यह गुप्त रूप से बुरे कर्म कर लेता है परन्तु प्रकट में साधुता का आचरण किया करता है यह समाज में उच्च स्थान प्राप्त करने के लिये भी अनेक प्रकार से प्रयत्न किया करता है।

२५ **रेखायें** :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या २५ हो तो ऐसे जातक की आयु अधिक होती है तथा मित्र और पुत्र वर्ग से अधिक सुख प्राप्त होता है तथा ईश्वर पर विश्वास करके उसकी इच्छा को प्रबल मानकर चलते हैं और सुखमय जीवन व्यतीत करते हैं।

२६ **रेखायें** :—जिस जातक के हाथ में अंगुलियों की रेखाओं की संख्या २६ हो तो ऐसा जातक छल-कपट से परे रहता है यह अपने में किसी के प्रति बुरे विचार नहीं रखता है और न किसी के साथ कपट का व्यवहार ही करता है जो कुछ भी विचार इसके मन में आते हैं उन्हें शीघ्र तथा स्पष्ट सभी के सामने कह देता है भले किसी को अच्छा लगे अथवा बुरा यही इस जातक की प्रधान विशेषता होती है।

२७ **रेखायें** :—हाथ की अंगुलियों में २७ रेखाओं वाले जातक की आयु १०० वर्ष की होती है, यदि हाथ में अशुभ लक्षण हो तो आयु कम हुआ करती है। इस जातक का स्वास्थ भी ठीक रहा करता है।

२८ **रेखायें** :—अंगुलियों में २८ रेखाओं वाले जातक का हृदय स्वच्छ शीशे की तरह होता है। यह अपने परिवार के लोगों से विशेष प्रेम करता है। उनके लिए कष्ट सहकर भी उनका भला करता है।

२९ रेखायें :—हाथ की अंगुलियों की २९ रेखाओं वाले जातक का जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। इसके परिवारजन इसका विरोध करते हैं। यह कभी कभी साधु होने का विचार कर लेता है, परन्तु इसका वैराग्य नीच कोटि का ही होता है।

३० रेखायें :—हाथ की अंगुलियों की ३० रेखाओं वाला जातक विशेषतः मानसिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहता है। इनका स्वास्थ्य भी आये दिन खराब ही देखने में आता है। यह भगवान पर कम विश्वास कर उसे कष्ट का देवता मानते हैं। इनकी धारण बन जाती है यह सब कष्ट प्रभु की कृपा का फल है।

३१ रेखायें :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या ३१ हो तो यह जातक नीच प्रकृति का होता है यह अनेकों प्रकार के दुष्कर्म किया करता है।

३२ रेखायें :—जिस जातक से हाथ की रेखाओं की संख्या ३२ हों तो जातक धनवान यशवान तथा पुत्रवान होता है इसका जीवन सुखमय व्यतीत होता है।

३३ रेखायें :—जिस जातक के दायें हाथ की अंगुलियों में ३३ रेखायें हों तो ऐसा जातक सुखमय जीवन व्यतीत करता है। समाज में इसका विशेष उच्च स्थान होता है। यह विद्वान तथा धन-धान्य से युक्त रहा करता है।

३४ रेखायें :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों की रेखाओं की संख्या ३४ हों तो यह जातक विशेष यशवान होता है, वेद तथा वेदान्त का अच्छा ज्ञानी होकर प्रभु के सहारे अपना जीवन व्यतीत करता है। इसके परिवार के लोग भी इसका आदर किया करते हैं।

३५ रेखायें :—हाथ की अंगुलियों में ३५ रेखाओं वाला जातक विशेष भाग्यशाली होता है। यह जीवन में अनेकों प्रकार के सुख भोगता है।

३६ रेखायें :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में ३६ रेखायें हों तो ऐसा जातक बहुत धनवान होता है। इसके भाग्य में विद्या कम होती है परन्तु सर्वगुण कांचन वसंती के कारण जीवन में सभी प्रकार के सुख प्राप्त कर लेता है।

अंगुलियों के चिन्ह

हम अंगुलियों को ध्यान से देखें तो अंगुलियों के प्रथम भाग अथवा उर्ध्वपर्व पर कुछ चिन्ह दिखाई देते हैं इसमें कुछ की आकृति सीप की तरह तो कुछ की शंख की तरह और कुछ की आकृति चक्र के रूप की तरह गोलाकार होती हैं। हम इनको तीन भागों में विभक्त कर सकते हैं।

१. **सीप**—अथवा सांप की आकृति का चिन्ह।

२. **चक्र**—गोलाकार चिन्ह।

३. **शंख**—शंख की आकृति के चिन्ह।

१. एक सीप :—जिस जातक के दोनों हाथ में एक सीप का चिन्ह हो तो ऐसा जातक बहुत गुणवान, उच्चपद प्राप्त करने वाला तथा धनवान होता है।

२. दो सीप :—जिस जातक के दोनों हाथ की अंगुलियों में दो सीप के चिन्ह हों तो ऐसा जातक चतुर होता है यह भाषण देने की कला में अत्यन्त चतुर होता है, परन्तु इसकी आर्थिक दशा प्रायः अच्छी नहीं रहती है।

३. तीन सीप :—जिस जातक के दोनों हाथ की अंगुलियों में तीन सीप हों तो ऐसा जातक धन से विशेष प्रेम करता है, धन का संग्रह करता है, यह विशेष प्रतिभाशाली तथा बुद्धिमान होता है, यह धन का उपयोग धर्म के लिए किया करता है।

४. चार सीप :—जिस जातक के हाथ में चार सीप हों तो यह

जातक बहुत सम्पन्न, यशवान होता है और जीवन के मध्योत्तर भाग से साधु होकर देश तथा समाज और धर्म की सेवा किया करता है।

५. **पांच सीप** :—जिस जातक के हाथ में पाँच सीप हों तो ऐसा जातक प्राय: विद्वान तो नहीं होता परन्तु व्यापार आदि में धन खूब पैदा करता है। उच्चकोटी का व्यापारी होता है।

६. **छ सीप** :—जिस जातक के हाथ में छ: सीप हों तो यह जातक के लिये शुभ लक्षण है। यह अपने जीवन के अन्तिम भाग में संसार से विरक्त हो जाता हैं।

७. **सात सीप** :—जिस जातक के हाथ में सात सीप होती हैं तो ऐसा जातक जीवन भर कष्ट में रहता है जीवन में अनेक प्रकार की चिन्ताओं से ग्रस्त रहा करता है।

८. **आठ सीप** :—आठ सीप वाला जातक विद्वान होता है और भगवान का भक्त तथा उपासक होता है।

९. **नौ सीप** :—जिस जातक के हाथ में नौ सीप हों तो यह जातक संसार से मुक्त, भगवान का भक्त तथा साधु स्वभाव का होता हैं। यह जीवन में सभी प्रकार का सुख भोगता है, अन्त में सन्यासी हो जाता है।

(देखिये चित्र १७)

१०. **दस सीप** :—जातक के हाथ में दस सीप हों तो ऐसा जातक विद्वान, यशवान और धनवान होता है जीवन में सब कुछ प्रभु की इच्छा मानकर सुखी रहता है और अन्त में उसी प्रभु से प्रेम कर उसी के प्रेम में दिवाना हो जाता है और अन्त में मुक्त हो जाता है।

अथ सीप विचार

एक शीप गुणवंत होई, दुई शीप वक्ता जगमोही।
तीन शीप धन संग्रह करे, चार शीप जश गुण बहुधरे ॥
चार शीप ते अधिक जो, दशपर्यन्त यदि होय।
रिद्धि सिद्ध सों सुख करे, महापुरुष जग जोय ॥

अथ चक्र विचार-तथा फल

एक चक्र वाचाल बखाने, दुई चक्र गुणगान बहु जाने।
तीन चक्र वानिज्य धन जोवे, चारि चक्र सों दरिन्द्र जन जावे ।।
पांच चक्र सर्बांग विलासा छठा चक्र रस काम दुलासा।
सात चक्र बहु सुख को साजा, आठ चक्र रोगी तन कंजा ।।
नव चक्र सों राजा करे, दस चक्र ते सिद्ध पगु धरे।

१. **एक चक्र** :—जिस जातक के दोनों हाथ की अंगुलियों में एक चक्र हो तो जातक तीव्र बुद्धि वाला, अधिक बातें करने वाला भाषण कला में चतुर तथा योग्य होता है।

२. **दो चक्र** :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में चक्रों की संख्या दो हों तो ऐसा जातक सुन्दर, स्वरूपवान, स्त्रीयों को अपनी ओर आकर्षित करने वाला तथा अनेकों गुणों से युक्त विद्वान होता है

३. **तीन चक्र** :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में तीन चक्र हों तो ऐसा जातक व्यापारी होता है, व्यापार में धन पैदा करता है। तथा ऐसा जातक विशेष कामी, स्त्रीयों से प्यार करने वाला तथा कामी होता है।

४. **चार चक्र** :—जिस जातक के हाथ में चार चक्र हों तो ऐसा जातक धन-हीन होता है। यह जातक परिवार तथा समाज के द्वारा प्रदत्त दुःखों से दुःखी होता है। परिवार में आये दिन क्लेश ही रहता है।

५. **पांच चक्र** :—जिस जातक के हाथ में पांच चक्र हों तो यह जातक भोग-विलास से प्रेम करने वाला होता है। यह जातक विद्वान होता है तथा लेखन क्रम के द्वारा जीविका कमाता है।

६. **छः चक्र** :—छः चक्र वाला जातक विद्वान होता है। यह जातक ज्ञानवान, चतुर, काम प्रिय तथा ललित कला से प्रेम करता है तथा सुन्दरता से विशेष प्रेम किया करता है।

७. **सात चक्र** :—जिस जातक के हाथ में सात चक्र होते हैं तो यह जातक अनेक गुणों से युक्त, विद्वान होता है, यह जातक प्रकृति का उपासक तथा सुख पूर्वक जीवन यापन करता है।

८. **आठ चक्र** :—जिस जातक के हाथ में आठ चक्र हों तो ऐसे जातक का स्वास्थ्य हमेशा खराब रहता है। कोई न कोई रोग इसके शरीर में लगा रहता है और वह दुःखी रहता है।

९. **नौ चक्र**:—जिस जातक के हाथ में नौ चक्र हों तो ऐसा जातक विद्वान, यशवान, धनवान तथा अनेक प्रकार के ऐश्वर्यों से सम्पन्न होता है। (दे० चि० १७)

१०. **दस चक्र** :—जिस जातक के हाथ में दस चक्र हों तो ऐसा जातक अनेक प्रकार की साधनायें करने वाला मन्त्र शास्त्र का ज्ञाता अनेक प्रकार की सिद्धियां किया करता है।

अंगुष्ठ चक्र का विशेष फल

जिस जातक के बांये हाथ के अंगुष्ठ में चक्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म कृष्ण-पक्ष का होता है। तथा जन्म का समय रात्री काल में होता है।

यदि जातक के दोनों ही हाथ के अंगुष्ठ में चक्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म शुक्ल-पक्ष में होता है और जन्म का समय दिन में होता है।

यदि जातक के दोनों ही हाथ के अंगुष्ठों में चक्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म कृष्ण-पक्ष में होता है और जन्म का समय दिन में होता है।

अंगुली के हिसाब से चक्र विचार

तर्जनी अंगुली :—तर्जनी अंगुली में चक्र हो तो जातक धनवान तथा प्रतापी होता है। इसके मित्रों की संख्या अधिक होती है तथा इसे मित्र लाभ भी कराया करते हैं तथा जीवन-काल सुखमय व्यतीत होता है।

मध्यमा अंगुली :—हाथ की दूसरी अंगुली मध्यमा में चक्र हो तो ऐसा जातक ईश्वर भक्त होता है। बड़े २ यश करने वाला देव पूजक, पुजारी होता है और प्रभु की कृपा से धन का लाभ करता है।

अनामिका अंगुली :—हाथ में सूर्य की अनामिका अंगुली में चक्र हो तो ऐसा जातक व्यापार करने वाला, व्यापारी विशेष सहन शक्ति रखने वाला होता है, ऐसा जातक व्यापार से धन का लाभ करता है।

कनिष्ठका अंगुली :—हाथ में बुध की अंगुली कनिष्ठका में चक्र हो तो ऐसा जातक प्रतापवान, धनवान तथा सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

यदि सीधे हाथ की समस्त चारों अंगुलियों में चक्र हो तो ऐसा जातक विश्व भ्रमण करता है।

अंगुष्ठ चक्र :—जातक के हाथ के अंगुष्ठ में यदि चक्र का चिन्ह हो तो ऐसा जातक अपने परिवार से धन लाभ करता है तथा ऐसे जातक को गुप्त धन, गढ़ा हुआ धन तथा पैतृक धन का लाभ हुआ करता हैं।

शंख विचार

एक शंख नर सुखी कराई, दो शंख दरिहि के भाई।
तृतीय शंख से निर्गुण बखाने, चार शंख में गुणा बुहु जाने ॥
पाँच शंख से निर्धन होई, छठा शंख जाने सब कोई।

सात आदि अंत दश इतने जो थाय।
राजा कहिये दास को, चले निशान बजाय ।।

अंगुलियों के उर्ध्व भाग को भली प्रकार से देखें यदि अंगुलियों के उर्ध्व भाग में शंख की आकृति हो तो उनकी गणना करें और फल निम्न प्रकार से जानें ।

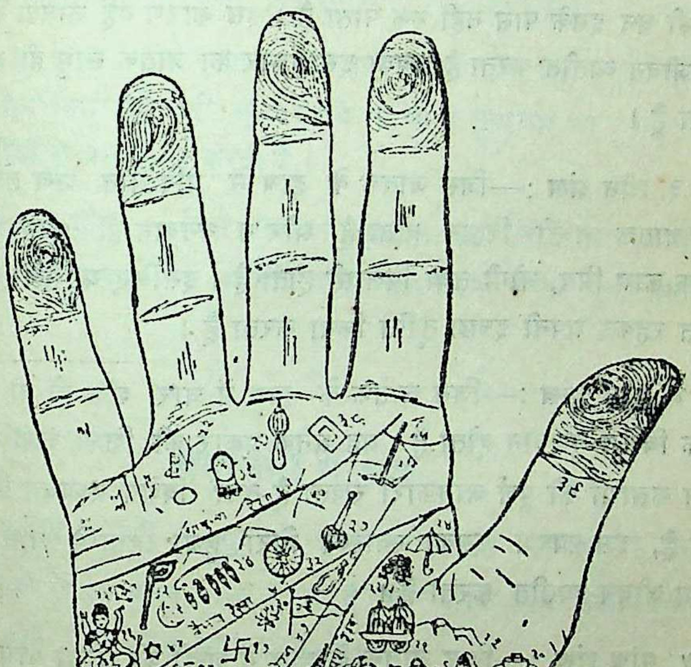

(चित्र नं० १७)

१. **एक शंख** :—यदि जातक के हाथ की अंगुलिओं की शंख संख्या एक हो तो ऐसा जातक सुखी, अध्ययन करने वाला पराक्रमी, तथा धनवान होता है।

२. **दो शंख** :—यदि जातक के दोनों हाथों की अंगुलियों में शंख संख्या दो हो तो जातक धनहीन होता है, अनेक प्रकार के प्रयत्न करने पर भी धन इसके पास नहीं रुक पाता है। इस कारण यह जातक कष्टमय जीवन व्यतीत करता है अथवा इस प्रकार का जातक साधु हो जाया करता है।

३. **तीन शंख** :—जिस जातक के हाथ में यदि तीन शंख हों तो ऐसा जातक न तो विद्वान होता है और न धनवान ही परन्तु ऐसा जातक काम प्रिय, भोगी तथा बिलासी होता है। इसलिए यह स्त्री सेवा में रत रहकर अपनी इच्छा तृप्ति किया करता है।

४. **चार शंख** :—जिस जातक के हाथ में चार शंख हों तो ऐसा जातक विशेष गुणवान होता है। यह अनेक प्रकार की शिल्प कला तथा ललित कलाओं की पूर्ण जानकारी रखता है तथा विशेष अध्ययन किया करता है, इस कारण इसका स्वास्थ्य गिरा हुआ रहता है तथा यह सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

५. **पांच शंख** :—जिस जातक के हाथ में शंखों की संख्या पांच हो तो ऐसा जातक विद्वान होता है परन्तु ऐसे जातक के पास लक्ष्मी की कमी रहा करती है तथा यह विदेश यात्रा करके अपनी जीविका चलाया करता है।

६. **छः शंख** :—जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में छः शंख हो तो ऐसा जातक अनेक भाषाओं का ज्ञाता, विद्वान तथा धनवान होता है, समाज में ऐसे जातक की प्रतिष्ठा खूब होती है।

७. सात शंख :—जिस जातक के हाथ में सात शंख हों तो ऐसा जातक प्राय: धनहीन रहता है परन्तु ऐसे जातक की काम शक्ति विशेष प्रबल होती है तथा बुरे कर्मों में रत रहा करता है।

८. आठ शंख :—जिस जातक के हाथ में शंखों की संख्या यदि आठ हों तो ऐसा जातक विद्वान, समाज में प्रतिष्ठावान तथा योग्य होता है। तथा ऐसे जातक पर प्राय: धन की कमी नहीं रहती है।

९. नौ शंख:—जिस जातक के हाथ में नौ शंख होते हैं तो ऐसा जातक गान विद्या का प्रेमी, नृत्य आदि में योग्य सुन्दरता का उपासक तथा स्त्रीयों से प्रेम किया करता है।

१०. दस शंख :—जिस जातक के हाथ में शंखों की संख्या १० हों तो ऐसा जातक धनवान, यशवान तथा सुन्दर स्त्री करके युक्त होता है।

अंगुलियों में शंख

१. तर्जनी अंगुली :—गुरु की तर्जनी अंगुली में शंख हो तो ऐसा जातक मित्रों से द्वेष करने वाला होता है और इसके मित्र इसके पतन तथा धन हानी में सहायक हुआ करते हैं।

२. मध्यमा अंगुली :—शनि की मध्यमा अंगुली में यदि शंख हो तो ऐसा जातक देव प्रकोप से दु:खी होता है और धन का व्यय देव कार्यों में किया करता है।

३. अनामिका अंगुली :—सूर्य की अनामिका अंगुली में यदि शंख हो तो जातक सांसारिक कार्यों में धन व्यय करता है तथा जीवन परेशानियों से युक्त रहता है।

४· **कनिष्ठका अंगुली :**—बुध की अंगुली कनिष्ठका में शंख का चिन्ह हो तो जातक व्यर्थ कार्यों में धन का व्यय करता है, नवीन व्यापार आदि में नुकसान दे दिया करता है।

अंगुष्ठ में शंख का चिन्ह हो तो ऐसा जातक कठोर परिश्रम करता है। तथा पैतृक धन का लाभ करता है ऐसा जातक प्रायः किसी निसंतान सम्बन्धी के यहां गोद चला जाता है। फिर आगे इसका जीवन सुखमय जीवन व्यतीत होता है।

॥ प्रथम भाग समाप्त ॥

द्वितीय भाग

१. नाखून

२. कर पृष्ठ

३. हाथ के चिन्ह

४. ग्रह क्षेत्र

५. सूर्य का क्षेत्र

हस्त रेखा विज्ञान

६. हाथ की रेखायें

७. रेखा का स्वरूप

८. रेखाओं के चिन्ह

९. हाथ की प्रमुख रेखायें

प्रथम परिच्छेद

द्वितीय भाग

नाखून (The Nails)

सामुद्रिक शास्त्र में जितता महत्व अंगुलियों का है अथवा हाथ और हाथ की बनावट का है, इससे अधिक महत्व नाखूनों का है ।

I consider the nails most important in the Study of the hand they are sure indication of temper and also of health "Cheirois."

नखों से शारीरिक शक्तियों में विकास, मानसिक क्रियायें, स्वास्थ्य, स्वभाव, मनोवृत्ति, रोग, भावी जीवन के शुभाशुभ घटनाओं का ज्ञान हाथ से जितना नहीं हो सकता है, उससे अच्छा ज्ञान होता है हाथ के नाखूनों से सभी बातों का स्पष्ट उत्तर मिलता है इस बात को केवल सामुहिक ही नहीं भारतीय चिकित्सा शास्त्र भी स्वीकार करता है। रोगी के नखों को देखकर वैद्य आधुनिक एलौपैथिक चिकित्सक आदि रोगी का निदान करते हैं, रोग के कारणों का पता लगाकर फिर उसके उपचार भूमिका बनाते हैं । मानव के गूढ़ और अन्तरतम रोगों के लक्षण नखूनों पर स्पष्ट दिखाई दिया करते हैं ।

नाखूनों की परीक्षा से जहाँ मानव के स्वभाव मानसिक क्रिया तथा स्वास्थ्य का ज्ञान होता है तो दूसरी ओर मानव की दुर्बलताओं का भी ज्ञान होता है मानव के बहुत रोग तथा दुर्बलतायें तथा गुण ऐसे होते हैं जो मानव को पैतृक रूप में प्राप्त होते हैं तथा जिनके द्वारा मानव के शरीर में भयंकर रोग पैदा होते हैं उन्हें सभी का ज्ञान नाखूनों से होता है ।

मानव को अपने पिता, पितामह आदि से विरासत क्या मिला है, इनके मानसिक विचारों पर उसके पितृ-पक्ष का कैसा और कितना असर है, यह सभी ज्ञान नाखूनों से हो जाता है।

गठन, आकार-प्रकार, स्वरूप, आकृति तथा बनावट आदि की दृष्टि से नाखूनों के चार प्रमुख स्वरूप होते हैं।

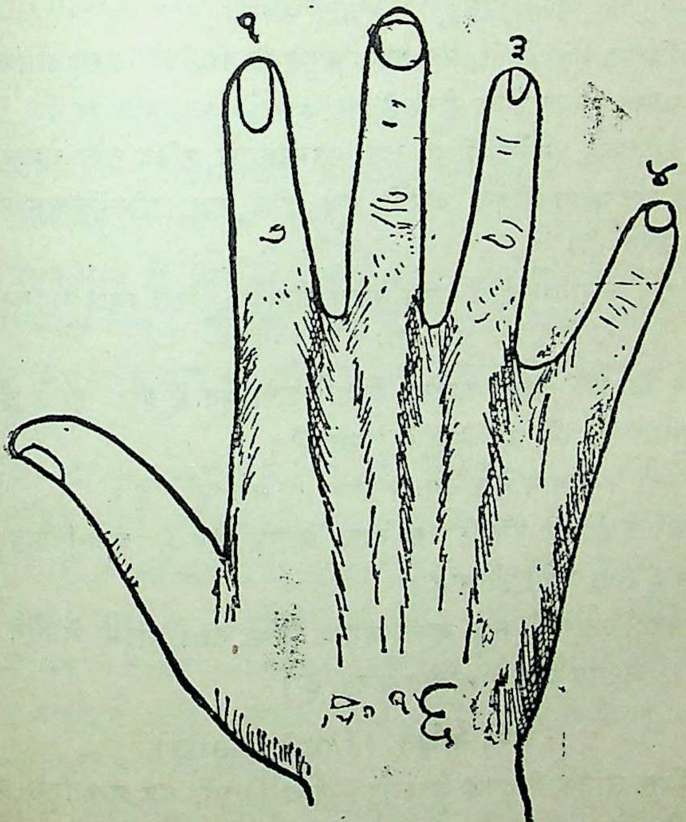

१. लम्बे नाखून (Long Nails)
२. चौड़े नाखून (Broad Nails)
३. छोटे नाखून (Short Nails)
४. नाटे नाखून (Narrow Nails)

विद्रुमसचयः लश्रक्षणाः पाणिनखः कच्छपोन्नताः स्निग्धाः ।
स शिखाः क्रमेण निपुलाः पर्वार्धमिता महीशानम् ॥
दीर्घाः कुटिलारुक्षाः शुक्लनिभा यस्य करनखा विशिखाः ।
तेजोमृजविहिनाः स हीयते धान्य धन भोगे ।
पुष्पयुतैर्दुःशीलाः श्वतै श्रमणास्तु षोष मैः क्लोबाः ॥
परतर्कका विवर्णैश्चिपिटैः स्फुटितैर्नखैनिः स्वाः ॥

चिकने, मूंगे के से रंग तथा कछुवे के पीठ की तरह ढलाव वाले नख वाला जातक राजा होता है।

टेढ़े, रूखे, सफेदी लिए तथा स्वच्छता से रहित तथा चमत्कार से रहित नख वाला जातक दरिद्री, तेज हीन तथा भोग-विलास से हीन हुआ करते हैं।

पुष्प के समान छोटे नख वाला जातक कुटिल स्वभाव का होता है।

सफेद नख वाला जातक विद्या तथा धन से हीन होता है तथा भिक्षायापन करके उदर पोषण करता है।

भूसी के समान नख वाले जातक नपुंसक होते हैं।

बुरे तथा भद्दे रंग के नख वाला जातक व्यर्थ में वाद-विवाद किया करता है तथा रोगी होता है।

चपटे, टूटे, फटे नख वाला जातक विद्या तथा लक्ष्मी से हीन होता है और कष्टमय जीवन व्यतीत करता है।

लम्बे नाखून (Long Nails)

जिस जातक के हाथ के नाखून लम्बे हों तो वह शारीरिक दृष्टिकोण से ठीक नहीं रहा करते हैं ऐसे जातक के हृदय तथा फेफड़े निर्बल होते हैं, और यह उन शारीरिक रोगों से ग्रसित होता है जो इनके शरीर के अंगों से सम्बन्धित रहा करते हैं। यह रोग तपेदिक, सूलादिक, प्रभृति, हृदय रोग से ग्रस्त रहता है।

लम्बे नाखून यदि सिरे के नीचे अंगुली की ओर तथा एक कोर से दूसरे कोर तक अधिक मुड़ा हुआ हो तो जातक को ऐसा रोग उतना ही अधिक मात्रा में होता है।

नख लम्बा हो और उसके बीच में रेखायें हों तो जातक अधिक निर्बल कोमल तथा कमजोर होता है। ऐसा जातक हो सकता है कि उसे हृदय रोग न हो परन्तु सूक्ष्म परीक्षा से इसका प्रभाव स्पष्ट रूप से सामने आ जाता है। ऐसे जातक को सर्वदा सावधानी से रहना चाहिए, क्योंकि इन्हें न्यूमोनिया आदि रोग हो सकता है।

लम्बे नाखून वाला जातक नीति शास्त्र का ज्ञान वाला होता है और उसके अनुसार चला करता है।

नाखून लम्बे हों, सिरे पर चौड़े हों तथा उदगम स्थान पर नीले हैं अथवा नीलमा लिये हों तो ऐसे जातक की हृदय की गति निर्बल होती है और रक्त प्रवाह ठीक नहीं रहता है ऐसा जातक ब्लैड प्रेसर का रोगी होता है।

जिस जातक के नाखून लम्बे हों साथ ही पतले हों तो ऐसे जातक की रीढ़ की हड्डी निर्बल होती है, साथ कमर भी कमजोर होती है, ऐसा जातक शरीर में ऊपरी भाग से ग्रस्त रहता है यह रोग फेफड़ा, छाती, गले (कण्ठ) आदि के रोगी होते हैं।

इस प्रकार के नाखून भगवत कृपा से मुड़े हों और अधिक पतले हों तो यह जातक की हड्डी के झुकाव की सूचना देते हैं ऐसा जातक नाजुक तथा कायर स्वभाव का होता है।

लम्बे नाखून वाले जातक अधिक कोमल स्वभाव तथा शान्त प्रकृति के होते हैं। यह प्रत्येक विषय को सुगमता से ग्रहण कर लेते हैं। परन्तु यह कल्पना लोक में विशेष रहा करते हैं। जिन वस्तुओं और बातों को अपने स्वभाव के विरुद्ध पाते हैं उन्हें संशय की दृष्टि से देखते हैं।

चौड़े नाखून (Broad Nails)

नाखून लम्बाई से अधिक चौड़े हों तो ऐसा जातक झगड़ालू स्वभाव का होता है। यह व्यक्ति वाद-विवाद, विरोध करना अधिक पसन्द करता है। यह दूसरों की हंसी उड़ाने वाले कटू एवम् व्यंग वाक्य बोलने वाले तथा दूसरों को चिड़ाना अच्छी प्रकार से जानता है। ऐसे जातक को बहुत क्रोध आता है, और क्रोध का प्रभाव स्थायी होता है और क्रोध शान्त नहीं होता है, ऐसा जातक स्वतन्त्रता पूर्वक किसी का अपने ऊपर अधिकार नहीं मानता है। जब यह किसी विषय पर अपनी राय बना लेते हैं तो उस पर निश्चित रहा करते हैं उसमें परिवर्तन हो यह इन्हें स्वीकार नहीं होता है।

नाखून चौड़े हों तथा बाहर की ओर हों तो ऐसे जातक को प्रायः लकवा, पक्षाघात का भय रहता है।

चौड़े नाखून हों और उनकी शक्ल कोड़ी की तरह हो तो ऐसे जातक को प्रायः पक्षाघात, लकवा का रोग हुआ करता है।

छोटे नाखून (Short Nails)

छोटे नाखून हृदय के प्रभाव को अंकित करते हैं ऐसे जातक का हृदय कमजोर हुआ करता है, परिश्रम से शीघ्र थक जाता है। ऐसे जातक के परिवार में प्रायः सभी सदस्यों के नाखून पतले ही हुआ करते हैं।

नाखून बहुत छोटे हों तथा कठिनाई से दिखाई दे तो ऐसा जातक हृदय रोगी होता है तथा रुधिर का प्रभाव कम ही रहा करता है, इस कारण इसे ब्लेड प्रेसर हो जाया करता है।

नाखून छोटे हों और अत्यधिक चपटे हों अथवा सीप के समान हों और उसके किनारे उठ रहे हों तो ऐसा जातक चेतना हीन, लकवा तथा पौरुष सम्बन्धी रोगों का रोगी होता है।

छोटे नाखून वाले जातक को हृदय रोग का होना एक साधारण सी बात है। ऐसे जातक की कमर तथा शरीर के ऊपर के आधे भाग में सदैव कष्ट रहा करता है।

छोटे नाखून वाले जातक का स्वभाव बहुत ही विलक्षण होता है। यह जातक स्वयं के विषय में संशयी मनोवृति के होते हैं। यह तर्क क्रिया विचार का ध्यान रखकर प्रत्येक विचार पर विचार किया करते हैं। ऐसा जातक प्रायः लम्बे नख वालों से अधिक व्यवहारिक होता है।

छोटे नखून यदि चौड़े हैं और उनका आधा भाग दबा हो अथवा अधिक चौड़ा हो तो ऐसा जातक झगड़ा करने वाला तथा चिढ़-चिढ़े स्वभाव वाला तथा ऐश्वर्य के उपभोग की लालसा किया करता है। अपने सम्बन्धी मित्र तथा आस-पास के बालकों को अपने वश में रखता है। यह जातक व्यवहार कुशल नियमानुसार चलने तथा बहुत ही योग्यता से बातचीत किया करता है।

इस प्रकार के नाखून वाले जातक के हाथ में मंगल का पर्वत उच्च हो तो यह जातक प्रायः स्वयं ही झगड़ा प्रारम्भ करते हैं और हर बात झगड़े से करता है।

छोटे नाखून वाले जातक का विचार अस्थिर स्वभाव वाला चंचल मनोवृति का होता है। दूसरे मनुष्यों को चिढ़ाना तथा उनकी हंसी उड़ाने में इन जातकों को विशेष आनन्द आता है। यह व्यर्थ के वाद-विवाद, व्यर्थ की बकवास बहुत ही किया करते हैं। ऐसे जातक प्रायः अपनी स्त्री से विशेष प्रेम करते हैं, साथ ही अपने बन्धु-बान्धव, सगे-सम्बन्धियों और हरिजनों से विशेष मेल-जोल रखा करते हैं।

प्रायः देखा जाता है कुछ जातक अपने हाथ के नाखूनों को अपने दांतों से काटते रहते हैं और इस प्रकार जातक के नाखून प्रायः छोटे हो जाते हैं। ऐसे जातक का स्वभाव डरपोक होता है तथा कायर प्रकृति का होता है। ऐसे जातक का स्वभाव भी उत्साह बर्धक

नहीं होता है। ऐसे जातक की स्नायुविक शक्ति, निर्बल और निकम्मी होती है।

नाखून छोटे हों साथ ही गोल हों तो ऐसा जातक छिन्द्रान्वेषी होता है तथा जातक स्वभाव से चिड़चिड़ा होता है परन्तु ऐसे जातक की प्रकृति तामसी नहीं हुआ करती है।

नाखून छोटे हों और अत्यन्त कोमल हों और चौड़े न हों तो यह जातक के बड़प्पन की सूचना है, ऐसे लक्षण वाला जातक हास्यरस तथा विरोधाभासा की विषयों का विश्लेषण किया करता है और इस प्रकार के कार्य में उसे अधिक सफलता भी प्राप्त होती है।

नाखून छोटे हों परन्तु चौड़े न हों तो जातक बुद्धिमान कुशाग्रबुद्धि तथा चंचल स्वभाव का होता है ऐसा जातक प्रत्येक विषय को बहुत ही शीघ्र समझ लेता है और शीघ्र ही उस विषय पर टीका-टिप्पणी कर सकता है, ऐसा जातक पत्रकार, लेखक तथा उच्चकोटी का विचारक होता है।

नाखून छोटे हों तथा जातक की हाथ की अंगुलियां चौड़ी हों और हाथ का अंगुठा छोटा हो तो ऐसे जातक के पास विविध प्रकार की वस्तुओं का संग्रह होता है तथा जातक इन वस्तुओं को आधार पर न रखकर इधर-उधर परिवर्तन किया करता है।

भाग्यवश ऐसे हाथ के नाखून तथा अंगुलियां स्त्री जातक के हाथ में हों तो यह बहुत कर्कश स्वभाव की होती है।

ऐसी स्त्री जातक के हाथ में मस्तष्क रेखा छोटी हो और कनिष्टका की ओर झुक रही हो बुध के पर्वत पर गड्ढा हो तथा रेखा जाल हो मंगल और चन्द्र के पर्वत उच्च हो, हृदय रेखा छोटी हो साथ पर्व सुस्पष्ट हो तो यह स्त्री जातक में पुरुष के स्वभाव वाली अंगुलियां होती हैं तथा यह विराङ्गना होती हैं तथा ऐसे कार्य किया करती हैं जिससे इसे यश कीर्ति तथा गौरव मिलता है।

हाथ की सबसे छोटी अंगुली कनिष्ठका का नाखून ही छोटा हो तो जातक बहुत ही हँसी मजाक किया करता है तथा दूसरे जातकों की प्रकृति स्वभाव, रूचि और विचित्रताओं का शीघ्र ही अध्ययन कर लिया करता है।

नाटे नाखून (Narrow Nails)

नाटे नाखून वाले जातक की रीढ़ की हड्डी कमजोर होती है यह पेट तथा पसली और स्नायु संबन्धी रोगों से घिरा रहा करता है।

नाटे नाखुन बहुत पतले हों और मुड़े हों तो जातक का शरीर कमजोर होता है।

नाखून नाटे हों और बाहर सिर की ओर मांस में उभरे हुए हों तो ऐसा जातक प्राय: लकवा फालिज का रोगी होता है।

नाखून बहुत ही नाटे हों और धंसे हुए प्रतीत हों तो ऐसे जातक को स्नायुविक रोगों के आक्रमण का सदैव भय बना रहता है।

नाखून नाटे हों और साथ ही फटे-फटे हों तो ऐसा जातक प्राय: छलहीन कठिन परिश्रम करने वाला तथा कमजोर होता है।

नाखून का रंग (Colour Nails)

जिस जातक के नाखूनों का रंग अरुण हो तो यह बहुत ही सुख भोगने वाला अनेक पुत्र और पौत्रों से युक्त धनवान तथा समाज उसका सम्मान किया करता है।

जिस जातक के नाखूनों का रंग काला हो तो ऐसा जातक बहुत दु:खी रहता है। धन की सदैव कमी रहती है।

नाखूनों में विशेष चमक हो तो ऐसे जातक की कल्पना शक्ति बहुत ही प्रबल होती है।

नाखूनों का रंग श्वेत हो तो ऐसा जातक सर्वदा ज्वर से पीड़ित रहता है तथा स्वास्थ्य ऐसे जातक का कभी भी ठीक नहीं रहता है।

नाखून स्वच्छ तथा श्वेत हो तो ऐसा जातक क्रोधी, हठी, विश्वास-घाती तथा दुष्ट और खेती के काम में योग्य होता है।

नाखून श्वेत रंग के हों और नाखून सुपारी के आकृति के हों तो ऐसे जातक को क्रोध बहुत ही कम आता है और आता भी है तो शीघ्र शान्त हो जाता है।

यदि स्त्री जातक के हाथ में नाखून श्वेत रंग के हों तो यह स्त्री धूर्त, चालाक, विश्वासघात करने वाली लम्पट तथा ढीठ स्वभाव की होती है।

नाखूनों का रंग श्वेत हो और नाखून लम्बे हों तो ऐसा जातक दुष्ट स्वभाव वाला, जिद्द करने वाला, किसी पर विश्वास न करने वाला

होता है। यह जातक कृषि कर्म का आचार्य होता है और प्रत्येक को नीति के द्वारा अपने वश में कर लेता है।

नाखून श्वेत रंग के हों तथा बड़े और वर्गाकार भी हों तो जातक में प्रतिशोध की भावना बहुत ही प्रबल होती है, यह जातक हर समय बदला लेने के अवसर की खोज में रहता है और अवसर प्राप्त होता है तो बदला ले ही लिया करता है।

नाखून मिट्टी के रंग के हों तो ऐसा जातक चोरी करने वाला दुष्ट बुद्धि वाला तथा दुष्टों की संगत में रहा करता है।

नाखूनों का रंग पीला हो तो जातक का स्वभाव कठोर होता है यह निर्दयी होता है और हमेशा चिन्ता करने वाला होता है, यह जातक बहुत कम ही अपने घर में रहता है तथा हमेशा परदेश में ही वास किया करता है।

जिस जातक के नखूनों का रंग लाल होता है तो जातक बहुत ही क्रोधी स्वभाव का तथा प्रतापी होता है ऐसा जातक हमेशा परिवार की चिन्ताओं से घिरा रहा करता है।

नाखूनों का रंग श्वेत हो साथ ही नाखून लम्बे हों तो ऐसा जातक दूरदर्शी, विचारशील, बुद्धिमान तथा स्थिर स्वभाव वाला होता है।

नाखूनों का रंग पीला हो तथा नाखून लम्बे या मुड़े हों तो ऐसे जातक का स्वभाव कठोर निर्दयी होता हैं। ऐसा जातक देखने में भले ही सुन्दर और हंसमुख हो परन्तु सहनशीलता और सहानुभूति ऐसे जातक के पास नाम मात्र ही होती है। ऐसा जातक चाहे स्त्री हो अथवा पुरुष दोनों ही निर्भिक स्वभाव के तथा नृशंस होते हैं। ऐसे जातक शिकारी, मछुआ, व्याध, चिड़िमार हुआ करते हैं।

नाखूनों का रंग लाल हो और नाखून छोटे हों तो जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा तामसी होता है तथा ऐसा जातक शीघ्र ही उत्तेजित हो जाता है।

नाखूनों का रंग श्वेत हो और नाखून छोटे तथा गोल हों तो ऐसा जातक क्रोधी स्वभाव का होता है।

नाखून श्वेत हों, साफ तथा पानीदार हों तथा इसमें गुलाबी रंग की झलक हो साथ ही नाखून चपटे हों या सीधे हों तो जातक योग्य, कार्य-कुशल, स्वाभिमानी तथा सामान्तकरण वाला होता है।

नाखूनों का रंग बदरंग हो और आकृति भी विकृत हो साथ ही नाखून फूले हुए और मोटे हों या प्रमाण के विरुद्ध हों, टेढ़े हों तो ऐसा जातक बहुत कामुक तथा विषयान्ध स्वभाव का होता है।

नाखूनों का रंग श्वेत हो और नाखूनों पर दुष्ट चिन्ह हों तो जातक की अकाल मृत्यु होती है। ऐसे चिन्ह वाला जातक यकायक ही मृत्यु को प्राप्त हो जाता है।

नाखूनों का रंग एकदम श्वेत हो तो ऐसा जातक योगी स्वभाव का होता है।

नाखूनों के प्रारम्भ में रक्तीम रंग हो और उसमें अन्य रोगों का मिश्रण दिखाई दे तो जातक का स्वभाव झगड़ालू होता है तथा ऐसे जातक की मृत्यु विषूचिका आदि रोगों से होती है।

नाखूनों का रंग लाल हो और नाखून सुकड़े हों तो ऐसा जातक दुष्ट स्वभाव का होता है, यह अपने स्वभाव के कारण अपने पड़ौसियों तथा सहयोगियों से झगड़ा करता है और उसके सहयोगी इससे असंतुष्ट रहा करते हैं।

नखों का रंग श्यामता लिए पीले रंग का हो तो ऐसा जातक प्रायः रोगी रहा करता है तथा इस प्रकार का जातक विश्वास के योग्य नहीं होता है।

नाखूनों पर चिन्ह

नाखूनों पर पूर्ण चन्द्र के समान चिन्ह हों तो ऐसे जातक की रक्त संचालन क्रिया दोष पूर्ण होती है तथा रक्त विकार रोगों से रोगी रहता है।

नाखूनों पर दाँत के समान चिन्ह हों तो यह जातक के गत रोगों की सूचना है ।

नाखूनों पर विभिन्न प्रकार के चिन्ह हों और नखूनों का रंग लाल हों तो ऐसा जातक बहुत दुष्ट स्वभाव का होता है । तथा ऐसे जातक का साथ स्वप्न में भी नहीं करना चाहिये क्योंकि यह जब चाहे जिस प्रकार से विश्वासघात कर सकता है ।

नाखूनों पर अर्ध चन्द्र का चिन्ह हो और नाखून लम्बे अथवा छोटे हों तो यह हृदय की निर्बलता का सूचक है । ऐसे जातक की मृत्यु हृदय की गति के अनायास रुक जाने के कारण होती हैं ।

नाखूनों पर अर्ध चन्द्र का चिन्ह विशाल आकार का हो तो हृदय की गति तथा रक्त प्रवाह का परिणाम उतना ही तीव्र होगा ।

ऐसे जातक को कभी भी उत्तेजित नहीं होना चाहिए तथा उन सभी क्रिया तथा कर्मों से पृथक रहना चाहिये जिसके कारण रक्त प्रवाह में वृद्धि हो सकती है । यदि यह जातक सावधान नहीं रहता है तो इसे निम्न प्रकार के नुकशान तथा शारीरिक हानि हो सकती है ।

१. रक्त प्रवाह अत्यन्त तीव्र गति से मस्तिष्क की ओर प्रवाहित हो तो उसके फल स्वरूप, पक्षाघात, लकवा, मृगी, मूर्छा, अर्द्धाङ्ग तथा अन्य प्रकार के वायु के रोगों का प्रकोप हो सकता है ।

२. रक्त प्रवाह विशेष तीव्र गति से मस्तिष्क की ओर प्रवाहित हो इसके फलस्वरूप धमनियों पर आवश्यकता से अधिक दबाव पड़ेगा इस कारण हृदय की रक्तवाहनीय धमनियां फट भी सकती हैं ।

इस प्रकार के लक्षण वाले जातक को मादक पदार्थ, भांग, गांजा, चरस, शराब आदि का प्रयोग कभी नहीं करना चाहिये तथा अन्य सभी प्रकार के उत्तेजना प्रदायक पदार्थों के सेवन से बचना चाहिये ।

जातक के हाथ में निम्न लक्षण और हों तो इस प्रकार से वायु-जनित रोगों से आक्रमण भय और अधिक बढ़ जाता है ।

१. मस्तिष्क रेखा द्विप (—०—) चिन्ह हो तो जातक पर मुर्छा, पक्षाघात, लकवा आदि का प्रकोप अवश्य होता है।

२. मस्तिष्क रेखा मंगल के पर्वत पर होकर जा रही हो तो इसका मस्तिष्क पर हानिकारक प्रवाह होता है। ऐसे जातक को रक्त प्रवाह की तीव्रता के कारण मृगी, अर्द्धाङ्ग, लकवा, पक्षाघात, मूर्छा आदि का प्रवाह होता है तथा अन्य प्रकार के वायु जनित रोगों का अधिक भय होता है।

३. जातक के हाथ की स्वास्थ्य रेखा बहुत ही साफ हो और यह रेखा हृदय रेखा से चलकर जीवन रेखा में प्रवेश कर रही हो तो इस प्रकार जातक पर हृदय रोग का विशेष प्रकोप होता है। यदि इस प्रकार का जातक सावधानी न बरते तथा इस ओर से अन्धकार हो तो हृदय अटैक हृदय रोग की पूर्ण सम्भावना रहती है।

४. जातक के नाखून लम्बे हों तो इस प्रकार के रोगों का आक्रमण का अधिक भय रहता है।

जिन परिवारों में हृदय की मन्दगति, रक्त प्रवाह तथा वायु जनित रोगों का आक्रमण होता ही रहता है तो ऐसे परिवार के सभी सदस्यों के नाखून पतले होते हैं और उन पर अर्धचन्द्र नहीं होते हैं।

नाखून और स्वभाव

नाखून छोटे हों और नाखूनों का रंग लाल हो तो जातक का स्वभाव उग्र होता है और शीघ्र इसे क्रोध आ जाता है।

नाखून चौड़ाई में लम्बाई से अधिक हों तो यह जातक के स्वतन्त्र स्वभाव, निश्चयात्मक बुद्धि की सूचना है। ऐसे जातक का स्वभाव कोमल, सभ्यता युक्त तथा प्रत्येक बात को आसानी से समझ लेता है। नाखून छोटे हों और उनका रंग श्वेत हो तो जातक क्रोधी स्वभाव का होता है।

जिस जातक के नाखून बहुत ही चमकीले हों तो ऐसा जातक विशेष कल्पना किया करता है।

जिस जातक के नाख़ून स्वच्छ, सफेद अथवा काले रंग के हों तो यह दुष्ट आत्मा हमेशा जिद्द करने वाले विश्वासघात करने में चतुर, तथा खेती कार्य में होशियार होते हैं।

नाख़ून लम्बे हों और रंग सफेद हो तो ऐसा जात नीतिवान होता है।

नाख़ून गोल हों तो ऐसे जातक का स्वभाव आराम प्रिय तथा विलासी प्रकृति का होता है।

जातक के नाख़ून विशेष कठोर हों तो ऐसा जातक रोगी होता है, यह रोग पक्षाघात, लकवा आदि तथा वायुविकार होता है।

जातक के नाख़ून पर सफेद रंग के धब्बे हों तो ऐसे जातक को पाचन शक्ति की कमी रहती है, यह पेट के रोगी रहा करते हैं।

नाख़ून छोटे तथा फीके रंग के हों तो जातक व्यभिचारी व्यर्थ की बातें करने वाला तथा झगड़ालू प्रकृति का होता है।

नाख़ून पीले रंग के हों तो जातक का स्वभाव कठोर होता है।

नाख़ूनों का तल भाग नुकिला हो तो शीघ्र नाराज होने वाला और शीघ्र ही अपने अपमान को महसूस कर लिया करता है।

नाख़ूनों का हाथ में न होना

जिस जातक के हाथ की अंगुलियों में नाख़ून नहीं हुआ करते हैं, तो ऐसा जातक नाना प्रकार के पाप कर्म करने वाला, दुखी रहा करता है। ऐसा देखा जाता है कि ऐसे जातक का विवाह नहीं हुआ करता है।

जिस स्त्री जातक के अंगुष्ठ का नाख़ून टूटा हुआ हो तो ऐसा जातक धर्म भीरु होता है, इसको तीर्थ यात्रा विशेष प्रिय लगती है।

जिस स्त्री जातक की तर्जनी अंगुली में नाख़ून न हों तो ऐसे जातक की आयु ५० वर्ष हुआ करती है।

जिस जातक की मध्यमा अंगुली में नाखून न हो तो ऐसे जातक की आयु ३० वर्ष की हुआ करती है।

जिस जातक की अनामिका अंगुली में नाखून न हो तो ऐसे जातक की आयु २५ वर्ष की रहा करती है।

जिस जातक की कनिष्ठका अंगुली में नाखून न हो तो ऐसे जातक की आयु १५ वर्ष की रहा करती है।

विविध प्रकार के नाखूनों का विशेष फल

नाखून की चौड़ाई से लम्बाई अधिक हो तो जातक के विचार स्वतन्त्र होते हैं, वह किसी का बन्धन स्वीकार नहीं किया करते हैं। इनका स्वभाव कोमल तथा यह व्यवहार कुशल भी होते हैं।

नाखून में जब की लहर की तरह की आकृति हो तो जातक का स्नायुमण्डल अधिक कोमल होता है।

नाखूनों में जल की तरह की लहरें आपस में टकरावें तो यह स्नायु मण्डल की ओर अधिक कोमलता के लक्षण हैं।

नाखून विशेष कठोर हों तो जातक को लकवा, अर्द्धांग, प्रमृति, पक्षाघात का भय रहता है।

नाखून झुके हों तो जातक को तपेदिक राजक्ष्मा, टी. बी. का भय रहता है। यदि यह जातक शरीर की चिन्ता नहीं करता है तो जातक को घातक आक्रण रोग का शिकार होना पड़ता है।

नाखून खड़े हों और बड़े हों तो जातक उदासीनवृति का होता है। ऐसे जातक के स्वभाव में वैराग्य, निराश से पूर्ण चिड़चिड़ापन का प्रभाव रहता है।

इस प्रकार जातक की अंगुलियों का अग्रभाग चौड़ा हो तो ऐसे जातक के स्वभावमें विशेष वैराग्य तथा उदासीनता का प्रभाव रहता है।

नाखून लम्बे हों तथा बांकदार हों तो जातक का स्वभाव क्रूर निर्दयी तथा नीच मनोवृति का होता है।

नाखून सुकड़े हुए हों और ऊंचे उठे हुए हों तो जातक आततायी होता है।

नाखून पतले हों तो जातक मिथ्या भाषी, लफंगा होता है। ऐसे जातक का स्वभाव व प्रकृति चंचल होती है।

नाखून बाँसुरी के समान गोल हों तो जातक बात व्याधि तथा चर्म रोगों का रोगी होता है।

नाखून सुपारी की आकृति के हों और इनका रंग श्वेत हो तो ऐसा जातक जीवन पर्यन्त ही रोगी रहा करता है। ऐसा जातक ज्वर, अस्थायी रोग का रोगी होता है।

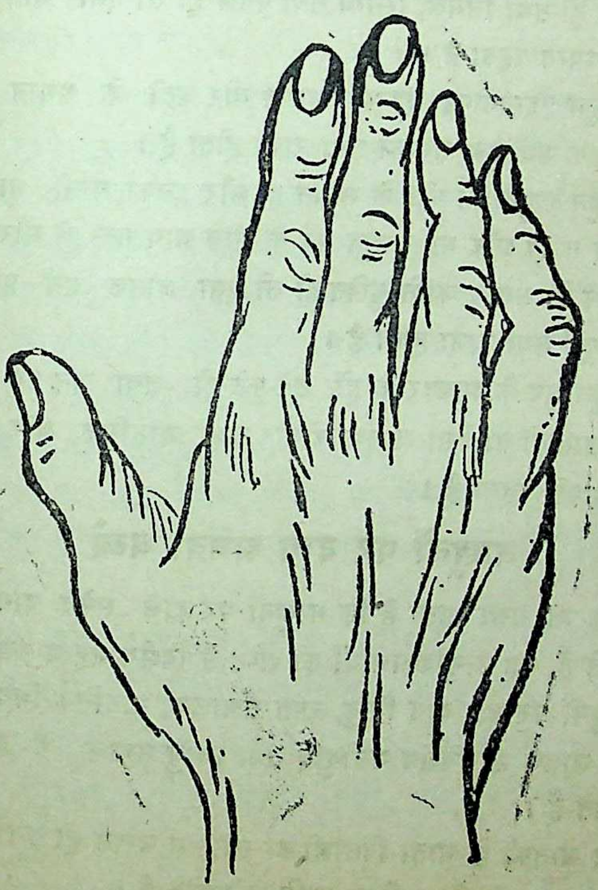

नाखून सुपारी के आकृति के हों और इनका रंग गुलाबी हो तो जातक का स्वभाव मिलनसार तथा प्रेमी प्रकृति का होता है।

नाखून सुपारी के आकृति के हों और उनका रंग लाल हो तो जातक चंचल मनोवृति का अस्थायी क्रोध करने वाला होता है।

नाखून सुपारी की आकृति के हों और उनका रंग पीला हो तो ऐसा जातक मधुर स्वभाव का होता है।

नाखून कछुवे की पीठ के समान ऊंचे उठे हों और उनका रंग मूंगे के समान हो तथा निर्मल, स्निग्ध तथा पतले हों तो ऐसा जातक सर्व-सुख से सम्पन्न रहता है।

नाखून "इन्द्रगोपक संकाश" अर्थात वीर बट्टी के समान हों तो ऐसा जातक सर्व सुख सम्पन्न तथा राजा होता है।

नाख़ून कछुवे की पीठ के समान हों और इनका आधो भाग नीचे दबा हुआ न हो और यह नाखून पर्व के आधे भाग तक हो और इनका रंग प्रवाल के समान क्रांति युक्ति हो तो ऐसा जातक सर्व प्रकार के सुखों से पूर्ण तथा राजा होता है।

नाखून सूप के आकार के हों, टूटे-फूटे हों तथा इन पर सीप के समान रेखायें हों तो ऐसा जातक रोगी तथा मानसिक और आर्थिक दृष्टि से दुःखी रहता है।

नाखूनों पर दाग अथवा धब्बे

प्राय: यह देखा जाता है कि नाखूनों पर काले सफेद दाग अथवा धब्बे होते हैं, यह सामुद्रिकाचार्यों की दृष्टि से विशेष महत्व रखते हैं।

नाखूनों पर यह दाग बिन्दु, रक्त संचालक, मानसिक क्रिया, कठोर परिश्रम, जातक की विशेष मनोवृति तथा स्नायु मण्डल के दबाव के कारण होते हैं।

जिन जातकों के माता पिताओं का स्वास्थ्य उत्तम हो उनके नाखूनों पर किसी प्रकार के चिन्ह बिन्दु आदि नहीं होते हैं।

यह दाग दो प्रकार के होते हैं।

१. सफेद दाग

२. काले दाग

१. सफेद दाग—यह दाग श्वेत रंग के होते हैं और यह शुभ कार्यों तथा शुभ लक्षणों के सूचक होते हैं।

२. काले दाग—इन दागों का रंग काला होता है तो यह अशुभ सूचक, अपयश अपकीर्ति आदि की सूचना देते हैं।

पांच अंगुलियों के नाखूनों पर दागों की स्थिति और उनका फल पृथक् २ निरूपण करते हैं।

१ अंगुष्ठ—अंगुष्ठ के नाखून पर श्वेत दाग हों तो ऐसा जातक व्यापार में लाभ तथा प्रेम के कारण सुख प्राप्त किया करते हैं।

यदि इन दागों में फव्वारे के समान किरणें फूट रही हों तो यह जातक के अगम्यागामित्व के लक्षण का प्रतीक है।

यदि दाग काले रंग का हो तो जातक को व्यापार में हानि, प्रेम असफलता की सूचना है। यह जातक प्रेम की सफलता के कारण भीषण अपराध तक भी कर दिया करते हैं।

तर्जनी अंगुली—तर्जनी अंगुली के नाखून पर श्वेत दाग हों तो जातक को धन का लाभ, ऐश्वर्य, कीर्ति, यश सम्मान देने वाला होता है, जातक की सभी महत्वपूर्ण महत्वाकांक्षाओं की पूर्ति हो जाया करती हैं।

यदि इस दाग का रंग काला हो तो ऐसा जातक नीच कर्म करने वाला, अपयश, अपमान, हानि, अपकीर्ति का भागी होता है।

मध्यमा अंगुली—मध्यमा अंगुली के नाखून पर यदि श्वेत दाग हो तो जातक देशाटन, विदेश यात्रा तथा सामुद्रिक यात्रा किया करता है।

यदि यह दाग कुछ पीलापन लिये हुए हो और ऊंचे उठ रहे हों तो

जातक अपने भाई तथा भार्या से नुकशान उठाया करता है तथा यह चिन्ता के द्योतक हैं।

यदि यह दाग काले रंग के हों तो यह जातक को भारी संकटों की सूचना है। यह संकट मृत्यु अथवा मृत्यु के समान ही कष्टदायक होते हैं।

अनामिका अंगुली—मध्या अंगुली के नाखून पर श्वेत दाग हों तो जातक को यश लाभ, व्यापार में धन लाभ तथा जातक की श्रद्धा शास्त्र, पुराण तथा वेदों में होती है।

यदि यह दाग काले रंग के हों तो अपयश, धन हानि, अपकीर्ति, तथा व्यर्थ में जातक को बुराई प्राप्त कराते हैं।

कनिष्ठका अंगुली—कनिष्ठा अंगुली के नाखून में श्वेत दाग हो तो जातक का सभी लोग विश्वास किया करते हैं तथा जातक को अनेक प्रकार के लाभ हुआ करते हैं।

यदि दाग काले रंग के हों तो अविश्वास निराश से पूर्ण तथा आर्थिक हानिप्रद होते हैं।

नाखूनों के दाग और समय

१. अधो भाग—नाखूनों के अधो भाग में दाग, या चिन्ह अथवा बिन्दु हों तो इसका प्रभाव भविष्य में होगा।

२. मध्य भाग—नाखूनों के मध्य भाग में दाग अथवा चिन्ह हों तो इसका फल वर्तमान में चल रहा है, ऐसा मान लेना चाहिए।

३. उर्ध्व भाग—नाखूनों के उर्ध्व भाग में दाग बिन्दु, चिन्ह हों तो इनका फल समाप्त हो गया अर्थात भूतकाल में व्यतीत हो गया।

—:o:—

द्वितीय परिच्छेद

कर पृष्ठ

अवहंसा कर पृष्ठ विस्तीर्ण पीन भुन्नतं स्निग्धम् ।
विनिगूढ़ शिरं परितः सोणिपतेः फणिफणाकारम् ॥ १ ॥
मणिबन्ध समं निम्नं निमांसं रोम सचित सशिरम् ।
कर पृष्ठ निःस्वाना रुक्षं पुरुष विवर्ण स्यात् ॥ २ ॥

कर पृष्ठ अच्छा हो चौड़ा और मोटा तथा ऊंचा हो, चिकना और उसके चारों ओर के छोर मांस में डूब रहे हों तथा कर पृष्ठ का आकार साँप के फण के समान हो तो यह सुन्दर तथा ऐसा जातक राजा होता है । १ ।

मणिबन्ध के समान नीचा, जिस कर पृष्ठ में मांस दिखाई न दे, रोम तथा नशों से युक्त रूखा, कड़ा, देखने में बुरा लगने वाला तथा बुरे रंग का कर पृष्ठ वाला जातक धनहीन होता है और कष्ट भोगने वाला होता है ।

सामुद्रिक शास्त्र में मणिबन्ध, अंगुलियों तथा नखों का जितना महत्व है उतना ही महत्व कर पृष्ठ का है । जब हम जातक के शुभा-शुभ का निरूपण करना चाहते हैं तो उसका स्वभाव तथा जीवन यात्रा के सम्बन्ध में यदि कर पृष्ठ का ध्यान न दिया जावे तो फल प्रायः ठीक न मिल सकेगा तथा दूसरे जब हम जातक के सम्यक अध्ययन की रूप रेखा को लेकर चल रहे हैं तो हमें अवश्य ही हाथ के इस महत्वपूर्ण भाग (कर पृष्ठ) का भी अध्ययन करना आवश्यक है । वैसे सामुद्रिक शास्त्र में मानव जीवन के अंग की अपेक्षा कर पृष्ठ पर प्रकाश डाला गया है । परन्तु साधारण रूप से देखा जाये तो कर पृष्ठ

से मानव जीवन के विषय में विशेष प्रभाव पड़ता है इस विचार को ध्यान में रखकर यहां कर पृष्ठ का विचार कर, रहे हैं आशा है यह आपके लिए लाभप्रद सिद्ध होगा।

कर पृष्ठों को दो भागों में बाँट सकते हैं।

१. शुभ कर पृष्ठ, उत्तम कर पृष्ठ
२. अशुभ कर पृष्ठ, नीच कर पृष्ठ

१. उत्तम कर पृष्ठ भाग। शुभ कर पृष्ठ भाग

करपृष्ठ लम्बा और चौड़ा हो, सुदृढ़ तथा कोमल और माँस से पूर्ण हो तो ऐसा जातक जीवन में धन-धान्य, ऐश्वर्य, से सम्पन्न होता है।

कर पृष्ठ उन्नत कछुये की पीठ के समान ऊंचा उठा हो जिस पर नाड़ियां दिखाई न दे तो ऐसा जातक बुद्धिमान, नीतिज्ञ, दूरदर्शी, मेधावी, तथा उत्साही होता है।

करपृष्ठ देखने में सुन्दर लगे, जिसके सभी छोर मांस में डूबे हो तो ऐसा जातक उदार वृति वाला, दान देने वाला परोपकारी सहिष्णु उत्तम विचारों से सम्पन्न, श्रेष्ठ आचरण करने वाला महत्वाकांक्षी होता है।

ऐसा करपृष्ठ यदि स्त्री जातक का हो तो पूर्ण पति सुख प्राप्त होता है, और सर्व प्रकार के सुखों का भोग करता है।

२. अशुभ करपृष्ठ तथा नीच करपृष्ठ

करपृष्ठ सिकुड़ा हुआ हो, आकृति विकृत हो तथा करपृष्ठ पर सलवटें पड़ रही हों तो ऐसा जातक धूर्त, चरित्रहीन, आलसी तथा कपटी होता है।

करपृष्ठ में गड्ढा सा पड़ा हो और ढीला ढाला हो तो ऐसा जातक प्रायः व्यभिचारी होता है तथा व्यभिचार के प्रयत्नों में विशेष क्रियावान रहता है। इसकी कामुता इतनी अधिक होती है कि वह इसके आगे किसी भी बात का विचार नहीं किया करता है। ऐसे

जातक प्रायः कुमारी कन्याओं को भ्रष्ट करने में विशेष योग्य होते हैं। पराई स्त्री तथा पराये धन पर गिद्धराज की सी दृष्टि लगाये रहा करते हैं, अपने स्वार्थ सिद्धि के लिए नीच से नीच कार्य करने से भी नहीं चूका करते हैं।

करपृष्ठ में मांस की अत्यधिक कमी हो, करपृष्ठ की नसें तथा हड्डियाँ उभरी हुई प्रतीत हों, जिस पर केशों की मात्रा विशेष हों तो ऐसा जातक विश्व से घात किया करता है, यह अपने स्त्री, पुत्र, भाई, परिवार के बन्धु, माता पिता के साथ भी विश्वासघात किया करते हैं। यह विशेष आलसी प्रमादी प्रकृति के होते हैं तथा इनको क्रोध भी अधिक आता है और ईर्षा भी विशेष रूप से किया करते हैं।

यदि उपरोक्त लक्षण स्त्री जातक के करपृष्ठ में हों तो ऐसी स्त्री विधवा होती है तथा विश्वासघात करने वाली तथा व्यभिचारिणी तथा अनेक पतियों से संयुक्त होती है।

कर पृष्ठ और केश (बाल)

करपृष्ठ पर बिल्कुल ही केश न हो अर्थात् करपृष्ठ पर रोम दिखाई न दे तो ऐसा जातक मूर्ख होता है, इसमें तर्क शक्ति का अभाव रहता है, तथा कायर और भीरु मनोवृति का होता है। साधारण बातों पर इस जातक का हृदय दहल जाता है और हिम्मत हार जाता है। ऐसा जातक प्रायः नपुंसक पुरुषत्वहीन होता है।

करपृष्ठ में केश राशी न हो परन्तु अंगुष्ठ पर केश हों तो ऐसा जातक बुद्धिमान, चतुर, दूरदर्शी, प्रत्येक बात का पूर्व ही विचार कर परिणाम तक जान लेता है। ऐसा जातक मेधावी तथा विद्वान होता है।

स्त्री जातक के करपृष्ठ पर केश हों तो ऐसी स्त्री निर्दयी, निर्मम तथा हृदयहीन होती है तथा इस प्रकार की स्त्री क्रूर कर्म करने में अत्यन्त निपुण होती है।

करपृष्ठ पर बहुत कम, छोटे-छोटे और दूर-दूर केश हों तो ऐसा जातक दूरदर्शी होता है, यह उपकार करने वाला उदार प्रकृति, चतुर तथा महत्वाकांक्षी होता है। ऐसे जातक की इच्छा ऐश्वर्य भोग की, सुख पूर्वक जीवन व्यतीत करने की हुआ करती है।

करपृष्ठ पर अत्याधिक केश हों तो ऐसे जातक की मनोवृति चंचल होती है, ऐसे जातक के विचार किसी भी विषय पर स्थिर नहीं होते हैं। यह प्रत्येक क्षण नवीन बातों पर ही सोचता रहता है। इसके द्वारा किए गये निश्चय प्राय: बदलते रहा करते हैं। यह किसी विषय पर अपना निश्चित मत नहीं रखा करते हैं।

करपृष्ठ पर केश हों साथ ही अंगुलियों के सभी पर्वों पर केश हों तो ऐसे जातक का स्वभाव उग्र होता है, इस जातक को प्रत्येक बात पर क्रोध आता है तथा तमोगुणी प्रकृति होती है। ऐसे जातक प्रत्येक कार्य में गड़बड़ पैदा किया करते हैं।

जिस जातक के करपृष्ठ पर केश हों और अंगुलियों के उर्ध्व पर केश हों तो जातक का हृदय कठोर होता है। यह कठिन से कठिन परिस्थितियों में धैर्य को धारण किये रहता है। ऐसे जातक के पास भावुकता और सहानुभूति का नाम नहीं होता है। ऐसे जातक जो कुछ भी निर्णय कर लिया करते हैं तो पूर्ण शक्ति के साथ उसकी सफलता के लिए कार्य करते हैं। ऐसे जातक को प्राय: लौहपुरुष कहा जाये तो यह सर्वोत्तम ही होगा।

जिस जातक के कर पृष्ठ पर केश हों और अंगुलियों के अधोपर्व पर केश हों तो ऐसा जातक भावुक, विलासी तथा विद्वान् और चतुर होता है।

जातक के करपृष्ठ पर केश हों और अंगुली के मध्य पर्व पर केश हों तो ऐसा जातक मेधावी नीतिवान, चतुर होता है। साहस तथा धैर्य को धारण किये रहता है।

—:०:—

तृतीय परिच्छेद

हस्त चिन्ह

हाथ को सीधा करके देखा जावे तो हाथ में बहुत से चिन्ह दिखाई देते हैं। उनमें कुछ की आकृति अंकुश की तरह तो कुछ की त्रिशूल आदि की भाँति होती है तथा अन्य भी भिन्न प्रकार के चिन्ह होते हैं। इस प्रकार के चिन्हों का सामुद्रिक शास्त्र में विशेष महत्व है। यहाँ पर हाथ में प्राप्त चिन्ह का फल लिखा जा रहा है।

शंख चक्र ध्वजाकारो मत्स्याकारश्च दृश्यते।
सर्व विद्या प्रदानेन बुद्धिमान्स सुखी नर॥

जिस जातक का हाथ चक्र का हो तो ऐसा जातक सर्व विद्याओं में निपुण तथा प्रतापी होता है। दे० चि० १७—३५

जिस जातक के हाथ में शंख चिन्ह हो तो ऐसा जातक विद्वान, शास्त्रों का ज्ञाता तथा भाग्यशाली होता है।

जिस जातक के हाथ में मत्स्य का चिन्ह हो तो ऐसा जातक सामान्य संसारिक विद्याओं में निपुण होता है। दे० चि० १७—२

जिस जातक के हाथ में चक्र, शंख तथा मत्स्य के चिन्ह हों तो यह सम्पूर्ण शास्त्रों, चार वेद अठारह पुराणों का ज्ञाता धनवान तथा समाज में पूजनीय श्रेष्ठ पुरुष होता है।

त्रिशूलं कर मध्ये तु तेनराजा प्रवर्तते।
यज्ञे धर्मे च दाने च देव द्विज प्रपूजने॥

जिस जातक के हाथ में त्रिशूल का चिन्ह हो तो ऐसा जातक राजाओं का मंत्री होता है तथा राज सुखों का भोग भोगता है। यह त्रिशूल चिन्ह साफ दिखाई दे तो ऐसा जातक राजा होता है। ऐसा जातक अनेकों यज्ञ करने वाला गो ब्राह्मण, देव पूजा करने वाला होता है। दे० चित्र १७—७

जिस जातक के हाथ में कुण्डल का चिन्ह हो तो ऐसा जातक प्रतापी धर्मात्मा तथा प्रान्तीय मंत्री मन्डलों में मंत्री होता है।

हाथ में अंकुश का चिन्ह होता है तो ऐसा जातक बलशाली, प्रतापवान सेनापति होता है। दे० चि० १७—१०

कुण्डल, चक्र, अंकुश के सभी चिन्ह जातक के हाथ में हों तो ऐसा जातक प्रधान मन्त्री, मंत्री, महाराज होता है। विशेष बुद्धिमान योग्य होता है। यह चिन्ह विशेष साफ हो तो ऐसा जातक राष्ट्रपति तथा उपराष्ट्रपति होता है।

गिरि कंकण योनीनां नरमुंड घटादिकम्।
करेवै यस्य चिन्हानि राज मंत्री भवेन्नर॥

हाथ में पर्वत का चिन्ह हो तो यह जातक उच्चपदाधिकारी, विदेशी राजदूत आदि होता है।

हाथ में कंकन का चिन्ह हो तो जातक विद्वान, विद्या अध्यापन में चतुर तथा उच्च प्रधानाचार्य आदि का पद पाता है तथा शिक्षा क्षेत्र में कार्य करता है और उच्चपदाधिकारी होता है।

हाथ में योनि का चिन्ह हो तो जातक राजद्वार, मान्य तथा राजा मंत्री अथवा राष्ट्रपति आदि का प्राइवेट सेक्रेटरी होता है।

हाथ में मनुष्य का सिर अथवा कलश का चिन्ह हो तो ऐसा जातक समाज में पूज्यनीय श्रेष्ठ, विद्वान तथा धनवान होता है।

शक्ति स्तोमरबाणश्च करमध्ये सुदृश्यते।
रथ चक्र ध्वजाकार: स राज्यं लभते नर॥

हाथ में शक्ति का चिन्ह हो तो यह जातक की शक्ति का प्रतीक है यह शिक्षा तथा सेना के क्षेत्र में उन्नति करते हैं तथा राजा के समान भोग भोगा करते हैं।

हाथ में तोमर, वाण तलवार का चिन्ह हो तो ऐसा जातक राज्य में उच्चतम पदाधिकारी होता है। यदि इन तीनों में से कोई एक ही

(देखिये चित्र नं १७—१ से ५५ तक)

चिन्ह हो तो यह जातक सेना में उच्चपद पर कार्य करता है। धनधान्य कर युक्त रहता है। दे० चित्र १७—१४

हाथ में रथ का चिन्ह हो तो जातक जिले में उच्चपद प्राप्त करता है तथा राज्य से लाभ प्राप्त किया करता है।

दे० चित्र १७—२१

हाथ में चक्र अथवा ध्वजा का चिन्ह हो तो जातक धनवान, विद्यावान, ज्ञानवान तथा गुणवान होता है।

सूर्य चन्द्रलता नेत्रकष्ट कोणंत्रिकोणकम्।
मंदिर च गजाश्वानां चिन्हे धन सुखी नरेः।

हाथ में सूर्य का चिन्ह हो तो ऐसा जातक भाग्यशाली, विद्यावान, तथा यशवान होता है।

हाथ में बेल अथवा लता का चिन्ह हो तो ऐसा जातक उच्चपदाधिकारी, यशवान तथा धनवान होता है।

हाथ में अष्टकोण अथवा त्रिकोण का चिन्ह हो तो ऐसा जातक राजद्वार में मान्य, राजा का मन्त्री तथा उच्चपदाधिकारी होता है।

हाथ में मन्दिर का चिन्ह हो तो जातक देव पूजा करने वाला साधु आश्रम, देवमन्दिर, तथा धर्मशालाओं को निर्माण कराता है तथा इस संसार में सुख पूर्वक रहता है। दे० चि० १७—८

हाथ में हाथी का चिन्ह हो तो ऐसा जातक धनवान होता है और हाथी दरवाजे पर रहा करता है। दे० चि० १७—१

हाथ में अश्व का चिन्ह हो तो ऐसे जातक के पास अश्व रहा करता है। दे० चि० १७—४

हाथ में सूर्य, लता, नेत्र, अष्टकोण, त्रिकोण हाथी तथा अश्व के सभी चिन्ह हों तो ऐसा जातक विशेष धनवान, यशवान पृथ्वी पालन करने वाला, देव पूजक धर्मात्मा तथा विद्ववान होता है।

दे० चि० १७—३१

हाथ में यज्ञकुंड हो अथवा यज्ञ स्तम्भ हो तो ऐसा जातक यज्ञ करने कराने वाला, देव पूजक, धर्मात्मा तथा विद्वान और धनवान होता है।

हाथ में यज्ञ वेदी माला, हो तो ऐसा जातक महापुरुष, नवीन धर्म का प्रवर्तक, राजनैतिक, सामाजिक, आर्थिक दृष्टि से समाज का नेता होता है।

हाथ में जौ, यज्ञ कुण्ड, यज्ञ स्तम्भ, वृक्ष, तोमर, ध्वजा चवर, पर्वत कुण्ड, यज्ञ वेदी माला के सम्पूर्ण चिन्ह हों तो ऐसा जातक भगवान श्री हरि का स्वरूप होता है तथा समाज का उद्धार तथा धर्म की स्थापना के लिए कार्य किया करता है ।

हाथ में कमल पुष्प, शंख, चक्र, मछली, पताका, क्षत्र, रथ, अंकुश इतने प्रकार के चिन्ह हों तो ऐसा जातक महामन्त्री, राजा का प्रधान सलाहकार होता है यदि यह चिन्ह स्त्री जातक के हाथ में हो तो ऐसी स्त्री मन्त्राणी तथा राजा की स्त्री तथा राज्य मन्त्री की स्त्री होती है ।

हाथ मोटे हों, मणिबंध हों, यह मांस से भरे हुए हों तथा कमल के फूल के समान कोमल हों साथ ही हथेली सामान्य हो तो यह शुभ है जातक धनवान, भाग्यवान तथा यशवान होता है ।

मछली आदि के अन्य चिन्ह

हाथ की प्रथम रेखा मछली के समान हो या हथेली के प्रारम्भ में मछली का चिन्ह हो, या हाथ में मछली का चिन्ह हो तो ऐसा जातक जो कुछ भी कार्य करता है उसमें सफलता प्राप्त होती है । यह धनवान पुत्र, पौत्रादि से युक्त तथा यशवान और समाज में आदरणीय तथा पूजित होते हैं ।

हाथ में धनुष का चिन्ह हो तो ऐसा जातक युद्ध करने में रत, विशेष वीर तथा सेनापति होता है । दे० चि० १७—२५

हाथ में तलवार का चिन्ह हो तो ऐसा जातक खेती करने वाला भूमि, घर, गाँव तथा नगर का प्रधान, मुखिया होता है ।

दे० चि० १७—१४

हाथ में कमल का पुष्प अथवा अष्टकोण का चिन्ह प्रतीत हो तो ऐसा जातक धनवान, यशवान, पुत्र-पौत्रों से युक्त तथा संसार में सुख पूर्वक जीवन व्यतीत होता है ।

हाथ में पद्म का चिह्न हो तो ऐसा जातक राजा के समान सुख

भोगने वाला, मन्त्री तथा ऐश्वर्यवान होता है। अगर यह चिह्न स्त्री जातक के हाथ में हो तो बहुत सुख भोगने वाली अखण्ड सौभाग्यवती हुआ करती है।

हाथ में चतुष्कोण का चिन्ह्न हो तो ऐसा जातक व्यापारी होता है तथा व्यापार में विशेष धन अर्जन करता है।

हाथ में ग्राम, नगर का चिह्न हो तो ऐसा जातक विशेष धन-वान, यशवान होता है, यह लक्ष्मी प्राप्ति के लिए व्यवसाय का सहारा लेता है।

हाथ में वज्र का चिह्न हो तो ऐसा जातक व्यापार जगत में प्रसिद्धि प्राप्त कर लेता है तथा व्यापार द्वारा धनवान होता है, यह धन को धार्मिक कार्यों में व्यय किया करता है। यह विशेष कामी होता है।

हाथ में नाशा का चिन्ह हों तो ऐसा जातक व्यापार विद्या में निपुण एवम् सामान्य धनवान होता है।

हाथ में शंख, चक्र के चिन्ह हों तो ऐसा जातक शास्त्री पंडित, शास्त्रों का ज्ञान रखने वाला तथा विद्वान होता है।

हाथ में ध्वजा का चिन्ह हो तो ऐसा जातक यज्ञ करने वाला, वेद, वेदान्त का विद्वान महान पंडित होता है।

हाथ में शंख का चिन्ह हो तो ऐसा जातक विद्वान, पुराण साहित्य का आचार्य तथा पुराण वक्ता होता है।

हाथ में शंख, ध्वजा, चक्र आदि के सभी चिन्ह हों तो ऐसा जातक महापुरुष, शास्त्र दर्शन, वेद का भाष्यकर्ता महान विद्वान, धनवान, यशवान और भगवत् भक्त होता है।

सूर्य और चन्द्र चिन्ह

हाथ में सूर्य, चन्द्र, नेत्र, त्रिकोण, अष्टकोण, लता बेल, मन्दिर, देवालय के सभी चिन्ह हों अथवा इनमें से कोई एक चिन्ह हो तो ऐसा

जातक धनवान, ग्राम, नगर का स्वामी, पुत्रवान तथा इस लोक में विशेष सुख भोग करता है।

यदि इन चिन्हों में से कोई एक ही चिन्ह हो तो जातक आचरण सम्पत्ति का स्वामी, धनवान तथा पुत्र पौत्रों से युक्त सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

सूर्य के पर्वत अर्थात अनामिका अंगुली के नीचे के भाग में बाल चन्द्र का चिन्ह हो तो ऐसा जातक आंखों का रोगी तथा मिथ्या भाषण करने वाला होता है।

हाथ में बाल चन्द्र का चिन्ह चन्द्रमा के पर्वत के ऊपर हो तो ऐसे जातक की मृत्यु प्राय: जल में डूबकर अथवा जल सम्बन्धी रोग (जलोदार आदि) में होती है।

हाथ में बाल चन्द्र का चिन्ह जीवन रेखा पर हो तो ऐसा जातक मन्त्र तथा विद्या ज्ञाता, तन्त्रशास्त्री विद्वान होता है, समाज में इस प्रकार के जातक का विशेष आदर होता है।

हाथ में बाल चन्द्र का चिन्ह अनामिका अंगुली के अधोपर्व पर हो तो ऐसा जातक कम विद्वान तथा धनहीन होता है।

त्रिशूल

हाथ में त्रिशूल का चिन्ह हो तो ऐसे जातक प्राय: बहुत ही भाग्यवान, धनवान होते हैं तथा राजा के समान सुख भोगते हैं तथा राज्य में उच्चपद प्राप्त होता है।

हाथ में त्रिशूल का चिन्ह पूर्ण रूप से दिखाई पड़े तो ऐसा पुरुष धनवान, ब्राह्मण, गुरु, माता-पिता का सेवक, धर्मवान तथा समाज में प्रसिद्ध होता है।

ऐसा जातक सामाजिक, राजनैतिक नेता के रूप में सामने आता है तो अपने दल में विशेष स्थान प्राप्त करता है।

हाथ में त्रिशूल का चिन्ह भाग्य रेखा पर हो तो ऐसा जातक अपना निर्माण स्वयं करता है तथा यह किसी की सहायता नहीं चाहता है तथा स्वयं ही उदार होता है तथा सभी की तन, मन, धन से सहायता करता है।

वृत चिन्ह

वृत चिन्ह गोलाकार होता है, यह जिस स्थान पर होता है उस स्थान द्वारा होने वाला शुभाशुभ फल में वृद्धि कर देता है। यह चिन्ह यदि ग्रहों के पर्वतों पर हो तो यह ग्रह क्षेत्र के शुभ फल को समाप्त कर दिया करता है और अशुभ फल दिया करता है।

वृत चिन्ह गुरु के पर्वत पर हो अर्थात अंगुष्ठ के पास की तर्जनी अंगुली के नीचे हो तो ऐसा जातक समाज में यश सम्मान प्राप्त करता है।

यदि यह वृत चिन्ह अनामिका अंगुली के नीचे शनि पर्वत पर हो तो ऐसा जातक लोहे का व्यापार, लोहे का काम किया करता है।

यह वृत चिन्ह सूर्य की अंगुली के नीचे सूर्य के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक धनवान, यशवान, सुखमय जीवन व्यतीत करता है परन्तु ऐसे जातक का शरीर रोगी रहता है।

यह वृत चिन्ह बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक समाज में अपयश, व्यापार में हानि और समाज में होने वाली बुराइयों का शिकार हो जाता है।

वृत का चिन्ह चन्द्रमा के पर्वत पर हो तो ऐसे जातक की मृत्यु सम्भवतः जल में डूबने से होती है।

वृत का चिन्ह चन्द्रमा के क्षेत्र पर हो और यह स्त्री जातक का हाथ हो तो ऐसी स्त्री जातक हमेशा जनेन्द्रिय (योनी) सम्बन्धी रोगों से ग्रस्त रहा करती हैं।

वृत का चिन्ह मंगल के क्षेत्र पर हो तो ऐसा जातक रक्त-विकार का रोगी होता है तथा इसका स्वभाव क्रोधी होता है।

वृत का चिन्ह शुक्र के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक विशेष कामी, कामेन्द्रिय रोग का रोगी तथा विलासी स्वभाव का होता है।

वृत का चिन्ह जातक के दोनों ही हाथों में हो तो ऐसे जातक की मृत्यु अल्पआयु में हो जाती है। यह प्रायः निश्चित मत है।

भाग्यवश इस प्रकार के वृत चिन्ह में द्वितीय के बालचन्द्र का चिन्ह प्रतीत हो तो ऐसा जातक दीर्घ आयु, बलशाली, शक्ति सम्पन्न होता है।

वृत चिन्ह जीवन रेखा (Life Line) पर हो तो ऐसा जातक आंखों का रोगी रहता है। ऐसे जातक को व्यापार में लाभ की आशा नहीं करनी चाहिए व्यापार में हानि ही हाथ लगती है, अच्छा हो यह जातक नौकरी करे तो यह श्रेयकर सिद्ध होगा।

वृत चिन्ह मस्तष्क रेखा (Mind Line) पर हो तो ऐसा जातक मानसिक रोगों का रोगी रहता है। इसे चिन्तायें घेरे रहती हैं।

वृत चिन्ह रेखा हो, मस्तष्क रेखा हो, साथ ही मस्तष्क रेखा पर क्रोस चिन्ह हो तो ऐसे जातक प्रायः पागल हो जाया करते हैं।

वृत चिन्ह मस्तिष्क रेखा (Mind Line) तथा जीवन रेखा (Life Line) के बीच में हो अथवा माता-पिता की रेखा के मध्य में हो और यह रेखा मस्तिष्क, जीवन रेखा टूट रही हो और रेखाओं पर क्रोस चिन्ह हो तो ऐसे जातक की मृत्यु यकायक हो जाती है।

वृत चिन्ह स्त्री जातक के हाथ में हो तो यह चिन्ह लाल भी मालूम हो तो ऐसी स्त्री गर्भवती होती है।

वृत चिन्ह भाग्य रेखा पर हो और ऐसे जातक को यकायक हानि का भय रहता है अथवा ऐसे जातक दिवालिया हो जाया करते हैं।

क्रोस का चिन्ह

क्रोस का चिन्ह अशुभ होता है, यह प्रत्येक कार्य में रुकावट पैदा करता है। यह जिस स्थान पर होता है उसी स्थान के शुभ फल को समाप्त कर दिया करता है और अनिष्ठ फल में वृद्धि कर दिया करता है तो उस संख्या का आगे बढ़ना रुक जाता है। ठीक इसी प्रकार जिस स्थान पर यह चिन्ह होता है उसी स्थान के शुभ फल को समाप्त कर देता है। यह शुभ काम में वृद्धि लाल झण्डी और अशुभ कार्य में हरी झण्डी का कार्य करता है। दे० चि० १७=४२

क्रोस का चिन्ह गुरु के पर्वत पर हो साथ ही यह क्रोस हलका फटा-फटा हो तो ऐसा जातक मस्तिष्क का रोगी होता है, गृह तथा समाज द्वारा प्रदत्त कष्टों से चिन्ता ग्रस्त रहता है भाग्य से यह चिन्ह स्पष्ट हो और कटा-फटा न हो तो ऐसा जातक विद्या से विहीन तथा धन प्राप्ति की सूचना देता है।

क्रोस का चिन्ह लूनी के स्थान पर हो तो ऐसे जातक का स्वास्थ्य ठीक रहता है। ऐसे जातक का शरीर चिन्ताओं से घिरा रहता है। तथा मानसिक और शरीर रोग से ग्रसित रहता है।

क्रोस का चिन्ह शनि के पर्वत पर हो और शनि का क्षेत्र हो तो ऐसे जातक को प्राय: लकवा का रोग लगता है और जीवन लीला की समाप्ति इसी रोग में हो जाती है।

क्रोस का चिन्ह सूर्य के पर्वत पर हो तो जातक बहुत ही कम धनवान होता है, यह सर्वदा धन की चिन्ता में लीन रहते हैं, परन्तु इन जातकों की समाज में उच्च स्थान प्राप्त होता है तथा यह यशवान भी होता है।

क्रोस का चिन्ह बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक चोरी कर्म में अति निपुण होता है और प्राय: चोर गिरोह का सरदार होता है।

परन्तु ऐसा जातक प्रायः कारागृह में वास नहीं कर पाता है।

क्रोस का चिन्ह मंगल के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक क्लेश प्रिय, क्रोधी, कभी-कभी ऐसा जातक घातक हथियार अथवा फाँसी द्वारा आत्मघात भी कर लिया करता है।

क्रोस का चिन्ह चन्द्रमा के पर्वत पर हो तो जातक जल रोग आदि से कष्ट उठाया करते हैं। ऐसे जातक को प्रायः जुकाम आदि बना रहता है।

क्रोस का चिन्ह शुक्र के पर्वत पर हो तो ऐसे जातक को माता-पिता का सुख प्राप्त नहीं होता है। तथा ऐसे जातक के माता-पिता का स्वर्गवास बाल्यकाल में ही हो जाता है तथा यह वीर्य विकार के रोग से ग्रसित रहता है।

क्रोस का चिन्ह शुक्र के पर्वत पर और अंगुष्ठ के अधोपर्व पर हो तो ऐसे जातक के प्रेम मार्ग में बाधायें आया करती हैं तथा ऐसे जातक प्रेम पथ में बहुत कम ही सफल हो पाते हैं।

क्रोस का चिन्ह कनिष्ठा अंगुली के तृतीय पर्व अधोपर्व पर हो तो ऐसे जातक का प्रायः विवाह नहीं हो पाता है परन्तु ऐसे जातक की शादी के सम्बन्ध की बातें प्रायः बहुत ही कम हुआ करती हैं।

क्रोस का चिन्ह जीवन रेखा पर हो तो ऐसे जातक प्रायः मस्तिष्क सम्बन्धी रोग से ग्रसित रहते हैं। तथा राज्य की ओर से भी ऐसे जातक पर अभियोग लगाया जाता है तथा अनेकों चिन्ताओं से इनका जीवन घिरा रहा करता है।

क्रोस का चिन्ह मस्तिष्क रेखा पर हो तो ऐसा जातक प्रायः दिमाग आदि सम्बन्धी रोग उन्माद, मृगी आदि रोगों का रोगी रहता है।

क्रोस का चिन्ह भाग्य रेखा पर हो तो प्रायः ऐसे जातक धन के कारण दुखी रहा करते हैं। ऐसे जातक के माता-पिता होते हैं परन्तु

इसको माता पिता का सुख प्राप्त नहीं होता है।

भाग्य रेखा को शनि के पर्वत का क्रोस का चिन्ह स्पर्श कर रहा हो तो ऐसे जातक प्रायः आत्मघात कर लिया करते हैं।

क्रोस का चिन्ह भाग्य रेखा के मध्य राहु के पर्वत पर हो तो ऐसे जातक के प्रेम असफल होते हैं तथा प्रेम में वियोग का बहाना बनाया करते हैं।

क्रोस का चिन्ह हृदय रेखा पर हो तो जातक के प्रम प्रायः असफल होते हैं और जिस वर्षमान में यह चिन्ह होता है उस वर्ष प्रायः हृदय रोग हुआ करता है। ऐसा जातक ब्लड़, प्रेसर का रोगी होता है।

कोण

हाथ प्रायः कोण से प्रथक् बहुत कम देखे जाते हैं परन्तु यह कोण दो रेखाओं के संयोग से अधिक बना करते हैं। यह जिन रेखाओं के संयोग से बना करते हैं उन्हीं रेखाओं के फल के अनुसार फलादेश किया करते हैं, अतः इस प्रकार कोण का फल कहने से पूर्व उन रेखाओं को भली प्रकार देख लेना चाहिये जिससे मिलकर कोण बन रहा है।

कोण जीवन रेखा और स्वास्थ्य रेखा के संयोग से बन रहा हो तो ऐसे जातक का स्वास्थ्य प्रायः ठीक नहीं रहता है ऐसे जातक की आयु अधिक हुआ करती है तथा व्यापार द्वारा धन प्राप्त करता है।

कोण मस्तिष्क रेखा और स्वास्थ्य रेखा के संयोग से यह कोण बन रहा हो तो जातक दीर्घायु, बुद्धिमान तथा इसका स्वास्थ्य उत्तम रहता है।

इस प्रकार बना कोण स्पष्ट न हो तथा छोटा हो तो जातक के स्वास्थ्य के लिए हानिप्रद है ऐसा जातक प्रायः आलसी रहा करता है।

कोण मस्तष्क रेखा तथा जीवन रेखा के संयोग से बन रहा हो और

यह कोण साफ तथा विशाल हो तो ऐसा जातक अच्छे चरित्र वाला, विद्वान तथा बुद्धिमान होता है।

यह कोण छोटा हो तथा स्पष्ट न हो तो जातक आलसी, असत्य भाषण करने वाला तथा व्यभिचार में रत रहा करता है।

यदि कोण ठीक न बन रहे हों और स्वास्थ्य रेखा प्रथम हो तो जातक के विचार स्वतन्त्र होते हैं। यह प्रत्येक बात में अपना प्रभुत्व चाहता है तथा नवीन विचारों का विशेष आदर किया करता है।

त्रिशूल

त्रिशूल का चिह्न शुभ है, यह चिह्न जिस रेखा पर हो अथवा जिस गृह क्षेत्र पर हो तो यह उस क्षेत्र के शुभ प्रभाव में वृद्धि कर देता है। यदि त्रिशुल का चिह्न रेखा पर हो अथवा नीच गृह क्षेत्र पर हो तब यह अशुभ रेखा ग्रह क्षेत्र प्रदत्त अशुभ फल को समाप्त कर देता है।

त्रिशूल चिन्ह जिन जातकों के हाथ में होता है वह प्रायः बहुत ही धनवान होते हैं और राजा के समान सुख प्राप्त किया करते हैं।

त्रिशूल का चिन्ह हाथ के मध्य में राहु के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक सुख पूर्वक जीवन यापन करता है तथा राजा के समान धनवान, यशवान होता है।

त्रिशूल चिन्ह कुछ कम मात्रा में प्रतीत हो तो ऐसा जातक राजा के समान सम्पत्तिशाली, शक्तिशाली पुरुष के पास रहकर सुखमय जीवन यापन करता है।

त्रिशूल का चिन्ह हाथ में मध्य पूर्ण रूप से दिखाई दे तो जातक धर्मात्मा और ब्राह्मण, माता-पिता गुरु तथा देवताओं की सेवा और पूजा किया जाता है। यह जातक धनवान प्रतापवान समाज में प्रसिद्धि प्राप्त करता है।

इस प्रकार के त्रिशूल वाले जातक उच्च विचारवान तथा राजनैतिक नेता के रूप में समाज में आते हैं और प्रसिद्धि प्राप्त करते हैं।

त्रिभुज (Triangle)

त्रिभुज तीन रेखाओं के संयोग से बनता है और त्रिशूल दो रेखा के संयोग से यह ध्यान में रखना चाहिए जिस स्थान पर त्रिभुज होता है वह उस स्थान के शुभ प्रभाव में वृद्धि कर देता है।

त्रिभुज का चिह गुरु के पर्वत के ऊपर हो तो ऐसा जातक सेवा कार्य करने वाला, स्वयं सेवक, सरकारी, सेवारत कर्मचारी होता है, तथा यह ईमानदारी के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक मन्त्र विद्या को जानकार तंत्र में विशेष योग्य ज्योतिषी सामुद्रिक का ज्ञाता, भूतव्याधा आदि के विषय में जानकारी रखता है तथा ज्योतिष कार्य करता है।

त्रिभुज का चिन्ह सूर्य के स्थान पर हो तो ऐसा जातक प्राय: कलापूर्ण कार्य में दक्ष, कला के कार्य करने वाला तथा मानव जीवन रक्षा सम्बन्धी औषियों की खोज किया करता है।

त्रिभुज का निशान बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक व्यापारी होता है तथा व्यापार में धन तथा यश दोनों ही प्राप्त करता है।

त्रिभुज का निशान मंगल के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक वीर तथा बलवान होता है। ऐसा जातक वीर सैनिक होता है यदि मंगल के पर्वत का झुकाव बुध के क्षेत्र की ओर हो तो ऐसा जातक डाक्टर सर्जरी का कार्य करने वाला एवम् कम्पाऊन्डरी का कार्य करने वाला होता है।

त्रिभुज का निशान शुक्र के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक कामी प्रेम में बंध जाने वाला तथा गणित रेखा गणित का विद्वान होता है।

त्रिभुज का चिन्ह और रेखायें

त्रिभुज का चिन्ह जीवन रेखा पर हो तो जातक धनवान, ऐश्वर्यवान

सम्पत्तिशाली तथा सवारी आदि का सुख प्राप्त किया करता है। इसको अपने परिवार में विशेष सम्मान प्राप्त होता है।

दे० चि० १७—४३

त्रिभुज का चिन्ह मस्तष्क रेखा पर हो तो ऐसा जातक विद्वान होता है और विद्या व्यवसाय से ही धन प्राप्त करता है।

त्रिभुज का निशान जीवन रेखा पर हो तो जातक मातृपक्ष तथा माता से धन का लाभ करता है। यदि यह चिन्ह मस्तष्क पर हो तो जातक पितृ पक्ष से धन का लाभ करता है तथा पिता का विशेष प्यार प्राप्त होता है।

त्रिभुज का चिह्न जीवन रेखा, मस्तष्क रेखा तथा भाग्य रेखा के संयोग से बन रहा हो तो ऐसा जातक अच्छे चरित्रवान वाला होता है। तथा प्रायः धनवान तथा देव पूजन होता है। यह विशेष रूप से श्री दुर्गा, हनुमान की उपासना करता है।

त्रिभुज का चिन्ह जीवन रेखा, मस्तष्क रेखा तथा स्वास्थ्य रेखा के संयोग से बन रहा है। यह त्रिभुज बड़ा और साफ हो तो जातक भाग्यवान अधिक आयु वाला होता है। यदि इसका स्वरूप साफ न हो अथवा त्रिभुज छोटा हो तो ऐसा जातक व्यभिचारी कामी तथा झूठ बोलने वाला होता है।

रेखा जाल

रेखा जाल अनेक रेखाओं के संयोग से बनता है। जिसे कुछ रेखा सीधी, आढ़ी, तिरछी काटती हैं यह रेखा जाल जिस स्थान पर हो उस स्थान तथा रेखा के शुभ फल को समाप्त कर दिया करता है।

रेखा जाल चिन्ह गुरु के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक प्रायः कामी होता है इसका विवाह भी देर से होता है। वैसे यह विद्वान तथा अभिमानी और झगड़ालू स्वभाव का होता है।

रेखा जाल गुरु के पर्वत पर तो ऐसा जातक व्यभिचारी भोग-विलास से अधिक प्रेम करने वाला होता है अगर यह रेखा जाल साफ हो तो पागल हो जाने का भी भय रहता है और अधिकतर ऐसे जातक प्रेमपास के कारण कारागार भी भोगा करते हैं।

रेखा जाल के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक व्यभिचारी कामी, कर्म में रत रहने वाला तथा ईर्षालु होता है।

रेखा जाल सूर्य के क्षेत्र पर हो तो ऐसा जातक प्रायः मन्द बुद्धि, स्वाभिमानी, क्रूरस्वभाव वाला तथा अपने ही कार्य में रत रहने वाला होता है।

रेखा जाल बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक झूठ बोलने वाला, चोर बेईमान गबन करने में निपुण तथा गबन के मुकदमे में कारावास भी भोगा करता है।

रेखा जाल मंगल के पर्वत पर हो तो ऐसे जातक की मृत्यु यकायक ही हो जाती है यह अधिकतर आत्महत्या विषपान से करता है। मृत्यु के समय पेट से पीड़ित रहा करता है।

रेखा जाल का चिह्न चन्द्र के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक व्यर्थ की चिन्तायें करने वाला कम भाग्यशाली, कंजूस तथा व्यय कम करने वाला तथा आत्मग्लानि से परिपूर्ण रहता है।

रेखा जाल शुक्र के पर्वत पर हो तो ऐसे जातक कामी व्यभिचारी वीर्यविकार का रोगी तथा कमजोर हुआ करता है यह अधिकतर पत्नी दास होते हैं।

रेखा जाल का चिह्न जीवन रेखा पर हो तो ऐसे जातक प्रायः निर्धन रहा करते हैं। यह मानसिक, आर्थिक व सामाजिक चिन्ताओं से ग्रस्त रहा करते हैं। यह व्यापार में बहुत सफल नहीं हो पाते हैं।

रेखा जाल का चिन्ह मस्तिष्क रेखा पर हो तो ऐसे निशान वाला

जातक नीच विचार वाला, बुरे तथा नीच कर्म में रत, अकर्म की योजनायें बनाने वाला तथा बौद्धिक दृष्टि से नीच होता है।

रेखा जाल का चिन्ह हृदय रेखा पर हो तो ऐसा जातक हृदय रोग का रोगी हृदय पर बज्रघात होने से मृत्यु हृदय कार्य करने से रक्त जाना रोगों का रोगी होता है। इसकी मृत्यु यकायक ही हुआ करती है।

यव चिन्ह

यव चिन्ह दो रेखाओं के संयोग से निर्माण होता है।

यव चिन्ह गुरु के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक कलह करने वाला व्यर्थ ही अपनी मान-मर्यादा को प्राप्त करने के लिए सब कुछ दाव पर लगा देता है, इस जातक को ऐसी अवस्था में बहुत कम सफलता प्राप्त होती है।

यह चिन्ह शनि के क्षेत्र पर हो तो ऐसा जातक विशेष परिश्रम करने वाला लोह कर्म आदि में रत रहा करता है।

यव का चिन्ह सूर्य के पर्वत पर तो हो ऐसा जातक व्यर्थ में ही वदनामी प्राप्त करता है अनेक शुभ कर्मों में भी अपयश हाथ लगता है।

यव का चिन्ह बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक चोरी करने में निपुण झूठ बोलने वाला व्यभिचारी और काम प्रिय होता है। काम-वासना के कारण कष्ट भोगा करता है।

यव का चिन्ह मंगल के पर्वत के ऊपर हो तो ऐसा जातक क्रोधी, कुकर्म करने वाला हथियार आदि निर्माण में निपुण होता है।

यव का चिन्ह शुक्र के पर्वत पर हो तो ऐसे जातक की प्रेमीयों से लड़ाई झगड़े की स्थिति बनी रहती है परन्तु इनका प्रेम विच्छेद नहीं किया करता है।

यव का चिन्ह हाथ के अंगुली के ऊपर के भाग में हो और यह चिन्ह आड़ा हो तो जातक विद्वान बुद्धिमान, गुणवान, धनवान होता है।

यह जन्म से लेकर मृत्यु तक सुख भोगा करता है।

यव का चिन्ह जीवन रेखा पर हो तो यव चिन्ह वाले वर्तमान रोग की सूचना दिया करता है।

यव का चिन्ह मस्तष्क रेखा पर हो तो ऐसा जातक सिर सम्बन्धी रोगों का रोगी होता है।

यव का चिन्ह जीवन रेखा मस्तष्क रेखा के प्रारम्भ स्थान अर्थात स्थान पर हो तो ऐसा जातक प्राय: प्रेम में आत्मघात कर लिया करता हैं।

यव का चिन्ह भाग्य रेखा के प्रारम्भ में हो तो ऐसे जातक के माता पिता का स्वर्गवास बचपन में हो जाता है।

यव के चिन्ह भाग्य रेखा के प्रारम्भ में हो और यह हाथ स्त्री जातक का हो तो यह स्त्री जातक अपने स्वामी को त्याग कर अन्य के साथ प्रेम करती है, और अपने पति को छोड़कर भाग जाती है।

यव का चिन्ह विवाह रेखा पर हो तो ऐसे स्त्री तथा पुरुष में नहीं पटा करती है। परन्तु यह पृथक् नहीं हुआ करते हैं।

विवाह रेखा का यव चिन्ह अन्य यव चिन्ह के सहयोग से सूर्य रेखा तक पहुंच रहा हो तो ऐसा जातक अपमान अपयश का भागी होता है।

यव का चिन्ह हृदय रेखा पर हो तो ऐसे जातक विशेष प्रेमी होते हैं। यह प्रेम किया करते हैं परन्तु इस प्रकार के प्रेम सफल नहीं होते हैं।

चतुष्कोण

चतुष्कोण की चार भुजा होती हैं और चारों भुजा बराबर होती हैं, यह चिन्ह हाथ में शुभ होता है।

चतुष्कोण सभी प्रकार के भय तथा विपत्ति के निवारण का उपाय है। सभी विपत्तियों में यह रक्षा किया करता है किसी गृह क्षेत्र पर अशुभ चिन्ह हो अथवा किसी रेखा पर अशुभ चिन्ह हो और उसी

स्थान तथा रेखा पर चतुष्कोण हो तो यह प्रायः सभी संकटों में सहायता करता है और रक्षा करता है।

चतुष्कोण गुरु के पर्वत पर हो तो यह समाज में मान मर्यादा तथा प्रतिष्ठा दिलाया करता है। शारीरिक कष्टों से रक्षा तथा आपत्तिकाल में बुद्धि से सहायता कराता है।

चतुष्कोण शनि के पर्वत पर हो तो यह जातक के सभी शारीरिक कष्टों की रक्षा करता है।

चतुष्कोण सूर्य के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक प्रायः व्यापार किया करता है। यह व्यापार में कार्यक्षमता तथा ख्याति वृद्धि में सहायता किया करता है।

चतुष्कोण बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक समाज में यशवान धनवान होता है तथा समाज में उच्चपद पर कार्य किया करता है।

चतुष्कोण मंगल के पर्वत पर हो तो यह जातक को प्रायः सभी चोट, अग्निमय आदि से रक्षा करता है।

चतुष्कोण का चिन्ह चंद्र के पर्वत पर हो तो यह जातक की जल से, जल रोग से रक्षा कराता है।

चतुष्कोण का चिन्ह शुक्र के पर्वत पर हो तो यह प्रेम में सहायता करता है तथा प्रेम मार्ग में आने वाले सभी संकटों से बचाता है।

चतुष्कोण शुक्र और मंगल के दोनों ही क्षेत्रों पर हो तो जातक प्रेम के कारण कारागार भी देख लिया करता है। यदि चतुष्कोण अपूर्ण है तो प्रेम के कारण न्यायालय की शरण लेनी होती है।

जीवन रेखा पर चष्तुकोण हो और यह रेखा उसी स्थान पर टूट रही हो तो यह जीवन में मृत्यु कष्ट से छुटकारा दिला देता है।

चतुष्कोण का चिन्ह मस्तष्क रेखा पर हो तो ऐसा जातक भाषण करने वाला नेता, मस्तिष्क सम्बन्धी कार्य करने वाला होता है तथा यह चिन्ह मस्तष्क सम्बन्धी रोगों से रक्षा करता है।

चतुष्कोण का चिन्ह हृदय रेखा पर हो तो ऐसा जातक प्रायः दिलेर होता है, असम्भव कार्यों को किया करता है तथा उन कार्यों में भी सफलता प्राप्त कर लेता है जिन्हें असंभव कहा जाता है।

चतुर्थ परिच्छेद

ग्रह क्षेत्र

सामुद्रिक शास्त्र में ग्रह अपना विशेष और महत्वपूर्ण स्थान रखते हैं। ज्योतिषी में प्रधान ग्रह ही है, उनके ही सहारे गणित, फलित, जातक पंचाग रमल तथा सामुद्रिक ज्योतिष चलती है। ग्रह वह ध्रुव अथवा कीली है जिनके चारों ओर ज्योतिष विज्ञान चक्राकार घूमा करता है, मानव के जीवन का उत्थान, पतन, निर्माण और विनाश सभी ग्रहों के द्वारा संचालित होता है। ग्रह अपने निर्माणकर्त्ता पर भी स्वयं शासन करते हैं।

ग्रह राज्य प्रयच्छति ग्रहा राज्य हरितिर्च।
ग्रहै र्व्याप्तमिद सर्व त्रैलोक्य स चरा चरम्॥

ग्रह राज्य देते हैं ग्रह ही राज्य को हर लेते हैं और सम्पूर्ण त्रैलोक्य चराचर में ग्रह ही व्याप्त हैं।

ग्रह ज्योतिष के बहुत ही महत्वपूर्ण अंग हैं जिनकी उपेक्षा सामुद्रिक भी नहीं कर सकता है। इसलिए सामुद्रिक ज्ञानी को भी ग्रहों के विषय तथा हाथ में उनका स्थान एवं ज्ञातव्य होने वाली बातों को जान लेना अति ही हितकारी है।

ग्रहों की संख्या नौ हैं। हाथ में अपना स्थान भी है ज्योतिष शास्त्र के मतानुसार भी ग्रह संख्या नौ ही हैं।

१. सूर्य
२. चन्द्र
३. मंगल
४. बुध
५. गुरु
६. शुक्र
७. शनि
८. राहु
९. केतु

विज्ञान प्रगति कर रहा है और मानव केवल अपनी सुख तथा सुविधा एवं भोजन के लिये सब कुछ नहीं करता है आज वह अरस्तु और प्लेटों के सिद्धांत को कार्य रूप में ला रहा है, आज मानव का ध्यान पैरों की ओर न होकर आकाश की ओर है। मंगल और चन्द्र पर यान पहुँचाये जा रहे हैं, मंगल तथा चन्द्र की यात्रा और वहाँ के दर्शन की भूमिका मानव बना रहा है मानव ने तीन नवीन ग्रहों की खोज की है।

१. हर्सल, २. नैप्चून, ३. प्लेटो।

इन तीनों ग्रहों का हाथ में स्थान नहीं होता है और सामुद्रिक शास्त्र की दृष्टि से इनका कोई भी महत्व नहीं है। सामुद्रिक विशेष रूप से सात ग्रहों की प्रधानता रखता है।

सूर्य (Sun)

सूर्य सभी ग्रहों का स्वामी है। यह स्वयं प्रकाश करता है और सभी ग्रह इससे प्रकाश लेते हैं। वैज्ञानिक के अनुसार सूर्य में जीवनधारी नहीं रहते हैं। भारतीय मतानुसार इसमें जीवों का रहना सिद्ध है, वसु आठ हैं और सूर्य भी एक वसु है, वसु शब्द का अर्थ है बसने का स्थान अर्थात जिस स्थान पर जीव बसे हों उसी से सिद्ध है कि सूर्य में कोई न कोई रहता है अर्थात् बसता है। सूर्य किसी भी ग्रह की परिक्रमा नहीं करता है। वह अपनी कीली पर अर्थात् अपने स्थान पर घूमा करता है। सूर्य अपनी कीली पर २० दिन में चक्कर लगा लेता है। सूर्य पृथ्वी से १३ लाख ८० हजार गुना बड़ा है और भार में पृथ्वी से ३ लाख ५५ हजार गुना अधिक भारी है तथा सूर्य का प्रकाश पृथ्वी तक ८ सैकेन्ड में आ पाता है। सूर्य का व्यास पृथ्वी के व्यास से १०० गुना अधिक है। १६ मील प्रति सैकेण्ड के हिसाब से अपने स्थान से प्रथम हो जाता है। पृथ्वी सूर्य की परिक्रमा ३६५ दिन १५ घड़ी ३१ पल ३० विपल में कर लेती है यह एक मास में एक राशि को भोग लेता है और वर्ष में बारह राशियों को भोगता है।

यह सिंह का स्वामी है तथा कुम्भ राशि में निर्बल हो जाता है। मेष, वृक्ष, मिथुन, कर्क, सिंह; कन्या राशि में उच्च का रहता है तुला, वृश्चिक, धनु, मकर, कुम्भ, मीन में जाकर नीच का हो जाता है।

सूर्य का रंग तांबे के वर्ण के समान है।

सूर्य को अंग्रेजी में (Sun) सन, अरबी में शम्स, फारसी में आफताब, हिन्दी में सूर्य, संस्कृत में रवि, दिनकर, भानु, अरुण, अर्क, हेली, तपन, सूरदिवाकर, आदित्य, प्रभाकर, भास्कर, विभाकर, ब्रह्म हस्फर, द्वादशाल्य, दिनकृत, पूषा।

सूर्य का स्वरूप

प्रतापशाली, चौकरदेह युक्त, काला अथवा लाल रंग, सिंगरफ के समान, नेत्रयुक्त, सतोगुणी स्वभाव वाला होता है।

सूर्य के मित्र

चन्द्रमा, मंगल गुरु मित्र हैं।

सूर्य के शत्रु

शनि, शुक्र, राहु और केतु शत्रु हैं, बुध सम है, सूर्य का द्रव्य तांबा तथा मणिक हैं।

सूर्य का फल

आत्मा पर पिता का प्रभाव अपनी शक्ति का ज्ञात फल मान्यता, आरोग्यता, धन तथा सम्पत्ति की अधिकता आरोग्यता, पित्त की प्रबलता रहे।

सूर्य सम्बन्धी रोग

अग्नि रोग, ज्वार, वृद्धि, क्षय, अतिसार, चित्र में मलिनता, ब्राह्मण राजा तथा देवताओं के कष्ट सूर्य के प्रतिकूल होने पर हुआ करते हैं।

सूर्य स्वभाव

मान, प्रतिष्ठा राज्य, कुल में वृद्धि, धन, जीव सम्बन्धी चिन्ता,

कला-कौशल से प्रेम, सुन्दर वस्तुओं तथा विद्या में रुचि, शिल्पकारी, चित्र निर्माण, कविता गान, विद्या से प्रेम, ललित कलाओं से प्रेम, समाज में उच्चपद मान, प्रतिष्ठा पाने की अभिलाषा, सुन्दर स्थान देखने की रुचि ।

सूर्य अनिष्ट शान्ति के उपाय

सूर्य रंग का लाल है । इसकी धातु ताँबा है, इसकी अनिष्ट शान्ति के लिए माणिक धारण करना चाहिये, यह सूर्य का मुख्य रत्न है । सूर्य २२ वर्ष से लेकर २४ वर्ष तक विशेष फल देता है ॐ सूया सूर्यायनमः का ७००० जप, माणिक्य गेहूँ, स्वर्ण ताम्रद न करना शुभप्रद होता है ।

चन्द्रमा (Moon)

चन्द्रमा में अपना स्वयं का प्रकाश नहीं होता है, यह सूर्य के प्रकाश से चमकता है, इस क्षेत्र में जीव पाये जाते हैं । इस ग्रह पर रूस तथा अमेरिका वाले पहुँचने में काफी प्रयास कर रहे हैं और रूस ने अपना यान भी चन्द्रमा पर सकुशल उतार दिया है, अमेरिका ने भी मानव चन्द्रमा पर उतार दिया है । यह पृथ्वी से २ लाख ३७ हजार मील से अधिक दूरी पर है । इसकी परिधी ३७९० मील तथा इसका व्यास २१६० मील है । चन्द्रमा सूर्य से १ करोड़ साढ़े सात लाख मील दूर है । चन्द्रमा बहुत तेज चलने वाला ग्रह है, यह पृथ्वी की परिक्रमा २७ दिन आठ घण्टे में पूर्ण कर लेता है । यह कर्क राशि का स्वामी है तथा कर्क राशि में ही पूर्ण बली रहता है । एक राशि मकर पर जाकर चन्द्रमा निर्बल हो जाता है चन्द्रमा हमेशा सीधा ही चलता है । वृष राशि के तीन अंश पर चन्द्रमा उच्च का हो जाता है, और वृष से सातवीं राशि वृश्चिक पर चन्द्रमा नीच का हो जाता है । इसके उदय होने से ही सभी रस पैदा होते हैं, यह रसेन्दु नाम से भी पुकारा जाता है ।

पृथ्वी की छाया जब चन्द्रमा पर पड़ती है तो चन्द्र ग्रहण होता है। जब पृथ्वी और सूर्य के बीच में चन्द्रमा आ जाता है तो सूर्य ग्रहण होता है ग्रहण पूर्णिमा को और सूर्य ग्रहण अमावस्या को होता है चन्द्र ग्रहण की अपेक्षा सूर्य ग्रहण में एक विशेषता रहा करती है। चंद्र ग्रहण पृथ्वी पर से सभी देख पड़ने वाले स्थानों से एक-सा ही दिखाई पड़ता है। अर्थात् चन्द्र बिम्ब का जितना भाग पृथ्वी छाया से अच्छादित होगा सर्वत्र उतना ही ग्रहण दिखाई पड़ेगा क्योंकि वहां पर छाद्य और छापक एक दूसरे से काफी सटे रहते हैं। परन्तु इस प्रकार की बात सूर्य ग्रहण में नहीं हुआ करती है। सूर्य ग्रहण में छाद्य और छापक एक दूसरे से काफी दूर रहते हैं। सूर्य केवल चन्द्रमा की ओट में आ जाता है जिसके कारण पृथ्वीवासियों को नहीं दिखाई देता है। पृथ्वी वासी जो पूर्वोक्त सीध पर स्थित हैं उन्हें सूर्य बिम्ब का सबसे अधिक भाग ग्रहण दिखाई देगा इसके विपरित जो लोग सीध से जितनी दूर अधिक स्थित हैं उन्हें उतना ही कम सूर्य (ग्रहण) दिखाई देगा। क्योंकि उन्हें वहां से उतना ही भाग अग्रस्त दिखाई देगा और जो पृथ्वीवासी उस सीध से बहुत दूर हैं उन्हें सूर्य ग्रहण दिखाई ही नहीं देगा।

चंद्रमा के कारण ही समुद्र में ज्वारभाटा आता है जब पूर्णिमा को चन्द्रमा बलवान होता है तो ज्वार-भाटा आता है। जब चन्द्रमा अमावस्या को क्षीण होता है तो समुद्र में भाटा आता है अर्थात् समुद्र शांत रहता है।

चन्द्रमा विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नामों से पुकारा जाता है।

चन्द्रमा अंग्रेजी में (Moon) मून, अरबी में कमर, फारसी में माहताब मृगान्डा लौ, शीत, सोम, धुनि उड़पति, माश्रन्द, इन्दु, बन्धु, कुमुद, बिन्धु सुधाशु, शुभी, निशापति, शुरोषग्रोशगे, जैवा, तूक, कलानिधि, द्विजराज, शशीधरो, क्षत्रावुर, नक्षत्रपति, रोहणी पुत्र।

चन्द्रमा का स्वरूप

श्वेत रंग, शांत स्वभाव, कोमल हृदय, बलवान, ज्ञानवान, सुन्दर, बुद्धिमान, गोल आकार, शीत का रोगी, क्षीण आयु, वीर्य विकार युक्त तथा हृष्टपुष्ट होता है।

चन्द्रमा का रोग

पाण्डु, कमला, वीर्य विकार, नेत्र रोग, भार्या को कष्ट, देव, राजा तथा उच्च वर्ग से व्याकुलता की प्राप्ति।

चन्द्रमा का स्वभाव

स्त्री प्रेमी, कामी, शृंगार प्रेम, माता से सुख की इच्छा, साहित्य उच्च विचार वाला, कविता तथा गाने आदि से प्रेम।

चन्द्रमा के मित्र

बुध और सूर्य चन्द्रमा के मित्र हैं।

चन्द्रमा का द्रव्य

चन्द्रमा का द्रव्य रंजत है और रत्न मोती है।

चन्द्र अनिष्ट शान्ति का उपाय

चन्द्रमा श्वेत वर्ण में अथ श्वेत ही वस्तुओं से विशेष प्रसन्न रहता है। वह २४ वर्ष में विशेष फल लेता है वैसे २२ वर्ष से २५ वर्ष तक इसका युवाकाल रहता है। इसकी शांति के लिए चांदी की अंगूठी में मोती धारण करना चाहिए। ओ३म् सों सोभाग्य नमः का ११०० जप कराना भी उत्तम है। चन्द्र यंत्र धारण कराना चाहिये। चावल, कपूर, वंश पत्र, मोती, वृषभ, श्वेत वस्त्र, रजत, घी, शंख, चंदन, दधिकुम्भ, श्वेत पुष्प का दान करना चाहिये।

हाथ में चन्द्र का स्थान

चन्द्रमा का पर्वत मंगल के पर्वत के नीचे शुक्र के पर्वत के सामने, केतु के पर्वत (मणिबंध) तक चन्द्रमा का पर्वत (क्षेत्र) कहलाता है।

मंगल (Mars)

जिस प्रकार चन्द्रमा भूमि का उपग्रह है उसी प्रकार मंगल भी भूमि का उपग्रह है। यहां पर जीव रहते हैं। वैज्ञानिकों के मतानुसार निवासी भूमिवासियों से अधिक सभ्य तथा रक्त वर्ण हैं। अभी तक पृथ्वीवासी मानव मंगल क्षेत्र में नहीं पहुँच सके हैं, उनकी भाषा देव वाणी ही प्रतीत होती है ऐसा विश्वास है कि वे अपने मत के करीब १०वें वर्ष में पहुंच गये हैं। मंगल सूर्य से १२ करोड़ २ लाख मील के करीब दूर है तथा मंगल की परिधी १३ हजार १ सौ ६५ लाख मील की है यह अपनी कीली पर २४ घण्टे ३० मिनट अर्थात् ६१ घड़ी १५ पल में चक्कर लगा लेता है। मंगल ग्रह का दिनमान पृथ्वी के दिनमान के समान ही होता है। मंगलग्रह सूर्य की परिक्रमा करता है। ६८६ दिन में सूर्य की परिक्रमा पूर्ण करता है। यह १८ मास में १२ राशियों को भोग लेता है, मंगल की १५ मील चाल प्रति सैकेण्ड तथा एक घण्टे में करीब ५६ हजार मील है। एक राशि में ४२ दिन से लेकर ४५ दिन तक रहता है, १८ मास में अपना राशि चन्द्र पूर्ण करता है। जिस राशि पर वक्री होता है उससे १२७ दिन और आगे आने वाली राशि को १५ दिन में ही भोग लेता है जिस राशि पर मार्गी होता है उस राशि को ४५ दिन में भोग लेता है। मंगल जब सूर्य से १४५ अंश के फासले पर होता है तो फिर वक्री हो जाता है अर्थात् उलटा चलने लगता है और जितना सूर्य के पास पहुँचता है उतनी ही उसकी चाल तेज होती जाती है यहां तक कि एक दिन में दो अंश और बारह पहर में एक अंश घूम जाता है। जिस तत्व की राशि पर वक्री होता है तो फिर उसी तत्व की अंगुली राशि पर पहुँचता है तो फिर वक्री हो जाता है अर्थात् यदि प्रथम मंगल वृष राशि में वक्री हुआ था जो कि पार्थिव राशि है फिर कभी घूमते २ पार्थिव राशि कन्या में मंगल आवेगा तो पुनः वक्री हो जावेगा। मंगल मेष और वृश्चिक का स्वामी है। जब

इन राशियों में मंगल आता है तो बलवान रहता है। इनसे सातवीं राशि तुला और वृष में मंगल पहुँचता है तो निर्बल हो जाता है।

मंगल मकर राशि में उच्च का होता है और मकर से सातवीं राशि कर्क में नीच में हो जाता है यह ग्रह पृथ्वी के पास है, यह क्रूर-ग्रह है इसका सम्बन्ध भूमि से है अत: इसको भूमि पुत्र, भूमि नन्दन आदि नामों से पुकारते हैं।

हाथ में मंगल का स्थान

हाथ में मंगल का क्षेत्र दो स्थानों पर होता है। एक तो बुध के पर्वत के नीचे हृदय रेखा से चन्द्रमा के पर्वत तक दूसरा मंगल का क्षेत्र जीवन रेखा उद्‌गम स्थान पर गुरु और शुक्र के पर्वतों के मध्य होता है।

मंगल का रंग लाल अंगारासा है। इसको विभिन्न भाषाओं में विभिन्न नाम तथा उपनामों से पुकारते हैं।

मंगल हिन्दी में, अंग्रेजी में मार्स, अरबी में मैगर्रख, फारसी में बहर-मान कहते हैं। भूमि पुत्र, भौम, महीसुत, अंगारक, कुज रुधिर, क्षितिज क्रूरनेत्र, भूमि नन्दन क्षयाज, क्षिति, काश्यपीरुत रिथराज लोहितांगो यह सभी आपत्ति संज्ञा वाले हैं जिनका सम्बन्ध पृथ्वी से है अर्थात् भूमि पार्यवाची शब्द पर 'ज' अथवा 'सुत' आदि लगा देने से मंगल के नाम बन जाते हैं।

मंगल का स्वरूप

रक्त वर्ण, क्रूर स्वभाव वाला, क्षत्रियोचित कार्य करने वाले, अधेड़, चञ्चल दृष्टि, कामी, तमोगुणी पित्त विकार युक्त, चंचल स्वभाव हिंसा प्रेमी, क्रोधी स्वभाव होता है।

मंगल का रोग

खाज खुजली, रक्त विकार फोड़ा, फुन्सी हथियार आदि चोटसे

लगना, भूत प्रेत, व्याधा, पिशाच चाण्डल, शंकनी, डंकनी आदि भय, दरिद्रता, पत्नी को रोग तथा पत्नी की ओर से चिन्ता आदि ।

मंगल का स्वभाव

शिकार प्रेमी, बलवान, पराक्रमी, दूसरों पर अधिकार जमाने की इच्छा रखना, विवाद करना, कभी गर्म तो कभी नर्म स्वभाव युद्ध आदि में जय, झगड़ालू तथा उपद्रवी स्वभाव का होना।

मंगल का फल

पृथ्वी, धन, स्त्री, पुत्री, परिवार का होना, रक्त विकार सम्बन्धी रोग का होना, सेना में स्थान, विजय तथा पराजय में समानता मानना, जिस हाथ में मंगल रेखा हो अथवा मंगल का पर्वत उच्च हो तो ऐसा जातक सेना में उच्च पद पर कार्य करता है ।

मंगल के मित्र

सूर्य चन्द्रमा, गुरु मित्र हैं ।

मंगल के शत्रु

बुध, शत्रु है, शनि, शुक्र तथा राहु सम हैं सूर्य से मंगल की अधिक मित्रता है ।

मंगल के अनिष्ट शांति के उपाय

मंगल का वर्ष रक्त है, इसकी धातु ताम्र है, इसका रत्न प्रबल है । इसलिए मंगल की शांति के लिए ताम्र की मुद्रिका में प्रबाल को धारण करना चाहिये । मंगल पूर्ण युवा अवस्था में फल देता है । जब मानव छब्बीस और सत्ताईस वर्ष व्यतीत करके आगे चलता है और ३२ तथा ३३ वर्ष पार करता है तब तक मंगल अपना प्रभाव दिखाता है । इसकी शान्ति के लिए ओ३म् अंगा काय नमः का १०००० जप, मंगल यन्त्र व मंत्र को धारण करना चाहिए, गेहूँ, मसूर, लाल बेल, गुड़, रक्त चन्दन, रक्त पुष्पा स्वर्ण, ताम्र, कस्तूरी, केशर आदि का दान मंगल की शान्ति के लिए करना चाहिये ।

बुध

बुध कन्या राशि का ग्रह है, यह न पुरुष है और न स्त्री ही नपुंसग ग्रह है इस कारण यह अपना प्रभाव बहुत कम रखता है जिस प्रकार ग्रह के साथ हो जाता है उसी प्रकार अपना प्रभाव दिखाया करता है। जिस प्रकार मंगल पृथ्वी के अति समीप है उसी प्रकार बुध सूर्य के अति समीप है। यह अपना स्वयं का कोई अस्तित्व नहीं रखता है, जब सूर्य उदय होता है जब ही बुध उदय होता है और सूर्य के अस्त होने के साथ बुध भी अस्त हो जाता है कुछ दिन में दिखाई देता है। यह अपनी धुरी पर २४ घण्टे तथा साढ़े पांच मिनट अर्थात् ६० घड़ी ४५ पल में घूम लेता है। बुध का दिनमान भी मंगल के दिनमान के बराबर ही सा होता है। मंगल ८८ दिन में सूर्य की परिक्रमा कर लेता है। मंगल एक सेकेण्ड में ४० मील तथा एक घन्टे में एक लाख छः हजार मील चलता है। बुध सूर्य के २७ अंश के भीतर ही रहता है, यदि बुध सूर्य से २७ अंश से अधिक पीछे रह जाता है तो वक्री हो जाता है। फिर कुछ समय बाद मार्गी होकर आगे निकल जाता है। एक वर्ष में बुध तीन बार वक्री होता है और वक्री राशि को दो माह दो दिन में भोगता है। एक राशि को एक मास में भोगता है। बुध मिथुन और कन्या राशि का स्वामी है, इसलिए जब यह मिथुन और कन्या राशि में होता है। बुध कन्या राशि में उच्च होता है और कन्या से सातवीं राशि धन में निर्बल हो जाता है। बुध जिस ग्रह के साथ रहता है उसी अनुरूप फल दिया करता है।

हाथ में बुध का स्थान

कनिष्ठका अंगुली के नीचे बुध का पर्वत होता है।

बुध को अनेकों उपनामों से पुकारा जाता है हिन्दी में बुध, अंग्रेजी मे मरकरी, अरबी में उत्तरादि, फारसी में वीर, संस्कृत में रोहिद्वेय, सोम्य, इन्द्रपुत्र, ताशतनाय बोधन वित्त, असुरा, देते यद, नुजेन्द्रा, शुक्र शिष्य आदि।

बुध का स्वरूप

चालाक, कपटी, पिठनेत्र, बहुत मौजी, श्वेत श्याम शरीर, ज्योतिष आदि का ज्ञाता, बुद्धिमान रजोगुणी प्रतापी और धनवान होता है।

बुध का स्वभाव

विद्या प्रिय, शिल्प कला आदि का प्रेमी, यात्रा करने वाला, अधिक और चातुर्यता पूर्ण बातें करने वाला प्रिय और मिष्ठभाषी, व्यापार आदि के कार्य से परिपूर्ण रहता है।

बुध सम्बन्धी रोग

संग्रहणी, शूल, मन्दाग्नि आदि उदर रोग गुर्दा, बवासीर, मन की चंचलता, भूत प्रेत आदि से भय कन्याओं की ओर से चिन्ता हुआ करती है।

बुध का फल

कन्या, पुत्र, विद्या वेदांत, ज्योतिष, गणित, भाई बन्धु, मित्र, मामा आदि का विचार बुध से करना चाहिये।

बुध का मित्र

शुक्र तथा सूर्य मित्र हैं

बुध के शत्रु

बुध का चन्द्रमा शत्रु है। मंगल, शनि, गुरु सम हैं। यह चन्द्रमा से विशेष शत्रुता मानता है।

बुध का रंग हरित वर्ण या श्याम है इसकी धातु सोना है। बुध का रत्न पन्ना है।

बुध के अनिष्ट शान्ति के उपाय

स्वर्ण की मुद्रिका में पन्ना धारण करना चाहिये, यह पौण अवस्था में विशेष फल दिया करता है यह अवस्था २५ वर्ष से ३३ वें वर्ष तक होती है, इसकी शान्ति के लिए ॐ बन्धुवाय नमः का ९००० जप का

रूपपात्र, हरा वस्त्र, हाथी दांत, मूंग, सोना, जौ, चाँदी, घसी, घृत, मुदगान्म, पन्ना, सर्व पुण्य, शंख, अनेक प्रकार के फल, षटरस भोजन का दान करना चाहिये।

गुरु

यह देवताओं का गुरू है यह सूर्य से २९ करोड़ ६ लाख मील दूर है इसका व्यास ८९ मील का है यह अपनी कीली पर ९ घण्टे ५५ मिनट में घूम लेता है, इसका दिन पृथ्वी तथा मंगल से छोटा होता है, यह पृथ्वी से ३८ करोड़ मील दूर है तथा काफी विशाल एवं प्रकाशमान है, एक राशि को एक वर्ष में और बारह राशियों को १२ वर्ष में भोगता है। क्योंकि एक राशि को वक्री तथा मार्गी होकर तेरह माह में भोगता है। जिस राशि पर मार्गी होता है उस पर ४५ दिन में और जब वक्री होता है तो ६५ दिन में १२ अंश की चाल होती है, जब सूर्य १२० अंश के अन्तर पर रहता है तो वक्री हो जाता है, जब सूर्य गुरु से चार राशि कम रहता है तो वक्री हो जाता है, जब सूर्य चार राशि से अधिक होता है तो मार्गी हो जाता है इसकी वक्र गति चार मास की रहती है, और चार मास में १२ अंश दूर हट जाता है, यह धन और मीन का स्वामी है। जिस प्रकार भूमि का उपग्रह चन्द्रमा है उसी प्रकार गुरु के चार उपग्रह हैं। प्रथम में इसका पिण्ड सूर्य की तरह बहुत ही गर्म था, परन्तु अब सृष्टि की उत्पत्ति को १ अरब १७ वर्ष व्यतीत हो गये इससे इसकी गर्मी बहुत कुछ निकल गई जब तक सूर्य से ३ राशि आगे रहता है तो इसकी चाल १० कला रोजाना हो जाती है, ज्यों २ यह सूर्य के पास जाता है तो इसकी एक कला तेज होती जाती है, जब यह सूर्य तीन राशि पीछे रह जाता है तो इसकी चाल ५ कला प्रतिदिन कम होती चली जाती है।

गुरु के अनेक उपनाम हैं। हिन्दी में वृहस्पति, अंग्रेजी में जुपीटर अरबी में मुस्तरी, फारसी में वीर जीस, संस्कृत में गुरु, सुराचार्य, देव, गुरु, गीष्पति, जीव, वाचस्पति, आंगिरसो, शिखड़ी, आदि।

गुरु का स्वभाव

उच्च स्थान में रहने वाला, अच्छे सुन्दर विचार वाला, विद्वान, श्रेष्ठ, धार्मिक प्रवृत्ति धन धान्य, से युक्त, प्रसन्न चित्त, कवि गायक, पण्डित तथा मन की अभिलाषा रखता है।

गुरु का फल

धन, पुत्र, विद्या स्वयं की प्रतिष्ठा करता है समाज में उच्च स्थान है आदि।

गुरु सम्बन्धी रोग

देव, गुरु ब्राह्मण आदि से भय, विद्या का विनाश, बुद्धि में मलिनता, पीलिया, गुल्मरंग तथा समाज में प्रतिष्ठा की हानि हुआ करती है।

गुरु के मित्र

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल मित्र हैं।

गुरु के शत्रु

शुक्र तथा बुध शत्रु हैं, शनि सम है।

अनिष्ट शान्ति के उपाय

गुरु स्वरूप पीतवर्ण है, इसलिए इसकी प्रधान धातु स्वर्ण है तथा रत्न में पुखराज प्रिय है। गुरु के अनिष्ट निवारण को सोने की मुद्रिका में पुखराज का धारण श्रेष्ठ है। गुरु का १२ वर्ष से लेकर २२ वर्ष तक विशेष प्रभाव रहता है अनिष्ट शांति के लिए ओ३म् वृहस्पतये नमः का १९००० जप, पीत धान्य, पीत वस्त्र, स्वर्ण, पुखराज, अश्व, हल्दी, लवण, शर्कर गोघृत पीत पुष्प, पीत फल, पुस्तक क्षेत्र आदि दान करना श्रेष्ठ है।

हाथ में गुरु का स्थान तर्जनी अंगुली के नीचे तथा मंगल के पर्वत से ऊपर होता है।

शुक्र

शुक्र दैत्यों का गुरु है, यह पृथ्वी तथा सूर्य के मार्ग में स्थिति है, यह सूर्य से ६ करोड़ ६ लाख मील दूर है, इसका व्यास ७८०० मील का है, यह घूमते-२ पृथ्वी के बहुत ही निकट आ जाता है, जिस समय यह बहुत ही चमकीला दिखाई देता है। तथा ३० दिन और ६ घन्टे में अपनी कीली पर घूम जाता है। यह एक साल मार्गी और साल वक्री रहता है, यह सूर्य से ४५० अंश से न आगे जाता है और न पीछे। जिस साल मार्गी होता है उस साल ३२४ दिन में वक्री होता है ४०७ दिन में सूर्य परिक्रमा कर लेता है। वृष और तुला का स्वामी है, वृष और तुला राशियों में उच्च का और पूर्ण बली रहता है।

शुक्र के अनेक उपनाम हैं। हिन्दी में शुक्र, अंग्रेजी में वीनस, अरबी में जुहरा, फारसी में नाहीद, संस्कृत में उसना, भार्गव दैत्य गुरु, आरफ, भृग सुत, अच्छा. स्फुर्ति है, दान वैज्य, शित, कवि आदि।

शुक्र का स्वरूप

शुक्र सुन्दर अंग वाला, स्वरूपवान, कामागुण, तपहीन, गायक, रजो गुणी श्रृंगार प्रिय, शान शौकत से रहने वाला, हर प्रकार की विद्या जानने वाला है।

शुक्र का स्वभाव

सुन्दर रमणी की इच्छा रखने वाला, विशेष कामी, श्रृंगार प्रिय, श्वेत वस्त्र, सुन्दर भोजन में रुचि रखने वाला, वीर्य विकार, काव्य-कला आदि का प्रेमी होता है।

शुक्र का फल

व्यापार, विद्या, काया, वहान, गायन, पत्नी, आभूषण, मित्र आदि के विषय में विचार करें।

शुक्र का रोग

स्त्री, प्रेमिका आदि की चिन्तायें, वीर्य विकार सम्बन्धी रोग स्वप्न दोष , प्रमेह तथा अन्य शीघ्रता से फैलने वाले रोग हैं।

शुक्र का मित्र

शनि, बुध, राहु मित्र हैं।

शुक्र के शत्रु

सूर्य और चन्द्रमा शत्रु हैं तथा गुरु मंगल में समानता है।

शुक्र का हाथ में स्थान

अंगूठे के नीचे जीवन रेखा से अर्ध गोलकार में जो स्थान हाथ में घिरा रहता है वह शुक्र का स्थान है। इसे शुक्र का पर्वत कहते हैं।

शुक्र की अनिष्ट की शान्ति के उपाय

शुक्र का रंग श्यामलता लिये सफेद होता है, इसकी रजत धातु है, और हीरा इसका प्रधान रत्न है। शुक्र के अनिष्ट निवास की रजत की मुद्रिका में हीरा धारण करना चाहिये। इसका प्रभाव युवा अवस्था में २५ वर्ष से २८ वर्ष तक रहता है। शुक्र की अनिष्ट शान्ति के लिए ओ३म् शुक्रायनमः का १६००० जप तथा चावल, श्वेत, चन्दन, वस्त्र रजत, अश्व, सुगन्धित द्रव, सब्जी साग, श्वेत चित्र, श्वेत पुष्प, हीरा, गोधूम शर्कर आदि का दान करना श्रेष्ठ है।

शनि

यह मन्द गति से चलने वाला प्रधान ग्रह है, इसका व्यास उनासी हजार मील है, यह सूर्य से ७८ करोड़ २ लाख मील दूर है।। इसकी मन्द चाल के कारण ही इसका नाम भी मन्द है। यह सूर्य की परिक्रमा ३० साल में करता है तथा बारह राशियों को ३० साल में तथा एक राशि को २ वर्ष ६ माह में भोगता है, यह ३६ घन्टे में अपनी कीली पर घूमता है जिससे यह पाया जाता है कि शनि का दिनमान पृथ्वी से डेढ़ गुना अधिक है, जिसका कारण पृथ्वी के उपग्रह चन्द्रमा है उसी प्रकार शनि के ८ उपग्रह हैं। यह गुरु के समान ही वक्री तथा मार्गी होता है जब शनि सूर्य के पास आता है तो तेज चाल वाला हो जाता

है जब सूर्य से अत्यन्त पास होता है तो प्रतिदिन ८ कला चलता है और जब सूर्य से तीन राशि पीछे रह जाता है तो ४ और ३ कला प्रतिदिन चलता है और जब चार राशि पीछे रह जाता है तो एक दिन में एक कला ही पीछे चलता है और जब चौथी राशि समाप्त कर लेता है तो एक दिन में एक कला ही चलता है और जब चौथी राशि समाप्त कर लेता है तो वक्री होने लगता है और जब वक्री होकर १२० अंश तक पहुँच जाता है तब मार्गी होने लगता है। शनि प्रतिवर्ष दो मास वक्री रहता है तथा ८ माह मार्गी रहता है शनि मकर तथा कुम्भ का स्वामी है, मकर कुम्भ पर ही बलवान तथा उच्च का रहता है।

शनि के अनेक उपनाम हैं। हिन्दी में शनिश्चर, अँग्रेजी में सटर्न, अरबी में जुहल फारसी, में केवा, संस्कृत में शौरि शनिश्वेरी, आर्कि, मन्द, छाया, सुन, ताणि, तनय, कोण, शनि आदि।

शनि का हाथ में स्थान

मध्यमा अंगुली के नीचे शनि का क्षेत्र होता है। इसे शनि का पर्वत कहते हैं।

शनि का स्वरूप

काला रंग मोटा तथा ठिगने शरीर वाला, कर्कश बोलने वाला, आलसी, रोगी तथा तमोगुणी।

शनि का फल

आयु, धन रोग का कारण, धन का नाश, रोग परिवार का क्षय, परिवारिक तथा मानसिक चिन्तायें।

शनि का रोग

धन नाश, स्वयं को अनेक कष्ट, परिवार में रोग, घोर भय, अनेक व्याधि।

शनि के मित्र

शनि के शुक्र और बुध मित्र हैं।

शनि के शत्रु

सूर्य, चन्द्रमा, मंगल शत्रु हैं। गुरु समान है, शनि सबसे अधिक शत्रुता सूर्य से मानता है।

शनि के अनिष्ट शान्ति के उपाय

शनि का रंग श्याम है, लोहा इसकी प्रधान धातु हैं नीलम इसका मुख्य रत्न है।

शनि की शान्ति के लिए स्वर्ण और लोहे की मुद्रिका में नीलम धारण करना चाहिए। शनि ३६ वर्ष से लेकर ४२ वर्ष तक अधिक प्रभाव रखता है शनि की अनिष्ट शान्ति के लिए ओ३म् शं शनिश्चरायनमः का २३००० जप, तेल, तिल, काला वस्त्र, कुलथी, काले पुष्प श्यामा गाय, उपनाह, कस्तूरी, स्वर्ण आदि का दान करना चाहिये।

राहु और केतु

बहुत से विद्वानों का मत है कि राहु और केतु दोनों ग्रह नहीं हैं। परन्तु पृथ्वी के दोनों सिरे हैं उत्तारी गोलार्द्ध में उत्तारी-ध्रुव और दक्षिणी गोलार्द्ध में दक्षिणी-ध्रुव कहलाते हैं। यह दोनों एक दूसरे के सामने १८० अंश की दूरी पर अर्थात् एक से सातवीं राशि तक रहते हैं। इनकी चाल सदैव और ग्रहों से उल्टी रहती है अर्थात् यह सर्वदा वक्री ही रहते हैं यह मेष से मीन और तुला से कन्या में जाते हैं, यह १२ राशियों को १९ माह में तय करते हैं और एक राशि १९ माह में भोगते हैं, इनकी चाल ३ कला ११ विकल से कभी घटती बढ़ती नहीं है।

हाथ में राहु का स्थान

हथेली के माध्य में राहु का स्थान है।

हाथ में केतु का स्थान

मणि बन्ध में राहु का स्थान होता है। राहु ४२ वर्ष में तथा केतु ४८ वर्ष में फल देता है।

राहु के उपनाम

सर्प, असुर, फणि, तन सैंहिमेय ।

केतु के उपनाम

ध्वज, शिखी, गुलिक, मनि ।

शुभ ग्रह

सूर्य चन्द्र गुरु, शुक्र, बुध शुभ ग्रह कहलाते हैं और शुभ फल तथा सुख देते हैं

हाथ में जो ग्रह जहां बैठते हों उसी स्थान पर टिके रहें तो शुभ फल कहना चाहिए ।

ग्रह दक्षिण की तरफ टिके हों और उत्तर में बैठे हों और ग्रह पर्व में बैठ कर पश्चिम को चले जाएं तो ग्रह फल विपरीत कहना चाहिये ।

पाप ग्रह

क्षीण चन्द्र, सूर्य, शनि, मंगल, राहु, केतु, पाप ग्रह हैं, बुध पाप ग्रह के साथ पाप ग्रह हो जाता है। शुभ कार्य में कोई पाप ग्रह आ जावे तो कार्य हानि करता है । हाथ में ग्रह उच्च और ठीक हैं तो शुभ फल देते हैं ।

विभिन्न-विभिन्न ग्रहों के गुण वाले पुरुष

सूर्य के गुण वाले पुरुष

सूर्य के गुण वाला जातक भड़कीले स्वभाव वाला सुन्दर, कला में निपुण होशियार और समझदार सौंदर्य प्रिय होते हैं ।

सूर्य के गुण वाले जातक का स्वास्थ्य अच्छा रहता है । आशावादी होता है, आग से भय वाला, बुद्धिमान, किसी प्रकार की बुराई की ओर नहीं जाता है। अपने आत्म-सम्मान की विशेष चिन्ता रहती है ।

सूर्य के प्रधानता वाले जातक को नेत्र-विकार, जोड़ तथा रीढ़ की हड्डी में दर्द, हृदय में पीड़ा होना सम्भव है, सूर्य का प्रभाव नेत्र, हृदय तथा रीढ़ पर विशेष होता है ।

अशुभ हाथ वाले जातक अच्छे हो जाते हैं, अपनी जन्मभूमि से दूर जाकर शरीर त्यागते हैं, हृदय की कमजोरी बुखार का आना, लू का लगना, नेत्रों का दुखना आदि का भय रहता है।

सूर्य की प्रधानता वाले जातक की मानसिक शक्ति श्रेष्ठ होती है, आन्तरिक ज्ञान विशेष रहता है, कम परिश्रम से प्रत्येक बात को जान लेना इसके लिए आसानी की बात है। नवीन वस्तु का निर्माण, नवीन खोज करना आदि बड़ी ही चतुरता और होशियारी से करते हैं, यह प्रकृति और हुनर के प्रेमी होते हैं। प्रत्येक सुन्दर वस्तु का सम्मान करते हैं, यह अपनी ओर शीघ्र ही मनुष्यों को आकर्षित कर लिया करते हैं तथा शीघ्र ही शत्रुता तथा मित्रता कर लिया करते हैं, कोई भी समस्या कितनी पेचीदा क्यों न हो आसानी से समझ लिया करते हैं और ऊंचे स्थान पर कार्य करके धन पैदा किया करते हैं। इनमें सबसे बड़ी कमजोरी यही रहती है कि अपने मन की बात प्रत्येक से तथा आसानी से कह दिया करते हैं, प्रत्येक बात पर आसानी से विश्वास कर लिया करते हैं, धर्म में इनकी रुचि होती है तथा वाद-विवाद के बिना ही विश्वास कर लिया करते हैं, किसी भी कार्य में शक नहीं किया करते हैं, यह अपनी आन्तरिक शक्ति से गुप्त विद्या सीख लिया करते हैं और मानसिक शक्ति से कठिन समस्याओं को हल कर लेते हैं, इनका स्वभाव खुशमिजाज, दयावान एवं सुन्दरता प्रिय होता है।

सूर्य के स्वभाव वाले जातक की स्त्रियाँ सीधे स्वभाव के कारण अक्सर ताना दिया करती हैं। जातक शीघ्र क्रोधित और शीघ्र शान्त हो जाते हैं, यह कभी किसी को राग-द्वेष ईर्ष्या से नहीं रखता है, अपने कठोर से कठोर शत्रु को मित्र बना लिया करता है, इसके मित्र बहुत कम हुआ करते हैं, यह स्वच्छ वायु और व्यायाम पसन्द किया करते हैं, यह विशेष यात्रा प्रिय होते हैं, इनमें घमण्ड और अभिलाषा नहीं हुआ करती है, इनकी इच्छा उत्तम प्रकार की होती है।

इनका कद मामूली कुछ ऊंचा, सुन्दर, सुरुचि, रंग अच्छा चमकदार माथा ऊंचा और चौड़ा, आंखें बादामी रंग की और बरौनी लम्बी होती है, नाक सीधी, गाल गोल और मजबूत, भौंहें सुन्दरता युक्त मुड़ी हुई होती हैं, आवाज भरी, मुंह बड़ा नहीं होता है, ठुडी गोल उभरी हुई नहीं होती है, गर्दन लम्बी, शरीर में बाल नहीं होते हैं, चर्बी अधिक नहीं होती है, उंगली चिकनी और समकोण, अंगुठा औसत और दूसरा पोर कुछ बड़ा होता है। अनामिका अंगुली गठी हुई, हथेली और अंगुलियां करीब २ बराबर की हुआ करती हैं।

चन्द्रमा के गुण वाले जातक

चन्द्रमा के प्रभाव वाले जातक का कद लम्बा, सिर गोल और चौड़ा, भौंहें कनपटी के ऊपर कम हुआ करती हैं, वर्ण सफेद, मास मुलायम, पुट्ठे बड़े, पतले-दुबले जातक के शरीर पर बाल नहीं हुआ करते हैं, नाक छोटी और सिरे पर गोल हुआ करती है, होंठ मोटे, मुंह छोटा, दांत बड़े तथा पीले रंग के होते हैं तथा दांत बेतर तीव्र और शीघ्र ही खराब हो जाते हैं, मसूड़े पीले तथा कमजोर हुआ करते हैं।

नेत्र गोल बड़े तथा उठे हुए होते हैं, पुतली चमकदार तथा भूरे रंग की होती हैं, पलकें बड़ी और मोटी, ठुड्डी बड़ी और चर्बीदार तथा कान सिर पर चिपटे हुआ करते हैं। गर्दन लम्बी तथा माँसयुक्त और झुरियाँ हुआ करती हैं, सीना माँस से युक्त ढीला बदनुमा होता है, टांगें भारी, टखने के पास पैर बड़ा होता है, अंगुलियाँ छोटी तथा चिकनी होती हैं, अंगूठे का पहला पोर औसत दर्जे से छोटा होता है, आवाज बेजानदार तथा धीमी हुआ करती है।

चन्द्र के गुण वाले जातक की मानसिक चंचल, अविश्वासी विचारों में अपने को भूल जाने वाले, खुदगरज तथा घूमने आदि के प्रेमी हुआ करते हैं, यह शक्की स्वभाव वाले, भावुक, कविता, साहित्य और गायन विद्या प्रेमी होते हैं, चन्द्र के गुण वाले जातक शक्ल और स्वाद में

विशेष प्रेम करते हैं। स्त्रियाँ नेक चलन, काम प्रिय, प्रेमी तथा अपने प्रेम के लिए सब कुछ करने वाली होती हैं। चन्द्र के स्वभाव वाले जातक एक कार्य में नहीं लगते हैं, यह वायदा करके भी पूर्ण नहीं किया करते हैं, ईश्वर प्रेम तथा वेदान्त में अधिक रुचि रखा करते हैं, खूब खाते हैं तथा पानी कम पीते हैं, नशा गहरा पसन्द किया करते हैं, यह व्यापार में विशेष रुचि नहीं रखा करते हैं, चित्रकला प्रेमी होते हैं, रंग गहरा सफेद, पीला पसन्द करते हैं, हवा से बजने वाले बाजे जैसे बांसुरी आदि पसन्द किया करते हैं।

चन्द्र के अशुभ हाथ वाले जातक बेपरवाह, मूर्खतापूर्ण अधिक बात करने वाले, चुगलखोर, नटखट, कम काम प्रिय, नित्य नई खलबली पैदा करने वाले, गुस्ताख बेशर्म, खुदगरज हुआ करते हैं।

अशुभ हाथों में बदबूदार पसीना आता है, शरीर पर सफेद दाग भी होते हैं, पारखी, ईर्ष्यालु, आरोग्य, असन्तोषी, अन्ध-विश्वासी हुआ करते हैं, इनका स्वास्थ कमजोर, खून की कमी के कारण लगातार कार्य करने की शक्ति नहीं रहा करती है। ऐसे जातक बहुत चिन्ताओं से युक्त रहा करते हैं, इसे अपने स्वास्थ की चिन्ता विशेष रहा करती है, ऐसे जातक को लकवा, मुर्छा, मिर्गी आदि का भय रहता है, जल में डूबने का भय, किडनी, ब्लेड प्रेसर, जननेन्द्रिय, गठिया, आंतों की बीमारी रहा करती है, चन्द्र के विशेष प्रभाव वाले जातक को जलोधर, राजयक्ष्मा, उन्माद जल सम्बन्धि रोग आदि की शिकायत रहा करती है।

॥ समाप्त ॥

मंगल के गुण वाले जातक

मंगल के स्वभाव वाले जातक का स्वास्थ्य खून की खराबी के कारण चर्म रोग रहा करते हैं, यह लड़ाई झगड़े में चोट खाया करते हैं। इनका स्वभाव लड़ाकू होता है, यह स्वयं लड़ाई मोल लिया करते हैं, अशुभ हाथ वाले जातक विषयी, क्रोधी, शराबी होते हैं, भयंकर वार करने वाले होते हैं, जिसके कारण जेल अथवा फाँसी की सजा पाते हैं। यह बहुधा नीच पुरुषों की संगत किया करते हैं।

मंगल के स्वभाव वाला जातक तीव्र ज्वर, अन्य अंगों के भीतरी रोग से दुःखी रहते हैं तथा अग्नि सम्बन्धी घटनाओं से भी कष्ट उठाते हैं।

मंगल के गुण वाला जातक रीति रस्म आदि को नहीं मानता है, साहसी, परिश्रमी तथा उद्योगी हुआ करता है।

रंग लाल तथा खुरदरा चमड़े वाला, कन्धा चौरस, अंगूठे का प्रथम पोर गोल और चपटा तथा अंगुलियों के तीसरे पोर भीतर की ओर उठे हुये होते हैं, सिर कुछ ऊँचा मजबूत मोटा होता है, भौंहें खुली हुई, चेहरा गोल, नेत्र काले तथा चमकीले व छोटे होते हैं, होंठ भूरे रंग के तथा लाल छींटों युक्त, मुंह बड़ा और पतला, नीचे का होंठ मोटा होता है, भौंहें सीधी और मोटी होती हैं, दाँत पतले, नाक लम्बी और पतली चोंच की तरह, ठुड्डी ऊपर की ओर उठी हुई, दाढ़ी सख्त, कान छोटे और सिर से दूर, गाल मोटे, गर्दन छोटी, सीना मजबूत और उठा हुआ, कन्धा चौड़ा और जांघ छोटी, चाल सुन्दर, आवाज तेज और कठोर तथा भारी होती है, हाथ सख्त और मोटा, अंगुली छोटी, अंगूठे का पहला पोर दूसरे पोर से बड़ा होता है, यह हर काम को बहुत जल्दीपन से करते हैं।

मंगल के अशुभ हाथ वाले जातक का कद छोटा, मुंह फूला हुआ, शक्ल डरावनी तथा भयंकर, भौंहें चढ़ी हुई, कान लम्बे, हाथ छोटे-छोटे, आवाज घुरघुराहटदार हुआ करती है।

मंगल के जातक वाले की मृत्यु शस्त्र अथवा अग्नि से होती है। इसकी आयु ७० वर्ष की होती है, यह कल्पना प्रिय, एकान्त वासी, उदासीन, भविष्य में ऊंचे स्वप्न देखने वाले होते हैं।

मंगल वाला जातक उदास हृदय, गर्व करने वाला, दाता और

सच्चा मित्र हुआ करता है। यह धन को अपने और पराये के लिए बर्बाद करते हैं, इसको भय नहीं रहता है। अति शक्तिमान, सब्र वाला, और हद दर्जे के थकान अथवा खतरे में डाल देने वाला होता है। यह हर मामले में कामयाब होता है, यह प्रेम के मामले में किसी की बात नहीं सुना करता है, खाने-पीने का विशेष शौकीन होता है, सरकस, लड़ाई, भयानक खेल पसन्द करने वाला, पशु युद्ध का प्रिय, घमण्डी होता है, यह शान-शौकत प्रिय, हमेशा आगे चलने वाला, यदि चित्रकार हो तो युद्ध, शिकार तथा जंगलों के चित्र बनाने वाला, यदि गायनविद्या प्रेमी हो तो आल्हा आदि गाने वाला, फौजी नाच-गान प्रिय, यदि साहित्य प्रेमी हो तो युद्ध की कहानी कहने वाला, यदि नौकर होता है तो सेना में नौकरी करता है और प्रशंसा का पात्र बनता है, यात्रा प्रिय तथा घर से बाहर रहना विशेष पसन्द करता है, यह रंग चमकीला, लाल, नीला पसन्द करता है।

मंगल के अशुभ हाथ वाले जातक डाकू, कातिल, बदमाश होते हैं।

बुध के गुण वाला जातक

बुध की प्रसन्नता वाला जातक व्यापार करने वाला प्रत्येक विषय में प्रवेश करने की शक्ति रखने वाला होता है।

बुध के गुण वाला जातक छोटे और गठीले शरीर वाला प्रसन्न मुख, चेहरा कुछ लम्बा होता है, रंग हल्का श्यामलता लिये होता है अखरोट के रंग के समान अन्त में घुमावदार, माथा उठा हुआ, चमड़ा मुलायम, चेहरे का रंग शीघ्र बदलता रहता है, ठोड़ी छोटी, बाल ज्यादा काले, भौंहें पतली, मुड़ी और आपस में जुड़ी हुई होती हैं। आंखें गहराई में बैठी हुई तेज, चंचल, पीली, सफेद तथा पलकें पतली होती हैं, गर्दन व कन्धा मजबूत, सीना चौड़ा, पट्ठे और बाजू गठीले, आवाज कमजोर तथा हड्डियां छोटी होती हैं। हाथ बड़े और हथेली लचीली होती है और अंगुलियों का दूसरा पोर लम्बा होता है, नाक लम्बी और सीधी, सिर

गोल, होंठ पतले, ऊपर का भाग भरा हुआ, मुँह आमतौर पर आधा खुला हुआ, दांत छोटे और नुकीले, हड्डी कहीं मोड़ युक्त होती है।

बुध के अशुभ हाथ वालों का हाथ अति ढीला, अंगुलियां लम्बी, पीछे को मुड़ी हुई, दांतों में काले रंग का चिन्ह, आंख धंसी हुई तथा बाल भी सुन्दर नहीं होते।

अशुभ हाथ हो तो जातक अविवेकी, चालाक, धोखेबाज, झूंठा, द्रोही, दगाबाज और प्रत्येक बात का जानकार हो जाता है, मां को धोखा देने में अधिक प्रवीण होता है, यह कभी २ अपने बनाये हुये मनसूबों पर इतना विश्वास करता है कि स्वयं भी धोखा खा जाता है और परेशानी तथा मुसीबत उठाता है। चोरी आदि किया करता है।

बुध के गुण वाले जातक का स्वभाव

बुध मस्तष्क, कलेजा हृदय तथा बुद्धि पर शासन करता है, इससे जातक की उन्माद' वाणी रुकने वाला, कलेजा तथा गुर्दे सम्बन्धी रोग हुआ करते हैं, इसका जिगर और हाज्मा कमजोर होता है, स्वभाव घड़बड़ाहट वाला, हाथ और बाजू में चोट, पीड़ा तथा अक्सर टांग तथा पैरों में तकलीफ रहती है।

बुध गुण वाले जातक की मानसिक शक्ति

कार्य और विचारों में जल्दबाजी करते हैं, खेल कूद में होशियार होते हैं, व्याख्यान देने में चतुर, इन्हें आदमी की पहचान करना आता है, नये २ विचारों को जन्म देते हैं, अपने साथियों पर प्रभाव रखते हैं, जीवन चरित्र को भली प्रकार जानने वाले, वैद्य, गणितज्ञ, गुप्त विद्याओं के ज्ञाता, साहित्य प्रेमी, व्यापार आदि के द्वारा धन पैदा करते हैं। जातक डाक्टर, लेखक, व्यापारी, वकील तथा क्लर्क हुआ करते हैं, अपनी बात तर्क पूर्ण ढंग से रखते हैं, प्रेमी, प्रसन्नचित्त, हंसने वाला, नकल करने की शक्ति रखने वाला अभिलाषी, प्राकृतिक का उपासक, परिश्रमी, बात करने में चतुर, आशावान, समझदार होते हैं। सर्वदा चौकन्ने रहते हैं और अन्तंज्ञान की शक्ति रखते हैं। आयु ८० वर्ष होती है।

गुरु के गुण वाले जातक

गुरु के प्रधान गुण वाले जातक का कद सामान्य बनावट सुन्दर व मजबूत आंखें बड़ी व पुतली गोल और साफ, पलक मोटे, बरोनी मोटी होती हैं, बाल लम्बे और मोटे तथा मुड़े हुये होते हैं, भौंहें कमानीदार मुंह और नाक बड़ी और मोटी, गाल मांस से भरे हुए, शरीर में बाल अधिक, हाथ में पसीना अधिक आता है, ठुड्डी लम्बी होती है, अंगुलियां समकोण, आवाज साफ और मधुर होती है, चाल हंस के समान होती है।

गुरु प्रधान मानसिक शक्ति

जनता में कार्य करने वाले, उच्च-पदाधिकारी विशेष आत्माभिमानी अतिथि सत्कार करने वाले, स्वयं अच्छा भोजन करने वाले, नीच तथा अधर्म कार्य करने वाले, धार्मिक तथा शान्त स्वभाव बाहरी सज-धज तथा रीति-रश्म को मानने वाले, उच्च जीवन, राजसी ठाठ और पुराने विचारों की मान्यता करने वाले, कानून तथा हुक्म की पाबन्दी करने वाले, अपने प्रेमी के पीछे सब कुछ न्यौछावर करने वाले, मित्रता को निबाहने वाले सहज ही में प्रसन्न हो जाते हैं।

गुरु के अशुभ हाथ वाला जातक घमण्डी, स्वार्थी, किफायत तथा व्यर्थ के वाद-विवाद किया करता है।

गुरु प्रधान स्वास्थ्य

गुरु प्रधान जातक को गठिया अक्सर हुआ करती है, यह अपनी इंद्रिय को वश में रखते हैं, यह बुरी वासना के वश में नहीं होते हैं।

गुरु का शासन सिर, फेफड़ा व गले पर होता है, यह फेफड़े व गले के रोगी रहा करते हैं, ऐसे जातक की आयु ९० वर्ष की होती है।

शुक्र के गुण वाले जातक

शुक्र प्रधान की आंखें सुन्दर और स्वच्छ, चित्तवन मीठी, भूरे रग की उठी हुई होती हैं। पुतली चौड़ी, पलकें रेशम की तरह मुलायम और नीली नसें दिखाई पड़ती हैं।

जातक स्वरूपवान, इन्द्रिय सुख को पसन्द करने वाला प्रेमी तथा आकर्षण रखने वाला होता है, रूप सुन्दर, रंग गुलाबीपन लिये हुये मुलायम और नाजुक, कद औसत दर्जे का ऊँचा, भौंहें सुन्दर और चिकनी तथा तंग होती हैं, बाल लम्बे, काले और घने होते हैं। मुलायम लहर-दार हों बाल भूरे भी हो सकते हैं, जातक के बाल आयु के साथ नहीं बदलते हैं। नाक सुन्दर सुडौल, लम्बी नोंक वाली, सिर पर गोल होती है।

मुँह छोटा और सुडौल, होंठ लाल और कुछ मोटे हुआ करते हैं, नीचे का होंठ और दांत चिकने सुन्दरता से सजे हुये होते हैं। ठुड्डी लम्बी तथा गोल, कान छोटे और नाजुक, गर्दन साफ सुन्दर और शान-दार, कन्धे तंग और सुन्दरता के साथ उतार चढ़ाव युक्त, सीना कम चौड़ा परन्तु स्वस्थ्य तथा भरा हुआ होता है। कमर पतली होती है। हाथ की अंगुलियां मुलायम, छोटी तथा चिकनी होती हैं, पोर मोटे तथा अंगुष्ठा छोटा तथा कुछ भारी होता है।

हाथ अस्वस्थ्य और सफेद रंग का होता है, गढ़ी आंखें गाल ललाई लिए, भारी चपटी नाक, होंठ मोटे नीचे वाला होंठ विशेष बड़ा, पेट बड़ा, चलने में कठिनाई अनुभव करने वाला, आवाज भारी, अंगुलियाँ मोटी बदशक्ल, चिकनी तथा छोटी अशुभ गुरु के हाथ वाले जातक की होती हैं।

गुरु के गुण वाल जातक की आवाज मधुर आकर्षण युक्त हुआ करती है।

शुक्र के गुण वाले जातक का स्वास्थ्य

शुक्र प्रधान जातक मजबूत, प्रसन्नचित, प्रेम से उत्पन्न होने वाली बीमारियों का शिकार और गुप्त इन्द्रियों में कष्ट भोगा करता है।

शुक्र का अधिकार जननेन्द्रिय तथा वीर्य पर होता है।

इसे प्रमेह, आतशक की बीमारी होती है। स्त्रियों को हिस्टीरिया आदि रोग होते हैं।

शुक्र के गुण वाले जातक की मानसिक शक्ति

जातक प्रसन्न-चित, सभी को प्रसन्न रखने वाला, सबका प्रिय पाचक शक्ति ठीक, गाना बजाना तथा प्राकृतिक सुन्दरता का प्रेमी, कामी, स्त्रियाँ उसके जीवन में विशेष महत्व रखती हैं। सच्चाई पसंद हमेशा प्रायः धोखा खाता है। जल्दी क्षमा कर देता है, यह लड़ाई दंगा पसंद नहीं करता है, अपने प्रेमी के लिए सब कुछ करने को तैयार रहता है यदि इस प्रकार का जातक लेखक अथवा चित्रकार होता है तो सबको वश में कर लेता है। यात्रा-प्रिय, रेशमी वस्त्र, आभूषण, रत्नों का संग्रह करता है। गुलाबी नीला रंग पसंद करता है।

शुक्र के अशुभ हाथ वाला जातक शंका करने वाला, व्यभिचारी कामुकता के कारण कारावास गामी भी हो जाता है।

शुक्र प्रधान जातक की आयु ७५ वर्ष की होती है।

शनि के गुण वाले जातक

शनि के गुण वाला जातक लम्बे पतले और पीले रंग वाला, लम्बे चेहरे वाला होता है, हड्डियाँ मोटी गालों में गड्ढे, भौंहें काली मोटी तथा जुड़ी हुई, नेत्र छोटे धंसे हुये होते हैं, कान बड़े, नाक पतली और नुकीले नथुने कुछ खुले हुये होते हैं, मुँह बड़ा, होंठ पतले, दाँत सुन्दर और जल्दी खराब होते हैं, ठुड्डी लम्बी और दाढ़ी काली तथा कड़ी होती हैं। अंगूठे का पोर अधिक बड़ा और चपटा होता है। आवाज भद्दी तथा धीमी होती है।

शनि के अशुभ हाथ वाले जातकों के बाल कम, ज्यादा पतले होते हैं, वे अपने पहनाव तथा शक्ल की ओर से लापरवाह होते हैं।

शनि के गुण वाले जातक का स्वास्थ्य

शनि के प्रभाव वाले जातक लफंगे होते हैं, इनकी टांगों तथा पैरों

में चोट लगा करती है, यह मेलन कोलिया, दिवानापन आदि से ग्रसित रहते हैं, यह गंदगी प्रिय तथा पानी से घृणा करते हैं।

शनि का अधिकार कान, पिंडली तथा दांतों पर होता है, यह पित्त, बात, आदि सम्बंधी रोगों से ग्रस्त रहते हैं, इनके दाँतों में पीड़ा तथा दाँत जल्दी गिरते हैं, यह आत्मघात भी कर लिया करते हैं, ऊपर से गिरने के कारण अथवा किसी वस्तु के गिरने के कारण चोट लगा करती है।

शनि के गुण वाले जातक की मानसिक शक्ति

यह चिंताओं से ग्रसित, गम्भीर, धर्म में आस्था रखने वाले, संगती प्रिय, गणित प्रेम, तथा बुद्धिमान होते हैं। इनका अपने कार्य करने का तरीका सबसे प्रथक होता है, धार्मिक विषय पर अपने सिधान्त के अनुसार वाद-विवाद भी करते हैं, यह मंत्र आदि गुप्त विद्याओं से प्रेम किया करते हैं। यह आज्ञाकारी नहीं होते हैं और दूसरों को भड़काया करते हैं। यह कठोर स्वभाव वाले तथा दूसरों के साथ संगत पसंद नहीं करते हैं, यह कंजूस होते हैं, आलसी, एकान्तप्रिय तथा दूसरे मनुष्य से घृणा करते हैं। यह कठोर तथा बच्चों को भी कष्ट दिया करते हैं, इस प्रकार के मनुष्य सामाजिक झगड़ों के कारण जेल यात्रा करते हैं।

जातक पर शनि का विशेष प्रभाव हो और शनि की अंगुली कमजोर हो तो यह स्वार्थी, ईर्षालु, चिड़चड़े स्वभाव वाला, भयानक दुश्मन, मूर्ख और धूर्त हुआ करते हैं।

शनि के प्रभाव वाले जातक की आयु ७० वर्ष की होती है। ऐसे जातक की आवाज कठोर तथा कर्णप्रिय नहीं होती है।

—:०:—

पंचम परिच्छेद

सूर्य का क्षेत्र (MOUNT OF SUN)

संसार के अन्धकार का निर्माण करके प्रकाश देने वाले देव सूर्य हैं। यह सभी वस्तुओं में प्राण का संचार करने वाले हैं। सूर्य के प्रकाश में एक विशेषता रहती है कि इनका ताप धीरे-धीरे बढ़ता है। इसी प्रकार हाथ की अनामिका अंगुली सरल सीधी रहती है, इसमें विशेष प्रकार की हलचल नहीं होती है, यह निश्चित भाव से अपना काम करती है। इस कारण सूर्य देव का स्थान अनामिका के नीचे हैं। इस स्थान को

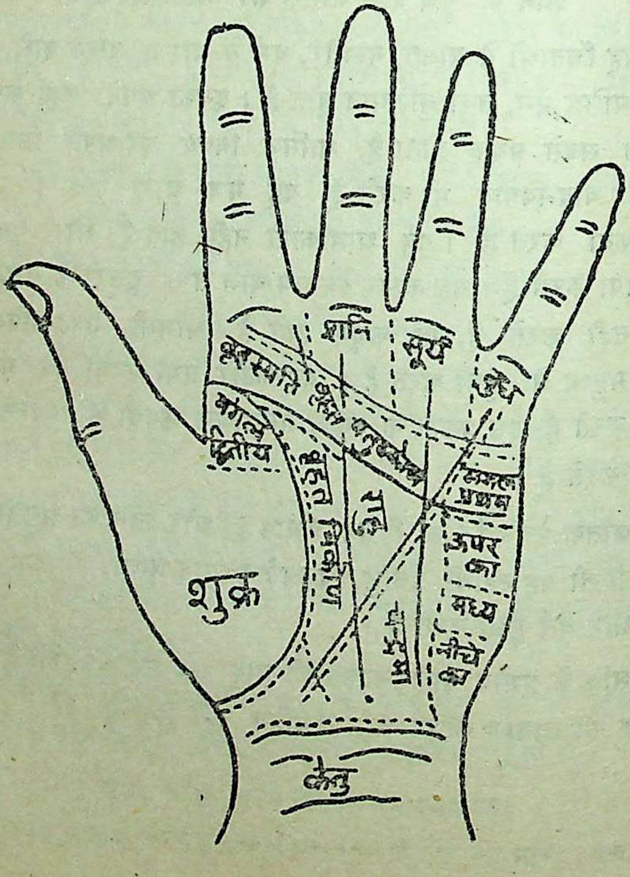

सूर्य का पर्वत (क्षेत्र) कहते हैं। यह स्थान रेखा भी व्यक्ति को यश समृद्धि, सफलता प्रदान करती है।

सूर्य के स्थान सुन्दर हों तो जातक संसार में सूर्य के समान चमकता है।

सूर्य के पर्वत का सुन्दर होने का प्रभाव बाल्यकाल से ही प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार धीरे-धीरे ही छोटी अवस्था में अपने साथियों में नेता गिरी करने लग जाता है। यह बालकों के खेल, कार्य में रास्ता दिखाना प्रारम्भ कर देता है।

सूर्य के क्षेत्र वाला जातक साधारण कद का सुनहरी रंग तथा चमकीला होता है। सिर उठा हुआ चौड़ा, आंख चमकीली, आँखों की पुतलियां भूरी (सुनहरी) बरोनी लम्बी हुआ करती हैं। गोल, गाल, कान लम्बे, रोमयुक्त, लम्बी नाक, लम्बी गर्दन, वाणी स्वच्छ प्रिय मधुर होती है।

सूर्य का क्षेत्र अधिक उठा हो तो जातक खुशामदी चालबाज, निष्ठुर, दुष्ट बुद्धि, गर्वीला लोभी आरामप्रिय होता है। अपने परिवार की सम्पत्ति को नष्ट करता है। बन्धुओं से द्वेष मानने वाला कम सन्तान वाला, पर स्त्री गामी, नेत्र रोगी, द्रवि युवान, पीलिया यकृत, हृदय, अस्थि, मस्तष्क तथा मूत्राशय सम्बन्धी रोगों से दुःखी रहता है, ३५ व ४४ वर्ष का समय कष्ट पूर्ण व्यतीत होता है, आयु कुल ६० वर्ष तक हुआ करती है।

सूर्य का क्षेत्र नीचे दबा हो तो ऐसा जातक आपसी, बुरे विचार वाला, दुष्टचरित्र, अमोद-प्रमोद प्रिय, विलासी होता है। जातक व्यर्थ की मानसिक कलह तथा हर समय मानसिक चिन्ताओं के कारण घिरे हुए रहते हैं। यह अपने परिवार के लोगों से घृणा किया करते हैं। यह घमण्डी, कपटी बहुस्त्री भोगी और कलहप्रिय हुआ करते हैं, क्षेत्र विशेष नीचा होने से बान्धवों से भय होता है। इनका बाल्यकाल अधिक कष्टमय व्यतीत होता है। इनके सन्तान कम हुआ करती है। प्रायः

जातक की पत्नी के गर्भ क्षय हो जाते हैं। इस प्रकार के जातक की सूर्य रेखा बलवान हो तो यह अवगुण नष्ट हो जाते हैं।

सूर्य के उभार वाले जातक के माता-पिता जातक के जन्म के समय असन्त दीन तथा दुरिद्रवस्था पाये जाते हैं। परन्तु जैसे ही जातक बढ़ने लगता है, उनकी दरिद्रता घटने लगती है और वे प्रतिदिन अपने घर में यश, कीर्ति, धन धान्य सुख पाने लन जाते हैं। धार्मिक स्थानों में उनका नाम प्रारम्भ हो जाता है। वे सुखी जीवन व्यतीत करते हैं दुःख उनके पास तक नहीं रहता है। जातक जब दस वर्ष की आयु का हो जाता है तो उसके मां-बाप के पास बहुत धन हो जाता है। जिससे जातक की शिक्षा बहुत ही सुखपूर्वक हो जाती है। माता-पिता जातक से विशेष प्रेम करते हैं।

सूर्य के क्षेत्र वाला जातक, धार्मिक, साहसी तथा धार्मिक कामों में रुचि लेता है। सूर्य के क्षेत्र वाला जातक कम परिश्रम से बड़े-बड़े कार्यों को हल कर लेता है। यह स्वयं के आदर्श तथा आदर्शवादी होते हैं। यह अच्छी सुन्दर वस्तुओं की इच्छा रखते हैं। यह प्राकृतिक सौन्दर्य से अधिक प्रेम किया करते हैं। यह किसी से शीघ्र मित्रता तथा शत्रुता कर लिया करते हैं, यह स्पष्टवादी तथा धर्म में अधिक विश्वास किया करते हैं, यह गाने, बजाने, नृत्य, हरिकथा, हरिस्मरण आदि से प्रेम किया करते हैं, यह शत्रु और मित्र से बदला लेने की इच्छा रखते हैं। यह स्वयं प्रसन्नचित तथा दूसरों को प्रसन्न रखा करते हैं। इनकी विचार शक्ति बहुत ही तेज होती है। जिसके कारण प्रत्येक वस्तु को बहुत ही आसानी से हल कर लेते हैं। यह गर्व करना नहीं चाहते हैं। इनके मित्रों की संख्या बहुत ही कम होती है। यह यात्रा, व्यायाम स्वच्छ वायु आदि के विशेष प्रेमी होते हैं। यह प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं।

सूर्य के क्षत्र से विद्या कला, धर्म, चित्रकला, पद लाभ, साहित्य निर्माण, कविता, शिल्पकला, नेत्र विकार तथा हड्डियों के रोगों के

सम्बन्ध का विचार करना चाहिए। जिस जातक के हाथ में सूर्य का क्षेत्र उठा हो, वह जीवन सुख पूर्वक व्यतीत करता है। यह स्पष्टवादी सत्य भाषी, निष्कपट और मनसावधा कर्म से परिपूर्ण होता है। सुन्दर स्वभाव वाला तथा उदय होता है। जातक साहसी, बुद्धिमान, विद्वान विनोद प्रिय, बहादुर, धैर्ययुक्त तथा कष्ट और चिन्ताओं की परवाह नहीं करता है, यह अपनी इच्छानुसार दूसरों को चलाता है। यह परिश्रमी और साहसी होते हैं। प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर लेते हैं परन्तु इन्हें अपने परिश्रम का फल ठीक प्रकार से प्राप्त नहीं होता है, ये लेखक, समाज सेवक, नेता आदि होते हैं। यह यश तथा सौन्दर्य प्रिय तथा कम सन्तान वाले होते हैं।

सूर्य के क्षेत्र वाले जातक पर रोगों का आक्रमण होता ही रहता है, ऐसा जातक आमतौर से नेत्र पीड़ा से अधिक दुखी रहता है। जातक को नेत्र पीड़ा निवारण तथा बचने से सूर्य की उपासना करनी चाहिए, ऐसे जातक के मंगल, शनि और चन्द्र के क्षेत्र ठीक हों तो ५५ वर्ष की आयु में नेत्र ज्योति क्षीण हो जाती है। समस्त अन्धा हो जाता है।

सूर्य के क्षेत्र वाले जातक के जीवन का उत्थान १० वर्ष की अवस्था से प्रारम्भ हो जाता है। वह अपने साथियों पर प्रभाव जमाने लग जाता है और उसका यश फैलने लग जाता है।

सूर्य के क्षेत्र वाले जातक जौलाई में पैदा होते हैं। उनमें कलात्मक प्रवृत्ति पैदा हो जाती है। यशस्वी बनने में इनकी भावनाऐं अधिक तीव्र हुआ करती हैं। इनके दिल में किसी भी व्यक्ति से बुरा व्यवहार शुरू करने की प्रवृत्ति कभी भी जागृति नहीं होती है।

जातक जब कभी सुन्दर वस्तुओं को देखते हैं तो उनका मन ललचा उठता है, वे अपने भाग्य की रेखाओं को सराहने लगते हैं यदि वह वस्तु हाथ में आ जावे तो अपना बड़ा भाग्य मानते हैं। यदि प्राप्त न हो तो कुछ क्षण तक दुःख प्रकट करने के बाद शान्त हो जाते हैं और

अपने आत्म गौरव के कारण उससे घृणा करने लग जाते हैं। उस समय यही बात उनके ध्यान में आती है कि इस वस्तु के बिना भी हमारा कार्य चल सकता है।

सूर्य के क्षेत्र वाला जातक अपने चरित्र को कम दूषित करता है, वह पर स्त्री तथा कुमारियों के यौवन को नष्ट करने से घबड़ाता है। यदि इस प्रकार के जातक का शनि और मंगल का क्षेत्र उच्च हो तो ऐसा व्यक्ति अत्यन्त व्यभिचारी, गुण्डा तथा प्रथम दर्जे का बदनाम होता है। इस प्रकार का जातक निश्चित रूप से दूसरों की कन्याओं को उड़ाने वाला होता है। वह कुमारी कन्याओं को अपने फन्दे में सुन्दरता के कारण फंसाकर बहुत बुरी तरह खराब करता है। ऐसा जातक विषय में प्रेमी होता है, रात दिन काम विचार तथा सम्भोग आदि में लीन रहता है।

इस प्रकार के जातक विवाहित जीवन भी सुखपूर्वक व्यतीत करते हैं। यदि इस प्रकार का योग स्त्री जातक के हाथ में है तो उसका पूर्व का जीवन दुखमय व्यतीत होता है। यदि दोनों पति पत्नी के योग मिल जाते हैं तो दोनों ही बहुत प्रसन्न रहते हैं। एक दूसरे से विशेष प्रेम करते हैं। खाली समय में एक दूसरे से मिलकर या प्यार करके समय बिता दिया करते हैं और अपने जीवन को सफल बनाते हैं।

ऐसे जातक दूसरे अन्य पुरुषों से कम वार्ता करते हैं और अच्छे बुरे कार्यों में किसी साथी को नहीं रोकते हैं। इस प्रकार के जातक से सलाह ली जाती है तो ईमानदारी से अपना मत प्रकट कर देते हैं। दूसरों की समस्याओं को हल करने में यथा योग सहायता करते हैं।

झूट बोलने वाले जातक से यह प्रेम नहीं करते हैं, बेईमानों से सदा दूर रहते हैं। जब इन्हें बेईमानी का पता लग जाता है तो अपना हिसाब कर लेते हैं। जो व्यक्ति इनकी बात नहीं मानता है अपना स्वार्थ रखता है यह उनकी बात नहीं सुनता है, हठधर्मी करता है तो उससे आजीवन के लिए अपना नाता तोड़ लेते हैं।

सूर्य के क्षेत्र वाले जातक यश खूब कमाते हैं परन्तु जब वृद्धावस्था में पहुँचते हैं तब इनकी स्थिति बिगड़ने लगती है जिस प्रकार सूर्य खूब चमकता है और सायं होने पर अस्त हो जाता है और अंधकार अपना अधिकार कर लेता है, उसी प्रकार जातक की भी यही दशा होती है, यौवन काल में खूब कमाता है परन्तु जब वृद्ध हो जाता है तो जीवन-भर की कमाई हराम हो जाती है और यश सूर्यास्त की तरह समाप्त हो जाता है।

फरवरी मास में जन्म लेने वाले जातक का ढंग दूसरा ही होता है। इनका सूर्य का क्षेत्र चपटा और गोल हुआ करता हैं। यह क्षेत्र ऊपर को उठा हुआ नहीं होता है। इसका कारण जातक में आत्म-विश्वास की प्राय: कमी हो जाती है, दुःखों और कष्टों में फंस जाने पर प्राय: घबड़ा जाता है, कभी-कभी तो यह घबड़ाहट इतनी बढ़ जाती है कि हृदय की गति बंद हो जाती है।

ऐसे जातक प्राय: अपने साथियों के हित सार्थक हुआ करते हैं। इस प्रकार के जातक शीघ्र ही जगप्रिय हो जाते हैं और नेतृत्व आसानी से मिल जाता है। सरकारी विभागों में अपना कार्य बड़ी चतुरता से करते हैं। आवश्यकता के समय सहयोगी को अपने साथ मिला लेते हैं।

ऐसा जातक जब भी परेशानियों में फंस जाता है तो उसके मित्र हितैषी चारों ओर से उसकी सहायता करते हैं। यह जीवनभर धन कमाते हैं, परन्तु इसमें सन्तोष बहुत कम पाया जाता है। वृद्धावस्था में काम करने की चाह बनी रहती है। जीवन में धन-धान्य की कमी न रहने पर भी अपने स्वभाववश अपने हृदय में कमी अनुभव करते रहते हैं।

सभा और समाज में अपना यश प्रदर्शित करने के लिए अनेक उपाय काम में लाते हैं। इस प्रकार का जातक बहुधा गुटबन्दी करके स्वार्थ साधन करते देखे गए हैं। इस प्रकार का जातक अपने निश्चय

पर अटल रहता है और अन्त में सफलता प्राप्त करके ही चैन लेता है।

इस प्रकार के जातक आत्मविश्वासी होते हुए भी दूसरों की सहायता के लिए ताकते रहते हैं, अपने कार्य की सफलता में अनेक षडयंत्र बनाया करते हैं और षडयंत्रों में सफलता पाना भी इनके बाएं हाथ का काम है।

चन्द्र का क्षेत्र (The Mount of Moon)

केतु के स्थान के ऊपर हथेली के नीचे, भाग्य रेखा के सहारे हाथ में बाहर की ओर, मंगल के क्षेत्र के नीचे राहु, केतु और मंगल के क्षेत्र से घिरा हुआ चन्द्र का क्षेत्र होता है।

चन्द्र का क्षेत्र हस्त ज्योतिष में विशेष महत्व रखता है। इसका प्रभाव जातक के स्वभाव पर आंशिक होता है। यह क्षेत्र अधिक ऊंचा हो तो जातक उतना ही शान्ति स्वभाव वाला होगा।

चन्द्र के क्षेत्र का विशेष प्रभाव यही होता है कि जातक जल के समान बहाव पसंद करता है। उसमें क्षण-क्षण नवीनता आती रहती है ऐसा जातक जीवन में सदा नवीनता को पसन्द करता है। जीवन में जल के समान सुन्दर नारियों की सुन्दरतापान करना ऐसा जातक विशेष पसंद करता है।

चन्द्र के क्षेत्र वाला जातक लम्बे कद का, गोल एवं चौड़े सिर का ऊंची कनपटी, श्वेत रंग, छोटी नाक, पतली मांस पेशियां होती हैं। आवाज भारी, पेट निकलता हुआ, पैर बड़े होते हैं। जातक धोखेबाज, द्वेष करने वाला, अयोग्य अन्धविश्वासी, पाखण्डी हुआ करते हैं। ऐसे जातक का स्वास्थ्य प्राय: ठीक नहीं रहता है, प्राय: खून की कमी के कारण अपने कार्य ठीक प्रकार से नहीं कर पाते हैं।

यात्रा करना, नवीन स्थानों को देखना, दूर देशों के विषय में ज्ञान करना आदि जातक के स्वाभाविक गुण हो जाया करते हैं।

चन्द्र के उच्च क्षेत्र वाले जातक का जन्म यदि श्रावण मास में हो तो ये उच्च विचारों के होते हैं। विशेष दिखावे की बात चीत करना इनका स्वाभाविक गुण होता है। आदर्शवाद का दिखावा करने का इरादा सदा रखते हैं। इनके मन में नवीन इच्छायें जन्म लिया करती हैं।

कई बार चन्द्र के क्षेत्र वाला जातक दूसरों की पत्नी से प्यार करते पाये गये हैं और इन्हें प्रेम में सफलता भी प्राप्त हो जाती है। चन्द्र के क्षेत्र से मन सम्बंधी विचार, प्रकृति की उपासना, साहित्य तथा कविता आदि से प्रेम, स्वभाव की चपलता, घूमने का शौकीन, स्वार्थी, जलादर, राजयक्ष्मा, उन्माद आदि रोग यदि शुक्र का क्षेत्र उच्च है तो अत्यन्त विषय वासनाओं से प्रेम करने वाला, भावुक यदि मस्तष्क रेखा खराब है तो इस प्रकार का जातक और भी दुखित परिणाम भोगा करता है।

जिस जातक के हाथ में चंद्र का पर्वत उठा हो वह दयालु अच्छे स्वभाव वाला, प्रिय भाषी कल्पना करने वाला कवि, लेखक, प्राकृतिक दृश्यों को देखने वाला, यात्रा करने वाला होता है। इसको माता पिता का सुख पूर्ण होता है। इसका विवाह कम उम्र में ही हो जाता है। इसका जन्म अषाढ़ और श्रावण मास के मध्य होता है।

चंद्र का क्षेत्र विशेष उठा हो तो जातक आलसी एवं उसकी कल्पना शक्ति बहुत प्रबल होती है। कभी यह प्रेम में असफल हो जाने पर आत्म-हत्या का प्रयास किया करता है। यह उदासीन, झूठ बोलने वाला होता है यदि चंद्र के क्षेत्र का झुकाव केतु के क्षेत्र की ओर हो तो दिल को स्वयं देखने वाला होता है, हवा महल बनाना, मन में बड़े २ विचार बनाता है। सुरा से प्रेम करता है; वीर्य विकार, उदर सम्बंधी रोग से ग्रसित रहता है, इस प्रकार के जातक को लकवा, राजयक्ष्मा की बीमारी हुआ करती है।

यदि इस प्रकार का क्षेत्र स्त्री जातक के हाथ में हो तो वह खूब भोजन करने वाली तथा जल कम पीती हैं। यह सदाचारिणी तथा भगवत भक्त हुआ करती है, यह नशा आदि भी करती है। यह गाने बजाने एवं वायु से बजने वाले यंत्रों को विशेष प्रेम करती है। जैसे बांसुरी, कालकेट, हारमोनियम।

जिस जातक का चन्द्र का क्षेत्र बना हो अथवा कम उठा हो तो वह चालाक, चंचल स्वभाव वाला यह जातक प्राकृतिक दृश्यों से कम प्रेम करता है और न किसी का विश्वास ही करता है। ऐसे जातक की कल्पना शक्ति कम होती है, वह असंतोष तथा कष्टमय जीवन व्यतीत किया करते हैं।

चन्द्र के क्षेत्र वाला जातक जब किसी कार्य में असफल हो जाता है तो उसके हृदय पर बहुत ही आघात लगता है, परंतु इसका असर अधिक समय तक नहीं रहता है। ज्यों ही इनका मार्ग बदल जाता है तो पूर्व ही जैसी हालत ग्रहण कर लेता हैं ऐसा जातक विषय वासना प्रिय होते हैं।

चन्द्र के क्षेत्र वाला जातक २४ वर्ष की आयु में प्रवेश करता है। तब वह इस अवस्था में आ जाता है। तो उसे जादू-टोना, भूत-प्रेत की विद्या में विशेष प्रेम हो जाता है। यह स्वप्न तथा काल्पनिक लोक में विचरण करना अपना पेशा सा बना लेता है।

यह जातक चन्द्र से विशेष प्रेम करते हैं, जब चन्द्रमा आकाश में दिखाई देता है तो उसे बड़े प्रेम से देखते हैं नक्षत्रों का ज्ञान करना उनसे प्रेम किया करते हैं।

चंद्र के क्षेत्र वाले जातक में दो विशेष बात होती हैं, प्रथम वह अपने जीवन में बड़ों की स्त्रियों के प्रति आकर्षण रखता है और उनसे व्यभिचार करने में कभी भी नहीं कतराता है। दूसरी विशेषता यह होती है कि इसमें कभी भी जीवन को स्वतंत्रता से बिताने की सामर्थ्य पैदा नहीं होती है, सर्वदा दूसरों का सहारा लेकर चलना ऐसे व्यक्ति का काम हो जाता है।

जातक स्वतंत्र विचारों का नहीं होता है। सदा दूसरों के पीछे चलकर अपना कार्य चलाता है। यह दूसरों का पथ-प्रदर्शक बनना कभी भी स्वीकार नहीं करते हैं। यह देश धर्म और जाति आदि में भी अपना स्वतंत्र मत नहीं रखते हैं। दूसरों के बताये मार्ग पर चलकर ही अपनी भलाई मानते हैं।

जनवरी मास में पैदा होने वाले जातक का उभार चपटा होता है। जातक के मस्तिष्क में विशेष सनसनीपूर्ण षडयंत्र रचने की भावना और चाह भरी रहती है। प्रत्येक कार्य को आरम्भ करने से पूर्व अच्छी प्रकार से विचार करते हैं। सरकारी विभागों में व्यवस्था सम्बंधी कामों को अपने हाथ में रखते हैं, उत्तरदायित्व पूर्ण कार्यों को करने में अपना गौरव अनुभव करते हैं।

मंगल का क्षेत्र (The Mount of Mars)

चन्द्र के क्षेत्र के ऊपर बुध के नीचे हृदय रेखा के पास मंगल का क्षेत्र है। यह चन्द्र और बुध के पर्वत से घिरा हुआ होता है। मंगल का क्षेत्र दो स्थान पर होता है। मंगल का दूसरा क्षेत्र इसके ठीक सामने जीवन रेखा के उदगम स्थान पर होता है। यह स्थान जीवन रेखा तथा मस्तष्क रेखा के मध्य शुक्र के क्षेत्र के ऊपर गुरु के पर्वत के नीचे द्वितीय मंगल का क्षेत्र है।

मंगल भूमि प्रिय देव है। इसका दूसरा नाम भूमि सुत भी कहा जाता है। इसका क्षेत्र दो स्थानों पर निवास विशेष आशय को लेकर रखा गया है। यदि मंगल का क्षेत्र मुलायम हो तो जातक सूरमा होगा। व्यक्ति सदा दूसरों पर अपना प्रभाव तथा अपना न्याय डालने का इच्छुक रहेगा।

मंगल के क्षेत्र से एक विशेष बात निश्चित होती है, वह है युद्ध संचालन, युद्ध में, संघर्ष में इन्हीं स्थानों पर जोर पड़ता है। प्रत्येक

धन भूमि के लिए संघर्ष करता है। मंगल का क्षेत्र उठा हो, झुरियां न पड़ी हों तो ऐसा जातक युद्ध में नहीं हारता है।

मंगल के क्षेत्र में भाई, बन्धु, भूमि, पुत्र, धन, परिवार, रक्त-विकार आदि रोग का विचार करना चाहिये।

मंगल के क्षेत्र वाला मनुष्य क्रोधी, पित्त प्रकृति वाला आचार को न मानने वाला एक रक्त वर्ण, तमोगुणी, कामप्रिय तथा झगड़ालू स्वभाव सेना आदि में काम करने वाला, वीर, ऊँचा एवं मजबूत सिर, छोटे २ केस, गोल मुख, बड़ी २ और भूरी चमकीली आंखें जो रक्त वर्ण को लिए हुये रहती हैं। दांत छोटे, नाक तोते की चोंच के समान जांघ छोटी तथा तेज चलने वाला, आवाज कठोर तथा भारी होती है। जातक धन को व्यर्थ बरबाद किया करता है। यह अपने आगे किसी को नहीं गिनता है, जातक अभिमानी किसी बात को न सुनने वाला, मुकद्दमेबाज, शान-शौकत से रहने वाला होता है। यदि भाग्यवश ज्ञानविद्या प्रेमी होता है तो उत्तेजनापूर्ण गाने फौजी गायन तथा बाजे आदि का प्रेमी होता है।

मंगल का क्षेत्र अधिक उठा हो तो स्थायी सम्पत्ति वाला, जमीन जायदाद वाला, पूर्वजों के धन की वृद्धि करने वाला, बहु विवाह करने वाला, दुष्ट, निर्दयी, राजद्रोही, डाकू, हत्या करने वाला होता है।

मंगल के प्रथम और द्वितीय क्षेत्र उठे हों तो जातक रक्त विकार का रोगी, डरपोक, छिछोर बुद्धि वाला, लिखते समय अक्षरों में कोण निकालकर लिखा करता है, मंगल का क्षेत्र जीवन के प्रारम्भिक काल में लाभदायक होता है।

यदि बुध और चन्द्र का क्षेत्र भी उठा हो तो जातक साहसी अच्छी सलाह देने वाला अनुसाशनप्रिय होता है।

यदि गुरु का क्षेत्र और शुक्र का क्षेत्र उठा हो तो जातक साहस-

पूर्ण कार्य करने वाला, झगड़ा आदि करने वाला, व्यर्थ के कार्यों में समय नष्ट किया करता है ।

मंगल का क्षेत्र नीचे दबा हुआ हो तो जातक साहसी एवं शान्ति विचार वाला होता है । अत्याचारी नास्तिक, कलह प्रिय, पैतृक धन को नष्ट करने वाला, डरपोक, व्यर्थ में झगड़ा करने वाला इसका प्रधान गुण होता है । यह घुड़सवारी करना, इमारत बनाना आदि कार्य किया करता है । यदि इस क्षेत्र के साथ २ द्वितीय मंगल का क्षेत्र भी गुरु के नीचे उठा हो तो अशुभ फल नहीं दिया करता है तो जातक साहसी आत्मविश्वासी, धैर्यपूर्ण कार्य करने वाला होता है ।

मंगल का क्षेत्र उठा हो तो जातक उदार स्वभाव वाला, बुद्धिमान प्रतापी, पराक्रमी, असंयमी, हठी, युद्ध प्रिय, व्यवसाय प्रिय, बलवान, विचार रहित, छोटी-छोटी बातों पर विचार करने वाला, कलह के कारण दुःखी हुआ करता है, शिकार आदि से प्रेम किया करता है ।

जातक मित्रता-निभाने में भी जीवन की बाजी लगा देता है। दूसरों को प्रसन्न रखने के लिए कलापूर्ण ढंग से कार्य किया करता है। मंगल के अच्छे उभार वाला जातक कभी भी अपमान सहन नहीं किया करता है अपितु हर समय लड़ने को तैयार रहा करता है। जब मौका देखता है तो शत्रुओं को चित्त गिराने की चेष्टा करता है । दिल साफ रहता हुआ भी नीति से काम लेना अपना धर्म समझता है ।

मंगल के कम उन्नत क्षेत्र वाले जातक की इच्छायें बहुत हुआ करती हैं परन्तु उसकी पूर्ति बहुत कम देखी जाती है। ऐसा जातक अपने साथियों और शत्रुओं से कम झगड़ा करता है ।

मंगल का क्षेत्र चपटा हो तो जातक अपनी पत्नी के साथ ही दूसरी स्त्री से प्रेम करता है । उसे हर समय अपने पास रखता है, स्त्रियों से विशेष प्रेम करता है । अपनी स्त्री अत्यन्त सुन्दर होने पर भी उससे विशेष प्रेम नहीं करता है । पत्नी अपनी जीवन लीला दुःखमय व्यतीत करती है ।

मंगल का क्षेत्र ठीक हो हाथ में बाकी का भाग निकृष्ट हो तो जातक प्रसिद्ध नहीं हो पाता है। पग-पग पर उसे कठिनाईयां आती हैं यद्यपि ऐसे उभार वाला जातक घबड़ाता नहीं है फिर भी जीवन यात्रा सुखमय व्यतीत नहीं होती है।

मंगल क्षेत्र वाले जातक की मस्तिष्क रेखा, भाग्य रेखा, हृदय रेखा, बड़ी हो, साफ सुन्दर कटी फटी न हो तो जातक भाग्यशाली होता है। हर समय प्रसन्नचित रहकर अपना यश पैदा करता है। धार्मिक कार्यों में उनका मन विशेष लगता है।

मंगल के क्षेत्र के साथ २ हाथ की रेखायें सुन्दर हों तो जातक का भाग्य बहुत चमकेगा। ऐसा जातक कभी शत्रुओं से हार नहीं मानता है। धन-धान्य, नौकर-चाकर, मकान, जायदाद बहुत होती हैं। अपने शत्रुओं को हराकर भूमि का मालिक बन जाता है। कभी-कभी उजाड़ भूमि को काबू करके उसको बसाने का प्रबन्ध करता है। धर्म-कर्म में विशेष रुचि रखता है तथा अन्य लोगों के लिए मन्दिर, गुरुद्वारा अन्य इस प्रकार के धार्मिक स्थान धर्मशाला आदि बनाता है।

ऐसे उभार वाले जातक हठधर्मी भी होते हैं, जब कभी किसी व्यक्ति के द्वारा उनका अनहित हो जाये तो उसको तंग करना आरम्भ कर देते हैं चाहे वह इनका प्रिय ही क्यों न हो और अन्य लोगों को साथ लेकर अपना कार्य करते हैं।

मंगल क्षेत्र वाले जातक की मृत्यु युवतियों से फंसकर, भूमि अथवा जायदाद के झगड़े में हुआ करती है। आपस में दलबन्दी करना, लड़ाई आदि करना ही प्राय: मंगल क्षेत्र वाले जातक का कार्य होता है।

जातक बिना किसी परिणाम को सोचे अपने को खतरे में डाल लेते हैं। जब उन पर विपत्तियां घिरती हैं तो बहुत ही विचलित हो जाते हैं; यदि जातक के हाथ में बुध का उभार ठीक है तो विपत्तियां सह जाता है।

मंगल के क्षेत्र वाले जातक बहुत कम बीमार होते हैं उनका स्वास्थ्य प्रायः ठीक रहता है। गले या पेट में कभी-कभी खराबी अनुभव करते हैं, यह छोटे रोगों से घबराते नहीं हैं, अपनी लापरवाही के कारण अपने रोग को स्वयं ही बढ़ाता है जिसके जातक स्वयं तथा अपने परिवार के लोगों को कष्ट देता है।

जो जातक सितम्बर मास के अन्तिम दिनों में पैदा होते हैं उनके हृदयों में अन्य गुणों की अपेक्षा प्रेम और सद्भावनायें जागृत रहती हैं प्रेम और भलाई करना यह अपना कर्तव्य समझता है। जब कभी किसी को यह प्रेम करते देखता है तो वह स्वयं भी वैसा ही करने लग जाता है। यदि दो असफल प्रेमियों को देखता है तो हृदय में दुःख मानता है और उनके मिलने के लिए परिश्रम करता है। दो प्रेमियों का पुनः मिलन कराकर अपने को विशेष सफल मानता है।

अक्तूबर मास में जन्म लेने वाले जातक का मंगल का क्षेत्र उत्तम होता है। ऐसे जातक की सूक्ष्म अनुभव तथा वस्तुओं की खोज करने की प्रवृति जागृत हो जाती है। यह स्वप्न कल्पना, वाद-विवाद अधिक, पसन्द करता है।

मंगल के क्षेत्र वाला जातक मानसिक चिन्ताओं में ग्रस्त रहा करता है। व्यर्थ के प्रश्नों के उलझनों में बहुत समय बिता देता है व्यर्थ की चिन्ता से तंग आकर कभी कभी आत्महत्या करने पर उतारू हो जाता है।

सितम्बर अक्तूबर में जन्म लेने वाले जातक को जीवन भर शारीरिक सुख कम प्राप्त होता है। इसके शरीर पर अधिक चोट लगा करती है। इसका शरीर छोटी अवस्था में ही दुर्बल होना प्रारम्भ हो जाता है, बड़ी अवस्था में अपनी शक्तिहीनता को जानकर हृदय में दुःख होता है।

अक्तूबर मास में जन्म लेने वाले जातक का मंगल क्षेत्र उच्च हो तो उसकी शादी होती है।

इनकी प्रथम पत्नी बहुत कम जीवित रहती है। दूसरी पत्नी जीवन भर जिन्दा रहा करती है। इस प्रकार के जातक पत्नी को सुखी नहीं रखा करते हैं। इस कारण पत्नी से क्लेश रहा करता है।

जातक में जीवन भर पढ़ने की इच्छा जगृत रहती है। जातक नवीन २ विषयों का अध्ययन किया करता है। कभी २ वह वैज्ञानिक बनने की इच्छा रखता है परन्तु ऐसा हो नहीं पाता है। वह बड़ी-बड़ी असफलताओं को पार करने की चेष्टा करता है, परन्तु प्राय: असफलता ही हाथ लगती है। यह दु:खी होकर साधु होना चाहता है परन्तु ऐसे व्यक्ति कभी भी जीवन में साधु नहीं हो पाते हैं।

बुध का क्षेत्र (The Mount of Mercury)

हाथ की सबसे छोटी अंगुली कनिष्टका अंगुली के नीचे हृदय रेखा के ऊपर मंगल के प्रथम क्षेत्र तथा सूर्य क्षेत्र घिरा हुआ स्थान बुध का **क्षेत्र कहलाता है।**

बुध शान्तिप्रिय देवता है और कनिष्टका अंगुली शान्तीप्रिय होती है, इसका काम हाथ की दूसरी अंगुलियों की सहायता करना ही है। यह स्वयं किसी कार्य में प्रथम प्रयोग नहीं होती हैं। इसको जिस हाथ की अंगुलियों के साथ कार्य दिया जाये बस उसके साथ कार्य प्रारम्भ कर देती है। बुध भी शान्ति से सहायता देने वाला है, यश और व्यापार का सम्बन्ध शान्ति से बहुत कुछ है। इसलिए बुध इसी पर आ बैठा है।

बुध के क्षेत्र वाला जातक अधिक परिश्रम करने वाला और आशावान होता है। प्रत्येक कार्य को जल्दी समाप्त कर देता है, यह भाषण की कला में निपुण होता है। नवीन २ विचारों को जन्म देकर अपने मित्र समुदाय की प्रशंसा प्राप्त करता है। यह जातक वैद्य, मन्त्रशास्त्री कला और साहित्य से प्रेम करने वाला, व्यापार में धन पैदा किया करता है।

बुध के क्षेत्र से शिक्षा, बुद्धि, स्मरण शक्ति, काव्य और कला प्रेम,

विचारों का समन्वय, भाषण करने की शक्ति, व्यापार, बन्धु मामा, मित्र, स्त्री एवं विवेक आदि का विचार किया जाता है।

बुध का क्षेत्र उच्च है तो जातक विद्वान, साहसी, बुद्धिमान, तीव्र बुद्धि वाला डाक्टर, वैद्य, ज्योतिषी, घूमने वाला, सुन्दर दृश्य देखने का प्रेमी, कवि, अभिनेता, साहित्यकार, वैज्ञानिक, शिल्पकला जानने वाला धैर्ययुक्त, कष्ट की चिन्ता न करने वाला, गुप्त विद्याओं की खोज करने वाला, अपने विचार पर निश्चित रहने वाला, बालक के समान स्वभाव वाला, धनवान छोटी अवस्था में विवाह करने वाला, कर्ज आदि देने वाला होता है। स्त्री भी सुन्दर धैर्यवान, स्वरूपवान तथा दहेज में भी धन प्राप्त होता है।

ज्येष्ठ और अषाढ़ मास में जन्म लेने वाला जातक उच्च कुल में जन्म लेता है। अपने साथियों की पूरी बात नहीं मानता है, बहुत सी बातें छिपा कर भी अपना कार्य बनाना अपना धर्म मानता है, यह दुविधा में रहा करते हैं। इस कारण प्रायः अपने कार्य में असफल रहा करते हैं।

क्षण २ में अपने विचारों को बदला करते हैं। यह कार्य करने में पूर्ण निर्णय नहीं कर पाते हैं। प्रायः प्रत्येक कार्य को आरम्भ करके मध्य में ही छोड़ देते हैं। इनकी प्रकृति को समझना बहुत ही कठिन कार्य है।

बुध के क्षेत्र वाले जातक व्यापारिक कार्यों में बहुत दिलचस्पी नहीं लेते हैं, अपने विरोधियों को बड़ी ही कुशलता से अपने वश में कर लेते हैं, यदि विरोधी विशेष विरोध तथा कोलाहल करते हैं तो नीति से अपने वश में कर लेते हैं। यह कभी भी किसी के धोखे में नहीं आते हैं। अपने साथियों से समानता का व्यवहार करना अपना धर्म मानते से, स्वभाव से विशेष प्रसन्न रहा करते हैं। इनकी प्रकृति रोजाना बदलती रहती है।

श्रावण मास में पैदा होने वाले जातक के हाथ में बुध का क्षेत्र बहुत विशेषता रखता है ऐसा जातक प्रेम कार्यों को किया करता है। किसी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व बहुत सोचते हैं और जब प्रारम्भ कर देते हैं तो पूर्ण करके चैन लेते हैं। बड़ी सावधानी से कार्य के परिणाम की प्रतीक्षा किया करते हैं और सफलता प्राप्त होने पर बहुत ही प्रसन्न होते हैं। सुन्दर तथा सफाई से विशेष प्रेम करते हैं।

ऐसा जातक आमतौर पर आत्म-प्रशंसा करने वाले होते हैं। वे सदा यह ही विचार किया करते हैं कि जो कुछ भी उन्होंने सोचा अथवा किया वह ठीक किया है। किसी भी वस्तु के ज्ञान के पाने में अपने को अधूरा नहीं मानते हैं, अपने द्वारा कहे गये वचनों को बड़ी सावधानी से पालन करते हैं और दुहराते हैं ताकि कहीं गलती न हो जावे।

जातक अपने चरित्र के विषय में किसी को कुछ भी नहीं बताता है। तब इनका चरित्र एक दो दिन की संगति से ही स्पष्ट हो जाता है, यह अपने हृदय की बात इस प्रकार से कहते हैं कि जिससे यह जान पड़े कि यह अपनी बात छिपा रहे हैं, परन्तु इनके बात छिपाने का ढंग इस प्रकार का होता है कि प्रत्येक यह जान जाता है कि अपनी बात छिपा रहे हैं।

यह परिवर्तन में और इन्कलाब में विश्वास रखते हैं हर बात में नवीनता देखा करते हैं। प्रत्येक नवीनता को देखकर उनका हृदय खिल उठता है।

बुध के क्षेत्र के साथ २ मस्तष्क रेखा भी सुन्दर हो तो ऐसा जातक बुद्धजीवी होता है। व्यापार बड़ी कुशलता से किया करते हैं, एकता में विश्वास करते हैं। वकालत, व्याख्या देना, बड़ी २ फर्मों का कार्य करते हैं, अपने सहयोगियों से बहुत प्रेम करते हैं, स्वयं तथा अन्य स्त्रियों से प्यार किया करते हैं, दूसरों की स्त्रियों को देखना तथा उनसे प्यार करना बहुत ही पसन्द करते हैं।

स्त्री जातक के हाथ में बुध का क्षेत्र उच्च हो तो वह मंत्री पद तक प्राप्त कर लेती है। उसका यश चारों ओर फैलता है, परन्तु उसका आन्तरिक चरित्र अच्छा नहीं होता है, वह विलासिनी होती है। नीच पुरुषों के साथ गमन करती है। अपने नौकर तथा पड़ौसियों से प्यार करती है, पति की मृत्यु हो जाने पर यह वेश्या की तरह आचरण करती है परन्तु संसार में उसका यश फैलता है। मनुष्य उसके चरित्र पर विश्वास करते हैं, वह अपने मित्र तथा सगे सम्बन्धी पर अपना प्रभाव जमाये रखती है। वह, किसी के मुंह अपनी बुराई नहीं सुन सकती है।

बुध क्षेत्र वाले जातक अपने परिवार को त्याग कर सन्यासी तक हो जाया करते हैं। घर वालों से असन्तुष्ट रहते हैं, उनके विचारों में परिवर्तन आते रहा करते हैं तथा जीवन के भी अनेक रूप बदलते रहा करते हैं। यदि किसी कारण ठोकर लग जावे तो उनका हृदय इतना बदल जाता है कि वे संसार की किसी वस्तु में मोह नहीं रखते हैं और वेदान्त के प्रचार में लग जाते हैं।

बुध के उठे क्षेत्र पर एक रेखा हो तो जातक जीवनभर सुरक्षित रहता है परन्तु उसकी आयु कम होती है।

ऐसा जातक सदा ही नम्रता से कार्य लेता है अपने साथियों से सहयोग चाहता है किसी से खुले आम नहीं लड़ता है।

बुध के क्षेत्र वाला जातक प्रसिद्ध रोगों में कम फंसता है। यह प्राय: मानसिक दुर्बलताओं के शिकार रहा करते हैं। हृदय की धड़कन बढ़ जाने से इनकी मृत्यु हो जाती है। कभी कभी कमर में दर्द से भी मृत्यु हो जाती है।

बुध का क्षेत्र दबा हो तो जातक हमेशा प्रसन्न रहने वाला क्रोधी, बन्धुओं से विग्रह करने वाला विद्या लाभ से सन्तोष प्राप्त नहीं करता

है, परन्तु निरन्तर परिश्रम के बाद में सफलता कर लेता है। ऐसे जातक के सामाजिक उत्थान के मार्ग में आर्थिक कठिनाईयाँ आया करती हैं जिनके कारण वह चिन्ताग्रस्त तथा अशान्तमय जीवन व्यतीत करता है।

बुध का क्षेत्र अधिक उच्च हो तो जातक मिथ्या भाषी, अधिक और व्यर्थ बोलने वाला, ठग, छलिया, विश्वासघात करने वाला प्रपंच्ची तथा कलहप्रिय होता है।

गुरु का क्षेत्र (The Mount of Jupitor)

तर्जनी अंगुली के नीचे शनि और राहु तथा मंगल के क्षेत्र से घिरा हुआ अंगूठे के बाद हाथ की प्रथम अंगुली के नीचे गुरु का क्षेत्र है।

गुरु देवताओं का गुरु है, साथ ही बुद्धि लेखन कला तथा अन्य का भी देवता है। शान्ति तथा अहिंसा का प्रचार करने वाला यही देव है। मानव जीवन का संबंध इस देवता के निकट अधिक है।

तर्जनी अंगुली ताड़ने के लिए प्रयोग होती हैं, संकेत देने में भी इसका प्रयोग होता है। इस प्रकार बुद्धि का काम भी इन कामों में अधिक रहता है। अतः वृहस्पति बुद्धिवाद के सिद्धान्तों का स्वामी होने से यही स्थान दैवज्ञों ने उचित माना है।

वृहस्पति के क्षेत्र वाला जातक सामान्य कद का कुछ पीलापन लिये हुए श्वेत रंग का, मोटे कपोल, गेहूं का सा रंग, आंखों की पुतली बड़ी और पलक भारी, मुंह बड़ा, होंठ मोटे, बाल बड़े तथा शरीर में बाल अधिक होते हैं। कुष्ठ रोग, गठिया, चर्म रोग आदि की पीड़ा के कारण कष्ट उठाते हैं।

गुरु के क्षेत्र वाले जातक उच्च अभिलाषी, स्वाभिमानी; अतिथि सत्कार में सदैव तत्पर रहा करते हैं, यह उदार हृदय अच्छे स्वभाव वाले, धर्म में विश्वास रखने वाले, राजसी सजधज के साथ रह वाले

शांत स्वभाव वाले, अनाथों की सहायता करने वाले तथा लड़ाई-झगड़ों से दूर रहा करते हैं। यह धनवान, मन्त्र शास्त्र को जानने वाले लेखक, कवि, राजपण्डित तथा भूमि के स्वामी होते हैं। जातक यात्रा प्रिय कुशल कलाकार, मित्रता का पालन करने वाले होते हैं।

गुरु क्षेत्र कम उठा हो तो जातक स्वार्थी, दुराचारी, निकृष्ट, अन्त का भोजन करने वाला, बुरे स्वभाव वाला तथा दूसरों के अधीन रहा करता है, जातक देश-विदेश में भ्रमण की प्रबल इच्छा रखता है। प्रायः वाह्य रोग, चर्म रोग, श्लेष्मा, राजयक्ष्मा, क्षय तथा अन्य गुरुकृत रोगों से कष्ट उठाया करते हैं।

गुरु का क्षेत्र उठा हो तो जातक उच्चाभिलाषी, यश की इच्छा रखने वाला स्वरूपवान और उसकी मुखाकृति प्रभावपूर्ण तथा तेजवान होती है। इस प्रकार के जातक विद्वान, धार्मिक क्षेत्र में प्रसिद्ध जनता जनार्दन का प्रिय, दयावान, काव्यकुशल, नीतिवान, कुल का यश फैलाने वाला, दानदाता, सभा और समाज में प्रभावपूर्ण भाषण करने वाले, शान्तप्रिय, तपस्या आदि से प्रेम करने वाले, अल्प भोगी, सुन्दर भोजन करने वाले धनवान, मितव्ययी, सुन्दर बुद्धि वाले, अध्यात्मवादी, प्रसन्न और फुर्तीले, दुष्ट को मारने में प्रसन्नता अनुभव करने वाले तथा पुत्र-पौत्रों से युक्त होते हैं।

ऐसे हाथ वाले जातक प्रायः सम्पादक, योग्य, अध्यापक, सिद्धि प्राप्त करने वाला, मन्त्री, धर्मचारी, दैवज्ञ, लेखक, कवि आदि हुआ करते हैं।

गुरु का क्षेत्र-अधिक उठा हो तो जातक अहंकारी, क्रोधी, दुराचारी धोखेबाज, धूर्त, स्वार्थी और अधिक व्यय करने वाला होता है, इसका स्वभाव बहुत कठोर होता है और कठोरता से व्यापार किया करता है, ऐसे जातक की बुद्धि प्रायः अल्प होती है तथा उत्तरदायित्वपूर्ण कार्य करने में असमर्थ रहा करता है, इसको व्यर्थ की चिन्तायें रात दिन घेरे

रहा करती हैं, यह बड़े अक्षर लिखा करता है तथा मनुष्यों को धोखा देकर अपना कार्य पूर्ण किया करता है।

यह बुरे कार्यों में अपना समय नष्ट किया करता है इसलिए धार्मिक तथा सद्‌कार्यों से दूर रहा करते हैं, यह बन्धुओं की सहायता से जीवन यापन करते हैं और गुरुजनित रोगों से प्राय: दु:खी रहा करते हैं।

गुरु का क्षेत्र ठीक हो तो यह देखना चाहिए कि तर्जनी का कौन-सा पर्व लम्बा है, यदि तर्जनी का प्रथम पर्व लम्बा हो तो ऐसा जातक राजनीतिज्ञ धार्मिक तथा बौद्धिक क्षेत्र में सफल होता है, यदि द्वितीय पर्व लम्बा हो तो व्यापारिक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है, काफी धन कमाता है, यदि तर्जनी का तृतीय पर्व लम्बा हो तो खाने पीने का शौकीन व विलासी होता है। ऐसा जातक खाने आदि से रोग का विशेष रोगी होता है।

गुरु के क्षेत्र वाला जातक इतना दृढ़ निश्चयी होता है। जब काम प्रारम्भ करता है तो मनुष्यों से सम्पत्ति लेता है परन्तु कार्य अपने ही अनुसार करता है। दूसरों के साथ मिलकर काम करना उसे पसंद नहीं होता है और न ऐसा जातक किसी से विशेष सम्बन्ध ही स्थापित करता है जिससे उसे संदेह पैदा हो जावे। जब कोई साथी रास्ते में रोकता है अथवा विरोध करता है उसे नीति से मार्ग पृथक कर देता है। मर्यादा का पालन करना और विचारों की पवित्रता बनाए रखना अपना धर्म मानता है।

गुरु के क्षेत्र वाला जातक किसी को भी धोखा नहीं देता है, सहायता के लिए दूसरों के आगे हाथ फैलाना उसे अच्छा नहीं लगता है।

आश्वन, पौष मास में जन्म लेने वाले जातक के हाथ में गुरु का उभार विशेष अच्छा होता है ऐसे जातक स्वभाव से निडर, साहसी होते हैं। यह जो कुछ काम करते हैं पहले सोच लेते हैं बाद में प्रारम्भ करते हैं और सफलता प्राप्त करके ही चैन लेते हैं। वे अपने विचार

सभी के सामने व्यक्त कर देते हैं जिसमें किसी को कोई आपत्ति न हो, वह किसी को धोखा नहीं देते हैं।

ऐसे जातक व्यापार में बहुत ही उद्यमी होते हैं, बहुत ही तीक्षण बुद्धि से कार्य लेकर व्यापार को काबू में कर लेते हैं और बहुत ही आसानी से व्यापार चला लेते हैं। सरकारी दफ्तरों में भी बड़ी आसानी से ऊंची जगह पाने में समर्थ हो जाते हैं। राजनीतिक कार्यों में चाह न होते हुये भी फंस जाते हैं। एक बार किसी आन्दोलन में लग जाते हैं तो उसे सफल ही बनाकर दम लेते हैं। किसी के विचार और दलीलों को बहुत देर तक मनन करने के उपरान्त ही मानते हैं। प्रत्येक बात को आसानी से मान लेना इस जातक के प्राय: स्वभाव के विरुद्ध होता है।

गुरु के क्षेत्र वाले जातक बचपन से ही सूझ-बूझ से कार्य करना आरम्भ कर देते हैं। अध्ययन काल में छात्रों का संगठन करते हैं और विद्यार्थियों के आन्दोलनों का संचालन करते हैं। इस प्रकार के जातक छोटी अवस्था में जीवन पथ चुनने की चिन्ता में पड़ जाते हैं। माता-पिता की इच्छा कुछ भी हो ऐसे बालक अपने भाग्य के रास्ते का निर्णय स्वयं करते हैं। दूसरे लोगों की सम्पत्तियाँ अवश्य मानते हैं परन्तु उन पर चलने और न चलने का निर्णय स्वयं करते हैं। अपने ध्येय की प्राप्ति के लिए अनेक रास्ते बदलते हैं और अन्त में लक्ष्य अवश्य ही प्राप्त कर लेते हैं।

गुरु के क्षेत्र वाले जातक का स्वास्थ्य अच्छा नहीं रहता है क्योंकि प्रथम तो मस्तिष्क से अधिक काम लेते हैं, दूसरे सदा विचारशील रहने से स्वास्थ्य उत्तम नहीं हो पाता है ऐसा जातक छोटे-छोटे रोगों में फंसा रहता है। कभी भी चिन्ता से मुक्त नहीं हो पाता है।

बैशाख, श्रावण तथा फाल्गुन मास में जन्म लेने वाले जातक का गुरु उठा नहीं होता है। क्षेत्र कुछ चपटा, एक सिरा ऊपर उठा हुआ तथा एक कुछ नीचे झुका हुआ होता है।

ऐसा जातक मानसिक चिन्ताओं में अधिक ग्रस्त रहता है। प्रत्येक वस्तु के विषय में जानकारी प्राप्त करना अपना धर्म मानता है। पठन-पाठन में ऐसा जातक विशेष रुचि रखता है। वैज्ञानिक खोज में दिन रात लगे रहने में अपने जीवन की सफलता मानता है।

ऐसा जातक प्रेम और कर्तव्य को साथ-साथ निभाया करता है। ऐसे जातक को अपना विश्वास दिलाने में बड़ी-बड़ी कठिनाई पड़ती हैं। समाज ऐसे जातक को साधारणतौर से षड़यंत्रकारी समझा करते हैं। यह अपने कार्यों में दूसरों की सहायता की भी इच्छा रखते हैं।

विश्व के अनेक विद्वान, कलाकार वैज्ञानिक नेता, संगठनकर्ता इन्हीं मासों में जन्म लेते हैं। ऐसा जातक जीवन में अपनी विशेषताओं के कारण विश्व के लिए मूल्यवान हो जाता है।

ऐसे जातक प्राय: पीले रंग के होते हैं। अधिक मेहनत और परिश्रम करने के कारण इनका रंग पीला सा ही रहता है। रक्त रहते हुये भी इनका चेहरा कभी लाल नहीं देखा गया है स्थान तथा जलवायु का इनके स्वास्थ्य पर विशेष प्रभाव रहता है।

ऐसे जातक की मस्तिष्क रेखा सुन्दर हो तो जातक का भाग्य शीघ्र चमक उठता है। अपने परिवार, मित्र और सहयोगियों को उन्नत बनाता है।

शुक्र का क्षेत्र (The Mount of Venus)

अंगुष्ठ के नीचे जीवन रेखा से घिरा हुआ राहू, केतु और द्वितीय मंगल के क्षेत्र से घिरा हुआ शुक्र का क्षेत्र है।

शुक्र के दो अर्थ हैं, प्रथम तो दैत्य, गुरु शुक्राचार्य को बलवान तथा श्रेष्ठ है। दूसरा शुक्र का अर्थ है। वीर्य यह शरीर का स्वामी तथा बल-बुद्धि का प्रधान कारण है।

दैत्य असुर लोग शारीरिक शक्ति में दूसरों से अधिक बलवान होते हैं। यह बात सर्वजन जानते हैं। इनका गुरु दैत्याचार्य कितना नीतिज्ञ

और साहसी वीर होगा। शुक्राचार्य मृत संजीवनी विद्या ज्ञाता थे अर्थात वह अमरता प्रदान करता है, उसे जानते हैं, दूसरे शब्दों में वीर्य शरीर का राजा है। वीर्य ही शरीर को बल, बुद्धि और पुरुषता प्रदान करता है। वीर्य को स्वामी शुक्राचार्य कहते हैं। अतः जो वीर्य प्रदान कर सकता था। जो वीर्य का स्वामी था। वह शुक्राचार्य मानव को वीर्य प्रदान कर उसे अमरता देना है। उसे जीवन देना है।

शुक्र के वीर्य का अनुमान होता है। इससे मानव के स्वास्थ्य का भी अनुमान हो सकता है। इस स्थान से सन्तान का भी पता लगाया जा सकता है। यह स्थान साहस शक्ति, वीरता का प्रधान कारण है मानव के हाथ में और सामुद्रिक इसे शुक्र के क्षेत्र के नाम से पुकारता है।

शुक्र के क्षेत्र वाला जातक गोल मुख वाला, श्वेत गुलाबी रंग वाला लम्बे कद वाला, सुन्दर छाती, कम चौड़ाई की अंगुलियां छोटी, चिकनी एवं कोमल हुआ करती हैं।

जातक के हाथ में शुक्र का पर्वत क्षेत्र न हो तो उसको गुप्त इन्द्रिय सम्बन्धी रोग होता है, आलसी, स्वर कठोर स्वभाव वाला तथा ऐसे जातक का परिश्रम व्यर्थ चला जाता है, यदि इस प्रकार का जातक स्त्री है तो उसको योनी सम्बन्धी रोग होते हैं, चीड़-फाड़ का भी समय आ जाता है।

शुक्र का पर्वत मणिबन्ध अर्थात केतु के पर्वत की ओर झुक रहा हो तो ऐसा जातक अर्थशास्त्री, नृत्य कला में प्रवीण हुआ करते हैं और इसी कला के द्वारा समाज में स्थान पाते हैं।

शुक्र के क्षेत्र को देखकर जातक आप स्वास्थ्य का अनुमान लगा सकते हैं, शुक्र के क्षेत्र वाला जातक कभी भी शांतिहीन मुख वाला नहीं होगा। उसका मुख सूर्य के समान चमकता रहेगा तथा मुख का रंग भी रक्त वर्ण का होगा।

शुक्र के पर्वत से व्यापार, कला-कौशल, संगीत, गणित शास्त्र, प्रेम,

स्त्री, धन सुख, भक्ति, विवाह आदि के सम्बन्ध का विचार करना चाहिए, वीर्य सम्बन्धि रोग, कान, नाक, कण्ठ, सिर आदि के रोगों का विचार भी शुक्र के क्षेत्र से ही करना चाहिए।

शुक्र के क्षेत्र वाला जातक संगीत आदि से प्रेम करने वाला, यात्रा प्रिय, दूसरों को प्रसन्न रखने वाला, कम भोजन करने वाला, लड़ाई आदि में रुचि रखने वाला तथा प्रेम का व्यवहार सभी से पसन्द करते हैं।

जिस जातक का शुक्र का क्षेत्र उठा हो वह कारीगर, नाना प्रकार के शिल्पकलाओं को जानने वाला, सुन्दर, नृत्य गीत आदि से प्रेम करने वाला, उदार हृदय, स्त्री के वश में रहने वाला रूपवान, कोमल स्वभाव वाला, चिकित्सक, ज्ञानी, दैवज्ञ, भविष्य आदि का ज्ञान रखने वाला होता है।

जिस जातक के हाथ में शुक्र का पर्वत अधिक उठा हो तो वह बुद्धिमान होते हुये भी व्यभिचारी होता है। जातक अपने को सबसे अधिक विद्वान मानता है। नित्य नवीन स्त्री के साथ सम्भोग करता है, चंचल स्वभाव, निर्लज्ज, अहंकारी होता है। यदि ऐसे जातक के मुंह पर इसका फल कह दिया जावे तो वे इस पर विश्वास नहीं करते हैं। कान सम्बन्धी रोग से ग्रसित रहा करते हैं, इन्हें कम सुनाई पड़ता है।

शुक्र के क्षेत्र वाले जातक का सूर्य का क्षेत्र भी उच्च हो तो ऐसा जातक जीवन में उच्च पद पा जाता है। शिक्षा में इसका विशेष आदर होता है। जीवन के बहुमूल्य अवसरों का सर्वदा लाभ उठाया करता है।

जब किसी भी संकट की सम्भावना होती है तो ऐसा जातक प्रथम ही सचेष्ट हो जाता है, और विपत्तियों को अपनी शक्ति के द्वारा ही पार कर लेता है, दूसरों के संकटों में भी ऐसा जातक सहायता किया करता है। यह हमेशा सहानुभूति, धैर्य, साहस से काम लेता है।

ऐसा जातक रोगी की सेवा करना अपना प्रधान कर्तव्य मानता है, साथ ही मंगल और सूर्य का क्षेत्र भी उच्च हो तो ऐसे जातक के प्राय: सन्तान अधिक होती है, यह जीवन भर सुखी रहता है, कभी भी किसी व्यक्ति से इसका संघर्ष नहीं होता है। यदि संघर्ष हो तो भी यह किसी से पीछे न रहेगा।

माघ मास में जन्म लेने वाले जातक का स्वास्थ्य सदा अच्छा रहता है, वे अपने जीवन में कभी किसी भी व्यक्ति से नहीं घबराते हैं उनका स्वास्र्थ्य, घर-बार, पत्नी तथा बच्चों के लिए विशेष लाभकारी रहता है ऐसे जातक धार्मिक कार्यों में रुचि लिया करते हैं। धार्मिक उत्सव आदि मैं सबसे आगे बढ़कर भाग लेते हैं।

शुक्र के क्षेत्र वाला जातक हठधर्मी भी होता है। उसके हृदय और दिमाग में जो बात बैठ जावेगी उसका निकालना बहुत कठिन होगा यदि एक बार उसके हृदय में किसी के प्रति विरोध पैदा हो गया हो तो जीवन भर उसका विरोध करता रहेगा, अपने विरोधी की जड़े तक उखाड़ देने में यह व्यक्ति पीछे नहीं रहता है।

शत्रु से पूर्ण रूप से शत्रुता करना और मित्र से अच्छी प्रकार से मित्रता करना यह जातक अच्छी प्रकार से जानता है।

जनवरी मास में जन्म लेने वाले जातक का शुक्र का क्षेत्र निर्बल होता है ऐसे जातक का क्षेत्र कभी ऊंचा उठा हुआ नहीं होता। यह जातक प्राय: जीवन में असफल रहा करता है, इसकी संतान दुर्बल रोगी मन्दाग्नि और कमजोर हुआ करती है। शुक्र की निर्बलता के कारण जातक का स्वभाव अनिश्चत सा रहता है, ऐसा जातक नीच पुरुषों की संगति करने वाला होगा।

यदि शुक्र का क्षेत्र बड़ा हो और ऊंचा हो तो सन्तानोउत्पादन शक्ति अच्छी होती है। यदि यह क्षेत्र धंसा हुआ है अथवा सुकड़ा हुआ है तो शक्ति बहुत कम होती है, यदि शुक्र का क्षेत्र दोष युक्त है अन्य रोग के लक्षण हैं तो जननेद्रिय संबंधी रोग होते हैं।

स्त्री जातक के हाथ में शुक्र का क्षेत्र उठा हो, गुरु और सूर्य के क्षेत्र दबे, हों हृदय रेखा चिन्ह मुक्त हो, मस्तष्क रेखा छोटी और कमजोर हो, अंगुष्ठ का प्रथम पर्व छोटा पतला और कमजोर हो वह शीघ्र ही पथभ्रष्ट हो जाती है।

शनि का क्षेत्र (The Mount of Stawin)

मध्यमा अंगुली के नीचे गुरु तथा सूर्य के क्षेत्र से घिरा हुआ हृदय रेखा तक जो स्थान होता है उसे शनि का क्षेत्र कहते हैं।

एकान्त प्रियता, शान्ति, बुद्धिमता, परिश्रमशीलता, किसी भी वस्तु का गम्भीरता पूर्वक अध्ययन, संगीत अथवा दुखान्त गंभीर स्वर वाले संगीत से प्रेम करना इनका स्वाभाविक गुण होता है।

शनि के क्षेत्र वाला जातक लम्बा, पतला, श्यामलता वर्ण का मध्यगति से चलने वाला होता है, चेहरा मोटा, लम्बा और गालों में गड्ढे पड़े हुये, होंठ पतले, दांत सुन्दर पंतिबद्ध, परन्तु जल्दी गिर जाते हैं, आवाज मंदी एवं धीमी होती है, गर्दन पतली और लम्बी होती है।

शनि के क्षेत्र से कष्ट व्यसन, मृत्यु धन, सम्पत्ति, मनुष्य की स्वयं की वृद्धि कल्पना और रुचि, संगती प्रियता आदि का ज्ञान किया जा सकता है।

शनि का क्षेत्र गुण रहित हो तो ऐसे जातक के जीवन में कोई भी महत्वपूर्ण बात नहीं हुआ करती है। यदि शनि का क्षेत्र साधारण उन्नत हो तो जातक विचारशील होता है, किसी खतरे के काम में नहीं जाता है। ऐसे जातक प्राय: ऐसे काम करते हैं जिनमें परिश्रम अधिक होता है और आमदनी निश्चित हुआ करती है, रुपये का घाटा न हो, ऐसे जातक की अंगुलियां लम्बी होती हैं तो प्रथम द्वितीय पर्व के बीच में गाँठ निकली होती हैं।

प्रायः शनि का क्षेत्र उन्नत दिखाई नहीं देता हैं। किन्तु शनि मध्यमा अंगुली बहुत अधिक बड़ी हो तो जातक में शनि के गुण विशेष रहा करते हैं, मध्यमा अंगुली बड़ी और बलवान हो अन्य अंगुलियों का झुकाव शनि की अंगुली की ओर हो तो भी शनि का क्षेत्र बलवान मानना चाहिए।

शनि के क्षेत्र वाले जातक का स्वभाव गंभीर, कल्पना शक्ति प्रबल होती है। यह अधिक भद्दे तथा मैले कपड़े पहनना पसंद करते हैं, सुन्दर और साफ वस्त्रों की तरह उदासीन रहा करते हैं, अध्ययन प्रिय, मितव्यी, धर्म में विश्वास रखने वाले शान्त स्वभाव वाले, सच्चे मित्र तथा मित्रों में विश्वास रखने वाले होते हैं। यह प्रायः चेतावनी और नुकसान उठाने पर तुला करते हैं परन्तु यह चेतावनी आदि की परवाह नहीं किया करते हैं। यह दैनिक कार्यों में हेर फेर पसंद करते हैं।

यह कम लोगों से मित्रता करना पसंद करते हैं। यदि किसी से, मित्रता करता है तो अन्त में प्रिय होता है और न किसी से ऐसी आशा रखता है। इसी कारण यह किसी की बात नहीं मानता है, यह अपने परिवार के लोगों को प्रायः तंग ही किया करते हैं, सितार, सारंगी, संगीत, मृदिग आदि प्राचीन वाद्य यंत्र को बजाने में कुशल होता है। विद्वान, गणित प्रेमी, कृषक, छपाई का करने वाला, चित्रकार धार्मिक नेता प्रायः शनि क्षेत्र वाला जातक होता है।

जिस जातक के हाथ में शनि का क्षेत्र उठा हुआ हो तो वह जातक शांत स्वभाव वाला एकांत एवं शांत वातावरण में बैठकर पठन पाठन करने वाला, गुप्त विद्या प्रेमी, ज्योतिषी कर्तव्य से मुख न मोड़ने वाला दूसरों की भलाई करने वाला स्पष्ट और निकृष्ट भाव से बोलने वाला सदाचारी दूसरों को ठगने में चतुर, समाज में सम्मलित होता है। कृषक, बाग बगीचा आदि का शोक करने वाला स्त्री से कम प्रेम किया करता है।

जिस जातक के हाथ में शनि का पर्वत बहुत अधिक उठा हो तो वह बुरे मनुष्यों की संगीत करने वाला नीच कर्म में रत रहने वाला दु:खी, बुरे स्वभाव वाला निर्धन, आत्महत्या का प्रयास करने वाला होता है, यह कार्य में प्रथम बार असफल होता है फिर बाद में सफलता प्राप्त होती है, यह उदर तथा मूत्राशय संबंधी रोगों से ग्रसित रहा करते हैं, इस जातक के जल में डूबने तथा ऊपर से गिरने की सम्भावना अधिक बनी रहती है ऐसे जातक का भाग्योदय ३८ वर्ष से ४२ वर्ष तक के समय में होता है।

शनि का क्षेत्र नीचे दबा हुआ हो तो जातक चंचल स्वभाव वाला, व्यर्थ में चारों ओर घूमने वाला, असत्य भाषी जुआरी, व्यभिचारी, राजा द्वारा दण्ड भोगने वाला, लोका पवाद सहन करने वाला, व्यसनी मूर्ख, डरपोक, लोभी, विश्वासघाती दु:खी दीनता और दूसरों के सहारे जीवन यापन करने वाला तथा इस जातक की आयु कम हुआ करती है।

शनि के क्षेत्र वाला जातक जब २५ वर्ष की आयु में पहुँचता है तो जातक बहुत ही गर्वीला त्यागी बन जाता है।। यदि इसी प्रकार का जातक गृह त्याग दे तो कुछ समय में पुन: गृह में लौट कर आ जाता है। ऐसे जातक का मन स्थिर नहीं रहा करता है।

शनि का क्षेत्र छोटा हो अथवा उसका कोई भाग नुकीला हो तो ऐसे शनि के क्षेत्र का प्रभाव बहुत ही भीषण होता है। यह जीवन भर दूसरों के सहारे रहता है। अपने भाग्य से कभी कुछ भी नहीं कर पाता है, जीवन भर कष्ट भोगता है और दु:ख सहता है, धर्म की प्रवृत्ति रखता है परन्तु दुर्भाग्यवश कभी भी पूरी नहीं होती है, धर्म कार्य से भी संकटों में फंस जाया करता है, दुर्भाग्य कभी पीछा नहीं छोड़ता है।

जीवन में सूनापन ऐसे जातक की बनौती होती है। यह सर्वदा

अकेले बैठकर योजना बनाया करता है। अपने प्रेमियों से छिप-छिपकर मिलते हैं कभी २ अपने मित्रों के साथ भी दुष्टता कर बैठते हैं जिसके आत्म जीवन में और संकट आ जाया करते हैं।

दिसम्बर का अन्त और जनवरी के प्रारम्भ में जन्म लेने वाले जातक का शनि क्षेत्र प्राय: उत्तम होता है ऐसे जातक में आत्म संतोष की भावना बहुत ही प्रबल रहती है। दिन रात ये कार्य करता है।

इस प्रकार के जातक अपने भाग्य और वातावरण के अनुसार चलते हैं। जब कभी भाग्यवश अवसर आ जावे तो मैदान में निकलने का प्रयत्न करते हैं परन्तु भाग्य की प्रधानता मानकर ही कार्य करते हैं।

प्रेम के विषय में ऐसा जातक प्राय: नीरस होता है, अवसर प्राप्त होने पर यह अपने असली रूप में आ जाते हैं, प्रेम के सम्बन्ध में किसी पर विश्वास रखना अपने आप को धोखा देना मानते हैं। कर्त्तव्य और प्रम के विषय से इनके विचार दूसरे जातकों से प्राय: भिन्न होते हैं। यह प्रेम का सम्बन्ध पूर्व जन्म के संस्कारवश मानते हैं। यह अपने प्रेम और प्रेमी की रक्षा किया करते हैं।

शनि के क्षेत्र वाले जातक व्यापार में रुचि नहीं रखते हैं, यह भाग्यवश व्यापार करते हैं। इन्हें व्यापार में सफलता बहुत कठिनाइयों से प्राप्त होती है। व्यापार में धन कमाते देखकर यह तरसते हैं।

संक्षेप में भिन्न गृहों क्षेत्रों के लक्षण और फल कहा गया है। हाथ के फल कहते समय सभी ग्रह क्षेत्रों का विचार अलग अलग फलों का मिलान करके परिणाम के अनुसार फल कहना चाहिए।

—:o—

षष्ठम परिच्छेद

हाथ की प्रमुख रेखायें और उनका स्वरूप व स्थान

सामुद्रिक शास्त्र ज्योतिष शास्त्र का प्रमुख अंग है इस शास्त्र को भगवान शिव ने जगत के कल्याण के लिये जगत मां पार्वती से कहा था, विद्वानों का मत है कि भगवान विष्णु ने सामुद्रिक नाम के ब्राह्मण का अवतार लेकर स्वयं इस शास्त्र का वर्णन किया है। सामुद्रिक शास्त्र हस्त रेखाओं का बहुत ही प्रमुख स्थान है, जिस प्रकार मानव के नेत्र मानव के अन्तर हृदय सुख तथा दु:ख का वर्णन कर देते हैं उन्हें देख प्रत्येक सुख दु:ख स्नेह, प्रेम, द्वेष का पता लग सकता है ठीक इसी प्रकार सामुद्रिक शास्त्र ज्ञाता इन रेखाओं के द्वारा मानव के जीवन का अध्ययन करता है वह रेखाओं की भाषा का ज्ञान कर मानव मार्ग दर्शन करता है भविष्य के होने वाले घटना चक्र का निरूपण कर मानव को सचेत कर देता है, इस प्रकार जीवन में उत्पादन, पतन का प्रमुख भाग मानव के सामने खोल कर रख देता है।

मानव के हाथ को सीधा करके देखा जावे तो उसमें नाना प्रकार की सीधी टेढ़ी, मोटी, छोटी, लम्बी पतली, चौकोर, सर्प के समान अनेकों रेखायें दिखाई देंगी, यह सभी रेखायें अपना महत्व रखती हैं वैसे समय समय पर वह रेखायें बनती बिगड़ती तथा बदलती हैं परन्तु इन सभी की एक भाषा है, जिसके द्वारा यह मानव के भविष्य तथा वर्तमान तथा भूत की परिस्थितियों पर प्रकाश डाला करती हैं हाथ की रेखाओं का पढ़ना मनुष्य के भाग्य को पढ़ना है और रेखा अध्ययन न करने का एक एक शब्द जीवन के उत्थान, पतन, आशा और निराशा तथा

आत्मघात अविश्वास के काले बादल भी उठा सकता है। इसलिए काफी तथा ठीक प्रकार के अध्ययन करने के बाद अविश्वास, तक के काले बादल भी उठा सकता है। इसलिए काफी तथा ठीक प्रकार के अध्ययन करने के बाद ही ठीक प्रकार से फल कहना चाहिये।

बहुत से लोगों का अनुमान है रेखायें कठोर कार्य करने के कारण बनती हैं यह गलत है अनुभव के बाद यह सिद्धान्त स्थिर तय किया जा सकता है कि मानव के पूर्वाजित कर्मों, सद्विचारों, मानसिक विकारों का प्रभाव करतल पर पड़ता है और उन प्रभावों के कारण मानव के हाथ में छोटी २ रेखाओं का निर्माण होता है और कभी २ नष्ट विलीन होती रहती हैं, यह रेखायें मानव पूर्वार्जित कर्मों का लिखित ब्यौरा है तथा उनके भुगतान का खुला हुआ संसार के नाम चैक, धन, यश, पराजय, आयु तथा अन्य संसार के सभी बन्धनों तथा मानव के जीवन जन्म-मरण के सम्बन्ध में है।

हाथ की महत्वपूर्ण रेखा निम्न हैं।

तत्राथ वक्ष्यामि करान्तराल रेखा गणानां किल नाम संज्ञा।
याभिर्फलं वासर जल वेला संताज्ञ ज्ञानं विबुधा वदंती॥ १॥
अंगुष्ठ सूल स्थित रेखिकाया संज्ञा बुधा पाहु रथ प्रगुढां।
तस्या परां व्याघ्र विलासलीलाम् ततः परांशीलं गुणा स्वरूपा॥ ३॥

रेखात्रियतो भिन्ना या रेखा स्वल्प मूर्तिभृत्।
नदरेखेतिसाप्रोक्ता तस्या पुण्यं महोदयम्॥ ३॥

मणिबंधात्पिर्यरेखा करमाद्विभवायुषो।
रेखाद्वयांते तिस्त्रोपि तर्जन्यगुष्टकातरं॥ ४॥

येषां रेखा इमातिस्त्र सम्पूर्ण दोष वर्जिता।
तेषां गोत्र धनायुष्यं सम्पूर्ण यथ वा पुनपाः॥ ५॥
उर्ध्वं रेषा करेयेतु रेषास्यरं गुलत्रिये।
नाना भोग सुख श्रीमान समुद्र वचनं यथा॥ ६॥

मध्यमांगुलिया मणिबंधनोत्था रेखा गता पाणितलेगनाया: ।
उर्ध्व स्थिता पदा तलेथवाया पुंसोथवा राज्य सुखाय सास्यात् ॥ ७ ॥
कनिष्टिका मूल भवा गताया प्रदेशिनी मध्यम कांतराला ।
करोतिरेषा: पमायुष: सा प्रमाणां हीनाथ तद्दून भायु ॥ ८ ॥

अनामिका मूल जास्याद्रेखायस्य स पुण्यवान् ।
रेखाभिर्बुहु भिक्लेशं स्वालियामिर्धन हीनता ॥ ९ ॥
रेखा चतुष्टये सौख्य बहुरेषा दरिद्रता ॥ १० ॥

हाथ की उन रेंखाओं के नाम, संज्ञा वर्णन करत हैं जिनके द्वारा शुभाशुभ फल, वार, जन्म समन पक्ष, मास, तिथि आदि का ज्ञान होता है। अंगूठा के मूल में स्थित रेखा को प्रगूढ़ रेखा और उसके ऊपर की दूसरी रेखा का व्याघ्र विलास, लीला और उसके ऊपर की तीसरी रेखा को शील गुण स्वरूपा रेखा, इन तीनों रेखाओं से अलग ऊपर की चौथी रेखा को मल भाग्योदय कारक रेखा अथवा नर रेखा कहते हैं। मणिबन्ध से निकलकर अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य गयी हुई रेखा को गोत्र रेखा व पितृरेखा, उसके ऊपर की दूसरी रेखा को धन रेखा, उसके ऊपर की आयुष्य रेखा कहते हैं यह रेखायें सम्पूर्ण दोषों से रहित हो तो उनके क्रमश: गोत्र, धन, आयु सभी उत्तम प्रकार के हैं ऊपर की ओर गयी हुई तीन रेखा (तर्जनी अनामिका, कनिष्ठिका अथवा मध्यमा) अनामिका, कनिष्ठिका गई हो, (१. भाग्य रेखा, २. सूर्य रेखा, ३. स्वास्थ्य रेखा हो तो वह अनेक प्रकार के भोग तथा सुख भोगने वाला श्रीमान् होता है। इन रेखाओं के अलावा चौथी अन्य उर्ध्व रेखा मणिबंध से निकलकर मध्यमा अंगुली भूत तक(सहायक भाग्य रेखा, अशवा) दुहरी भाग्य रेखा) जिस स्त्री अथवा पुरुष के पैर अथवा हाथ में गई हो वह राज्य सुख प्राप्त करने वाला भाग्यवान होता है। कनिष्ठका अंगुली के मूल भाग के नीचे से उदय होकर मध्यमा तर्जनी के मध्य भाग तक रेखा (हृदय रेखा) गई हो वह सौ वर्ष की दीर्घायु प्राप्त कराती है, इस प्रमाण से जितनी कम और अधिक रेखायें हों उतनी

परम आयु प्रमाण से कम और अधिक आयु होती है। अनामिका के मूल से उत्पन्न होकर मणिबंध की तरफ जाने वाली रेखा को पुण्य रेखा, विद्या रेखा कहते हैं जिसके हाथ में यह रेखा (सूर्य रेखा) होती है तो वह पुरुष पुण्यवान् होता है। बहुत रेखा क्लेश, कम रेखायें धन हानिकारक हैं चार रेखायें पितृ, धन आयु भाग्य, सुख कारक हैं, इनसे कम रेखाओं का होना धन को हानिकारक है। इस प्रकार की सात प्रमुख रेखायें हैं।

१. जीवन रेखा, (Life Line)

२. मस्तष्क रेखा, मातृ रेखा, (Head Line)

३. हृदय रेखा, (Heart Line)

४. भाग्य रेखा, (Fate Line.)

५. स्वास्थ्य रेखा, (Health Line.)

६. सूर्य रेखा (Sun Line.)

७. विवाह रेखा (Line of Marrige.)

इन रेखाओं के अतिरिक्त कुछ रेखायें और होती हैं, उनका भी यहां वर्णन किया जायेगा।

१. मणिबन्ध की रेखायें

२. सन्तान रेखा

३. चन्द्र रेखा

४. मंगल रेखा

५. अन्य सहायक रेखायें

६. शुक्र की मुद्रिका

७. गुरु की मुद्रिका

८. शनि की मुद्रिका

हाथ की प्रमुख रेखायें

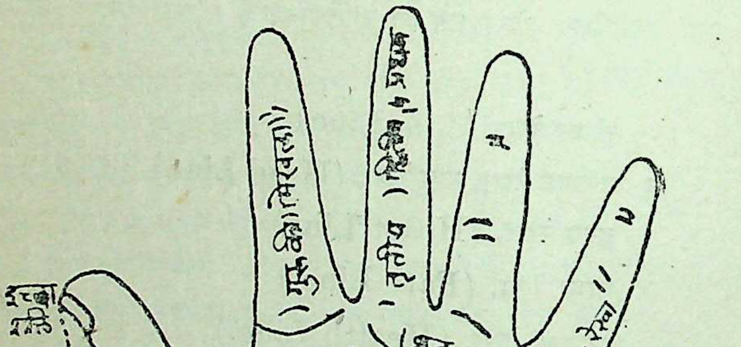
इच्छा शक्ति
तर्क शक्ति
संतान रेखा
मंगल रेखा
जीवन रेखा
भाग्य रेखा
शुक्र
हृदय रेखा
विवाह या प्रेम रेखा
भाई बहिन रेखा
मणिबन्ध रेखा

१. जीवन रेखा (LIFE LINE)

अंगुष्ठ के ऊपर तर्जनी के मध्य के पर्वत से पितृ तीर्थ से निकल कर शुक्र के क्षेत्र को घेरती हुई मणिबंध केतु के पर्वत पर जाकर समाप्त होती है इसकी आयु रेखा, गोत्र रेखा, प्रगूढ रेखा, जीवन अमृत रेखा कहते हैं, इससे जन्म काल, संवत् पक्ष, जीवन के शुभा-शुभ फल तथा आयु का ज्ञान होता है। इसके ग्यारह भेद हैं।

रेखा प्रगूढ़ा यदि पूर्णा देहातसंस्थिता वायदिरेखि काभि।
तामेव प्राहु: विबुधास्तदानिं सगुढ़ देहाच विगूढ़ देहा ।। १ ।।
शिलष्टायदासायम वाम भागे मध्य प्रदेशे स्वसमान काभि।
क्रमेण गौरिंच रमां वदन्ति तामेव सामुद्रिक जासंज्ञा ।। २ ।।
समान जातीय समान देशेऽगुष्टस्य विश्राम प्रदेश भागे।
मुखं स्मृतं तत्पर मत्रपाद प्रदेश भागं गदित: मुनीदै ।। ३ ।।
रेखा प्रगुढ़ा यदि दाद देशे संयुक्ता देहा किल रेखायाच।
तदा प्रदिष्टा पर गुर देहा मुख स्थले चापिनी गूढ़ देहा ।। ४ ।।
सगूढ़ देहाच विगूढ़ देहा योगं समाप्नोति तदाति लक्ष्मी।
गोरी रमा योग यथापि तद्वत् संज्ञा समाप्नोति मुनि प्रदिष्टा ।। ५ ।।
निगूढ़ देहा परगूढ देहा योगं तदा वै प्रदवन्ति धिरा:।
स्वरूपदां जातक शालिनोपि सामुद्रिकास्तां सूख भोग दात्रि ।। ६ ।।
खंड देहा मध्य रेखा प्रोक्ता क्रमेणा च कुबुद्धि कारिणी।
चाथ सर्व सौख्य विनाशिनी ।। ७ ।।
तिल संयुक्त वदना तिल संयुक्त पादका; रेखा।
प्रगूढ़ नामा वै संस्मृता गज रेखिको ।। ८ ।।

१. **संगूढ़ रेखा:**—जीवन रेखा अच्छी, मोटी, अखण्ड हो इसमें कोई अन्य रेखा न मिल रही हो तो इसे संगूढ़ रेखा कहते हैं।

२. **विगूढ़ देहा रेखा:**—जीवन रेखा सीधी सुन्दर तथा लम्बी हो तो ऐसी रेखा को विगूढ़ देहा रेखा कहते हैं।

३. **गोरी रेखा:**—जीवन रेखा मध्य भाग से दक्षिण भाग केतु के पर्वत की ओर उठी हो तो ऐसी रेखा को गोरी रेखा कहते हैं ।

४. **रमा रेखा:**—जीवन रेखा मध्यमा से वाम भाग की ओर उठी हुई हो तो ऐसी रेखा को रमा रेखा कहते हैं ।

५. **परगूढ़ देहा रेखा:**—जीवन रेखा मणिबंध के पास जाकर समाप्त हो रही हो और उसी स्थान पर किसी अन्य रेखा से मिल रही हो तो ऐसी रेखा को परगूढ़ देहा रेखा कहते हैं ।

६. **निगूढ़ देहा रेखा:**—जीवन रेखा अपने उद्गम स्थान पर (पितृ तीर्थ) किसी अन्य रेखा से मिल रही हो तो ऐसी रेखा को निगूढ़ देहा रेखा कहते हैं ।

७. **लक्ष्मी रेखा:**—जीवन रेखा में संगूढ़ देहा (मोटी अखंड हो) निगूढ़ देहा (सीधी सुन्दर लम्बी) के लक्षण मिलते हों तो ऐसी रेखा को लक्ष्मी रेखा कहते हैं ।

८. **भोग दात्री रेखा:**—जीवन रेखा में परगूढ़ देहा और निगूढ़ देहा रेखा के लक्षण मिलते हों तो ऐसी रेखा को भोग दात्री रेखा अथवा स्वरूपदा कहते हैं ।

९. **कुबुद्धीकारिणी रेखा:**—जीवन रेखा किसी भी स्थान पर टूट रही हो तो ऐसी रेखा को कुबुद्धिकारिणी रेखा कहते हैं ।

१०. **सर्व सौख्य नाशिनी रेखा:**—जीवन रेखा अपने मध्य भाग में दिखाई देती है । मंगल के पर्वत उदगम स्थान तथा मणिबन्ध के पास दिखाई न देती हो तो ऐसी रेखा को सर्व सौख्य नाशिनी रेखा कहते हैं ।

११. **गज रेखा:**—जीवन रेखा के प्रारम्भ और अन्त के स्थान पर अथवा किसी एक या दोनों स्थानों पर काला बिन्दु अथवा तिल का चिन्ह हो तो ऐसी रेखा को गज रेखा कहते हैं ।

मस्तष्क रेखा (HEAD LINE)

मंगल द्वितीय पर्वत से प्रारम्भ होकर हाथ के मध्य भाग से होती हुई जीवन रेखा के ऊपर होकर चन्द्र के पर्वत पर जो रेखा जाती है उसको मस्तष्क रेखा कहते हैं। इसको विभव रेखा, धन रेखा, मातृ रेखा व्याघ्र विलास लीला रेखा भी कहते हैं, यह मनुष्य की मानसिक शक्ति तथा जन्म मास आदि की सूचना दिया करती है। इसके अठारह भेद होते हैं।

अथ प्रवक्ष्यामितत: परां वैरेखाँ सदा व्याघ्र विलास लीलां।
प्रगूढ़ रेखा क्रम भाग-भेद पाश्चित्य नामानि फल निचाग्रे ॥ १ ॥
रखा यदा व्याघ्र विलास नाम्नि सम्पूर्ण देहा गदितात दासौ।
पाद प्रदेशे कुमुखी निरूक्ता मुखे स्थले कृष्णाक प्रचादिष्टा ॥ ३ ॥
मृगा गृति: शिलष्ट व पुश्चनागी वराटिका श्लिष्ट तनुर्य मांगे ॥२ ॥
वाम प्रदेशे यदि संश्चिता सुभद्र देहां गदिता सुधीभि।
मृगि गति भुंजग प्रिया सुयोग माप्नुयात्तदा बुधै।
निगद्यतेज सैष यांशुलाव्हयां ॥ ४ ॥
वाटिका याश्च सुभद्रदेहा योगे विराट् भूति रसौ निरूक्ता।
भोगेथ प्रोक्ता कुमुखी सुनील शीरोरूहा याविबुधै रंनता ॥ ५ ॥
मुखेतु खंडा खलुपाद खंडा मध्येच खंडा गदिता क्रमेण।
बसुंधराभ्रतिमति सुशीलवती च: योगेस्त्रिणां निकृष्टा ॥ ६ ॥
तिलेन संयुक्त मुखी सरोजवती तिल प्रोत पदा तुरंगी।
तिलेन संपश्लिष्ट सम प्रदेशा मातंगिका सांयुजिसार्व भौमी ॥ ७ ॥

१. **मृगी गति रेखा:**—मस्तष्क रेखा संपूर्ण देह युक्त अर्थात् टुटी हुई न हो तो उसे मृगीगति रेखा कहते हैं।

२. **नागी रेखा:**—मस्तष्क रेखा सरल, और सुन्दर हो तो उसे नागी रेखा कहते हैं।

३. **वराटिका रेखा:**—मस्तष्क रेखा अपने दक्षिण भाग में उठी हो तो उसे वराटिका रेखा कहते हैं।

४. **समुद्र देहा रेखा:**—मस्तष्क रेखा अपने वाम भाग की ओर झुकी हो तो उसे समुद्र देहा रेखा कहते हैं।

५. **कुमुखी रेखा**—मस्तष्क रेखा अपने अन्त स्थान पर किसी अन्य रेखा से संयोग करती है तो उसे कुमुखी रेखा कहते हैं।

६. **कृष्ण कचा रेखा:**—मस्तष्क रेखा अपने उदगम स्थान पर किसी अन्य रेखा से मिलती है अथवा कोई अन्य रेखा मस्तष्क रेखा में मिलती हो तो उसे कृष्णकचा रेखा कहते हैं।

७. **पाँसुला रेखा:**—मृगा गति और नागी दोनों ही रेखाओं के लक्षण मस्तष्क रेखा में मिलते हों तो उसे पांसुला रेखा कहते हैं।

८. **विराट् विभूत रेखा:**—मस्तष्क रेखा में वराटिका और समुद्र देहा दोनों ही रेखाओं के लक्षण मिलते हों तो उसे विराट् विभूत रेखा कहते हैं।

९. **अनंता रेखा**—मस्तष्क रेखा में यदि कुमुखी और कृष्णकचा दोनों ही रेखाओं के लक्षण मिलते हों तो उसको अनंता रेखा कहते हैं।

१०. **वसुन्धरा रेखा**—मस्तष्क रेखा मुख्य स्थान पर खण्डित हों तो उसे वसुन्धरा रेखा कहते हैं।

११. **भ्रांति मति रेखा**—मस्तष्क रेखा अपने अन्तिम भाग में हो तो उसे भ्रांति मति रेखा कहते हैं।

१२. **निकृष्टा रेखा**—मस्तष्क रेखा अपने उदगम स्थान तथा अन्तिम स्थान दोनों ही जगह खण्डित हों तो उसे निकृष्टा रेखा कहते हैं।

१३. **सुशीलवती रेखा**—मस्तष्क रेखा मध्य में खण्डित हो तो उसे सुशीलवती रेखा कहते हैं।

१४. **सरोजवती रेखा**—मस्तष्क रेखा पर, मंगल के पर्वत पर, रेखा के उदगम स्थान पर तिल हो तो उसे सरोजवती रेखा कहते हैं।

१५. **तुरंगा रेखा**—मस्तष्क रेखा पर चन्द्र के पर्वत के ऊपर मस्तष्क रेखा के अन्त में तिल हों तो उसे तुरंगा रेखा कहते हैं।

१६. **मातंगी रेखा**—मस्तष्क रेखा के मध्य स्थान में तिल का चिन्ह हो तो उसे मातंगी रेखा कहते हैं।

१७. **सांयुजी रेखा**—मस्तष्क रेखा के आदि मध्य अन्त तीनों ही स्थानों में तिल का चिन्ह हो तो उसे सांयुजी रेखा कहते हैं।

१८. **सर्वभौमी रेखा**—सुन्दर लक्षण युक्त मस्तष्क रेखा हो तो उसे सर्व भौमी रेखा कहते हैं।

३. हृदय रेखा (HEART LNE)

बुध के पर्वत कनिष्ठका अंगुली के नीचे से निकल कर मस्तष्क रेखा के ऊपर होकर गुरु के पर्वत तर्जनी अंगुली तक जीवन रेखा और मस्तष्क रेखा के उदगम स्थान की ओर जो रेखा जाती है उसको हृदय रेखा, अंतः करण रेखा, आयु रेखा गुण शील स्वरूपा रेखा कहते हैं, इस रेखा से मानव गुण शील, प्रेम, व्यभिचार दुर्व्यसन, जन्म समय व तिथि का पता चलता है। इस रेखा के सोलह भेद होते हैं।

रेखा यदा शील गुण स्वरूपा सम्पूर्ण देहा जगती निरिक्ता।
संश्लिष्ट देहा कथिता कुमारी घृति निरुक्ता चय मांग मिश्रा ॥१॥
वामां भागे यदि रेखिका भिसं श्लिस्ट मूर्ति रमणो तथैव।
पाद स्थले सात्रिपदी निरुक्ता मुख्यस्य देशे खलु दास वीसा ॥ २॥

जगति कुमार्यो योगे कथित शील गुण स्वरूपा।
रेखा वैश्व देवी तिवि बुधैः सामुद्रिक मिश्र जाति ज्ञै ॥ ३ ॥
घृति नाम्न्यास्त्वथरमण्या संयोगे रेखा नाम प्रोक्तः।
तज्ज्ञै गांधारीति त्रिपदि वास व्यायोगे चंपक माला ॥ ४ ॥
वदन प्रदेशे उदरे पाद देशे खंडिता शील गुण स्वरूपाया।
दारिद्रा कुग्रहणी चपल घदना क्रमेष सैव फलदा ॥ ५ ॥

तिलकांकित वदना वति लेन संयुक्त मध्य प्रदेशा वाप दास्या ।
तदा सौ शील गुणा स्वरूपानिगदिता सामुद्रिक जात विद्धि।। ६।।
सेना नित्य प्रदात्री महाराज्य दात्री तद्वत्सौराज्य पद ।
दात्री च संयोगे साम्राज्य प्रदारेखा ।।७।।
प्रगुढ़ रेखा त्वथ व्याघ्र बिलासलीला तथा शील गुणा स्वरूपा ।
आसां प्रभेदानी समासतोवैज्ञेयानी विद्वाद्भि रिमा नितून ।।८।।
प्रगुढ़ रेखाया प्रोक्ता तस्या: शाक स्तथा गुरुत् ।
मासा व्याघ्र विलास सिन्या तिथि रिष्टं तथांत्यत ।।९।।

१. **जगती रेखा**—हृदय रेखा (शील गुण स्वरूपा) सम्पूर्ण देह युक्त अखण्ड सुन्दर तथा मोटी हो तो उसे जगती रेखा कहते हैं ।

२. **कुमारी रेखा**—हृदय रेखा सरल और सुन्दर हो तो उसे कुमारी रेखा कहते हैं ।

३. **धृति रेखा**—हृदय रेखा ऊपर कीं ओर गुरु, शनि के पर्वतों के ऊपर ऊंची तथा उठी हो तो उसे धृति रेखा कहते हैं ।

४. **रमणी रेखा**—हृदय रेखा मस्तष्क रेखा की ओर झुकी हो तो उसे रमणी रेखा कहते हैं ।

५. **त्रिपदी रेखा**—हृदय रेखा अपने समाप्ति स्थान (गुरु के पर्वत पर) किसी अन्य रेखा से मिल रही हो तो ऐसी रेखा को त्रिपदी रेखा कहते हैं ।

६. **वासवी रेखा**—अपने उदगम स्थान (मुख स्थान बुध के पर्वत के नीचे, कनिष्ठिका के मूल में) हृदय रेखा से कोई अन्य रेखा मिल रही हो तो उसे वासवी रेखा कहते हैं ।

७. **वैश्वी देवी रेखा**—हृदय रेखा में जगती और कुमारी दोनों रेखाओं के लक्षण हों तो ऐसी रेखा को वैश्वी देवी रेखा कहते हैं ।

८. **गांधारी रेखा**—हृदय रेखा धृति और रमणी रेखाओं के लक्षण से युक्त हो अर्थात उद्गम स्थान आधी रेखा तक ऊंची उठी हो और नीचे की ओर झुक रही हो तो ऐसी रेखा को गांधारी रेखा कहते हैं ।

९. **चम्पक माला रेखा**—हृदय रेखा त्रिपदी रेखा और वासवी रेखा के लक्षणों से युक्त हो तो उसे चम्पक माला रेखा कहते हैं।

१०. **दारिद्रदा रेखा**—हृदय रेखा अपने उद्‌गम स्थान पर (गुरु के पर्वत, कनिष्ठका अंगुली के नीचे) खण्डित हो तो उसे दरिद्रदा रेखा कहते हैं।

११. **कुग्रहणी**—हृदय रेखा बीच में टूटी हो तो उसे कुग्रहणी रेखा कहते हैं।

१२. **चपलवदना रेखा**—हृदय रेखा अपने अन्तिम स्थान पैरों में (तर्जनी अंगुली गुरु के पर्वत के नीचे) टूटी हो तो उसे चपलवदना रेखा कहते हैं।

१३. **सेनानित्व संप्रदात्री रेखा**—हृदय रेखा के उद्‌गम स्थान पर तिल वा चिन्ह हो तो उसे सेनानित्व संप्रदात्री रेखा कहते हैं।

१४. **महाराज्यप्रदात्री रेखा**—हृदय रेखा अपने मध्य स्थान में तिल के चिह्न युक्त हो तो उसे महाराज्यप्रदात्री रेखा कहतें हैं।

१५. **सौराज्य पदयात्री रेखा**—हृदय रेखा अपने अन्तिम स्थान में तिल के चिह्न युक्त हो तो उसे सौराज्य पदयात्री रेखा कहते हैं।

१६. **साम्राज्यप्रदा रेखा**—हृदय रेखा में यदि मध्य अन्त तीनों ही स्थानों में तिल के चिह्न हों तो ऐसी हृदय रेखा को साम्राज्यप्रदा रेखा कहते हैं।

इस रेखा के द्वारा जन्म तिथी, जन्म समय का ज्ञान होता है।

४. भाग्य रेखा

मणिबंध (केतु के पर्वत) अथवा उसके आस-पास से निकलकर ऊपर की ओर सीधी मध्यमा उंगली की जड़ में जाकर मिलती है, इस रेखा को भाग्य रेखा, इन्द्र रेखा, उर्ध्व रेखा, धन रेखा, प्रारब्ध रेखा, राज्य सुख प्रदात्री रेखा आदि नाम से पुकारते हैं।

इस रेखा से राज्य सुख विद्या, धन, मान ऐश्वर्य, भाग्योदय का ज्ञान होता है, यह रेखा हाथ में यदि छोटी भी हो तो सदा सुख और शुभ फल प्रदान करने वाली होती है।

अणु रूपायदा रेखा पुर्पोक्ता सपि भोगकृत्।
किं पुनः सर्व देहाढचा नद रेखो महत्फला ॥१॥
असंकीर्णा यदा रेखा सा प्रोक्ता च महानदी।
तस्याफलं महा प्रोक्तं बुधैं जतिक कोविदै ॥२॥
संकीर्णा च यदा सास्याद्रेखा वैंनदनाना भाक्।
तदासा कुरु नेनृणां महाराज प्रदा शुभा ॥३॥
नद रेखा महाभाग्यं कुरुते सर्व संपदं।
महानदी च या रेखा साकुयित्क्षिति पंनंर ॥४॥
संकीर्णा पद रेखा वैं साम्राज्य कुरुते चनुः।
यदा सतिल संयुक्ता जायते नद रेखिका ॥५॥
स्वराज्य भाजं कुरुते नरं भाग्याधिकं सदा।
नदारव्या रेखिकापुभिः सुलभा पूर्व सञ्चितैः ॥६॥

१. **भोगकारक रेखा**—भाग्य रेखा छोटी हो तो उसे महाभोग कारक रेखा कहते हैं।

२. **महत्फलदायिनी रेखा**—भाग्य रेखा लम्बी अच्छी और अखण्ड हो तो उसे महात्फलदायिनी रेखा कहते हैं।

३. **महानदी रेखा**—भाग्य रेखा सुन्दर अच्छी चौड़ी और मोटी हो तो उसे महानदी रेखा कहते हैं।

४. **महाराज्यप्रद रेखा**—भाग्य रेखा पतली सुकड़ी हुई संकीर्ण हो तो उसे महाराज्य प्रद रेखा कहते हैं।

५. **स्वराज्य भोगदायिनी रेखा**—भाग्य रेखा संकीर्ण और पतली तिल के चिन्ह युक्त हो तो ऐसी रेखा को स्वराज्य भोगदायिनी रेखा कहते हैं।

भाग्य रेखा के पांच भाग और होते हैं।

१. छोटी भाग्य रेखा

२. बड़ी भाग्य रेखा

३. पतली भाग्य रेखा

४. मोटी भाग्य रेखा

५. चिह्न युक्त भाग्य रेखा

भाग्य रेखा के उद्गम स्थान से समाप्ति के स्थान पर जाने के भी पांच भाग हैं—

१. अंगुष्ठ २. तर्जनी अंगुली ३. मध्यमा अंगुली ४. अनामिका अंगुली ५. कनिष्ठका अंगुली। इस प्रकार यह पांच प्रकार के भेद अन्य हैं।

१. अंगुष्ठ मूल्य भाग्य रेखा (शुक्र भाग्य रेखा)

२. तर्जनी मूल भाग्य रेखा (गुरु भाग्य रेखा

३. मध्यमा मूल भाग्य रेखा (शनि भाग्य रेखा)

४. अनामिका मूल भाग्य रेखा (सूर्य भाग्य रेखा)

५. कनिष्ठिका मूल भाग्य रेखा (बुध भाग्य रेखा)

स्वास्थ्य रेखा (Health Line)

इस रेखा के प्रारम्भ होने के स्थान के विषय में विद्वानों में मतभेद हैं। कुछ का कहना है कि यह रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर बुध के पर्वत की ओर चलती है और इस विषय में कीरो का मत है—

The line of health begins under the little finger and goesdown the palm towards the line of life. "Cheiro"

अर्थात स्वास्थ्य रेखा हाथ की छोटी अंगुली के नीचे से प्रारम्भ होती है और हथेली के नीचे की ओर जीवन रेखा की ओर जाती है।

कुछ का मत है शुक्र के स्थान के नीचे से स्वास्थ्य रेखा प्रारम्भ होती है। इस रेखा को बुध रेखा, आरोग्य रेखा, स्वास्थ्य रेखा कहते हैं।

सूर्य रेखा (Sun Line)

इस रेखा को भाग्योदय रेखा, प्रकाश रेखा, बल प्रदायनी रेखा, सूर्य रेखा कहते हैं, हाथ में यह निम्न स्थान से प्रारम्भ होती है।

१. मणिबन्ध केतु के पर्वत या उसके पास से
२. चन्द्रमा के पर्व से प्रारम्भ होकर सूर्य की अंगुली या सूर्य के पर्वत की ओर को
३. जीवन रेखा से
४. भाग्य रेखा से
५. राहु के पर्वत अथवा हथेली के मध्य भाग से
६. मस्तष्क रेखा को स्पर्श करती हुई सूर्य के पर्वत को
७. हृदय रेखा से स्पर्श करती हुई सूर्य के पर्वत को

विवाह रेखा (Marriage Line)

कनिष्ठका अंगुली के नीचे, हृदय रेखा के ऊपर कुछ छोटी-छोटी परन्तु गहरी और स्पष्ट रेखाएं बुध के पर्वत की ओर जाती हैं। यह रेखा एक अथवा एक से अधिक भी हो सकती हैं, इन्हीं रेखाओं को विवाह रेखा, पत्नी रेखा, प्रेम रेखा भी कहते हैं।

सन्तान रेखा

यह रेखा पुरुष के हाथ में कम तथा स्त्रियों के हाथ में अधिक होती है, बुध के पर्वत पर विवाह रेखा के मध्य अथवा सिर के भाग से कनिष्ठका की ओर जाने वाली छोटी रेखा ही संतान रेखा है।

चन्द्र रेखा

चन्द्र के पर्वत से प्रारम्भ होकर बुध के पर्वत की ओर जाने वाली रेखा को चन्द्र रेखा कहते हैं। इसको देव रेखा, ज्योतिष रेखा, समुद्र रेखा भी कहते हैं।

मंगल रेखा

यह रेखा मंगल के द्वितीय अथवा प्रथम पर्व से प्रारम्भ होती है, मंगल रेखा जीवन रेखा के बराबर चलती है तो इसे जीवन रेखा की सहायक रेखा कहते हैं।

गुरु की मुद्रिका

तर्जनी गुरु की अंगुली के नीचे गुरु के पर्वत को गोलाकार अवस्था में जो रेखा घेरती है उसे गुरु की मुद्रिका कहते हैं।

शुक्र की मुद्रिका

मध्यमा व तर्जनी अंगुली से प्रारम्भ होकर अनामिका और कनिष्ठिका का अंगुली के मध्य तक धनुषाकृति में जो रेखा होती है उसे शुक्र की मुद्रिका कहते हैं।

शनि की मुद्रिका

मध्यमा शनि की अंगुली के नीचे शनि के पर्वत को गोलाकार अवस्था में घेरती है उसे शनि की मुद्रिका कहते हैं।

रेखाओं का रंग विचार

हाथ की रेखाओं को यदि ध्यानपूर्वक देखा जाये तो वह किसी न किसी रंग की अवश्य दिखाई देती हैं। इसे रंग भेद के हिसाब से पूर्व आचार्यों ने ६ भाग किये हैं।

मधुपिंगाभः सुखिनः शोणभिः स्तयागिनो गभीराः स्युः ॥
विवर्णा स्फुठिता कृष्ण नीलास्तन्व्याश्चनोत्तमा ॥१॥
रक्ताभि श्रित माप्नोति कृष्णाभि प्रेष्यतां व्रजेत् ॥२॥

१. **मधु**—रेखाओं का रंग शहद के रंग के समान हो तो ऐसे जातक विद्वान और सुखी रहा करते हैं।

२. **लाल**—रेखाओं का रंग लाल हो तो ऐसा जातक फुर्तीला शीघ्र आवेश में आने वाला एवं दान-दाता होता है।

३. **धुंधला (वर्ण रहित)**—रेखाओं का रंग कोई न हो, निस्तेज हो धुंधली हो तो ऐसे जातक चालाक होते हैं, यह जातक बे-हिम्मती व नामर्द होते हैं, इनके हाथ पैर एकदम फूल जाते हैं। यह कभी भी धनवान नहीं हो पाते हैं, यही इनका प्रमुख लक्षण है।

४. **काला**—रेखाओं का रंग काला हो तो ऐसी रेखा वाला जातक मूर्ख, कलहप्रिय तथा दुःखमय जीवन व्यतीत करता है।

५. **नीला**—रेखाओं का रंग यदि नीला हो तो ऐसी रेखा वाला जातक धूर्त, पाखण्डी, दम्भी तथा दुःख पूर्ण जीवन व्यतीत करता है।

६. **पीला**—रेखाओं का रंग यदि पीला हो तो ऐसा जातक अभिमानी, क्रोधी तथा गम्भीर रहने वाला होता है।

रेखाओं के रंग के बाद अब उनकी बनावट के अनुसार भेद कहेगे।

रेखाओं की बनावट के अनुसार उनका नामकर्ण संस्कार कर उसका प्रथक् २ वर्णन करेंगे।

स्निग्धा निम्ना रेखा धनिनां तव्य त्यये ननि निःखानां।
त्यागा यस्या पिगभीरा सौख्याय मधु पिंगला ॥१॥
सूक्ष्माश्रिये भने त्युसां सौभाग्याय समूलिका।
छिन्ना सपल्लवा सूक्ष्मा विषमा स्थानकच्युता ॥२॥
विवर्णा स्फुटिता कृष्ण नीला स्तन्व्याश्च नोत्तमा।
रक्ता व्यक्ता गंभीर च स्निग्धा पूर्णा च वर्तुला ॥३॥
कर रेखांगना यास्याच्छुभा भाग्या नुसारतः।
क्लेशं स पल्लवा रेखा विछिन्न वित्त संशया ॥४॥
कदन्नं पुरुषा द्रव्य, विनाशं विषमार्पयेत।
मणि बन्धोन्मुखा वृद्धयै विपदों गुष्ट से मुखा ॥५॥

१. **चमकदार रेखा**—जो रेखायें चिकनाई लिए हुये हों तो उसे चमकदार रेखा कहते हैं ऐसा जातक धनवान होता है।

२. **निम्ना रेखा**—जो रेखायें नीचे दबी हों, साफ हों, उभार कम हो तो उसे निम्न रेखा कहते हैं ऐसी रेखा वाला जातक सम्पत्तिवान होता है।

३. **रुखी रेखा**—जो रेखायें कम साफ हों रुखी हों उन्हें रुखी रेखा कहते हैं और ऐसी रेखा वाला जातक धनहीन होता है।

४. **अरिम्ना रेखा**—जो रेखा रुखी हो, फैल रही हो दबी न हो तो ऐसी रेखा वाला जातक गरीब रहता है।

५. **गहरी रेखा**—जो रेखा साफ और गहरी हो उसे गहरी रेखा कहते हैं ऐसी रेखा वाला जातक भाग्यवान तथा दानदाता होता है।

६. पतली **रेखा**—जो रेखा साफ हो और पतली हो तो ऐसी रेखा वाला जातक लक्ष्मीवान होता है।

७. **समूलका रेखा** —जो रेखा अपने उद्गम स्थान पर दोनों ओर शाखाओं युक्त हो, मूल सहित हो उसे समूलिका रेखा कहते हैं ऐसी रेखा वाला जातक भाग्यवान होता है।

८. **छिन्ना रेखा**—जो रेखा जगह २ टूट रही हो ऐसी रेखा को छिन्ना रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाले जातक की आयु तथा धन क्षय हुआ करता है।

९. **सूक्ष्य सपल्लवा** रेखा—जिस रेखा में से छोटी २ अन्य शाखा निकल रही हो ऐसी रेखा को सूक्ष्म सपल्लवा रेखा कहते हैं। ऐसी रेखा वाला जातक क्लेशमय जीवन व्यतीत करता है।

१०. **विषमा रेखा**—जो रेखा एक सी न हो कहीं पर पतली और किसी स्थान पर मोटी हो तो उनको विषम रेखा कहते हैं। ऐसी रेखा वाला जातक द्रव्य की कमी हर समय सहन करता है, यह द्रव्य नाश है।

११. **स्थानच्युता रेखा**—जो रेखा अपने को त्याग कर अन्य स्थान

गरपई हो ऐसी रेखा को स्थानच्युता रेखा कहते हैं। ऐसी रेखा वाले जातक की आयु तथा धन क्षय होता है, यह श्रेष्ठ नहीं है।

१२. **स्फुटिता रेखा**—जो रेखा स्थान २ पर फूट रही हो उसे स्फुटित रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाला जातक रोगी तथा नाना प्रकार की चिन्ताओं से घिरा रहता है।

१३. **कदन्नभ रेखा**—जो रेखा अपने प्रमाण के अनुसार न हो वह कदन्नभ क्षण रेखा होती है, यह आयु की हानि करती है, ऐसी रेखा वाले जातक यकायक ही जीवन समाप्ति कर लेते हैं। उनका जीवन बहुत ही कम होता है।

१४. **शुभफल रेखा**—जो रेखा स्पष्ट हो, सुन्दर हो. सम्पूर्ण गहरी तथा गोल दिखाई देती हो तो उसे शुभफल प्रदा रेखा कहते हैं। ऐसी रेखा वाला जातक धन, यश का लाभ करता है।

रेखाओं से शाखा निकल कर मणिवन्ध अथवा नीचे की ओर जाने वह शुभ मानी जाती है, और जिन रेखाओं में शाखा निकल कर ऊपर की ओर जावे अथवा अंगूठें की ओर जावे वे अशुभ फल देने वाली होती हैं और उन रेखाओं को अशुभ माना जाता है।

रेखाओं के निर्माण फैलाव तथा रेखाओं के सम्बन्ध के कारण रेखाओं का एक नवीन रूप निर्माण हो जाता है, इस प्रकार उस निर्माण के १४ भेद और होते हैं।

१. स्निगधा, २. निम्न, ३. सक्षा, ४. आनिम्ना, ५. गम्भीरा, ६. सूक्ष्मा, ७. समूलिका, ८. छिन्ना, ९. सपल्लवा, १०. स्थानच्युता, ११. विषमा, १२. स्फुटिता, १३. तन्वी छोटी, १४. व्यक्ता पूर्ण गम्भीर।

रेखाओं का फल निम्न प्रकार होता है।

१. **स्निगधा**—यह रेखा दबी हो या चिकनाई लिये होगी तो ऐसी

रेखा को स्निग्धा रेखा कहते हैं और ऐसी रेखा वाला जातक धनवान, यशवान हुआ करता है।

२. **निम्ना रेखा**—निम्न रेखा कुछ कम चमकदार और कुछ कम दबी हुई होती है और ऐसी रेखा वाला जातक धनवान होता।

३. **रुक्षा रेखा**—रुक्षा रेखा चिकनी न होकर रूखी होती है और ऐसी रेखा वाला जातक धनहीन होता है।

४. **अनिम्ना रेखा**—जो रेखायें कुछ ऊपर उठी हों तथा रूखी प्रतीत हों तो वह अनिम्ना रेखा होती है ऐसी रेखा वाला जातक दरिद्री होता है।

५. **गंभीर रेखा**—जो रेखायें शुद्ध हों और गम्भीर हों उन्हें गम्भीर रेखा कहते हैं और ऐसी रेखा वाला जातक भाग्यवान तथा परोपकारी हुआ करता है।

६. **सूक्ष्मा रेखा**—जो रेखायें पतली हों उन्हें सूक्ष्मा रेखा कहते हैं ऐसी रेखा वाला जातक धनवान होता है भले ही उसका जन्म धनहीन घर मे ही क्यों न हुआ हो।

७. **समूलिका रेखा**—जिस रेखा के प्रारम्भ स्थान उदगम स्थान में मुख्य रेखा पर दोनों ओर कुछ छोटी २ रेखा हों तो उसे समूलिका रेखा कहते हैं और ऐसी रेखा वाले जातक यशवान तथा धनवान हुआ करते हैं।

८. **छिन्ना रेखा**—जो रेखा बीच में एक स्थान अथवा अनेक स्थान पर टूटी हो तो उसे छिन्ना रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाले जातक का धननाश, आयुक्षण तथा नाना प्रकार के संकटों से घिरा रहता है।

९. **सपल्लवा रेखा**—जिस रेखा के उदगम स्थान के बाद दोनों ओर शाखायें हों तो ऐसी रेखा को सपल्लवा रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाले जातक का समय नाना प्रकार के झगड़ों तथा कलह आदि में व्यतीत होता है।

१०. **विषमा रेखा**—रेखा किसी स्थान पर मोटी हो और किसी स्थान पर पतली हो, रेखा साफ और एक सी न हो तो ऐसी रेखा को विषमा रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाले जातक की बुद्धि भ्रम में रहा करती है। इस कारण धन का व्यय तथा कलह होती रहती है।

११. **स्थानाच्युता रेखा**—जो रेखा अपने उदगम स्थान से प्रारम्भ होकर किसी अन्य स्थान पर पहुँचे जो कि उसके पहुंचने का स्थान नहीं है तो ऐसी रेखा को स्थानच्युता रेखा कहते हैं, यह जातक को नाना प्रकार के कष्ट दिया करती है।

१२. **स्फुटिता रेखा**—रेखायें किसी २ स्थान पर दो भाग में बट जाती हैं अथवा फट रही हैं तो उसे स्फुटिता रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाले जातक पर अनेकों प्रकार की आपदायें आया करती हैं।

१३. **तन्वी रेखा**—जो रेखा प्रमाण से छोटी हो उसे तन्वी रेखा कहते हैं, यह रेखा के फल को भी बिगाड़ देती है, जो कि तन्वी रेखा से छोटी होती है। ऐसी रेखा वाले जातक हर समय संकट में रहा करते हैं।

१४. **व्यक्ता रेखा**—जो रेखा पूर्ण हो सुन्दर हो, गहरी हो उस रेंखा को पूर्ण रेखा कहते हैं, ऐसी रेखा वाला जातक नाना प्रकार के सुख भोगा करता है।

इन रेखाओं के भेद के अलावा छः भेद और होते हैं :

१. पंखदार रेखा।

२. जंजीराकृत रेखा।

३. बंद रेखा।

४. टापूदार रेखा।

५. शनि रेखा।

६. शुक्र रेखा।

१. पंखदार रेखा—रेखा में पंख के समान बनावट हो उसे पंखदार रेखा कहते हैं।

२. बन्द रेखा—जो रेखा ऊपर अथवा नीचे की ओर जा रही हो और उसको आड़ी रेखायें एक अथवा एक से अधिक संख्या में रोक रही हों तो ऐसी रेखाओं को बन्द रेखा कहते हैं।

३. जंजीराकृत रेखा—रेखा की आकृति जंजीर के समान हो अथवा यव माला युक्त रेखा हों उसको जंजीराकृत रेखा कहते हैं।

४. टापूदार रेखा—जब एक रेखा से एक शाखा निकलकर अन्य स्थान पर आये चलकर उसी रेखा में मिल जाती है तो ऐसी रेखा को टापूदार रेखा कहते हैं।

५. शुक्र रेखा—तर्जनी अथवा मध्यमा अंगुली के मध्यम से प्रारम्भ होकर सूर्य और बुध की अंगुली के मध्य तक अर्ध चंद्राकार रूप में जाती है उस रेखा को शुक्र रेखा अथवा शुक्र रेखा की मुद्रिका कहते हैं।

६. शनि रेखा—जो रेखा अर्ध चन्द्राकार शनि अंगुली के नीचे शनि के पर्वत को घेर रही हो उसे शनि रेखा अथवा शनि की मुद्रिका कहते हैं।

किसी रेखा पर अपने विचार प्रकट करने से पूर्व उसकी बनावट का ध्यान अवश्य रखना चाहिए अथवा इस बात की बहुत सम्भावना है कि आपके द्वारा बनाये जाने वाला फल असत्य होगा।

इस पुस्तक रेखा के सामान्य स्वरूप को ध्यान में रखकर ही फल लिखा जावेगा, हस्त परीक्षक हाथ बनावट रेखा की आकृति को ध्यान में रखकर फल कहें।

रेखाओं का परिणाम

रेखायें छोटी, लम्बी और समान होती हैं अतः उनका परिणाम का ज्ञान आवश्यक है।

रेखाओं से लोक तथा योनी की सूचना

रेखा	लोक	योनी	गुण	प्रकृति
जीवन रेखा	ऊर्ध्व लोक	पुरुष	सतो गुणी	वायु
मस्तष्क रेखा	मृत्यु लोक	स्त्री	रजो गुणी	अग्नि
हृदय रेखा	पाताल लोक	नपुंसक	तमो गुणी	जल

१. १४ यव के बराबर रेखा श्रेष्ठ होती है।

२. १२ यव के ऊपर हो अथवा बराबर हों तो ऐसी रेखा उत्तम होती है।

३. ६ से १२ यव तक रेखा मध्यम होती है।

४. ६ यव से रेखा कम हो वह निकृष्ठ होती है।

वर्षमान के हिसाब से एक यव की लम्बाई समय के १० वर्ष के बराबर होती है बड़ी रेखाओं का नाम अर्थात लम्बे यव छोटी रेखा का नाम छोटे यव से करना चाहिये।

रेखाओं द्वारा क्रमश नभचर, थलचर और जलचर की सूचना भी मिलती है।

हाथ से गमन और आगमन का भी विचार करना चाहिये। यदि जातक के बांये हाथ में जीवन रेखा साफ हो तो पितृलोक से आया है, यदि दाहिने हाथ में जीवन रेखा बाँये हाथ से अधिक साफ हो तो मृत्यु के उपरान्त पितृलोक में जावेगा।

—:•:—

सप्तम परिच्छेद

मणिबन्ध और उसकी रेखायें

हथेली या राहू के पर्वत से नीचे का भाग अथवा जहां से हाथ प्रारम्भ होता है, वह भाग मणिबन्ध, केतु का पर्वत अथवा कलाई नाम से पुकारा जाता है, यह हाथ का मुख्य तथा सर्व प्रथम भाग है। इस स्थान को सामुद्रिक शास्त्र में 'पूर्ण मूल' हाथ की जड़ या हाथ प्रारम्भ भी कहते हैं, और इस स्थान पर रहने वाली रेखाओं को मणिबन्ध की रेखा कहते हैं। मणिबन्ध के निम्न भेद हैं।

मणिबन्ध नैर्निगूढ़ै र्दृढैश्च सुश्लिष्टं सविभिर्भूयाः।
हीन हस्तच्छेदाः श्लथैः सशब्दैश्च निर्द्रव्याः॥ १॥
द्वाभ्यां च यवमालाभ्यां राजा मंत्री धनी बुधः।
एक यायव पंक्त याच श्रेष्ठा बहु धनो ज्झितः॥ २॥
मणिबन्धे यव श्रेष्य स्तिस्रश्चेत्स नृयो भवेत्।
यदिता पाणि पुष्टोपि ततोधिक तरं फल॥ ३॥

अन्यदीप

मणिबन्ध स्थिरेखस्तु मणिभूषण भाग्भवेत्।
साधारणों द्विरेखः स्यादक रेखस्तु भिक्षुकें॥ १॥
मणिबन्धे कंकणाख्या श्चतस्त्रो भोग लक्षण।
राज्ञातिस्त्रस्तु नारींषु काभिन्तां द्वितयंस्मृतं॥ २॥

१. **निगूढ़ मणिबन्ध**—मणिबन्ध के जोड़ न मालूम हो, ऐसे मणिबन्ध को निगूढ़ मणिबन्ध कहते हैं। ऐसे मणिबन्ध वाला जातक राजा होता है।

२. **दृढ़ मणिबन्ध**—मणिबन्ध दृढ़ पुष्ट हो ऐसे मणिबन्ध को दृढ़ मणिबन्ध कहते हैं, ऐसे मणिबन्ध वाला जातक भाग्यवान होता है।

३. **सुश्लिष्ट सन्धी मणिबन्ध**—मणिबन्ध उत्तम रीति से जुड़ा हुआ जिसके सन्धि स्थान मालूम न हो ऐसे मणिबन्ध को सुश्लिष्ट सन्धि मणिबन्ध कहते हैं ऐसे मणिबन्ध वाला जातक यशवान् तथा धनवान होता है।

४. **हीन मणिबन्ध**—मणिबन्ध देखने से ऐसा मालूम हो कि हाथ और कलाई के पास जो जोड़ है वह ढीला है ऐसे मणिबन्ध को हीन मणिबन्ध कहेते हैं, ऐसे मणिबन्ध वाला जातक धनहीन होता है।

५. **सिथिल मणिबन्ध**—मणिबन्ध सिथिल, कमजोर, ढीला, लटका हुआ दिखाई दे ऐसे मणिबन्ध को सिथिल मणिबन्ध कहते हैं, ऐसे जातक निर्धन तथा राजदण्ड के भागी होते हैं।

६. **सशद्ध मणिबन्ध**—मणिबन्ध असुन्दर कमजोर हो हाथ हिलाने में कुछ आवाज दे, हड्डी के जोड़ पुष्ट न हो तो ऐसे मणिबन्ध को सशद्ध मणिबन्ध कहते हैं ऐसे मणिबन्ध वाले जातक भाग्यहीन तथा दुर्घटनाओं के शिकार और कलहपूर्व जीवन व्यतीत करते हैं।

मणिबन्ध पर दो यव माला हों तो वह राजाराज्य मंत्री, एक यव माला हो तो धनवान, तीन हों तो राजा, यदि चार हों तो महाराजा होता है। राजा के हाथ तीन तथा स्त्री के हाथ में दो रेखाओं का होना उत्तम है।

सामुद्रतिलक का मत है।

रेखाभिः पूर्णाभिस्तिसृभिः कर मूल अंकित यस्यं।
धन काञ्चन रत्न युक्त श्री पति मित भर्जति लुब्ध च ॥१॥
त्रिपरिक्षेया व्यक्ता यवमाला भवति यस्य मणिवन्वे।
नियन्त महार्थ सहित स सर्व भोमो नराधि पति ॥२॥
करमूले यवमाला द्विपरिक्षेया मनोहरा यस्य।
मनुज स राज्य मंत्री विपुल मति जायंते स मतिवान् ॥३॥

सुभगक परिक्षेपा यवमाला यस्व पाणितये स्यात् ।
भवति धन धान्य युक्त श्रेष्ठोजन पूजितो मनुज ॥४॥

हाथ के मूल मणिबंध पर पूर्ण अखण्डित तीन रेखा हों ऐसा जातक धनधान्य रत्न से युक्त श्रीपति तथा यशवान होता है ॥१॥ यदि यह तीनों रेखा यवमाला की भांति जिसके मणिबन्ध पर हों तो ऐसा जातक राजा होता है ॥२॥ मणिवन्ध पर पूर्ण सुन्दर हो तो ऐसा जातक बुद्धिमान तथा राजमंत्री होता है, जिसके मणिबन्ध पर यवमाला हो तो वह जातक श्रेष्ठ और धन धान्य से युक्त रहता है।

विवेक विलास का मत है

मणि बन्धे यव श्रेयः तिस्त्रश्चेत् स नृपो भवेम् ।
यदि ताः पाणिः पृष्ठेऽपि ततोऽधिकतर फलम् ॥१॥

मणिबन्ध पर सुन्दर मोती की भांति (बराबर) की तीन यव माला हों वह राजा होता है, यदि यव माला कलाई से दूसरी हस्त पृष्ठ की ओर भी हो अर्थात हाथ के चारों ओर हो तो उसका फल और अधिक होता है।

भविष्य पुराण का मत है।

मणिबधोऽव्यवच्छिन्नो रेखात्रय विभूषितः ।
ददाति न चिरा देव मणिकाच्चन मण्डनम् ॥१॥

मणिबन्ध पर सुन्दर अछिन्न अर्थात टूटी हुई न हो, सम्पूर्ण हो ऐसी तीन रेखा हो तो ऐसे मणिबन्ध वाली स्त्री सौभाग्यशालिनी, विद्यवान होने वाली स्वर्ण तथा रत्न जड़ित आभूषण पहनने वाली होती है।

१. प्रथम रेखा आयु, धन यश का ज्ञान करती है।

२. दूसरी रेखा विद्या, शास्त्र, व्यापार का ज्ञान कराती है।

३. तीसरी रेखा धर्म भक्ति, सुख का ज्ञान कराती है। इसी रेखा के द्वारा स्त्रियों के हाथ में सौभाग्य तथा संतान सुख का ज्ञान होता है।

तथा स्त्रियों के हाथ में संतान सुख रेखा के नाम से पुकारी जाती है।
दे० चि० २

मणिबन्ध रेखा से आयु तथा भाग्योदय का ज्ञान

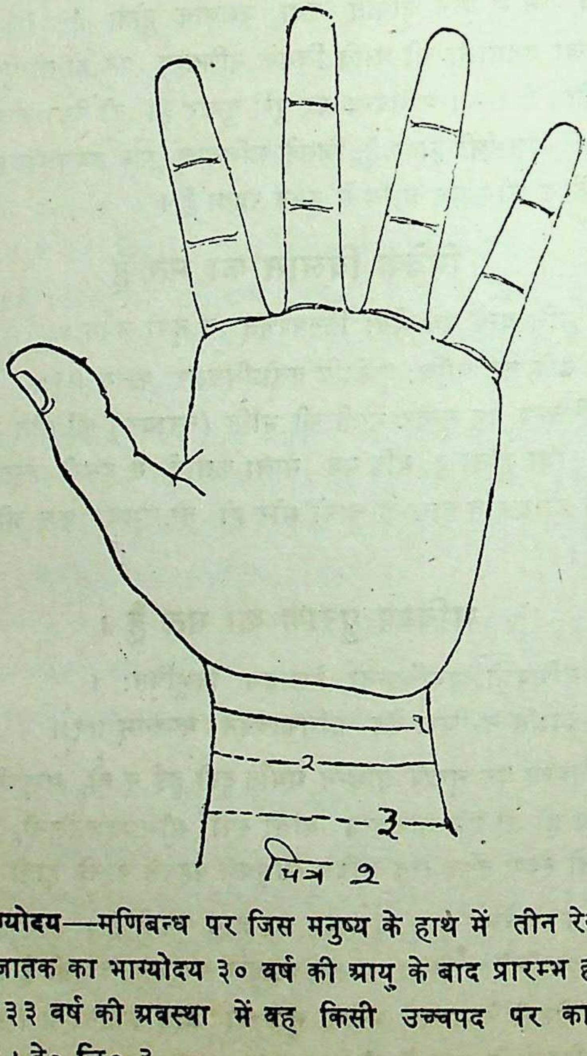

चित्र २

भाग्योदय—मणिबन्ध पर जिस मनुष्य के हाथ में तीन रेखायें हों तो ऐसे जातक का भाग्योदय ३० वर्ष की आयु के बाद प्रारम्भ हो जाता है, और ३३ वर्ष की अवस्था में वह किसी उच्चपद पर कार्य करने लगता है। दे० चि० ३

मणिबंध पर यदि तीनों रेखायें हों तो ऐसी रेखा वाले जातक का भाग्योदय २० वर्ष के बाद ही प्रारम्भ हो जाता है और ४० वर्ष की आयु में पूर्ण भाग्योदय होता है दे० चि० ३

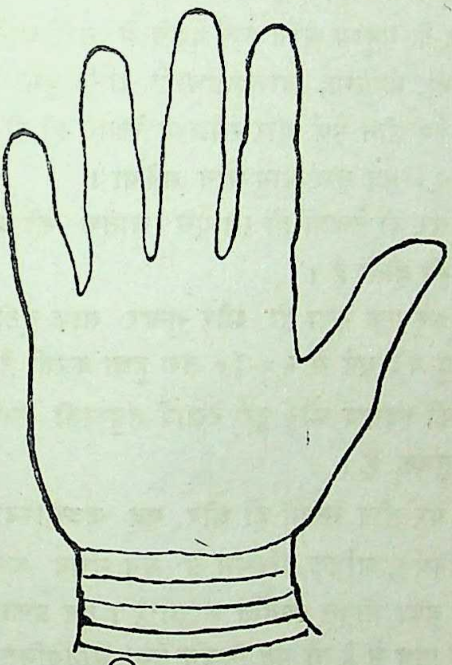

चित्र ३

मणिबंध पर यदि दो रेखायें हैं तो ऐसे जातक का भाग्योदय ३० वर्ष की आयु में प्रारम्भ होता है। करीब ५० वर्ष की आयु तक पूर्ण भाग्योदय हो जाता है।

मणिबन्ध पर यदि यह रेखा हो तो ऐसे जातक का भाग्योदय ४५ वर्ष के बाद होता है।

मणिबन्ध रेखायें दोनों ओर गोल होकर चन्द्राकार हो जावे तो ऐसा जातक सुखी रहता है।

श्रायुज्ञान—मणिबन्ध की प्रत्येक बलवान रेखा ३० वर्ष की श्रायु का प्रमाण कहती हैं।

मणिबन्ध पर पूर्ण स्वस्थ्य चार रेखायें हों तो ऐसे जातक की श्रायु १२० वर्ष की हुश्रा करती है।

इस प्रकार के मनुष्य श्राज कल देखने में नहीं श्राते हैं, ऐसी रेखा वाला पुरुष योगी, महात्मा, बालब्रह्मचारी श्रादि हुश्रा करते हैं।

मणिवन्ध पर तीन पूर्ण श्रौर स्वास्थ्य रेखायें हों तो ऐसी रेखा वाला जातक ६९ से ९० वर्ष तक श्रायु भोग सकेगा।

मणिबन्ध पर दो रेखायें हों तो ऐसे जातक की श्रायु ४६ वर्ष से ५६, ६० तक की होती है।

मणिबन्ध पर एक रेखा हो श्रौर सुन्दर साफ टूटी न हो तो ऐसे जातक की श्रायु २३ वर्ष से २८-३० तक हुश्रा करती है।

मणिबंध की स्वस्थ्य श्रौर पूर्ण रेखायें तंदुरुस्ती शान्ति श्रौर भाग्य वान होने की सूचक है।

मणिबन्ध पर तीन रेखायें हों श्रौर वह जञ्जीरदार हों तो ऐसा जातक प्राय: निर्धन, श्रधिक परिश्रम से धन संचय करने वाला, साथ ही लड़खड़ाता हुश्रा जीवन व्यतीत करता है। इस प्रकार की रेखा यदि स्त्री जातक के हाथ में है तो वह निर्धन तथा श्रनियमित जीवन व्यतीत करती है।

मणिबंध पर दो सीधी श्रौर श्राड़ी रेखायें हों तो ऐसा जातक नीच स्वभाव वाला, कामी, व्यभिचारी तथा मृत्यु श्रचानक हो जाया करती है। दे० चि० ४

मणिबन्ध पर रेखा धनुषाकार हो तो ऐसे जातक पुत्रहीन होते हैं, यह श्रान्तरिक कमजोरी की सूचना है। यदि इस प्रकार की रेखा स्त्री के हाथ में हो तो उनके गर्भ खंडन हो जाते हैं श्रौर गर्भाधान में बाधायें श्राती हैं।

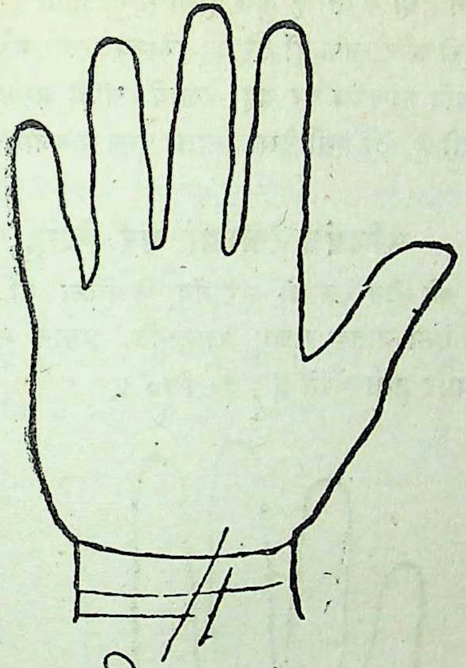

चित्र ४

पश्चात् विद्वानों का मत है :

The rescettes or bracellets are the lines which cross the wrist the plan. In many hands, they are three in number, in others there may be only two or even one. The first resecttite, if deep and clear will indicate I ossession of strong laws body if the rescette is poorly marked, Broad and shallow or cea-inea the constuhon will be week.

मणिबंध दस्त बंद रेखायें हथेली के नीचे कलाई पर होती हैं,

प्रायः यह तीन हुआ करती हैं कुछ हाथों में दो होती हैं, यह तीन मणिबंध रेखा गहरी और साफ हों तो यह स्वस्थ्य तथा गठे हुये शरीर की सूचक है। यदि मणिबंध पर यह रेखायें चौड़ी अस्पष्ट, उथली तथा लहरदार होती हैं तो ऐसी रेखा वाला पुरुष कमजोर बदन का होता है।

मणिबंध रेखाओं पर चिन्ह

मणिबंध की तीन रेखाओं पर यव के चिन्ह हों और पृथक २ दिखाई दें तो ऐसा जातक राजा, राष्ट्रपति, प्रधान मंत्री, राज्यपाल, मुख्य मन्त्री आदि हुआ करते हैं। दे० चि० ५

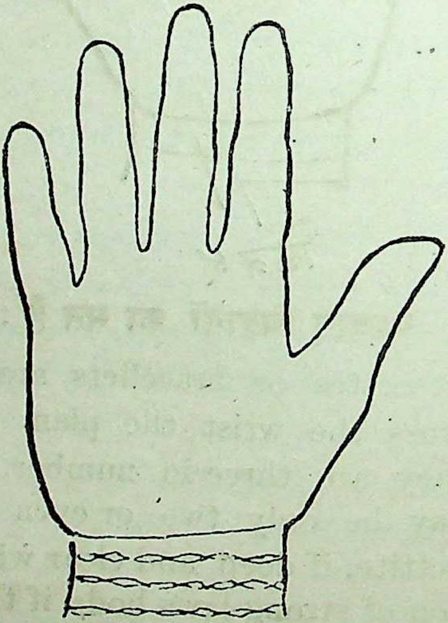

चित्र ५

मणिबंध के दो रेखाओं पर यव चिन्ह हो तो ऐसा जातक विद्वान, धनवान, वकील, न्यायाधीश हुआ करता है।

मणिबंध पर एक रेखा पर ही यव चिन्ह हों तो ऐसा जातक धन तथा ख्यातिवान हुआ करता है ।

मणिबन्ध रेखा पर अंकुश का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जीवन अनेकों कठिनाइयों के साथ व्यतीत होता है । यदि यह चिन्ह प्रथम मणिबन्ध रेखा पर हो तो जीवन शान्तमय होता है ।

मणिबन्ध रेखा पर त्रिकोण हो तो ऐसा जातक वृद्धावस्था में सम्मान तथा धन का लाभ कमाता है । दे० चि० ६—१

मणिबन्ध की तीनों रेखाओं पर त्रिकोण हो तो ऐसा जातक प्राय: धन का लाभ करता है तथा सुख और सम्मान के साथ जीवन व्यतीत करता है । दे० चि० ६—१

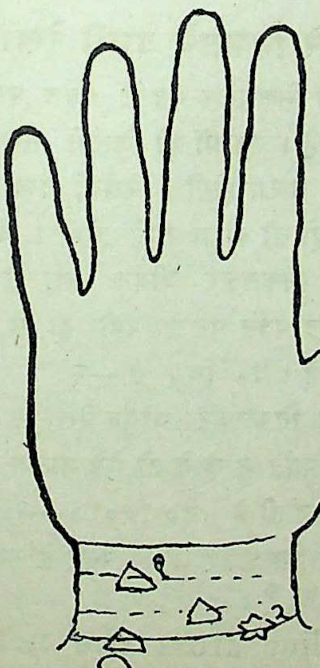

चित्र ६

त्रिकोण का चिन्ह मणिबन्ध की मध्य रेखा पर हो तो सुख तथा प्रतिष्ठा के साथ जीवन व्यतीत करता है

मणिबन्ध की रेखाओं पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक रहता है और अजनवी मनुष्य से धन लाभ करता है।
दे० चि० ६—२

मणिबन्ध की तृतीय रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा जातक वृद्धा अवस्था में धन का लाभ करता है।

मणिबंध की मध्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो और हाथ में उत्तम लक्षण हों तो ऐसे जातक को विकसित धन प्राप्त होता है।

मणिबंध पर त्रिकोण का चिन्ह हो और त्रिकोण के चिह्न के अन्दर गुणक का चिह्न हो तो ऐसा जातक उत्तराधिकारी होता है और धन का लाभ करता है।

मणिबंध से निकलने वाली रेखायें

मणिबंध से कोई रेखा निकलकर चंद्र के पर्वत पर जावे तो ऐसा जातक समुद्र यात्रा करता है। रेखाओं की जितनी संख्या होगी जातक की उतनी लाभप्रद समुद्र यात्रा होगीं। रेखायें लम्बी हों तो यात्रा लम्बी, यदि रेखायें छोटी हों तो यात्रा छोटी होगी। दे० चि० ७—१

मणिबंध से कोई रेखा निकलकर जीवन रेखा से स्पर्श कर रही हो और रेखा निकलकर चंद्र पर्वत पर जा रही हो तो ऐसे जातक की मृत्यु समुद्र यात्रा में होती है। दे० चि० ७—२

मणिबंध से कोई रेखा निकलकर जीवन रेखा से स्पर्श कर रही हो और कोई रेखा चंद्र के पर्वत न जावे तो ऐसे जातक की मृत्यु परदेश यात्रा में किसी दुर्घटनावश होती है। दे० चि० ७—२

मणिबंध से कोई रेखा निकलकर जीवन रेखा से स्पर्श कर रही हो तो अनायास धन लाभ करता है।

"A Straight line from the nescette. He rising high to the mount of mexecury indicates a sudden and unecpected wicreae in the finances a singular line nsing to the mount of

satwen will indicate return of a dear one after a long in travel."

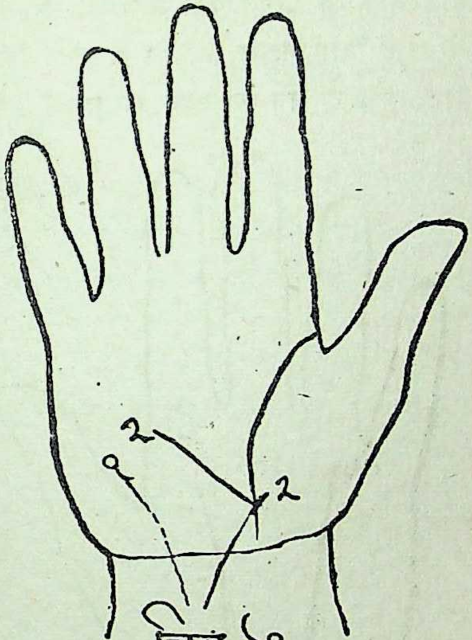

चित्र ७

मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर शनि के पर्वत पर जावे अथवा शनि के पर्वत को स्पर्श करे तो ऐसे जातक का दीर्घकाल का बिछड़ा हुआ प्रेमी पुनः आकर मिलता है।

मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर बुध के पर्वत पर पहुँचे अथवा बुध के पर्वत का स्पर्श करे तो ऐसे जातक को अनायास ही धन का लाभ होता है।

मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर सूर्य पर्वत पर जावे अथवा स्पर्श करे तो ऐसा जातक उच्च व्यक्तियों के सम्पर्क में आता है और प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। दे०चि० ८—१

मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर शनि के पर्वत पर जावे अथवा स्पर्श करे तो ऐसा जातक उत्तम स्वास्थ्य तथा मध्यम धन का लाभ कराता है।

मणिबन्ध से कोई दो रेखायें निकल कर शनि के पर्वत पर जावे और यह रेखायें आपस में एक दूसरे को काटें तो ऐसा जातक दुर्भाग्य-पूर्ण जीवन व्यतीत करता है और अपनी जन्मभूमि को त्याग देता है।

मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर गुरु के क्षेत्र पर जावे तो ऐसा जातक लम्बी यात्रा के द्वारा धन का लाभ कमाता है। दे०चि० ८—२

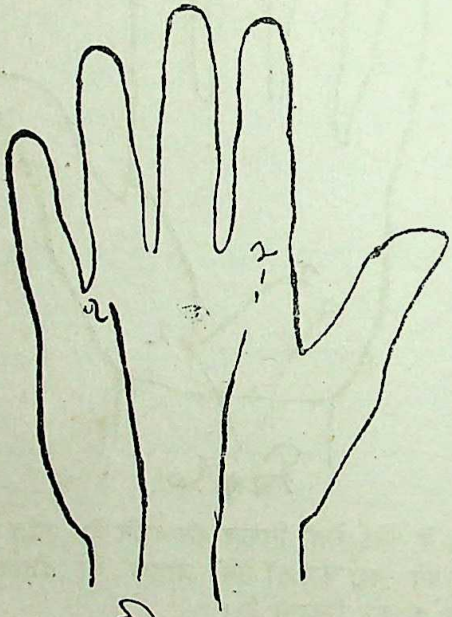

चित्र ८

मणिबन्ध से कोई रेखा निकल कर शुक्र के पर्वत पर जावे तो ऐसे जातक को पुत्रों द्वारा सुख प्राप्त होता है।

मणिबन्ध से कोई रेखा निकलकर स्वास्थ्य रेखा को अस्पष्ट करे तो ऐसा जातक अपने बल और उद्यम से उन्नति करता है।

मणिबंध से कोई रेखा निकल कर भाग्य रेखा को स्पर्श करे तो धन का लाभ, सूर्य रेखा को स्पर्श करे तो वैभव का लाभ, यदि काटे तो हानि का सूचक है।

अष्टम परिच्छेद

जीवन रेखा (THE LINE OF LIFE)

"मृत्यु लोक के मानव के लिए कोई अमृत है तो वह जीवन रेखा ही है।"

जीवन रेखा का सम्बन्ध प्रमुख रूप से मानव जीवन से है, यह रेखा जीतनी लम्बी होगी वह उतनी अधिक आयुवान होगी। सुन्दर स्वस्थ्य, अटूटी हुई बलवान रेखा वाला जातक दीर्घायु होता है। दे० चि० ६

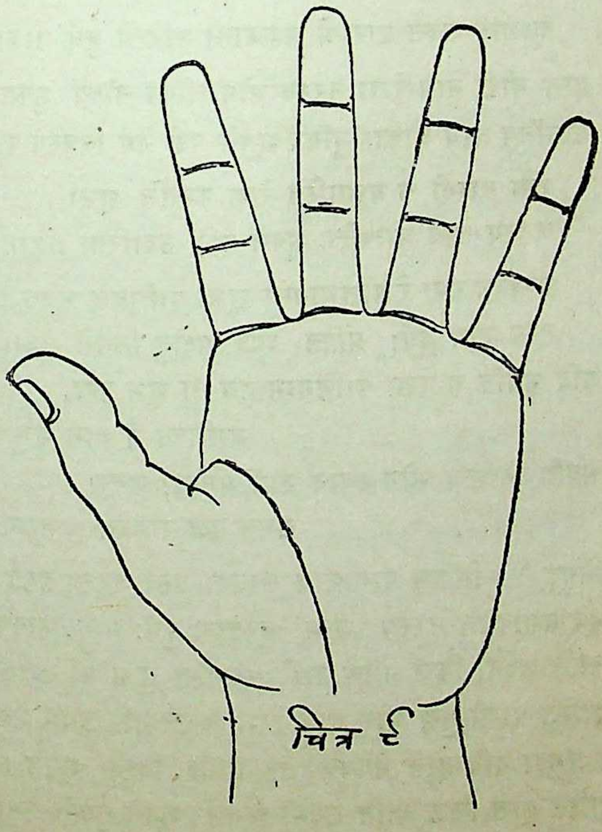

चित्र ६

जीवन रेखा को आयु रेखा, कुलरेखा, गोत्ररेखा, प्रगूढ़ रेखा, अमृत रेखा आदि नामों से पुकारा जाता है। इस रेखा द्वारा मानव की आयु तथा उसके जन्म के पक्ष का ज्ञान होता है। जीवन रेखा के पूर्व बताये १३ भेदों का फल कहते हैं।

सं जायते यस्य करे स्फुरंती सगूढ़ देहा गदित स्तदानीम्।
नर: प्रसूते समये मुर्नीद्वै पक्षस्तु: कृष्ण: किल जातकज्ञै ॥१॥

विगूढ़ देहा यस्यास्तिहस्ते सपुरुषोत्तम:।
शुक्ल पक्षे प्रसूतो वै ज्ञातव्यो जातक फलज्ञै ॥२॥

गौरा नाम्नी च यस्यास्ति पाणौ स पुरुष: प्रभु:।
कृष्णांते शक्ल प्रारम्भे सञ्जातो कथिती बुधैं ॥३॥

हस्त गौरी नाम रेखा नरस्य भोगं लीलां सौख्यं मुक्त फलं च।
उत्पतिव तस्य प्रोक्ता मुनिंद्रै शुक्ले पक्षे गर्ग विप्रस्थ वाक्यं ॥४॥

रमा नाम्नी च यस्यास्ति रेखा करतले शुभा।
जनस्य तस्य चोत्पत्ति: शुक्ल पक्षो उदारिता ॥५॥

अन्यच्च रमा रेखोत्तमायस्य शुभा पाणितले भवेत्।
तस्य जन्म बुधै: प्रोक्त शुद्ध पक्षेतु निर्मले ॥६॥

यदि भवति च रेखा पाणिनामानव ना शुभ फल,
जानिका वै नाम शत्रु प्रगूढ़ा।
भवति निखिल भोग स्थान रूपो मनुष्य: जनम,
समय पक्ष पाहुरेवं च कृष्णा ॥७॥

निगूढ़ नाम्नीकिल पागाणावै खायदा यस्व नरस्य हस्ते।
भवे दशौक्लेच नरस्य जन्म युक्तश्च पुत्रै: मोग भाक्च ॥८॥
नाम्नाति लक्ष्मी किल पाणि पद्म यस्यास्ति पुंस ससितेतत रोत्थ:।
यास्यास्ति पाणौ सुख भोग दावं रेखा च तस्यापि तथैव मेव ॥९॥
शुद्धा प्रगुढ़ा यदि हस्ते भवेच्च तस्यापिज निस्तु शुक्ले।
यस्यास्ति हस्ते किल चाति लक्ष्मी तस्यापि शुक्ले गुरुति प्रसुति ॥१०

तिलकांका यदा रेखा पर गूढ़ा जनस्यवै ।
वर्तते तस्य च प्रोक्त जनस्य धवले जनि ।।११।।
कुबुद्धि कारणी रेखा यस्या पाणि तलेऽशुभा ।
तस्य प्रसूती शुक्ल पक्षे संप्रोक्ता महसां बुधैः ।।१२।।
सैव स्याद्यादि पुंसांवै तिलकांकित विग्रहा ।
तस्य पुंसः जनि प्रोक्ता शुक्ल पक्षे मनीषिभि ।।१३।।
रमायदितिलेनाक्ता रेखा तस्य शिते तरे ।
तथा विधायां गौर्याश्च विपरीतं स्मृतं बुधैः ।।१४।।
पर गुढ़देहाच यदा तथा भूता जनस्य वै ।
अस्ति पाणि तले तस्यं जनिः कृष्णो च पक्षके ।।१५।।
निगुढ़ देहाच यदा तिले नाढया करे स्थिताः ।
जनुः सभयज पक्षः कृष्णा इत्याभिधीयते ।।१६।।
सगूढ़ देहा यस्या स्तिपाणौ तस्य जनिः सिते ।
विगूढ़ देहाच तथा कृष्णा पक्षे जनि प्रदाः ।।१७।।
संगूढ़ देहा च निगूढ़ देहा परमगूढ़ देहा च विगूढ़ देहा ।
एताचतस्त्र किल कृष्णापक्ष जन्म प्रदा यार्ग्यमुनेमतेन ।।१८।।
शेषाश्चः सर्वा खलु शुक्लपक्ष जन्म प्रदाश्च रेखाननुमानवानां ।
विलोमरी त्या च तथा नरस्य पक्षः प्रदिष्ट मुनि काश्यपेन ।।१९।।
मातां तराण्यत्र बहुनीसंति विलोमरीति प्रमुखा नितद्वत् ।
सारत्रच तेषां प्रविलोक्य चैदं कृतं मया लक्षण भूमिकेयं ।।२०।।

सामुद्रिक जातक सुधारक

१. **सगूढ़ देहा रेखा**—जिस जातक के हाथ में संगूढ़ देहा रेखा हो तो माता के सुख वाला, दीर्घायु, निरोग, बलवान, धनी, यशवान होता है और उसका जन्म कृणपक्ष में होता है।

२. **विगूढ़ देहा रेखा**—जिस जातक के हाथ में विगूढ़ देहा रेखा हो तो वह उत्तम प्रकार के भोगों को भोगने वाला, सुखी तथा धनवान् होता है और उसका जन्म शुक्लपक्ष में होता है।

३. **गौरी रेखा**—गौरी रेखा जिस जातक के हाथ में हो तो वह बहुत ही भाग्यवान, धनवान, ऐश्वर्यवान होता है और नाना प्रकार के भोग विलासों में अपना जीवन व्यतीत करता है। ऐसे जातक का जन्म शुक्लपक्ष के प्रारम्भ तथा कृष्णपक्ष के अन्त में होता है। गौरी रेखा पर कोई तिल आदि का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म कृष्णपक्ष में होता है।

४. **रमा रेखा**—जिस जातक के हाथ में रमा रेखा हो तो ऐसे जातक को सभी प्रकार के सुख प्राप्त होते हैं, धन तथा परिवार की ओर से सुखी रहता है। रमा रेखा वाले जातक का जन्म शुक्लपक्ष में होता है। यदि रमा रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो उसका जन्म कृष्णपक्ष में होता है।

५. **परगूढ़ा रेखा**—जिस जातक के हाथ में परगूढ़ा रेखा हो तो ऐसा जातक भाग्यवान, धनवान, सर्व प्रकार के सुख भोगने वाला होता है, परगूढ़ा वाले जातक का जन्म कृष्णपक्ष में होता है यदि परगूढ़ा रेखा पर कोई तिल आदि का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म शुक्ल-पक्ष में होता है।

६. **निगूढ़ देहा रेखा**—जिस जातक के हाथ में निगूढ़ देहा रेखा हो तो ऐसा जातक सुखी, आरोग्यवान पुत्र पौत्रादि के सुखों से युक्त, धन-वान होता है। यदि निगूढ़ रेखा पर कोई तिल हो ऐसे जातक का जन्म शुक्लपक्ष में होता है।

७. **अति लक्ष्मी रेखा**— जिस जातक के हाथ में अति लक्ष्मी रेखा होती है। ऐसा जातक अति धनवान होता है, उस पर लक्ष्मी की विशेष कृपा होती है और उसका जन्म प्रायः कृष्णपक्ष में होता है। यदि तिल का चिन्ह हो तो शुक्लपक्ष का जन्म होता है। कुछ आचार्यों का मत इसके विपरीत है। अति लक्ष्मी रेखा तिल चिन्ह युक्त हो तो कृष्णपक्ष और चिन्ह न हो तो शुक्लपक्ष में होता है।

८. **सुख भोगदा रेखा**—जिस जातक के हाथ में सुख भोगदा रेखा हो तो वह जातक सुख भोगने वाला होता है। धनवान, पुत्रवान, एश्वर्यं-वान होता है। सुख भोगदा वाले जातक का जन्म कृष्णपक्ष में होता है। यदि सुख भोगदा रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म शुक्लपक्ष में होता है।

९. **कुबुद्धि कारणी रेखा**—जिस जातक के हाथ में कुबुद्धि कारिणी रेखा हो तो ऐसा जातक दुःखमय जीवन व्यतीत करता है। उसकी बुद्धि ठीक प्रकार से कार्य नहीं करती है इस कारण वह अपमान, अपयश, तथा जीवन में क्लेश का कारण होती है। कुबुद्धि कारिणी रेखा वाले जातक का जन्म प्रायः शुक्ल पक्ष में होता है, यदि इस प्रकार की रेखा पर तिल हो तो ऐसे जातक का जन्म शुक्लपक्ष के उत्तरार्ध में होता है।

१०. **सर्व सौख्य नाशनी रेखा**—जिस जातक के हाथ में सर्व सौख्य नाशनी जीवन रेखा होती है तो उसके सभी सुख नष्ट हो जाते हैं उसका जीवन दुखमय रहता है नाना प्रकार के प्रयत्न करने पर भी उसे सुख प्राप्त नहीं होता है। सर्व सौख्य नाशिनी रेखा वाले पुरुष का जन्म कृष्णपक्ष में होता है।

११. **गज जीवन रेखा**—जिस जातक के हाथ में गज जीवन रेखा हो तो ऐसा जातक सुखमय जीवन व्यतीत करता है। तथा वाहन का सुख रहता है। गज रेखा वाले जातक का जन्म शुक्लपक्ष में होता है। अगर गज जीवन रेखा पर तिल हो तो ऐसे जातक का जन्म कृष्णपक्ष में होता है।

जीवन रेखा भेद की आकृति इससे पूर्व रेखा वाले प्रकरण में वर्णन कर चुके हैं अतः पाठक और जिज्ञासु वहाँ से जीवन रेखा के अंतरगत भेद आकृति का वर्णन ज्ञात कर लें। यहां ग्रन्थ के विस्तार के भय से वर्णन नहीं किया है।

जीवन रेखा (प्रगूढ़ रेखा) से आयुज्ञान

यस्य रेखा प्रगूढ़ाख्या वर्तते पाणि पंकजे।
अखण्डा तस्य सर्वायु प्रोक्तखयु चन्द्रमा ॥ १ ॥
त्रिगूढ़ देहा या रेखा आयु विशंति रूच्यते।
गौर्या पन्चांक ९५ प्रमिता रामायारव गुणां स्तया ३० ॥ २॥
परगूढ़ा देहा नाम्न्यावै विशंति २० रुच्यते बुधैः।
निगूढ़ देहाया स्वच अति लक्ष्म्यान खोमिन्ताः ॥ ३ ॥
अतिलक्ष्म्याः पन्चगुणा ३५ प्रोक्तामायुर्मु नेर्मते।
स्वरूप दाया रेखाया आयु शून्यं बुधै स्मृतं ॥ ४ ॥
सुख भोगदात्र्या अङ्गनि ६ नर्वाब्धि गर्जनाम्निका।
ददाति पुरुषं चायु कुबध्या पन्च सप्तकं ७५ ॥ ५ ॥
सर्व सौख्य विनाशिचा आयूर भ्रंस्मृत बुधैः ॥ ६ ॥

१. संगूढ़ देहा जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में संगूढ़ देहा नाम की जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु पूर्ण होती है, इसे पर-आयु १२० वर्ष कहा जाता है। अर्थात् जातक की आयु १२० वर्ष की होती है।

२. विगूढ़ देहा जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में विगूढ़ देहा जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की परमायु २० वर्ष की होती है।

३. गौरी जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में गौरी जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की परमआयु ३५ वर्ष की होती है।

४. रमा जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में रमा नाम की जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु ३० वर्ष होती है।

५. पर गूढ़ जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में परगूढ़ा नाम की रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु २० वर्ष की होती ।

६. निगूढ़ देहा जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ से निगूढ़ देहा

नाम की जीवन रेखा हो ऐसे जातक की आयु बहुत ही कम होती है। केवल अपने माता-पिता तथा अन्य लोगों के द्वारा ही जीवन रहता है।

७. अति लक्ष्मी जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में अति लक्ष्मी नाम की जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु २० वर्ष की होती है, कुछ अन्य आचार्यों के मत से ३५ वर्ष की परमायु होती है।

८. सुख भोगदा जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में सुख भोगदा नाम की जीवन रेखा हो ऐसे जातक की आयु ६ वर्ष की होती है।

९. कुबुद्धि कारिणी जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में सर्व सौख्य नाशिनी नाम की जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु शून्य वर्ष की होती है।

१०. सर्व सौख्य के नाशिनी जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में सर्व सौख्य नाशिनी नाम की जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु शून्य वर्ष की होती है।

११. गज जीवन रेखा—जिस जातक के हाथ में गज नाम की जीवन रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु ४९ वर्ष की होती है।

यह जीवन रेखा के द्वारा आयुष्मान कहा गया है। पूर्ण आयुमान के ज्ञान और निर्णय के लिये जीवन रेखा, हृदय रेखा तथा मस्तष्क रेखा के द्वारा होता है, पूर्ण आयु के निर्णय के लिये हाथ अन्य शुभ तथा अशुभ लक्षण तथा दूसरे हाथ को ठीक प्रकार से देख लेना चाहिए जब ही आयु का निर्णय ठीक होगा।

जीवन रेखा गुरु के पर्वत से तर्जनी अंगुली के नीचे से प्रारम्भ हो रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक विद्वान, उच्च-पदाधिकारी तथा उच्च-अभिलाषा वाला होता है।

जीवन रेखा प्रारम्भ होकर मध्यमा अंगुली के नीचे शनि के पर्वत पर

जा रही हो और ऐसे जातक के हाथ में भाग्य रेखा न हो तो ऐसे जातक को कार्यों में सफलता प्राप्त नहीं होती है, जिस कार्य को प्रारम्भ करता है वही खराब हो जाता है।

जीवन रेखा शुक्र के पर्वत का विस्तार कर रहीं हो उसका फल शुभ है, यदि यह रेखा शुक्र के क्षेत्र को कम करे तो ऐसी रेखा वाला जातक का विवाह नहीं होता है, यदि विवाह हो जाता है तो सन्तान विहीन रहा करता है। दे० चि० ११

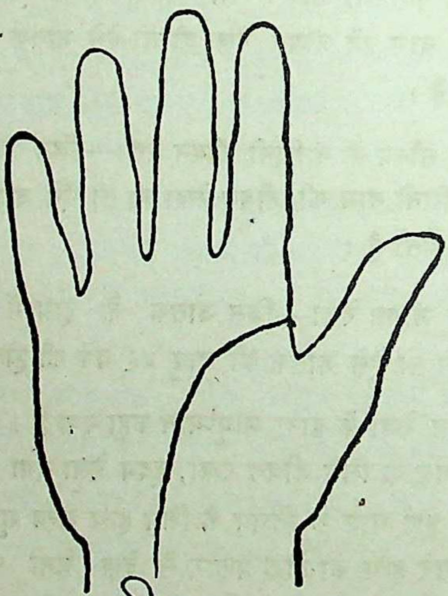

चित्र ११

जीवन रेखा अंगुष्ठ के मूल से प्रारम्भ हो रही हो और वह कटी-फटी और निर्बल हो तो इस प्रकार के मनुष्य की अकाल मृत्यु हो जाती है। दे० चि० १२

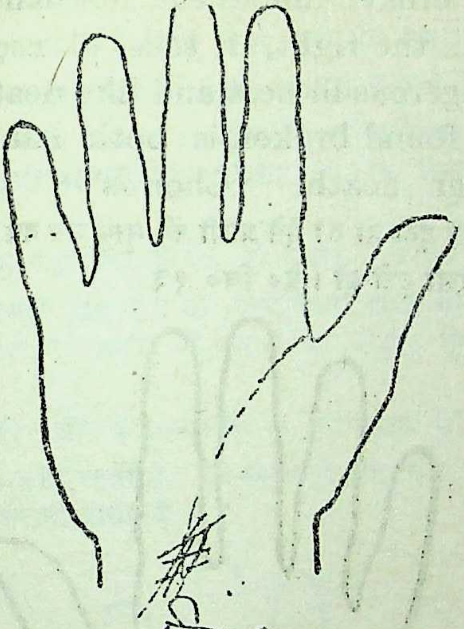

चित्र १२

जीवन रेखा विसर्जन के स्थान पर अनेक रेखाओं में बंट गई हों तो ऐसे मनुष्य का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है और हमेशा बीमार रहा करता है। दे० चि० १२

जीवन रेखा लम्बी सुन्दर और किसी प्रकार चिन्ह युक्त हो और न कोई अन्य रेखा ही जीवन रेखा को काट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक दीर्घायु, निरोगी, शरीर सुख भोगने वाला, उच्चाभिलाषी हुआ करता है।

जीवन रेखा शुक्र के पूर्ण क्षेत्र को घेरती हुई सुन्दर अवस्था में दाहिनी ओर को झुक रही हो और केतु के क्षेत्र मणिबंध पर पहुँचे तो ऐसी रेखा वाला जातक १०० वर्ष की आयु भोगता है।

A broken line of life indicates death at the date where the break is shown.

When broken line in the left hand but joined line in the right, it tells of escape from some dangerous ill ness and like death

When found broken is both hands, it is a certain sign death. "Cheiros"

जीवन रेखा टूटी हो तो ऐसे प्राणी की मृत्यु उस वर्ष मान हो जाती है जिसमें यह रेखा टूटी हो। दे० चि० १३

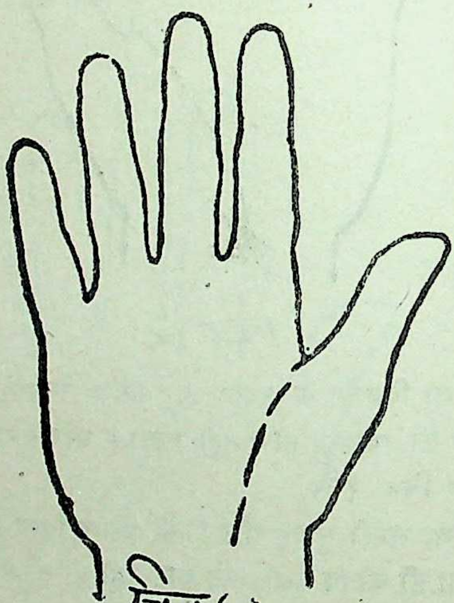

चित्र नं० १३

जीव रेखा टूटी हुई हो और दूसरे हाथ में वह रेखा उस स्थान पर साफ हो तो यह किसी भयानक बीमारी अथवा मृत्यु तुल्य कष्ट की सूचक है।

इस प्रकार की रेखा एक ही वर्षमान में टूट रही हो तो ऐसे वर्ष में मृत्यु अवश्य हो जावेगी।

जीवन रेखा, सहायक जीवन रेखा अथवा मंगल रेखा हो तो ऐसा वर्ण कष्टदायक होता है।

ऐसा देखने में आता है आयु रेखा पूर्ण थी लम्बी थी फिर भी जातक की अकाल मृत्यु हो गई। ऐसी अवस्था में हाथ में जीवन रेखा की सहायक मंगल की रेखा का न होना हैं अथवा जीवन रेखा अधिक चौड़ी अथवा पतली थी अथवा आयु रेखा पर कोई चिन्ह मृत्यु सूचक होता है।

जीवन रेखा कहीं नष्ट हो गई हो अथवा रुक-रुक कर चल रही हो अथवा कहीं-कहीं दिखाई दे तो ऐसी रेखा वाला जातक बार-बार रोगी हो जाता है, इस प्रकार के जातक का शरीर सुख उत्तम नहीं होता है।

जीवन रेखा जंजीर के समान हो तो ऐसे जातक को सर्वदा शरीर सुख की चिन्ता बनी रहती है, बाल्यकाल में विशेष कष्ट रहेगा तथा रोगी और अभिमानी होता है।

चित्र १४

जीवन रेखा से निकलने वाली रेखाएं

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर चंद्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक देशाटन करने वाला होता है और उसका स्वभाव बदलता रहता है। दे० चि० १४

जीवन रेखा दो रेखाओं में बंटकर बाहर की ओर जा रही हो और यह रेखा बलवान हो तो ऐसा जातक विदेशों में भ्रमण करता है तथा उसका जीवन विदेश में ही समाप्त होता है अगर भीतरी शाखा बलवान हो तो विदेश यात्रा ही करता है।

जीवन रेखा से कोई शाखायें निकलकर शुक्र के पर्वत पर पहुँचे तो ऐसा जातक चिन्ताग्रस्त तथा जीवन-पर्यन्त विषय-भोग में लिप्त रहता है और प्रायः असंतोषपूर्ण ही रहता है, यह रेखायें हृदय रोग, प्रेम में, चिन्ता, सिर दर्द तथा गृहस्थ संबंधी चिंताओं को व्यक्त करती है।

दे० चि० १५

चित्र १५

जीवन रेखा से एक बलवान रेखा निकलकर शुक्र के पर्वत के मध्य तक पहुंचती है तो ऐसा जातक स्त्री के धन का उत्तराधिकारी होता है, तीर्थों की यात्रा का सुख प्राप्त करता है।

जीवन रेखा से कोई शाखा निकलकर राहु पर्वत मणिबंध पर पहुंच रही हो और यह क्षेत्र भी उच्च न हो तो ऐसा जातक क्रोधी, मूर्ख, कुतकर्म करने वाला, नीच, व्यर्थ के कार्यों में धन व्यय करने वाला तथा प्रतिष्ठाहीन होता है।

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर टूटी अवस्था में शुक्र के पर्वत पर जावे और यह रेखा वहां पर सर्प जिह्वाकार हो जावे तो ऐसा जातक मूर्ख, संतान विहीन तथा रक्त विकार का रोगी होता है।

जीवन रेखा में से कोई रेखा बेंत के समान निकलकर बुध के पर्वत पर पहुंचे तो ऐसा जातक क्रोधी लोभी तथा मूर्ख होता है, यह ठीक प्रकार से व्यवहार करने में कुशल नहीं होता है, विदेशों में भ्रमण करता है, अपने धन को सट्टा, लाटरी, जुआ आदि बुरे कार्यों में नष्ट करता है।

जीवन रेखा में से कोई रेखा निकलकर मस्तष्क रेखा को स्पर्श करे और कोण का निर्माण करे तो ऐसा जातक कुरूप होता है, कृत्रिम साधनों के द्वारा स्वरूपवान बनता है। ऐसे जातक की भार्या सुन्दर होती है परन्तु सन्तान सुख प्राप्त नहीं होता है, यह आचार विचार का ध्यान नहीं रखते हैं।

जीवन रेखा से मस्तष्क रेखा निकल रही हो और यह मस्तष्क रेखा बुध के पर्वत के नीचे हृदय रेखा से मिल जावे तो ऐसा जातक अन्तिम समय में बहुत कष्ट भोगता है। दे० चि० १६

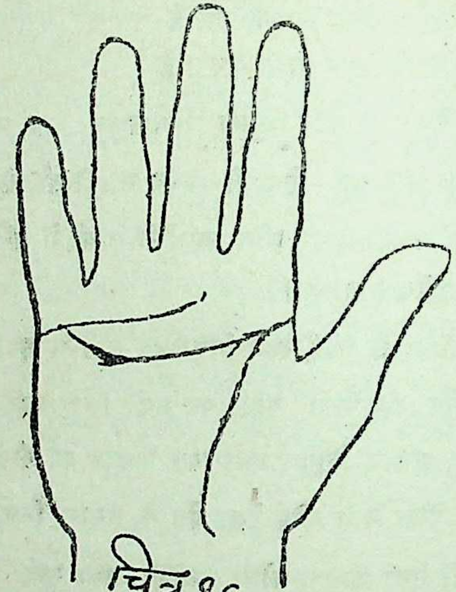

चित्र १६

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य के पर्वत पर पहुँचे और वहां पर एक रेखा हो तो ऐसा जातक बलवान, पराक्रमी, पुत्रवान होता है उच्चाधिकारी, देश-प्रेमी तथा अपने द्वारा ही उन्नति करता है।

जीवन रेखा से कोई सर्पाकार रेखा निकलकर शुक्र के पर्वत पर पहुँचे तो ऐसा जातक उच्चस्थान से गिरता है तथा कपटी, कामी, कठोर स्वभाव का होता है। इस प्रकार की जीवन रेखा वृताकार होकर पुनः जीवन रेखा में मिल जावे तो निकलने वाला स्थान कष्टमय व्यतीत होगा और मिलाने वाले स्थान पर जातक की जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

जीवन रेखा हथेली के मध्य से एक रेखा निकल कर चन्द्र के पर्वत पर पहुंचे और जीवन रेखा के उदगम स्थान पर से एक रेखा निकलकर गुरु के पर्वत तर्जनी अंगुली के नीचे पहुंचे तो ऐसा जातक

वैज्ञानिक नवीन अनुसंधान करने वाला तथा यशवान होता है, ऐसे जातक की मृत्यु विदेश में होती है। दे० चि० १७

चित्र १८

किसी हाथ में जीवन रेखा दुहरी हो और इस प्रकार का जीवन रेखा दोनों ही हाथों में हो तो जातक दीर्घ आयुवान होता हैं और अप मृत्यु का डर नहीं रहा करता है।

जातक के हाथ में जीवन रखा जंजीर के समान हो तो जातक को सदैव शारीरिक चिन्ता बनी रहा करती है, बाल अवस्था जीवन कठिनाई में व्यतीत होता है तथा वृथा अभिमान करने वाला और रोगी हुआ करता है।

जीवन रेखा से निर्बल सर्पाकार रेखायें निकले और अन्त में मोटी होकर चंद्र के पर्वत पर पहुँचे तो ऐसा जातक मूर्ख रोगी तथा व्याभिचारिणी होता है। दे० चि० १८

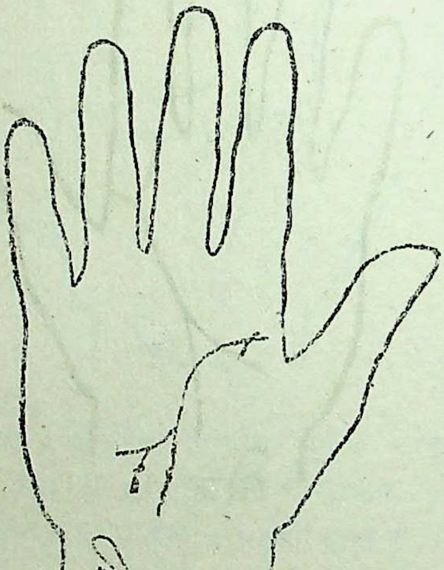

चित्र १८

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर गुरु के पर्वत पर पहुँचे और उस स्थान पर त्रिभुज का चिन्ह हो तो ऐसा जातक धनवान, गुणवान, यशवान होता है, ऐसा जातक भार्या दयालु, सुन्दर, गृह कार्य में दक्ष तथा मधुर भाषणी होता है। दे० चि० १९

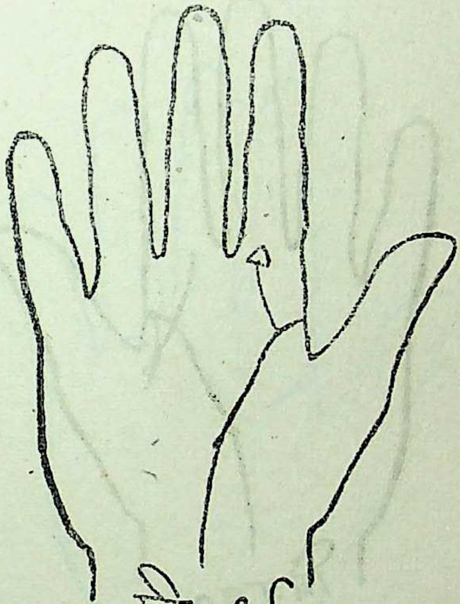

चि० १९

जीवन रेखा गुरु के पर्वत के पास से निकल रही हो तो जातक की सभी इच्छायें बचपन में पूर्ण हो जाती हैं। ऐसा जातक सभी कार्यों में यशस्वी होकर अपनी उन्नति करता है।

जीवन रेखा से एक रेखा निकलकर गुरु के पर्वत पर पहुंचे तो ऐसा जातक यशस्वी होता है। उसकी सभी इच्छायें पूर्ण हुआ करती है, जिस वर्षमान में यह रेखा निकलती है जातक की उन्नति उसी वर्तमान से प्रारम्भ हो जाती है।

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर अंगुष्ठ के मूल की ओर जावे ठीक उसी स्थान से एक अन्य रेखा निकलकर गुरु के पर्वत की ओर जावे तो ऐसा जातक कलाकार, वैज्ञानिक, विद्वान, भाग्यवान, मधुर-भाषी और सर्वप्रिय होता है। दे० चि० २०

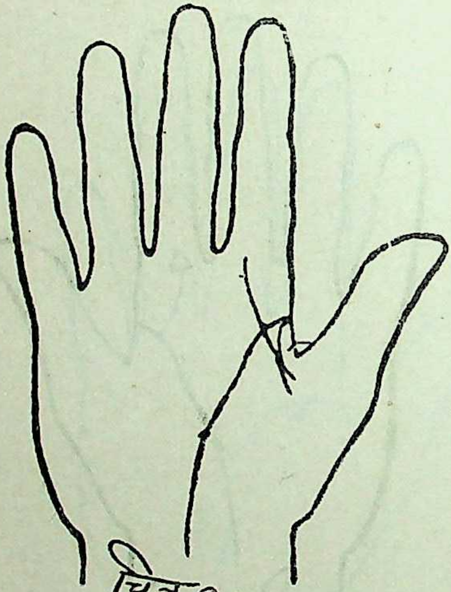

चित्र २०

जीवन रेखा से निकलकर एक या दो अखंड रेखा शनि के पर्वत पर गयी हो तो ऐसे जातक सट्टे के व्यापार में यश की प्राप्ति और जमान का लाभ किया करता है। यह ठेकेदारों द्वारा धन का लाभ करता है।

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक बड़ा सम्पत्तिवान प्रतिष्ठा वाला होता है। यह कलकारखानों का मालिक होता है, यदि ऐसे जातक की सूर्य रेखा भी बलवान हो तो राजदरबार से उपाधि प्राप्त हुआ करती है।

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर बलवान अवस्था में शनि के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक माता पिता के लिए कष्टकारक होता है, बन्धु बान्धवों से द्वेष करने वाला, निर्धन, मुकदमेबाज तथा कपटी हुआ करता है। दे० चि० २१

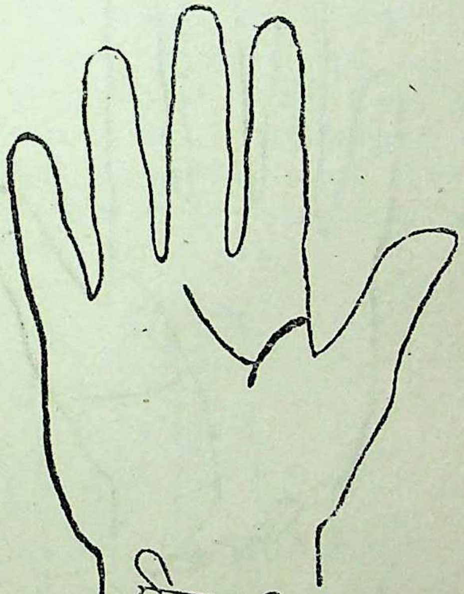

चित्र २१

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर बुध के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक बहुत बड़ा व्यापारी होता है, इसे व्यापार के द्वारा बहुत ही मान, धन, प्रतिष्ठा और कीर्ति प्राप्त हुआ करती है।

जीवन रेखा से एक रेखा निकलकर शुक्र के पर्वत पर जावे और उसी स्थान से कोई रेखा निकलकर चंद्र के पर्वत पर जावे तो ऐसा जातक यात्रा करने वाला और परदेश में निवास किया करता है।

जीवन रेखा से कोई रेखा निकलकर शुक्र के पर्वत को पार करती हुई अंगुष्ठ के मूल की ओर जाये तो ऐसा जातक आचार विचार रहित होता है यदि रेखा वक्र गति में हो तो भयंकर रोग की सूचक है।

दे० चि० २२

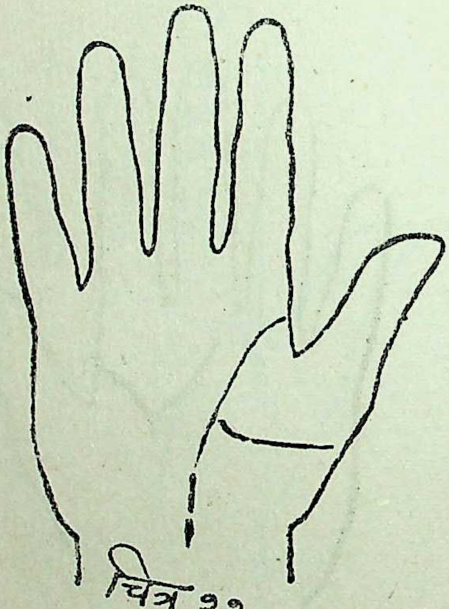

चित्र २२

जीवन रेखा को शुक्र के पर्वत के ऊपर मंगल के पर्वत से निकलकर कोई रेखा काट रही हो और यह रेखा गुरु के पर्व पर पहुँच रही हो तो ऐसे जातक को कंठ, कान, मस्तष्क इन तीनों स्थानों में से किसी भी स्थान पर रोग होता है।

जीवन रेखा से निकलकर कुछ रेखायें शुक्र के पर्यंत पर पहुँच रही हो और शुक्र क्षेत्र उच्च हो तो जातक रेखा का वर्णमान रोगी होता है, ऊपर से गिरकर चोट लगा करती है।

जीवन रेखा पर चिन्ह

जीवन रेखा के प्रारम्भ में ही नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक की मां बाल्यकाल में मर जाती है।

जीवन रेखा पर दोनों ही हाथों में नक्षत्र का चिन्ह हो तो प्रथम वर्षमान में मृत्यु के समान कष्ट तथा दूसरे में स्वर्गवास जातक हो जाता है। ऐसे जातक की मृत्यु दुर्घटना में होती है।

जीवन रेखा के अन्त में तारे अथवा गुणक चिन्ह हो तो उसकी अचानक मृत्यु अथवा अन्य कोई दुर्घटना जातक के जीवन में घटती है। अगर इस प्रकार के हाथ वाले जातक के दूसरे हाथ में आयु रेखा साफ हो अथवा दुहरी हो तो ऐसे जातक को उस संकट से शीघ्र ही छुटकारा मिल जाता है। इस प्रकार का चिन्ह एक स्त्री के हाथ में था, परन्तु उसके दूसरे हाथ में जीवन रेखा दुहरी तथा बलवान थी इस स्त्री का पति रेलवे की घटना के कारण मर चुका ऐसा हो गया था, परन्तु बाद में वह जीवित हो गया था। दे० चि० २४

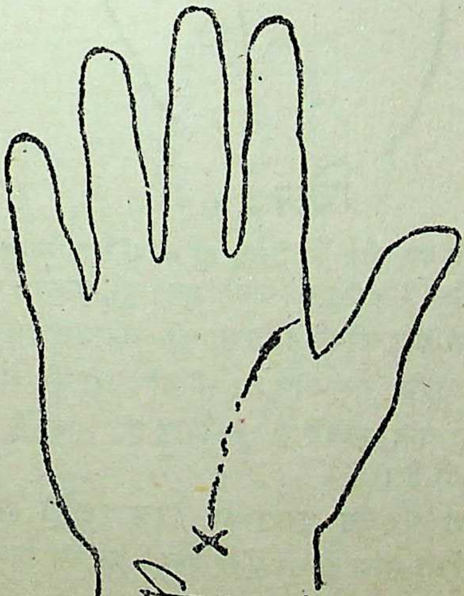

चित्र २४

जीवन रेखा पर नक्षत्र के समान एक दो चिन्ह हो तो ऐसा जातक जीवन के नक्षत्र बर्षमान में भयंकर संकट भोगता है और उस संकट से छुटकारा पाना बहुत ही कठिन है।

नक्षत्र का चिन्ह जीवन रेखा की जड़ में हो तो ऐसे जातक की माता तीन वर्ष में मर जाती है। दे० चि० २५

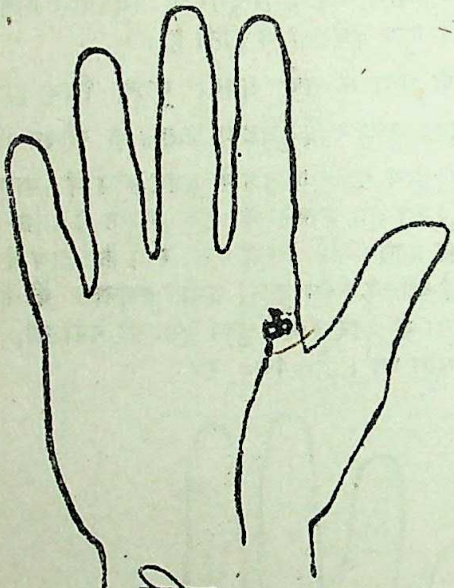

चित्र २५

जीवन रेखा पर क्रौस का चिन्ह हो तो ऐसे वर्षमान में जातक पर कठिन संकट आता है परन्तु वह उनसे मुक्त हो जाता है।

जीवन रेखा और जीवन की रेखा की सहायक रेखा के सहयोग से अथवा एक से अधिक चतुष्कोण का निर्माण हो तो ऐसे जातक को फौजदारी अथवा अन्य मुकदमे में करावास हो जाता है। अर्थात् जेल यात्रा करनी होती है।

जीवन रेखा पर इस प्रकार का चिन्ह एक ही हाथ में हो और दूसरे हाथ की रेखा साफ हो तो ऐसे जातक का धन व्यय होता है, जेल यात्रा नहीं होती।

जीवन रेखा पर काले रंग के चिन्ह हों तो ऐसा जातक नेत्र पीड़ा तथा विष आदि से कष्ट उठाता है।

जीवन रेखा के अन्त में गोल चिन्ह हो तो ऐसा जातक दुःखमय जीवन व्यतीत करता है।

जीवन रेखा पर चतुष्कोण का चिन्ह हो तो ऐसा जातक भयानक संकट से बच जाता है।

जीवन रेखा पर टापू (यव) का चिन्ह हो तो ऐसे जातक को कठिन रोग होता है। यदि इस प्रकार का चिन्ह बायें हाथ में भी हो तो ऐसे जातक को वंश परम्परागत रोग होता है।

आयु रेखा पर गोल चिन्ह तो ऐसे जातक को नेत्र पीड़ा होती है। ऐसा मनुष्य अगर व्यापार करे तो उसे व्यापार में लाभ नहीं हो सकता है, अतः ऐसे जातक को नौकरी करना ही उत्तम होगा। दे० चि० २६

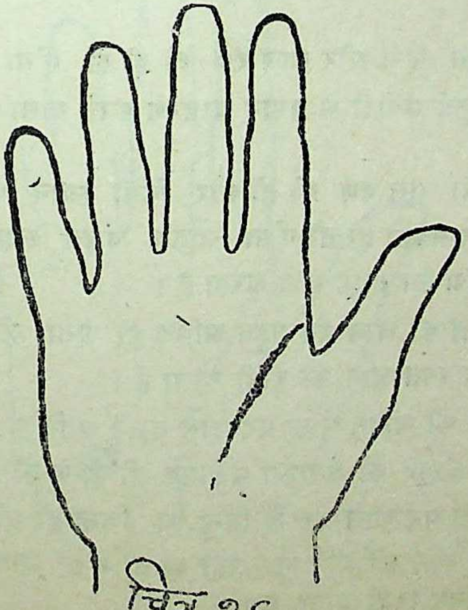

चित्र २६

जीवन रेखा पर क्रौस का चिन्ह हो तो ऐसे जातक को मस्तष्क सम्बन्धी रोग राज्य की ओर से अभियोग तथा अन्य चिन्तायें हुआ करती हैं।

जीवन रेखा पर यदि रेखा जाल हो तो ऐसा जातक प्राय: निर्धन, आर्थिक मानसिक तथा व्यापारिक चिन्ताओं से घिरा रहता है।

जीवन रेखा पर यदि त्रिभुज का निशान हो तो ऐसा जातक धनवान, ऐश्वर्यवान तथा सवारी आदि का सुख भोगता है।

जीवन रेखा पर यव का चिन्ह हो और ऐसा ही चिन्ह मस्तष्क रेखा पर हो तो ऐसा जातक प्रेम में आत्मघात कर लेता है।

जीवन रेखा पर स्वास्थ्य रेखा के सहयोग से कोण का निर्माण हो रहा हो तो ऐसे जातक का स्वास्थ्य ठीक नहीं रहता है।

जीवन रेखा का रंग

जीवन रेखा का रंग यदि सफेद हो तो ऐसा जातक प्राय: बीमार रहता है।

जीवन रेखा गहरी और लाल रंग की हो तो ऐसा जातक चिड़चिड़ा, क्रोधी, मूर्ख अघोरी के समान आचरण करने वाला कठोर स्वभाव का होता है।

जीवन रेखा लाल वर्ण की हो और किसी स्थान पर मोटी और किसी स्थान पर पतली हो तो ऐसा जातक चंचल स्भाव वाला और वाद-विवाद में अपना समय नष्ट करता है।

जीवन रेखा का लाल रंग बहुत अधिक हो ऐसा जातक बार बार ज्वर रोगी तथा रक्त चाप का रोगी रहता है।

इस प्रकार की जीवन रेखा पर क्रौस नक्षत्र आदि का चिन्ह हो तो ऐसे जातक की जीवन की समाप्ति यकायक ही हो जाती है।

जीवन रेखा पर काले रंग के बिन्दु का चिन्ह हो और इस प्रकार की रेखा मंगल रेखा की ओर झुक रही हो तो ऐसे जातक को निकट सम्बन्धी द्वारा विष दिया जाता है।

जीवन रेखा श्याम वर्ण की हो, किसी स्थान पर पतली और किसी स्थान पर मोटी हो तो ऐसा जातक रोगी रहता है और मृत्यु अल्पायु में हो जाती है।

जीवन रेखा का रंग पीला हो और स्वास्थ्य रेखा सर्पाकार की हो अथवा स्वस्थ्य रेखा पर क्रौस बिन्दु द्वीप चिन्ह हो तो ऐसा व्यक्ति धोखेबाज स्वार्थी, पीलिया का रोगी होता है।

जीवन रेखा नीले रंग की हो और उस पर अशुभ चिन्ह हो तो ऐसा जातक हृदय रोगी होता है।

जीवन रेखा से रोग ज्ञान

जीवन रेखा चन्द्र के पर्वत पर पहुंच रही हो और वहां पर रेखा जाल हो तो ऐसा जातक संग्रहणी, उदर रोग आदि का रोगी होता है।
दे० चि० २७

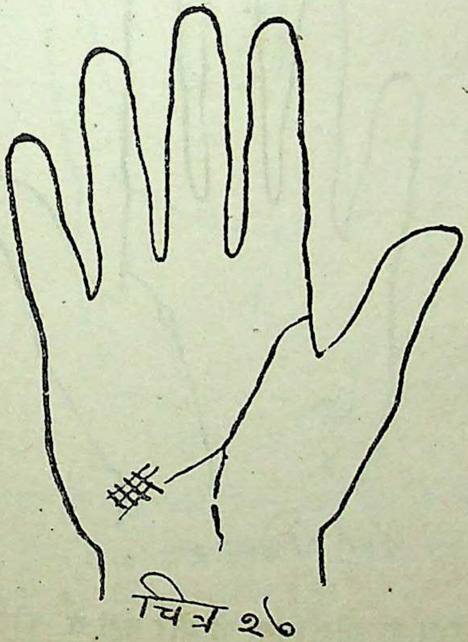

चित्र २६

जीवन रेखा गुलाबी वर्ण की हो और मस्तष्क रेखा मंगल के क्षेत्र से निकलकर द्वितीय मंगल के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक सरल स्वभाव वाला माता पिता का भक्त होता है।

जीवन रेखा पीली हो, काले, श्याम दाग हो, मध्य में टूट रही हो तो ऐसा जातक क्रोधी अल्पायु तथा अनेक प्रकार के कष्ट भोगता है उसे परिवार की ओर से किसी प्रकार का सुख प्राप्त नहीं होता है।

जीवन रेखा को छोटी २ आड़ी रेखायें काट रही हों तो ऐसा जातक सिर दर्द, नजला दिमागी कमजोरी का रोगी होता है।

जीवन रेखा पर बिंदु का चिन्ह और चंद्र के पर्वत पर जाल, गुणक नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा जातक गठिया का रोगी होता है।

दे० चि० २८

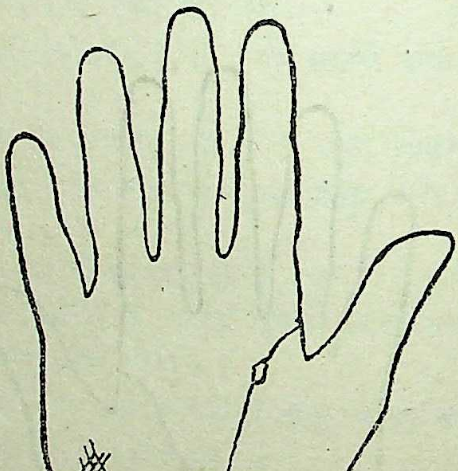

चित्र २८

जीवन रेखा पर द्वीप चिन्ह हो और वहां से कोई रेखा निकलकर

चन्द्र के क्षेत्र पर जावे और चंद्र के पर्वत पर जाल, गुणक रेखा जाल हो तो ऐसे जातक को मूत्राशय तथा गुर्दे का रोगी होता है।

जीवन रेखा पर बिंदु का चिन्ह हो और वहां से कोई रेखा निकलकर मंगल के पर्वत पर जावे और स्वास्थ्य रेखा पर द्वीप चिन्ह हो तो ऐसे जातक को कण्ठ तथा छाती का रोग होता है।

जीवन रेखा पर द्वीप चिन्ह हो और वहां से कोई रेखा निकलकर बुध के क्षेत्र पर पहुँच जाये और वहां गुणक रेखा जाल हो तो ऐसा जातक पीलिया, यकृत आदि रोग का रोगी होता है। दे० चि० २६

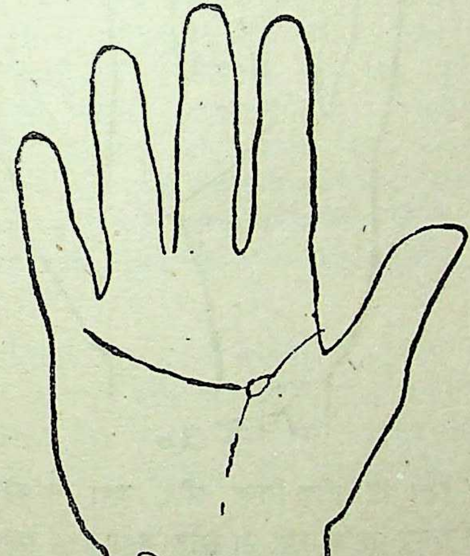

चित्र २६

जीवन रेखा को कोई आड़ी रेखा काट रही हो और इस रेखा पर काले रंग का बिन्दू हो तो ऐसे जातक को विषम ज्वर (मुद्दती ज्वर) या विष प्रयोग आदि का भय रहा करता है।

जीवन रेखा एक हाथ में बहुत लम्बी हो और एक हाथ में बहुत

ही कम हो तो ऐसा जातक भयंकर रोग के द्वारा ग्रसित होता है। यदि यह जीवन रेखा दोनों ही हाथों में टूट रही हो तो मृत्यु की सूचना है। ऐसे जातक को सावधान कर देना चाहिये।

जीवन रेखा पर द्वीप चिन्ह हो और वहां से कोई रेखा निकलकर सूर्य के पर्वत पर पहुँच रही हो और इस रेखा के अन्त में रेखा जाल गुणक आदि का चिन्ह हो तो ऐसा जातक हृदय रोगी होता है। दे० चि० ३०

चित्र ३०

जीवन रेखा पर द्वीप चिन्ह और वहां से कोई रेखा निकलकर शनि के पर्वत पर पहुँच रही हो और वहां पर रेखा जाल, गुणक का चिन्ह हो तो ऐसा जातक ऊँचे से गिरना, दुर्घटना का शिकार होना मोटर आदि से चोट का लगना तथा रक्त की कमी का रोगी होता है।

जीवन रेखा पर द्वीप चिन्ह हो और वहां से कोई रेखा निकलकर गुरु के पर्वत पर जावे तथा हाथ और रेखाओं का रंग लाल हो तो मूर्छा, रक्त की कमी तथा रक्त चाप का रोगी ऐसी रेखा वाला जातक होता है।

जीवन रेखा की समाप्ति से कोई रेखा निकलकर जिस गृह पर्वत पर जाती है अथवा जिससे रेखा स्पर्श करती है तो उसी के अनुसार रोग होता है यदि उस स्थान पर रेखा जाल, गुणक, द्वीप आदि चिन्ह हों तो इस रोग की भयंकरता में वृद्धि करते हैं। यदि जीवन रेखा ऐसे स्थान पर यकायक ही अन्त प्रकट कर रही हो, टूट रही हो अथवा दिखाई न दे तो ऐसे जातक की इसी प्रकार के रोग में मृत्यु हो जाती है।

समय निर्णय—

सामुद्रिक का ज्ञान कर सामुद्रिक शास्त्र हस्त रेखा जाल पर प्रयोग करना और उसके द्वारा निर्णय मानव जीवन का अध्ययन है और मानव का मार्ग दर्शन जो जगमगाता हुआ ज्योति स्वरूप है, जिसके द्वारा भलाई और बुराई, यश और अपयश, लाभ और हानि, उत्थान और पतन की कहानी चलती है। अंत: वर्षमान का होना कौन शुभ कार्य या अशुभ कार्य किस समय होगा इसका ज्ञान करना बहुत ही आवश्यकीय हैं। इसके लिये सप्तवर्षीय तथा पंचवर्षीय और दशवर्षीय नियम का यहाँ वर्णन होगा और उसका वर्णन केवल जीवन रेखा तक ही विस्तार के साथ प्रथक् 'समय निर्णय' के अन्तर्गत होगा।

पंचवर्षीय—

आयु रेखा को किसी एक सूत के ऐसे धागे से नाप लें, जो स्वयं घंटे और बढ़े नहीं। फिर उसके बीस भाग कर लें, एक भाग पाँच वर्ष के बराबर होगा। जीवन रेखा में जो शुभ और अशुभ चिन्ह हो जो वर्ष के भाग में आवे उसी वर्षमान के अनुसार शुभ और अशुभ फल कहें।

इस प्रकार से पूर्ण विचार के बाद सूक्ष्म निर्णय करके फल कहें।

दशवर्षीय नियम—

जीवन रेखा को सामान्य यव लेकर उससे नापें और एक यव दश वर्षमान के बराबर होता है और उसके अनुसार फल कहें।

सप्तवर्षीय नियम—

जीवन रेखा का 'समय निर्णय' के अन्तरगत वर्णित विधि के अनुसार ७ वर्ष के अनुसार विभाग कर लें और फिर शुभाशुभ फल कहें।

नवम परिच्छेद

मस्तष्क रेखा (THE LINE OF HEAD)

जीवन रेखा के बाद सबसे महत्वपूर्ण रेखा है, वह मस्तष्क रेखा है। इसके द्वारा विचार शक्ति, ज्ञान एवं मानसिक शक्तियों का पता लगता है इसको भारतीय मतानुसार मातृ रेखा, विभव रेखा, द्रव्या रेखा, आयु रेखा, व्याघ्र रेखा लीला रेखा भी कहते हैं। दे० चि० ३१

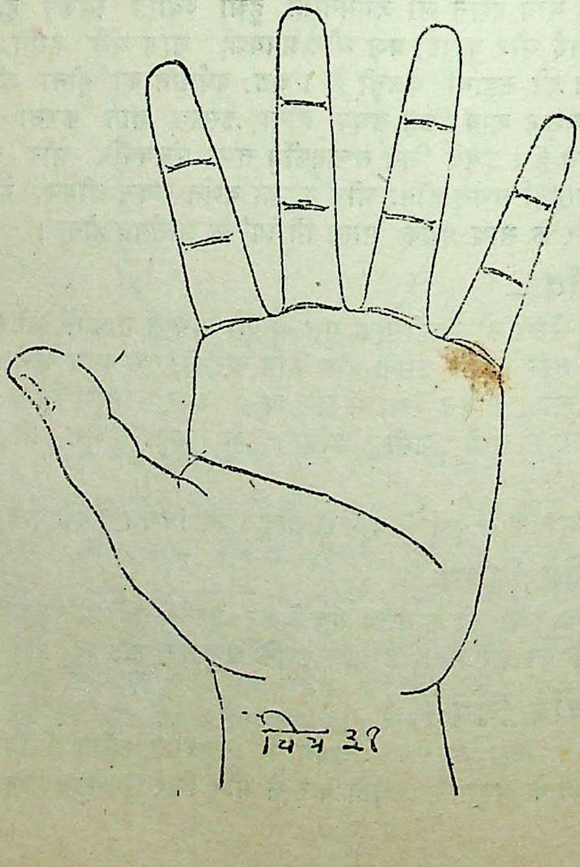

चित्र ३१

पूर्व में इसके रूप लक्षणादि से अठारह भेद वर्णन कर आये हैं, अब यहाँ पर पृथक फल करते हैं।

१. **मृगी मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में मृगी गति जीवन रेखा होती है, ऐसा जातक भाग्यवान् उत्तम सुख भोगने वाला तथा श्रेष्ठ विचार वाला होता है।

२. **नागी मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में नागी मस्तष्क रेखा हो, तो ऐसा जातक मानसिक दृष्टि से कमजोर होता है, सिर दर्द आदि का रोगी होता है तथा जीवन आर्थिक कष्ट में रहता है।

३. **वराटिका मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में वराटिका रेखा होती है, उसकी शिक्षा कम होती है तथा आर्थिक कठिनाईयां जीवन भर रहती हैं।

४. **सुभद्र देहा मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में सुभद्र देहा नाम की मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक यशवान तथा प्रेमी और धनवान होते हैं।

५. **कुमुखी मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में कुमुखी नाम की मस्तष्क रेखा हो तो वह जातक विचार शक्तिहीन, यशहीन तथा मातृ सुख नहीं भोगता है।

६. **कृष्णकचा मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में कृष्णकचा नाम की मस्तष्क रेखा होती है तो ऐसे जातक की माता बाल्यकाल में ही साथ छोड़ देती है धन तथा यश की हानि होती है तथा विद्या अध्ययनन भी नहीं कर पाती है।

७. **पांसुला मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में पांसुला नाम की तथा मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक कामी, व्याभिचारी, स्त्री लोलप, प्रेम में पागल रहता है, अगर इस प्रकार की रेखा हृदय रेखा से स्पर्श करे तो ईश्वर भक्ति में लग जाता है।

८. **विराट विभूति मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में विराट विभूति मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक धनवान ऐश्वर्यवान होता है उसको जीवन सुखमय तथा भोग विलासमय हो जाता है।

९. **अनंता मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में अनन्ता मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक को माता का सुख नहीं मिलता है और संभवत: विमाता होती है जो कष्ट देती है। विद्या अध्ययन भी प्राय: अपूर्ण ही रह जाता है।

१०. **वसुन्धरा मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में वसुन्धरा मस्तष्क रेखा हो ऐसे जातक की आयु अल्प होती है, मानसिक शक्ति प्राय: कमजोर ही रहती है।

११. **भ्राँतिमति मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में भ्रांतिमति मस्तिष्क रेखा हो तो ऐसा जातक प्राय: मस्तष्क सम्बन्धी रोग का रोगी रहता है, विचार करने की शक्ति का ह्रास तथा बुद्धि कम रहा करती।

१२. **सुशील वृत मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में सुशील की वृता मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक आचार विचार विहीन होता है तथा व्यवहार शून्य होता है, व्यर्थ के कार्यों में धन का व्यय करता है।

१३. **निकृष्ठा मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में निकृष्ठा मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक निकम्मा, निर्धन कष्टमय जीवन व्यतीत करता है।

१४. **सरोजवती मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में सरोजवती मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक धन आदि से सम्पन्न तथा सुखी रहता है।

१५. **तुरंगा मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में तुरङ्गा मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक धनवान, यशवान, गाड़ी तथा घोड़े आदि का सुख भोगता है।

१६. **मातंगी मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में मातंगी मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक विद्वान होता है, धर्म में विशेष रुचि रहती है तथा मातृ-पक्ष से धन का लाभ प्राप्त करता है।

१७. **सांँयुजी मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में सांयुजी मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक धन विद्या से सम्पन्न तथा राज्य की नौकरी करता है।

१८. **सर्व भौमी मस्तष्क रेखा**—जिस जातक के हाथ में सर्व भौमी मस्तष्क रेखा होती है, ऐसा जातक सर्व प्रकार के सुखों का भोग करता है तथा राज्य में उच्च पदाधिकारी के पद कार्य करता है।

मस्तष्क रेखा से आयु

मृगा गत्या च रेखाया करपच ५२ उदाह्यतं
नाग्म रूपं १ स्मृतं चायु वाराह्व गज ८ समिता ॥ १ ॥
सुभद्र वेहाता आयुः पयो निधि गजा ८४ स्मृताः।
कुमुख्या स्तत्व संख्यानि कृष्ण केश्वानवोम्रिता ॥ २ ॥
पाशुलाया पंचमा साः विराट् भूते अपांः निधि।
अनंतायाश्च रेखाया द्वि मासो परी कीर्तिताः ॥ ३ ॥
वसुन्धराया पंचदिनाति आयुर्दिभुज थोजगुः।
भ्रांति मत्याश्चक दिन वत्या घटी द्वय ॥ ४ ॥
निकृष्टा पंच घटया पद्वा व त्यानवाग्नय।
तुरंग्य पंच रुपानि मातंग्या स्मृता करो ॥ ५ ॥
सर्व भौम्या पंच करो ॥ ६ ॥

जिस जातक के हाथ में मृगी गती रेखा हो उसकी परम आयु ५२ वर्ष की होती है ॥ १ ॥

जिस जातक के हाथ में नागी मस्तष्क रेखा होती है उसकी आयु एक वर्ष की होती है ॥ २ ॥

जिस जातक के हाथ में वराटिका मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की परमायु ८ वर्ष होती है ॥ ३ ॥

जिस जातक के हाथ में सुभद्र देहा मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु ८४ वर्ष की होती है ॥ ४ ॥

जिस जातक के हाथ में कुमुखी नाम की मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की आयु २५ वर्ष परमायु ९ वर्ष की होती है ॥ ५ ॥

जिस जातक के हाथ में पांसुला नाम की मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की परमायु ५ मास की होती है ॥ ६ ॥

जिस जातक के हाथ में विराट् विभूति नाम की मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु ४ वर्ष की होती है ॥ ७ ॥

जिस जातक के हाथ में वसुन्धरा नाम की मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की पांच दिन की परमायु होती है ॥ ८ ॥

जिस जातक के हाथ में अनन्ता नाम की मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की परमायु २ मास होती है ॥ ९ ॥

जिस जातक के हाथ में भ्रांति मति नाम की रेखा हो तो उसका जीवन एक दिन का होता है ॥१० ॥

जिस जातक के हाथ में सुशीलवती नाम की मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु २ घड़ी की होती है ॥ ११ ॥

जिस जातक के हाथ में निकृष्टा नाम की मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु ५ घड़ी की होती है ॥ १२ ॥

जिस जातक के हाथ में सरोजवती नाम की मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु ३९ वर्ष की होती है ॥ १३ ॥

जिस जातक के हाथ में तुरंगी नाम की मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु १५ वर्ष की होती ॥ १४ ॥

जिस जातक के हाथ में मातंगी नाम की मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की परमायु २ वर्ष की होती है ॥ १५ ॥

जिस जातक के हाथ में सांयुजी नाम की मस्तष्क रेखा हो तो उसकी परमायु १५ वर्ष की होती है ॥ १६ ॥

जिस जातक के हाथ में सर्व भौमी मस्तष्क रेखा हो तो ऐसे जातक की परमायु २० वर्ष की हुआ करती है ॥ १७ ॥

जन्म मास निर्णय—

मस्तष्क रेखा जन्म मास निर्णय भी किया जाता है।
मास निर्णय कालेय शाके हीन कृते तथा।
प्रोक्तांकै स्याजन्म काल मासः पूर्व क्रमेणा च ॥ १ ॥
यथा क्रमिकण्य पूर्व जन्म उदाहृतः।
तथा तथैव क्रमतो मास निर्णय मुच्यते ॥ २ ॥

जन्म मास के निर्णय के लिये जन्म काल के शंक में से जिस भेद की यह रेखा हो उसके उक्त अंकों को घटा दें। शेष जो बचे यदि वह बारह से कम के शेष रहें यदि १ चैत्र २ वैशाख ३ ज्येष्ठ ४ आसाढ़ ५ श्रावण ६ भाद्रपद ७ आश्विन ८ कार्तिक ९ मार्गशीर्ष १० पौष ११ माघ १२ फाल्गुन शुक्ल पक्ष से मास जाने।

पूर्णामा द्वीपि विलास लीलायां प्रगूढ़शा को विहीभितों कैरभि. खेचर बेद रसाब्ज प्रगिततैस्तु १६४९ शेषांक प्रमितो जनुः काल मास ॥ १ ॥

सगूढ़ देहरेखायाः शाके तैरे वसीनिते।
जानि भासोभव त्येवं गदितं च मत्रांतर ॥ २ ॥
इति मृग गति नाग्यो मास।
वराटीनाम रेखाया नेत्रांग नृप समित ॥
१६६२ विगूढ़ देह शांके स्मिन्हीने उत्पत्ति मासक ॥ ३ ॥

सुभद्र देहाव्हय रेखिकायाः शाकेऽग्नि खेटांग सुधायोन्मिते।
हीने च मासो भवतीति पक्षे परोग्नि नागांग धरबिहीने। ४।

रमाया: शके नागरामाग्नि चंद्रै विहीने, कुमुख्या भवेज्जन्म मास: ।
पक्षांतरेप्येव मेवं विधेय जनु: काल मासो भवे द्वै नरस्य । ५ ।

रमाया शकां केङ्ग्निगां गचद्रैं विहिने कृत पूर्वचज्जन्मास ।
मतंतुचेदं मुनि वय काणां सदा प्रमाणां वचन हितेषां । ६ ।

पर गुढ़ाया शाके खवाण रसचन्द्रो विहीनिते कृष्ण कचाया मास: ।
मांत तरेच तद्धत तैरेवहिने कृते भवताति जन्म मास: । ७ ।
निगूढ़ रेखाया: शाके नेत्राद्रि सभूमिभि: हीने मास: पांशुलाया ।
जन्म मास स्तोत बुधै । विराट विभूत राह: । ८ ।

अति लक्ष्मया शाके बहि वेद भूपै विहीने स्यात् ।
विराट विभूतेर्मासो गदितो जन्म कालस्यतद्ज्ञै । ९ ।
यत्र यत्र वृद्धि युक्त शाको यस्मा रेखाया ।
गदितो विद्वद्भि तत्र एषु विहीन: खाभ्र सप्त चन्द्र,
समितेषु शेषे द्वादश पुष्टे रवि भक्ते च शेषं जन्म मासो भवेत् ।
मासस्तु चैत्र गरू: शुल्लात्प्रोक्त जातक ज्ञै । १० ।
सुख भोग दाया: शाक: त्रिसप्त रस भूमिता: ।
प्राक्तं तस्मिन्हीने वह्नि रस भूपे जन्म मासो नूनं भवति । ११ ।

जिस जातक के हाथ में मृग गती और नागी नाम की मस्तष्क रेखा हो उसके जन्म शक में से १६४९ घटानें से जो शेष रहे उसे क्रम चैंत्र आदि मास जाने ।

सगूढ़ देहा मस्तष्क रेखा के जन्म शक में से १६४९ घटाने से जन्म मास होता है, ऐसा भी कुछ विद्वानों का मत है ।

जिस जातक के हाथ में वराटिका मस्तष्क रेखा हो उसके विगूढ़ देहा रेखा के जन्म शक में से वराटिका मस्तष्क रेखा के १६६२ अंक कम कर दें जो शेष रहे वह जन्म मास जानें ।

जिस जातक के हाथ में सुभद्र देहा नाम की मस्तष्क रेखा हो तो गौरी रेखा के शशाङ्क में से १६८३ घटावें और जो शेष रहे वह जन्म मास ज़ानें ।

पक्षान्तर में इसी गौरी शशाङ्क में से १६८४ कम करने से जो शेष आवे वह जन्म मास होता है ।

ज़िस जातक के हाथ में कुमुख नाम की मस्तष्क रेखा हो तो रमा नामक की मस्तष्क रेखा के शशाँक में से १६३८ घटावें, जो शेष रहे जन्म मास जाने ।

मतान्तर से—

रमा की रेखा के शशांक से १६८३ घटा देने से जो अंक आवे यही जन्म मास जाने ।

जिस जातक के हाथ में कृष्णकंचा नाम की मस्तष्क रेखा हो तो परगूढ़ रेख़ा के शशांक में से १६७२ घटा दें, और जो शेष आवे उसे क्रम से जन्म मास जाने ।

जिस जातक के हाथ में पांशुला मस्तष्क रेखा हो तो निगूढ़ देहा रेखा के शशांक से १६७२ घटा दें और जो शेष रहे उसे जन्म मास मानें ।

जिस जातक के हाथ में विराट विभूति मस्तष्क रेखा हो तो अति लक्ष्मी रेखा के शशांक में से १६४३ हीन कर दें और जो शेष आवे उसे उसे जन्म मास मानें ।

विशेष अध्ययन के लिए वृहत्सुधा जातकादि जातक सुधाकर तथा लेखक की "हाथ और उसके भेद" पुस्तक देखें ।

मस्तष्क रेखा का प्रारम्भ

मस्तष्क रेखा हाथ में निम्न प्रकार हो सकती है।

१. जीवन रेखा के भीतर से मंगल के द्वितीय पर्वत से प्रारम्भ होकर चन्द्र के पर्वत पर चली जाती है। दे० चि० ३२

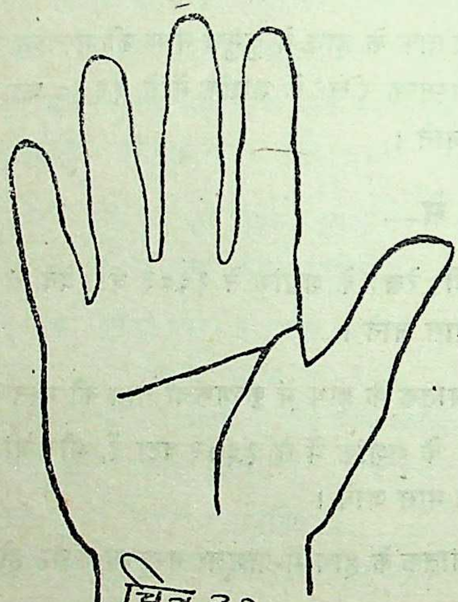

चित्र 32

मस्तष्क रेखा चन्द्र और मंगल दोनों के पर्वतों के मध्य समाप्त हो वह उत्तम मानी जाती है।

मस्तष्क रेखा प्रभाव से अधिक लम्बी हो तो जातक दुराचारी निर्लज्ज चालक, दुराग्रही बनता है, यह गूढ़ प्रपंच में कम उपयोगी होते हैं। यह काम को प्रारम्भ कर मध्य में छोड़ के दूसरे को प्रारम्भ कर देते हैं और दूसरे को छोड़कर तीसरा प्रारम्भ कर देते हैं ऐसे जातक का स्वभाव स्थिर नहीं हो पाता है, इसलिए यह सफल नहीं हो पाते हैं।

२. जीवन रेखा के ऊपर गुरु के पर्वत से प्रारम्भ होकर राहु पर्वत (हथेली) को पार कर दूसरी ओर चली जाती है। दे० चि० ३२

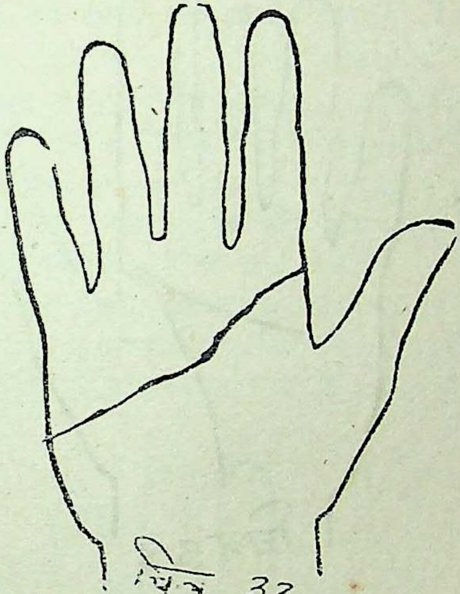

चित्र ३२

मस्तष्क रेखा लम्बी हो, गहरी हो तो जातक में एकाग्रता बुद्धि कुशलता की महान शक्ति होती है।

मस्तष्क रेखा लम्बी हो और सीधी हो तो जातक में धन एकत्र करने की शक्ति प्रधान होती है।

मस्तष्क रेखा छोटी हो और गहरी हो तो जातक व्यवहार कुशल तथा व्यापार किया करता है।

मस्तष्क रेखा हृदय रेखा के पास से गुजर रही हो तो जातक का स्वभाव उदार प्रेमी तथा ईश्वर भक्त हुआ करता है।

३. मंगल के द्वितीय क्षेत्र से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई दूसरी ओर चली जाती है। दि० चि० ३४

चित्र ३४

जिस जातक के हाथ में मस्तष्क रेखा प्रथम प्रकार से प्रारम्भ हो रही हो तो ऐसा जातक कठोर स्वभाव वाला क्रोधी एवं चिढ़चिढ़े स्वभाव का होता है, उसकी मानसिक शक्ति कमजोर होती है व्यर्थ में तथा छोटी २ बातों पर तथा शीघ्र ही क्रोधित हो जाता है। यह पुरुष दूसरों से कलह किया करते हैं तथा उसके लिए अपना शत्रु बना लेते हैं।

मस्तष्क रेखा गुरु के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो और जीवन रेखा को स्पर्श करती हुई चल रही हो तो ऐसे जातक की मानसिक शक्ति बलवान होती है। जातक बुद्धिमान विचारशील, न्याय प्रिय तथा सर्व-प्रिय होता है। प्रत्येक कार्य को काफी विचार के बाद प्रारम्भ करता

है। यह अधिकार प्राप्त करने की इच्छा रखते हैं, साथ ही अधिकार का दुरुपयोग नहीं किया करते हैं और अपने लाभ के अवसर को जाने नहीं देते हैं।

जिन जातकों के हाथ में ऐसी रेखा पायी जाती है वे विशेष लज्जाशील हुआ करते हैं, उन्हें खुलकर बोलना नहीं आता है, वे अपने व्यवहार की ओर विशेष ध्यान रखते हैं, उन्हें भय रहता है कि उनके बर्ताव से बड़े लोग शिकायत न करें, संकोच की धारणा उनके जीवन में अपना इतना अधिक प्रभाव रखती है कि वह मुंह खोलकर कोई भी बात नहीं कह पाते हैं और न दिल खोलकर कार्य ही कर सकते हैं। सम्पर्क में आ जाने के बाद भी वह अपना संकोच नहीं छोड़ पाते हैं। बुद्धिमान पुरुष शीघ्र ही उनके इस व्यावहार को जान जाते हैं।

मस्तष्क रेखा और जीवन रेखा के मध्य अधिक अन्तर हो तो ऐसा जातक मूर्ख, जल्दबाज, असावधान और बिना विचारे किसी कार्य को कर बैठता है और अन्त में कष्ट उठाया करता है दे० चि० ३५

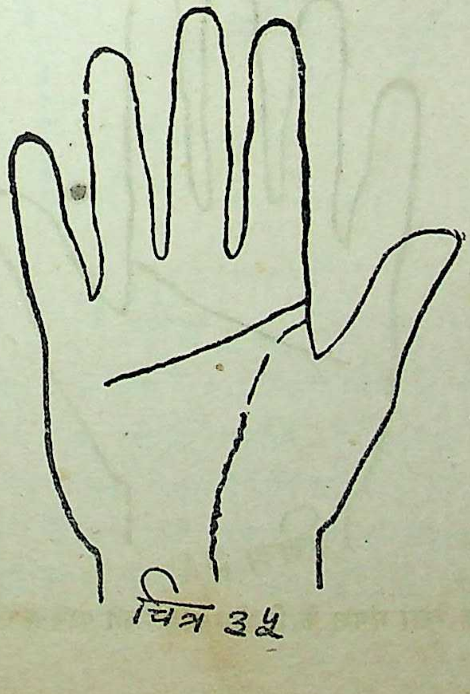

चित्र ३५

मस्तष्क रेखा गुरु के पर्वत से प्रारम्भ होकर अलग जा रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक बेपरवाह हुआ करता है, यदि मंगल का पर्वत उच्च हो और रेखा साफ और स्पष्ट हो तो ऐसी रेखा वाला जातक उत्साह युक्त तथा विवेक विहीन होता है।

मस्तष्क रेखा और ग्रह क्षेत्र

मस्तष्क रेखा मंगल के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो और अन्त में सर्प जिह्वाकार हो जावे और उसकी एक शाखा प्रबल हो तो ऐसा जातक काव्य करने वाला साहित्यकार प्रबल तर्क शक्ति वाला तथा बिना किसी बात की पूर्ण जानकारी के बिना विश्वास नहीं किया करता है। यदि इस प्रकार की रेखा स्त्री के हाथ में हो तो चंचल स्वभाव वाली होती है। दे० चि० ३६

चित्र ३६

मस्तष्क रेखा मंगल के द्वितीय क्षेत्र को पार करके हाथ में बाहर

की ओर जा रही हो तो ऐसा जातक स्वार्थी, क्रोधी, डरपोक, पर-द्वेशी, दूसरों की निंदा करने वाला तथा दुष्ट स्वभाव का होता है परन्तु यह जातक अपने काम में, व्यापार में तथा स्वार्थ साधन में होशियार होता है।

मस्तष्क रेखा गुरु के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो और नीचे गोलाई लिये आवे और फिर सीधी होकर हथेली के दूसरी ओर चली जावे तो ऐसा जातक व्यर्थ की बातें करने वाला तथा वृथाभिमानी होता है।

दे० चि० ३७

चित्र ३८

मस्तष्क रेखा अपने अन्त में टेढ़ी अर्थात मछली के पकड़ने के कांटे के समान हो तो ऐसा जातक राजनीति में विशारद होता है, यह प्रत्येक बात को बढ़कर कहा करता है और सत्य को छिपा दिया करता है, यदि इस प्रकार के जातक के हाथ में बुध की अंगुली बड़ी हो तो ऐसा जातक बहुत असत्य भाषण करने वाला होता है। सुनने वाले उस पर विश्वास कर जाया करते हैं।

मस्तष्क रेखा अपने प्रारम्भ काल ही में दो शाखाओं वाली हो, और एक शाखा जीवन रेखा में स्पर्श कर रही हो और यह हृदय रेखा हो तो ऐसा जातक भाग्यवान तथा धनवान होता है। ध्यान रहे यह रेखा हृदय रेखा को काट न रही हो। दे० चि० ३८

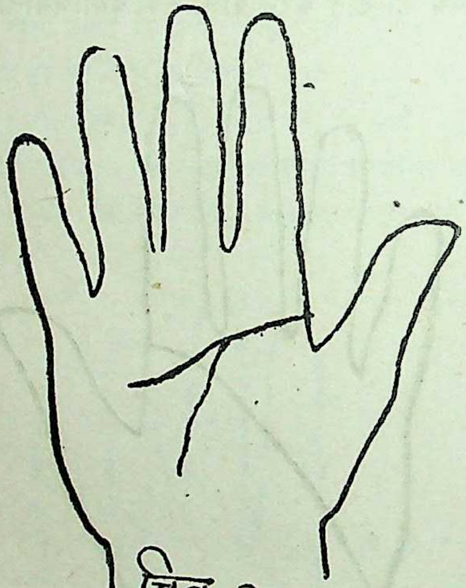

चित्र ३८

मस्तष्क रेखा सूर्य के पर्वत के नीचे के भाग में टूट रही हो तो ऐसे जातक को नेत्र पीड़ा, दृष्टि में विकार अथवा शरीर कष्ट हुआ करता है ऐसा जातक ताप को सहन नहीं कर सकता है।

मस्तष्क रेखा से कोई शाखा निकलकर चन्द्र के पर्वत पर जा रही हो तो ऐसे जातक को भविष्य बतलाने वाले स्वप्न दिखाई देते हैं और वह सत्य होते हैं।

मस्तष्क रेखा कनिष्ठका अंगुली की ओर झुक रही हो तथा गुरु के पर्वत से अन्य छोटी २ रेखायें निकलकर मस्तष्क रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक भाग्यशाली होता है, वह भोग-विलास तथा आनन्द पूर्वक जीवन व्यतीत करता है। दे० चि० ३९

चित्र ३९

एक विदेशी विद्वान ने लिखा है।

"Jupitor is the best planet so far the good elbccts of life are councerned and as it toncls throught its offshoors this particular line, the eaffect is always the best such type of persons always enjoy the best of their life and they get all whatver they aspiregtis a clear indication of healthy hand progressive life."

जहां तक जीवन पर प्रभाव का प्रश्न है कि गुरु समस्त नक्षत्रों में श्रेष्ठ है और यदि इस क्षेत्र से निकलने वाली छोटी रेखायें मस्तष्क रेखा को स्पर्श करती हो तो इसका प्रभाव अति श्रेष्ठ होता है, इस प्रकार जातक अपने जीवन में सर्वोत्तम आनन्दों का उपभोग करता है, और अपनी समस्त कामनाओं को पूर्ण करने की क्षमता रखता है, इस प्रकार की रेखा स्वास्थ्य तथा वैभव पूर्ण जीवन की प्रतीक होती है।

मस्तष्क रेखा स्वस्थ्य तथा स्पष्ट, गहरी और साफ होनी चाहिये।

मस्तष्क रेखा ऊपर की ओर उठकर कनिष्ठ अंगुली बुध के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक स्वभाव का तेज होता है। सर्वदा धन का संचय करता है। उसके स्वभाव में जिद्दीपन की छाप रहती है, वह जिधर भी अपना मनोभव करता है उधर ही दुर्गुनों को अपनाता है, ऐसे जातक में गुण ग्राहकता की कमी रहती है। दे० चि० ४०

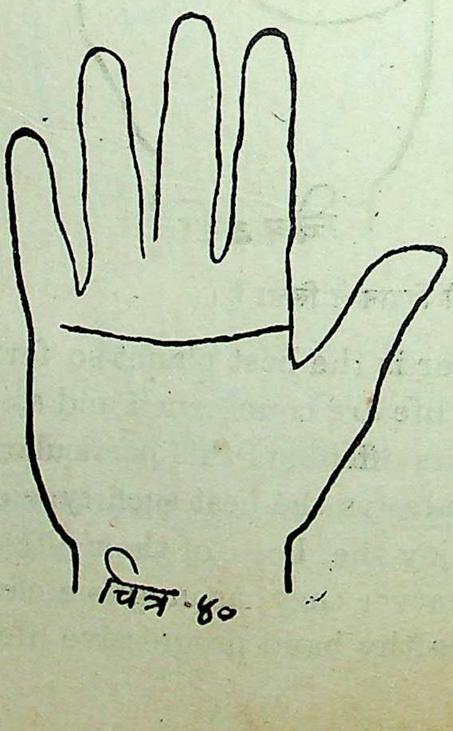

चित्र ४०

मस्तष्क रेखा जीवन रेखा के साथ २ चलकर कुछ दूर के बाद चन्द्र के पर्वत पर चली आवे तो ऐसा जातक अधिक चतुर और किसी का विश्वास नहीं किया करता है। इस प्रकार के जातक विद्वान होते हैं, वह समाज में आगे नहीं आते हैं और भाषण करने की अपेक्षा लिखने में अधिक चतुर होते हैं। इस प्रकार के जातक असली तथा मनो-भावों को छिपाने में अत्यन्त चतुर हुआ करते हैं। आलस के कारण अपने जीवन में उन्नति नहीं कर पाते हैं, इनका समय गृहस्थ की चिन्ता आदि में ही व्यतीत हो जाता है।

मस्तष्क रेखा घूमकर यदि चन्द्र के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक आलसी होते हुये भी जनता में यश प्राप्त कर लेता है, इस प्रकार का जातक विचारवान, गुणवान होता है। दे० चि० ४१

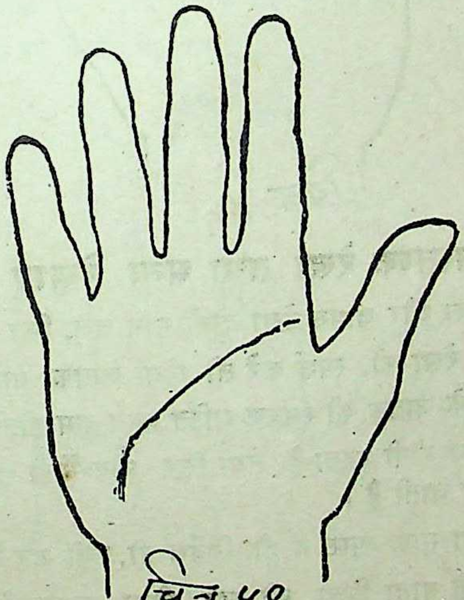

चित्र ४१

मस्तष्क रेखा प्रथम झुककर और पुनः उठे और फिर मंगल के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक द्वितीय उठने के स्थान के वर्ष-मान में पागल हो जाता है। दे० चि० ४२

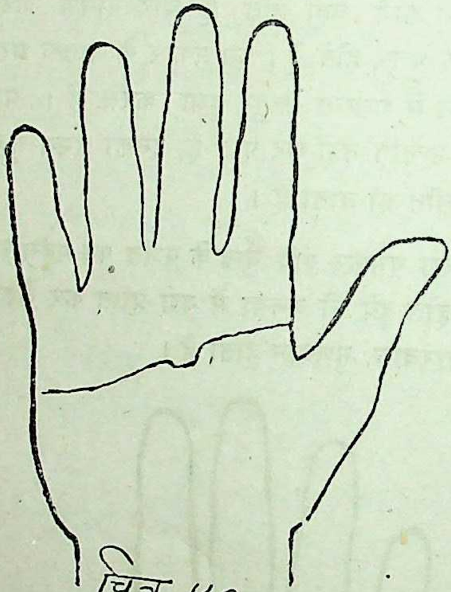

चित्र ४२

मस्तष्क रेखा तथा अन्य रेखाएं

मस्तष्क रेखा और जीवन रेखा दोनों साथ चले, फिर मस्तष्क रेखा लहरदार होकर रेखा को स्पर्श करे तो ऐसा जातक पागल हो जाता है। इस प्रकार के जातक की स्मरण शक्ति बहुत कम होती है मस्तष्क सम्बन्धी रोगों का रोगी रहता है तथा सिर रोग में ही इसकी जीवन लीला समाप्त हो जाती है।

मस्तष्क रेखा साफ स्पष्ट न हो, निर्बल हो, कहीं पर दिखाई दे तो ऐसा जातक अपने माता पिता को कष्ट दिया करता है और दुष्ट, व्यभिचारी, अहंकारी, मूर्ख तथा ना समझ होता है। क्रोध में आकर हत्या कर दिया करता है।

मस्तष्क रेखा साफ और स्पष्ट हो और उसके नीचे दूसरी सहायक मस्तष्क रेखा हो तो ऐसा जातक विद्वान, कुशल तथा व्यापारी होता है, और दो प्रकार के साधनों द्वारा धन कमाता है।

मस्तष्क रेखा जीवन रेखा से छोटी २ रेखाओं द्वारा मिल रही हो तो ऐसा जातक आत्म-विश्वासी तथा अनिश्चित विचारवान होता है।

मस्तष्क रेखा से कुछ छोटी-छोटी रेखायें निकलकर हृदय रेखा को स्पर्श कर रही हों तो ऐसा जातक विशेष प्रेम करने वाला होता है तथा अपने प्रेमी को आंखों के सामने ही रखना चाहता है।

मस्तष्क रेखा से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा को स्पर्श करे और हृदय रेखा से कोई रेखा निकलकर मस्तष्क रेखा को स्पर्श करे तो ऐसा जातक अपनी प्रेमिका के प्रेम में बुरे से बुरे कार्यों को भी किया करता है तथा अपने प्रेमी का आदेश मानता है। दे० चि० ४३

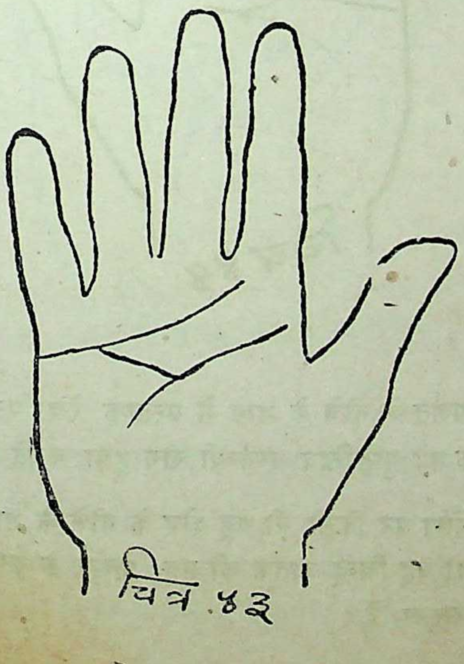

चित्र ४३

मस्तष्क रेखा अपने स्थान से कुछ ऊपर उठे और दो भुजाओं में बट जावे और हृदय रेखा को पार करके शनि के पर्वत पर पहुंचे तो ऐसा जातक बेईमान, बुरे स्वभाव वाला तथा उसका मस्तष्क हर समय चक्कर काटा करता है। दे० चि० ४४

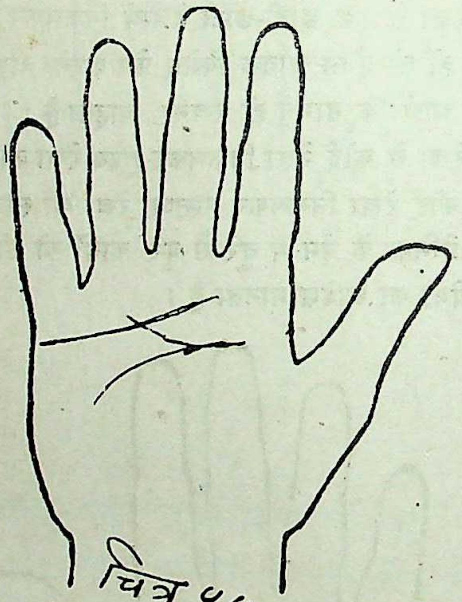

चित्र ४४

शनि के पर्वत के नीचे के भाग में मस्तष्क रेखा पर यह चिन्ह हो तो ऐसे जातक को गुप्तेन्द्रिय सम्बन्धी रोग हुआ करते हैं।

मस्तष्क रेखा पर किसी भी ग्रह क्षेत्र के नीचे के भाग में चतुष्कोण का चिन्ह हो तो यह चिन्ह जातक की सब प्रकार के कष्टों, रोग तथा पीड़ा से रक्षा करता है।

मस्तष्क रेखा जीवन रेखा के उद्गम स्थान से उठकर सर्प गति से सर्पाकार हृदय रेखा से बुध और शनि के पर्वत के मध्य जाकर मिल जावे तो ऐसा जातक दुष्ट स्वभाव वाला, किसी के उपकार को न मानने वाला उन्मत्त तथा दुश्चरित्र हुआ करता है। इस प्रकार के जातक सर्वदा मित्रों से नुकसान उठाया करते हैं, क्योंकि मित्र इसके धन का दुरुपयोग किया तथा करवाया करते हैं। दे० चि० ४५

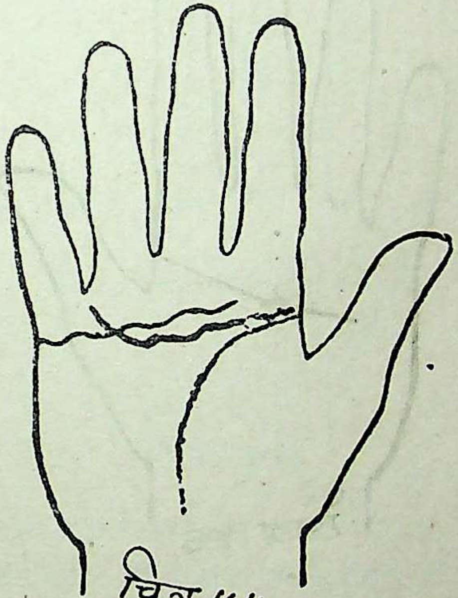

चित्र ४५

मस्तष्क रेखा लम्बी हो और अंगुष्ठ मोटा हो तो ऐसा जातक क्रोधी और जुलमी होता है।

मस्तष्क रेखा शनि के पर्वत से प्रारम्भ हो तो ऐसा जातक सद्गुण सम्पन्न गायन वादन विद्या में निपुण कलाकार होता है।

मस्तष्क रेखा पर चिन्ह

मस्तष्क रेखा पर गुणक का चिन्ह हो तो ऐसा जातक शाल्यचिकि-कित्सा द्वारा ठीक हुआ करता है। दे० चि० ४६

चित्र ४६

मस्तष्क रेखा पर छोटी २ खड़ी रेखायें हों तो ऐसा जातक सिर दर्द का रोगी होता है।

मस्तष्क रेखा पर छोटी २ गोलाकार रेखा हों तो ऐसा जातक पागल हो सकता है। यदि मस्तष्क रेखा चन्द्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो पागल हो जाता है।

मस्तष्क रेखा पर यदि किसी भी स्थान पर द्वीप चिन्ह हो तो ऐसे जातक की स्मरण शक्ति नाश हो जाती है, वह किसी भी बात को भली भांति याद नहीं रख सकता है। वह हमेशा सिर दर्द का रोगी बना रहता है। दे० चि० ४७

चित्र ४६

मस्तष्क रेखा चन्द्र के पर्वत पर किसी क्रोस का चिन्ह स्पर्श कर रही हो और इस प्रकार की मस्तष्क रेखा सर्पाकार हो तो ऐसे जातक को वायु प्रकोप तथा पक्षाघात (Paralysis) का डर रहता है।

मस्तष्क रेखा हथेली के मध्य तक गई हो वहां पर अंग्रेजी के बारह का निशान प्रतीत हो और मस्तष्क रेखा से निकलकर कोई रेखा गुरु के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक लेखक, साहित्यकार, वकील, अध्यापक हुआ करते हैं। वह प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त करता है। और चरित्रवान तथा उज्जवल अभिलाषायें रखने वाले होते हैं।

मस्तष्क रेखा जीवन रेखा से आरम्भ हो रही हो और कुछ आगे चलकर मस्तष्क रेखा से एक छोटी रेखा निकलकर गुरु के पर्वत पर पहुंच रहीं हो और इस प्रकार की रेखा क्रोस से स्पर्श करे तो जातक की अभिलाषायें दबी रह जाया करती हैं।

मस्तष्क रेखा से निकलने वाली रेखा सीधी हो और १०० का कोण बनावे साथ ही साथ और अशुभ लक्षण हो तो यह घोर विपत्ति का लक्षण है।

मस्तष्क रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक के नक्षत्र वर्षमान में सिर में चोट लगती है। यदि इस प्रकार का चिन्ह दोनों के हाथों में हो तो ऐसे जातक को इस प्रकार की चोट से मृत्यु हो हो जाती है।

मस्तष्क रेखा पर वृत का चिन्ह हो और स्वास्थ्य रेखा पर क्रोस का चिन्ह हो तो ऐसा जातक वृद्धावस्था में अन्धा हो जाता है।

दे० चि० ४८

चित्र ४८

मस्तष्क रेखा और जीवन रेखा के मध्य में वृत चिह्न हो और रेखायें टूट रही हों और क्रोस का चिन्ह हो तो ऐसे जातक की मृत्यु यकायक हो जाती है।

मस्तष्क रेखा पर चतुष्कोण का चिन्ह हो तो ऐसा जातक मस्तष्क सम्बन्धी रोगों से छुटकारा पा जाता है तथा भाषण एवं मस्तष्क सम्बन्धी कार्य करने में विशेष चतुर होता है।

मस्तष्क रेखा और जीवन रेखा के मध्य में वृत चिन्ह हो और मस्तष्क रेखा पर रेखा जाल हो तो जातक नीच विचार वाला बुरे कर्म कुकर्म करने वाला, बौद्धिक दृष्टि से भी हीन हुआ करता है। दे० चि० ४६

चित्र ४६

मस्ष्तक रेखा, जीवन रेखा, भाग्य रेखा के संयोग से त्रिभुज बन रहा हो तो ऐसा जातक धनवान और अच्छे चरित्र वाला होता है।

मस्तष्क रेखा पर यव चिन्ह हो तो ऐसा जातक प्रेम में आत्मघात कर देता है तथा सिर सम्बन्धी रोग रहता है। दे० चि० ५०

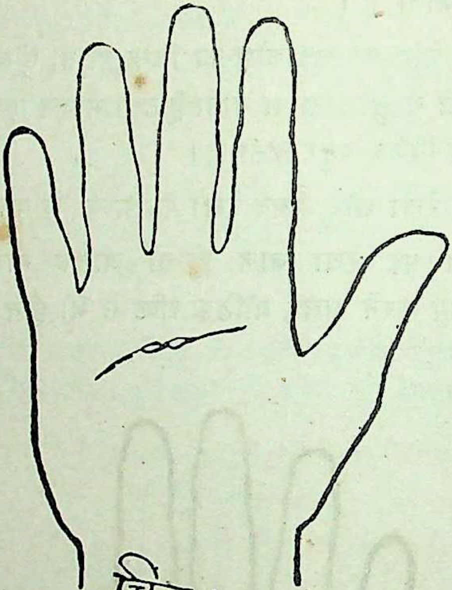

चित्र ५०

समय निर्णय

पंचवर्षीय नियम—मस्तष्क रेखा को किसी सूत के धागे से नाप लें, फिर बीस भाग कर लें एक भाग पांच वर्ष का होता है।

इस प्रकार पूर्ण विचार के बाद सूक्ष्म निर्णय कर मस्तष्क रेखा के शुभ और अशुभ चिन्ह को ध्यान में रखकर फल कहें।

दस वर्षीय नियम—मस्तष्क रेखा के सामान्य जौ लेकर उससे नापें, एक यव का आयुमान दस वर्ष के तुल्य होता है। उसके अनुसार फल कहें।

सात वर्षीय नियम—विधि के अन्तर्गत वार्षिक विधी के अनुसार हस्त चित्र पर विभाग कर लें फिर विचारकर शुभा-शुभ फल कहें।

—: समाप्त :—

भाग ३

१. हृदय रेखा

२. भाग्य रेखा

३. सूर्य रेखा

४. स्वास्थ रेखा

५. विवाह रेखा

६. मुद्रिका

७. सन्तान रेखा

८. चन्द्र रेखा

९. समय निर्णय

१०. योग प्रकरण

११. हस्त चित्र उतारना

प्रथम परिच्छेद

हृदय रेखा (THE LINE OF HEART)

मानव जीवन के छिपे हुए रहस्यों को प्रकाश में लाने वाली कोई रेखा है तो उसका नाम हृदय रेखा है। यह रेखा मानव के छिपे हुए भावों पर प्रकाश ला देती है और मानव उसकी सच्चाई को मानता है। यह रेखा सम्बन्धी सच्ची बातों को जातक स्वीकार करने में आना-कानी करता है, क्योंकि उन बातों को स्वीकार करने में लज्जा आती है इस रेखा के द्वारा प्रेम, व्यभिचार, दुर्व्यसन आदि का पता लग जाता है अशुभ हृदय रेखा मनुष्य के व्यभिचारी व्यसनी सुन्दर तथा शुभ हृदय रेखा मनुष्य को सदाचारी के रूप में प्रकट करती है।

पौवत्यि आचार्य इस रेखा को आयु रेखा कहते हैं और इससे निर्णय किया करते हैं।

> कनिष्टकां समाश्रित्य आयु रेखा समादिशेत्।
> आच्छिन्नाया भवता यास जीवेच्छरदः शतम् ॥ १ ॥
>
> 'गरुड़ पुराण'

आयु रेखा कनिष्ठका के प्रदेश से गुरु के क्षेत्र तक जावे और टूटी न हो और न बट रही हो तथा छिद्र रहित हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष तक जीता है, अर्थात पूर्ण आयु होती है।

यदि हृदय रेखा टूटी हो अथवा छिन्न हो तो जीवन हानि का भय रहता है।

अच्छिन्ना तज्जंनी व्याप्त तथा रेखास्य दृश्यते।

कनिष्ठा पृष्ट निर्गता दीर्घं मुख्यं यथाऽऽनुयात् ॥ १ ॥

स्कन्द पुराण।

जिसके हाथ में कनिष्टका अंगुली से तर्जनी अंगुली तक छिद्र रहित सुन्दर रेखा हो तो ऐसा जातक दीर्घायु होगा, समुद्र ऋषि का इसी सम्बन्ध में कहना है कि यदि 'अक्षता' है तो जातक १२० वर्ष तक जीता है।

कनिष्ठांगुलि मूल्लाज्जो रेखा मच्छन्ति तर्जनी।
अविच्छिन्नानि वर्षाणि शतआयु विनिर्दिशत, ॥ १ ॥
कनिष्ठागुंलि देशाच्च रेखा गच्छन्ति मध्यमाम्।
अविच्छिन्नानि वर्षाणि आशीत्यार्युर्विशते ॥ २ ॥
कनिष्ठांगुलि देशाच्च रेखा अच्छत्य नामिकां।
अविच्छिन्नविनिवर्षणि षष्ठिरार्यविनिर्दिशेत् ॥ ३ ॥
कनिष्ठांगुलि देशाच्च रेखा तत्रेव गच्छिति।
त्रिः शद्वाविंशवर्षाणि तस्यायुः परिकीर्तितः ॥ ४ ॥
रेखा प्रदेशिनिगा शतयुषां कल्पनीय मुनाभिः।
छिन्नभिदुंमपतन बहु रेखा रेखिनोनिः स्वाः ॥ ५ ॥
यावत्यो गुलयो लभ्या मूलाज्जीवित रेखाया।
तावंत्य शरदां ज्ञेया पञ्च विंशतियो बुधैः ॥ ६ ॥

कनिष्टका अंगुली के मूल से प्रारम्भ होकर तर्जनी के मूल तक आती है ऐसी हृदय रेखा अविछिन्न पूर्ण और सौ वर्ष की आयु देती है यदि यह रेखा कनिष्ठका के मूल से प्रारम्भ होकर मध्यमा के अन्त तक गई हो तो ८० वर्ष की आयु होती है, यह रेखा कनिष्ठका के मूल से कनिष्ठका तक हृदय रेखा हो तो ३० वर्ष अथवा २० वर्ष की आयु होती है। यह स्थान-२ पर छिन्न भिन्न हो तो वृक्ष आदि ऊंचे स्थानों से जातक गिरता है। इस रेखा पर छोटी-२ बहुत सी रेखायें हों तो

जातक निर्धन होता है। यह गुरु की अंगुली को लांघ रही हो तो ऐसा जातक सौ वर्ष तक जीता है।

कनिष्ठा तर्जनी यावद्रेखा भवति चाक्षता।
विशत्यब्दाधिकशतं नरो जीयत्य नामय ॥ १ ॥
कनिष्ठान्मध्यमां यावद्रेख भवति चाक्षता।
शताद्वं वाथवा शिति नरो जीवेन्न संशय ॥ २ ॥
कनिष्टान्नमिकामां चेत् रेख भवति चाक्षता।
षष्टि पंचा-द्वं वा नरो जीवत्य संशयं ॥ ३ ॥
रेखाया भिद्यते रेखा स्वल्यापुश्च भवेन्नर ॥ ४ ॥

कनिष्ठका के मूल से रेखा निकलकर अखण्ड अवस्था तर्जनी तक गई हो तो ऐसा जातक १२० वर्ष तक जीता है, कनिष्ठका के मूल से अखण्ड रेखा मध्यमा तक गई हो तो ऐसा जातक १०० वर्ष तथा ८० वर्ष तक जीता है। यह रेखा कनिष्ठिका से अनामिका तक गई हो तो ऐसा जातक ६० अथवा ५० वर्ष तक जीवित रहता है यदि रेखा कनिष्ठका तक गई हो तो ऐसा जातक ३० वर्ष तक जीवित रहता है, यदि यह रेखा किसी रेखा के द्वारा कट रही हो तो ऐसा जातक अल्प-आयु होता है।

यह रेखा जितनी अंगुलियों का उल्लंघन करती जावे उतनी प्रत्येक अंगुली २५ वर्ष के हिसाब से अधिक जानना और आयु कहनी चाहिये।

विवेक विलास का मत है कि प्रत्येक ग्रह क्षेत्र के भाव का बुध (कनिष्ठाँगुली) सूर्य (अनामिका) शनि (मध्यमा) गुरु (तर्जनी) वर्षमान २५ वर्ष होता है जितने ग्रह क्षेत्रों पर आयु रेखा गई हो उसके २५ वर्ष के प्रति क्षेत्र के हिसाब से आयु कहनी चाहिये।

इस रेखा से कुछ आचार्य १०० वर्ष कुछ १२० वर्ष की आयु मान कर आयु का निर्णय करते हैं। हमारे जातक ज्योतिष शास्त्र के अनुसार १२० वर्ष तथा १०८ वर्ष की आयु मानी जाती है, विदेशी सामुद्रिक

ज्ञाता १०० वर्ष की आयु मानते हैं। वैसे १०० वर्ष परमायु मान कर ही हृदय रेखा पर विचार कर आयु का निर्णय करना चाहिये।

साथ ही साथ हस्त परीक्षकों को देश, काल, समय तथा पात्र का विचार कर फल कहना चाहिये।

हृदय रेखा के स्वरूप से अल्प-आयु तथा अल्प-मृत्यु का विचार होता है।

कलहानि तथा पक्षं ज्ञेयावितयेषि च।
आयु रेखा स्वरूपाच्च अल्प-मृत्यु विचार्यते ॥ १ ॥
आयु रेखात्र तर्जन्यां तस्या वर्ष शतायुष।
विद्धा रेखा भवेद्यन्य वक्ष्यते तस्य लक्षणं ॥ २ ॥
वामे वामेज्ज वेधेन जले मृत्यु समादिशेत्।
रेखा सरल वे घने शस्त्रेण मृत्यु वादिशेत् ॥ ३ ॥
दक्षिणे दक्षिणे वेधे वह्नि सर्प भयान्मृति।
वाम दक्षिणा पार्श्वस्या द्वेधान्मृत्युर्महारूज ॥ ४ ॥
प्रांते जीवित रेखाया स्तिर्यग्रेखां यदा भवेत्।
तदाश्वात्प्रतितो ज्ञय; सा श्यामा च खराद्भय् ॥ ५ ॥
आयु रेखा तले वक्रा या रेखा कुशवम्द्वेत्।
तदाहस्ति भरं विद्याद्रेखा छिद्रे जलांम्दयम् ॥ ६ ॥
आयु रेखा मध्य भागे उभे रेखे व्यवस्थिते।
एकादीर्घा लघुऽचैका तदोर्ध्याग्नि पतेद् गृहात् ॥ ७ ॥
आयु रेखा तले रक्ता तदा रक्त विकारत।
गण्डव्रणादिघातो वा तद्वर्षापगमे भवेत् ॥ ८ ॥
आयु रेखा तरे शुक्ला विवः सन्निपातदाः।
अग्निर्मिविदुभिः रक्तैः श्यामैविष भय भवेत् ॥ ९ ॥
आयु रेखा पल्लवाः स्यर्हीनयेंगुलि संमुखाः।
अंगुष्टं संमुखाः सर्वे द्रब्य सम्पत्ति कारिणी ॥ १० ॥

आयु रेखांतरा छेदे जलाद्वा ज्वलनाम्दय।
स्त्री प्रसङ्गापदयशस्तं स्याल्प मृति सम्भव ॥ ११ ॥
अंतेय दायु रेखाया रेखांगुष्ट धनोम्मुखी।
तदापूर्वं सुखी पश्चाद् दुःखी वा निर्धनः पुमान् ॥ १२ ॥
मित्र पीड़ा मातृ रेखायुरेखा मूल सङ्गम।
यौवने सुख भोक्तास्यादंगुष्ट वयवेयवै ॥ १३ ॥
चतुष्टिका स्यादंगुष्टः पित्र रेखांतरे यदि।
तदा वृश्चिक दशं स्याद्यंष्ट्रायां दष्ट्रिनो भयं ॥ १४ ॥

आयु रेखा तर्जनी अंगुली तक गई हो तो ऐसे जातक की आयु १०० वर्ष की होती है।

आयु रेखा किसी अन्य रेखा के द्वारा बेंधी हुई हो तो उसका फल निम्न प्रकार जानना चाहिए।

हृदय रेखा को कोई रेखा बांई तरफ से टेढ़ी होकर बेंध रही हो तो ऐसे जातक की मृत्यु जल में डूबने से होगी।

आयु रेखा किसी सरल रेखा से बेंधी गई हो तो ऐसे जातक की मृत्यु शस्त्र से होती है।

आयु रेखा से कोई रेखा टेढ़ी होकर दाहिनी ओर से बेंध रही हो तो ऐसे जातक की मृत्यु सर्प दश तथा अग्नि से होती है।

आयु रेखा को एक रेखा दक्षिण की ओर और एक रेखा बाई तरफ से बेंध करती हो तो ऐसा जातक महा रोग का रोगी होता है।

आयु रेखा के अन्त में कोई दूसरी एक टेढ़ी रेखा हो तो ऐसा जातक अश्व से गिरता है। यदि इस टेढ़ी रेखा का रंग काला है तो गधे आदि से गिरता है।

आयु रेखा के प्रारम्भ के स्थान अंकुश के समान कोई टेढ़ी रेखा हो तो ऐसे जातक को हाथी से भय होता है।

इस प्रकार की रेखा पर यदि छेद हो तो जातक को जल से भय होता है।

आयु रेखा के मध्य में दो खड़ी रेखायें हों और इन रेखाओं में एक बड़ी हो और एक छोटी हो तो ऐसे जातक को घर के ऊपर से गिरने का भय होता है ।

आयु रेखा पर लाल रंग का तिल हो, यह तिल जिस वर्षमान में होता है उस वर्षमान में फोड़ा फुन्सी रक्त वीकार सम्बन्धी रोग होता है ।

आयु रेखा पर श्वेत बिन्दु अथवा तिल हो तो उस वर्षमान में सन्निपात का भय होता है ।

यह बिन्दु रेखा पर लाल रंग का हो तो जातक को अग्नि भय होता है ।

यह बिन्दु काले रंग का हो तो जातक को विष का भय होता है ।

आयु रेखा से दो शाखायें निकल कर अंगुलियों की ओर जा रही हो तो ऐसा जातक निर्धन होता है ।

यदि इस प्रकार की रेखायें नीचे की ओर मुंह करके जा रही हों और उनका मुंह अंगुठे की ओर हो तो यह धन प्रदायक होती है ।

आयु रेखा अन्य रेखाओं द्वारा स्थान-२ पर छेदी हुई प्रतीत होती हो तो जातक को जल अथवा अग्नि से भय होता है तथा स्त्री प्रसंग से अपयश और अल्प-मृत्यु की सूचना माननी चाहिये ।

आयु रेखा से कोई शाखा निकल अंगुष्ठ की ओर अथवा धन रेखा की ओर जा रही हो तो ऐसा जातक आयु के प्रथम वर्षमान तक सुखी तथा धनवान तथा उत्तर भाग में निर्धन और दुखी रहता है ।

आयु रेखा से कोई शाखा निकल कर मस्तष्क रेखा में मिल जावे अथवा मस्तष्क रेखा से कोई शाखा निकल कर आयु रेखा हृदय रेखा में मिल जावे तो ऐसा जातक मित्रों की ओर से दुःख उठाया करता है ।

अंगुष्ठ के प्रथम पर्व यव का चिन्ह हो तो ऐसा जातक युवा अवस्था में सुख भोगता है ।

अंगुष्ठ और जीवन रेखा के मध्य चतुष्कोण का चिन्ह हो तो जातक को बिच्छू के काटने का भय होता है ।

यदि यह चिन्ह दांत के आकार का हो तो जातक को दाँत वाले जानवरों से भय होता है ।

हृदय रेखा से आयुमान

जगत्याखं नवारमृता: ।। १ ।।
रमण्यां पंचनागाश्च त्रिपद्यां नवति ९० स्मृता ।
इन्द्राख्या सप्तति प्रोक्ता वैश्यदेव्या नवाधिका ।। २ ।।
गांधारी नाम रेखाया परमायु द्विमासिका ।
धृतचंपक मालाया दारिद्रा पंच पंचवै ।। ३ ।।
कुग्रहिण्याच सद्राम्यु: परमायु: कराब्धय: ।
चपलायाक्य: प्रोक्त जातक ज्ञँ मनीषिमी ।। ४ ।।
योगेथ सर्वायिषस्तु स्पष्टमायु भवत्य हो ।। ५ ।।
यासां भास मित प्रोक्तं घटि दिन समतथा ।
तासां योगो नकर्त्तव्य केषा चिदित समंतं ।। ६ ।।
इति संक्षेपत: प्रोक्त: कारण तरेषुवेनि विस्तारेणार्थं ।
दृष्टव्यं ग्रन्थे ग्रन्थनां तरेषुवेति ।। ७ ।।

१. **जगती हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में जगती नाम की हृदय रेखा हो उसकी परमायु ९० वर्ष की होती है ।

२. **कुमारी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में कुमारी हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु ८५ वर्ष की होती है ।

३. **घृति हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में घृति नाम की हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु ८५ वर्ष की होती है ।

४. **रमणी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में रमणी हृदय रेखा हो तो उसकी आयु ९० वर्ष की होती है ।

५. त्रिपदी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में त्रिपदी नाम की हृदय रेखा हो तो उसकी आयु ६० वर्ष की होती है।

६. वासवी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में वासवी हृदय रेखा हो तो उसकी परम आयु ७० वर्ष की होती है।

७. वैश्वी देवी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में वैश्वी देवी हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु ७६ वर्ष की होती है।

८. गाँधारी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में गांधारी हृदय रेखा हो तो उस जातक की परमायु २ मास की होती है।

९. चम्पक माला हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में चम्पक माला हृदय रेखा हो तो उस जातक की परमायु १८ वर्ष की होती है।

१०. दारिद्रदा हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में दारिद्रदा हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु ५५ वर्ष की होती है।

११. कुग्रहणी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में कुग्रहणी हृदय रेखा हो तो उसकी आयु १५ वर्ष की होती है।

१२. चपलवदना हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में चपल वदना हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु ४२ वर्ष की होती है।

१३. सेनानित्व साम्प्रदायी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में सेनानित्व साम्प्रदायी हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु १३ वर्ष की होती है।

१४. महाराज्य प्रदात्री हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में महाराज्य प्रदात्री हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु १०० वर्ष की होती है।

१५. सौराज्य या साम्राज्य प्रदा हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में सौराज्य व साम्राज्य प्रदा हृदय रेखा हो तो उसकी परमायु तिल के वर्षमान के समान होती है।

इस प्रकार जीवन रेखा मस्तष्क रेखा तथा हृदय रेखा के वर्षों को

जोड़कर परमायु कहनी चाहिये । इस जोड़ में वार, घड़ी, पल का योग नहीं करना चाहिए ।

हृदय रेखा से जन्म तिथि तणा जन्म समय का ज्ञान होता है । इस प्रकार जीवन रेखा से आयु अर्थात वर्ष मस्तष्क रेखा से जन्म मास तथा हृदय रेखा जन्म तिथि और जन्म के समय का ज्ञान होता है इस प्रकार इष्ट के अनुसार लग्न का साधन करके जन्मांक निर्माण होता है और आगे जन्म पत्र का निर्माण जातक ज्योतिष की विधी से ही होगा ।

१. हृदय रेखा से जन्य तिथि

रेखा जगति हस्ते तस्य तस्य जन्म द्वादश्यां प्रोक्तः ।
जगति रेखा यस्य चेत् भवति पाणि पद्मे तस्य प्रोक्ता ॥ १॥
सुज्ञैः जन्म तिथिः षष्टी, कुमार्या च नवमी ।
धृत्यां जायते मनुजस्य जन्म तिथि पंश्चमी च ॥ २ ॥
रमण्यां हस्ते वासत्यां जनस्य तिथि एकादशी ।
त्रीपद्यांच वासव्यो खालु हस्ते सत्यां जनुषो दशमी तिथि प्रोक्ता ॥३॥
वैश्य दैव्या च रेखायां उत्पत्ति तिथिः द्वादशी गांधर्याया षष्ठी ।
चम्पक मालायां चशेवि विष्णु प्रिया सेना मित्रप्रदी यांस्यात् ॥४॥
महाराज्य प्रदायां द्वितीत सौराज्य पद पदाव्यां द्वितीया पंश्चमी जनुषी ।
साम्राज्य प्रदायां रेखायां पित् तिथिर्यगार्ग्य मत चैतत् ॥५॥

२. अन्य आचार्य मत

रेखा यदास्याज्जगतर्नरस्यकरस्तले शील गुण स्वरूपा ।
प्रोक्तं तदास्त नरस्य जन्मः नूनं चतुर्थ्यां खलु जातकज्ञै ॥१॥
यदाकुमारी खलु पद्मे जन्म स्मृतंनुः खलु वसुधीमि ।
तिथो द्वितियायुत संज्ञकायां भाग्याधिकस्यात्सुत रूपवांश्च ॥२॥
धृति विशाला खलु यस्य हस्ततले भवेतस्य तिथिर्दिनागी ।
जातीरमाण्यां विलसत सरूप कात्यां तिथीनां दरिवासरेही ॥३॥

यस्यास्तिहस्ते त्रिपदीजनस्य तस्या प्रसूतिकिल शंभु तिथ्यां ।
हस्ते यदा यस्य नरस्य रेखा नाम्ना युतोभि जनिरस्य षष्ठयां ॥४॥
हस्ते वैश्वदेवी भवति यस्यतस्य जन्म सप्तम्यां ।
तिल संयुतायां तस्यां जन्म प्रोक्तं बुधै प्रतिपदी ॥५॥
गांधार्यायां द्वितीयायां तिल युक्तायां जन्म पंचश्म्यां ।
चम्पक मालायां हस्ते जन्म तिथिः स्मृता नरस्य शम्भु तिथि ॥६॥
तिलं संयुतायां तस्या जन्म तिथिरष्टयी बुधै प्रोक्ता ।
कौमार्या तिलयुक्तायां नवमी जन्म तिथिस्तस्य नरस्य ॥७॥
धृतिर्यदा तिल युक्ता चरेखा भवेज्जन हस्ते तदास्यतिथिर्यमी ।
खलु प्रोक्ता सुधिमाः त्रिपद्यांवै पौर्णिमासी बुधैः ॥८॥
वासावी तिलयुक्ता जन हस्ते सत्यां जन्मत्रयोदश्यां ।
सेना नित्वाप्रदायां हस्ते सत्यां जन्मत्रयोदश्यां ॥९॥
जगति रेखा शुद्धा यस्य नरस्य तस्य जन्म द्वादश्या ।
कुमार्या च शुद्धायां हस्ते सत्यां जन्म तृतीयायां ॥१०॥
धृत्यां च खलु शुद्धायां पञ्चमी तिथि गजननम् ।
तिलयुक्ता रमण्यां च शुद्धायां दशमी प्रोक्ता जन्म तिथि ॥११॥
गाँधार्या च त्रिपद्यां जन्म तिथि क्रमेण दशमी नवमी ।
चम्पकमालायां च शुद्धायां तिथि जन्मनः पौर्णिमासी ॥१२॥
सौराज्यपदं दात्रयां जन्म तिथि षष्ठी साम्राज्य दायां ।
साम्राज्य प्रदायां शुद्धायां षष्ठी तिल युक्तायां दाता हरिदिनम् ॥१३॥

अन्य आचार्य मत

कुमार्या प्रतिपद् प्रोक्ता धृतौचैव द्वितीयाका ।
तृतीया च रमण्यां वै त्रिपद्यं च चतुर्थिका ॥१॥
वैश्य देव्यां पंचमीस्यात् गांधार्या स्कंध स्वामिनी ।
भास्करी चंपकाख्यायां दरिद्रदाद्यां तद भ्रिमा ॥२॥

कुग्रहिण्यां च नवमी दशमी चपल वदनाय।
सेना नित्व दायां हरिगं महाराज्यदायां च द्वादशी ॥३॥
सौराज्य दायां विश्वतिथि साम्राज्य दायां च शैविका।
शुद्धायां शील रुपयां तिथि रत्काच पूर्णिमा ॥४॥
एतन्मन मुनीनांच प्रोक्तंशुद्धं तिथे विधौ।
मतां तराणी चान्यानि ज्ञैयां निच बुधैं स्तथा ॥५॥

१. **जगती हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में जगति हृदय रेखा हो तो उसका जन्म १ चतुर्थी ४,२ द्वादशी १२,३ षष्ठी ६,३ पूर्णिमा १५ का जन्म कहते हैं। जन्म तिथि के कारण प्रकरण में चार आचार्यों नें मत दिये हैं इस कारण आचार्यों के मतानुसार तिथि का एक २ हृदय रेखा में एक दो या चार मत दिये हैं, प्रयोगकर्ता स्वयं प्रयोग कर सत्यता का ज्ञान कर ले।

२. **कुमारी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में कुमारी हृदय रेखा हो तो उसका जन्म, १ प्रतिपदा १,२ द्वितीया २,३ के दिन को कहते हैं यदि कुमारी रेखा पर तिल हो तो ऐसे जातक का जन्म नवमी ९, तिथि को होता है।

३. **धृति हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में धृति हृदय रेखा हो उसका जन्म १ अष्टमी ८,२ द्वितीया २ को जन्म होता है यदि इस हृदय रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो १ द्वितीया २ तथा पंचमी ५ को जातक का जन्म होता है।

४. **रमणी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में रमणी हृदय रेखा हो उसका जन्म १ द्वादशी १२, २ एकादशी ११, ३ तृतीय ३, को जन्म होता है, यदि इस प्रकार की रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो जातक का जन्म १ दशमी १० तिथि को होता है।

५. **त्रिपदा हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में त्रिपदा नाम की हृदय रेखा हो तो उसका जन्म १ चतुर्दशी १४, २ नवमी ९, ३ चतुर्थी

४ को दशमी १० को जन्म होता है। यदि इस प्रकार की रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का ज़न्म पूर्णिमासी १५ को जन्म होता है।

६. **वासवी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में वासवी नाम की हृदय रेखा हो तो उसका जन्म १ षष्ठी, २ दशमी १०, ३ अमावस्या ३० को जन्म होता है। यदि वासवी रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का जन्म अमावस्या ३० को होता है।

७. **वैश्वी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में वैश्वी हृदय रेखा हो तो ऐसे जातक का जन्म १ सप्तमी ७, २ द्वादशी १२, ३ पंचमी ५ को जन्म लेता है। यदि इस रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो ऐसी वैश्वी देवी रेखा वाले का जन्म प्रतिपदा १ को जन्म होता है।

८. **गांधारी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में गांधारी नाम की हृदय रेखा हो तो ऐसे जातक का जन्म १ द्वितीया २, २ दशमी १०, ३ षष्ठी का जन्म होता है। यदि रेखा पर तिल हो तो जातक का जन्म पंचमी को होता है।

९. **चम्पक हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में चम्पक माला नाम की हृदय रेखा हो तो उस जातक का जन्म १ चतुर्दशी १४, २ सप्तमी ७, ३ पूर्णिमासी १५ को जन्म होता है। यदि इस प्रकार हृदय रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो जातक का जन्म अष्टमी ८ को होता है।

१०. **दारिद्रदा हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में दारिद्रदा नाम की हृदय रेखा होती है तो ऐसे जातक का जन्म अष्टमी ८ तिथि को होता है।

११. **कुग्रहणी हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में कुग्रहणी नाम की हृदय रेखा हो तो ऐसे जातक का जन्म नवमी ९ को होता है।

१२. चपल चदना हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में चपल-चदना हृदय रेखा हो तो ऐसे जातक का जन्म दशमी १० को होता है।

१३. सेनानित्यप्रदा हृदय रेखा—जिसका जातक के हाथ में सेना-नित्य नाम की हृदय रेखा हो तो उसका जन्म त्रयोदशी १३,२ एकादशी ११ को जन्म होता है।

१४. महाराज्य हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में महाराज्य प्रदा नाम की हृदय रेखा हो तो उसका जन्म १ द्वितीया २, २ द्वादशी १२ को होता है।

१५. सौराज्य हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में सौराज्यप्रदा हृदय रेखा हो तो ऐसे जातक का जन्म १ षष्ठी ६, २ पंचमी ५, २ त्रयोदशी १३, को जन्म होता है।

१६. साम्राज्य हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में साम्राज्य प्रदा नाम की हृदय रेखा हो तो १ प्रतिपदा १, २ षष्ठी के दिन जन्म होता है। यदि इस प्रकार रेखा पर तिल का चिन्ह हो तो जातक का जन्म १ द्वादशी १२, २ अमावस्या ३०, ३ चतुर्दशी १४, तिथी को होता है।

इस प्रकार जन्म तिथि का ज्ञान कर जन्म इष्ट का साधन करना होता है आगे जन्म इष्ट के साधन की विधि कहते हैं।

तिथि ध्रुवांक

अगत्याश्च ध्रुवांकानि त्रयोदश तथा त्रय।
कुमार्याश्च त एवास्यु ध्रुवांकानि १३, ३ धृते रथ ॥१॥
षड्विंशति तथा षट् च रमण्या पंच पंचवे।
त्रिपद्या सप्त शैला:स्यु वासव्या सप्त षट् तथा ॥२॥
वैश्यदेव्या स्त्रय: रवंच गांधार्या सप्त सप्तवै।
पंचवाच स्तपा चंपक मालाया स्मृता बुधै ॥३॥

दारिद्र्याया: प्रथ सप्त ध्रुवांका परिकीर्तिता।
कुग्रहिण्या नव सप्त पंच नेवास्च सदा स्मृता: ॥४॥
चपल मुखाया: रेखाया: सेनानित्वद संज्ञका।
तस्या पंच तथा द्वौच तद प्रायास्च पंच च ॥५॥
तथा सप्त बुधै: प्रोक्त ध्रुवांक का मुनि संमता।
सौराज्य पद दाव्याश्च गुण रुपा ध्रुवां स्तथा ॥६॥
तथा साम्राज्य दायाश्च सप्त पञ्च प्रोक्ता ध्रुवां बुधै ॥७॥

१ जगती ३, १३, २ कुमारी के १३।३,३ धृति के २६, ४,४ रमणी ५, ५, ५ त्रिपदी ७।७, ६ वासवी ७।६।७, वैस्वी देवी ३, ०, ८ गांधारी ७।७ ६, चंपक माला ५।५, १० दारिद्रा ३७।११ महाराज्य प्रदा ६।५, १६ सेनानित्वदा ५।२, ध्रुवांक होते हैं।

इष्टकाल जानने की विधि

जगत्या ध्रुवांकै: १३।३ तिथिर्जन्म काल।
प्रगुता च गुण्या भवे दिष्ट काल: ॥१॥
धृतेर्वं ध्रुवांकै २६।६ गुणे पूर्व वत्स्या।
त्रिपद्याश्च ७।७ गुण्यै रसै: संमुतेष ॥२॥
रमण्या ध्रुवांकै ५।५ स्तिथी संगुणे च।
चतुर्भि विहीने भवेदिष्ट काल ॥३॥
ध्रुवां केश्च गुण्ये तिथै वैस्वदेव्या ३।०।
चतुर्भि विहिने भवे चेष्ट काला ॥४॥
गांधार्यास्च ध्रुवांकै गुणित तिथि विष्टकाल स्यात्।
त्रिपद्याश्च गुणित के ७।७ स्तिथावेक हीने पूर्ववच्च ॥५॥
चम्पकमाला ध्रुवां के गुणिते तिथौ जायते इष्टं।
त्रिहीनं ३ नागंस्य षट् ६ हीनं वैशम्पाय नय ॥६॥
अन्नमते वेदैरुने तस्मिन्ने वां के पूर्ववदिष्टम्।
महाराज्यपद दाबा ध्रुवां के ५।७ गुणिते तिथौ चेष्टं ॥७॥

सौराज्य पद दात्र्या अंकं ३।१ गुणितेच पक्षाँ तरेच ।
नवमी रामै हीन षड्भि रद्रिभि वेदैश्च ।।८।।
गालव काश्यपयोरेक भिसने जायते इष्टं ।
धनुषः गार्ग्य गौतम पक्षे क्रमतः शीघ्र गैः ५ खे चरैश्च ।।९।।
साम्राज्य दाया ध्रुवां कै ७।५ गुणिते तिथौ निरिकेश्च ।
भवत्येव जन्म कालं पुंसः इष्ट कालं रेखायाः ।।१०।।
सेना नित्वंय ददाती रेखा ध्रुवं स्तस्या ५।२ ।
संप्रगुण्या तिर्थिव स्या देवंवा उंप्तत्तोश्च इष्ट ।।११।।
सुनित्य प्रोक्ता विद्वद्भि पुराणैः ।
रेखा दारिद्रदाया ध्रुवाकांनि ३।७ ।।१२।।
नित्व संयोजये ज्ज म तिथि नरस्य ।
संजायते जातक संमतेन स्वष्टस्य कालो गदितो मुनिद्रैं ।।१३।।
यत्र कुत्रापि चेष्ठस्य काले षष्ठाग्राधिके भवेत् ।
तदा षष्ठ्यामि माजयेदिष्टंशेषं सप्त चतत् ।।१४।।
कुग्रहिण्या तथा शेष ष्विदिगयुते चेष्ट कालबक्ष्या ।
म्युपायन्तु मतांतर विराम मगं ।।१५।।

१-२. जगती और कुमारी रेखा—जिस जातक के हाथ में जगती अथवा कुमारी हृदय रेखा हो तो उन रेखा के १३-३ ध्रुबाँक को तिथि के अंक से गुणा करें, और जो अंक आवे उन्हें इष्ट काल मानें।

३. धृति हृदय रेखा—धृति के ध्रुवांक २६,६ से जन्म तिथि की संख्या से गुणा करें तो धृति हृदय रेखा का इष्ट काल होता हैं।

४. त्रिपदी हृदय रेखा—त्रिपदी नाम की हृदय रेखा के ध्रुवाँक ७।७ को तिथि से गुणा करें और उसमें ६ जोड़ें तो त्रिपदी रेखा का इष्ट काल होता है, कुछ आचार्य जन्म तिथि तथा ध्रुवाँक के गुणनफल में से एक घटाने से इष्ट काल होता है।

५. रमणी हृदय रेखा—रमणी हृदय रेखा के ध्रुवांक ५।५ को जन्म तिथि के अंक से गुणा कर गुणनफल में ४।४ घटायें तो रमणी रेखा का इष्ट काल होता है।

६. **वैश्व देवी हृदय रेखा**—इस रेखा के ध्रुवांक ३।० में जन्म तिथि से गुणा करें और गुणनफल में से ४ घटा दें तो इस रेखा का इष्ट होता है।

७. **गांधारी हृदय रेखा**—गांधारी रेखा के ध्रुवाँक ७।७ में तिथि का गुणा करने से इष्ट काल होता है।

८. **चम्पक माला हृदय रेखा**—चम्पल माला के ध्रुवांक ५।५ तिथि से गुणा करें और जो गुणनफल आवे वह इष्ट होगा। कुछ आचार्य ३, कुछ ६ और ४ घटाने से इष्ट कहते हैं।

९. **महाराज प्रदा हृदय रेखा**—इस हृदय रेखा के ध्रुवाँक ५।७ को तिथि के अंक से गुणा करें और जो फल आवे उसे इष्ट जानें।

१०. **सौराज्य पद दात्री हृदय रेखा**—इस हृदय रेखा के ध्रुवाँक ३।९ को जन्म तिथि अंक से गुणा करें और जो गुणनफल आवे वह इष्ट होता है। कुछ आचार्यों का मत है कि इष्ट काल ९ कुछ ३ कुछ ७ व ४ घटाने से इष्ट काल कहते हैं।

गालव व गौतम का मत है कि इस इष्ट काल में से १ तथा गर्ग के मत से ५ गौतम के मत से ९ घटाने से इष्टकाल होता है।

११. **साम्राज्यदा हृदय रेखा** – साम्राज्यदा के ध्रुवांक ७।५ को तिथि अंक से गुणा करें और जो गुणन फल आवे वह इष्टकाल होता है।

१२-१३. **सेनित्वदा व चपल वदना हृदय रेखा**—इस हृदय रेखा के ध्रुवांक ५।२ को तिथि से गुणा करें और जो गुणनफल आवे वह इष्ट होता है।

१४. **दारिद्रदा हृदय रेखा**—दारिद्रदा रेखा के ध्रुवांक ३।७ को जन्म तिथि अंक से गुणा करें और जो गुणनफल आवे उसमें जन्म तिथि के अंक जोड़ दें और जो संख्या आवे वही इष्ट होता है।

१५. **कुग्रहणी हृदय रेखा**—इस हृदय रेखा के ध्रुवांक ९।७ को जन्म तिथि के अंक से गुणा करें और जो गुणनफल आवे उसमें १५ जोड़ दें तो इष्टकाल आ जाता है।

१६. वासवी हृदय रेखा—इस हृदय रेखा के ध्रुवांक ७।६ को जन्म तिथि अंक से गुणा करें और जो गुणनफल आवे वही इष्टकाल होता है।

स्वयं सिद्धष्टे काल—

जागती नामिका रेखा वर्तते यस्य पाणिगा।
इष्ट कालो बुधै प्रोक्तों द्विवाणोथ तिथौ क्रमात् ॥ १ ॥
यस्यास्तिपाणौ च घृति रिष्टं तस्य च पूर्वत।
कुमार्या विद्यमनायां पंचवाणा श्चरवशरा ॥ २ ॥
रमणीय नाम यस्यास्ति रेखा कर तले शुभा।
प्रोक्तं मिष्टं वदा चन्द्र वेदा चाथ सुधामया: ॥ ३ ॥
रमण्यामपिरेखाया मंक वेदास्तर्थाग्नय ४६। ३।
त्रिपद्या नाग रामावै ३८।७ शैला प्रोक्ता मनीषिमि ॥ ४॥
वासध्वा वर्तमानायां प्रोक्ता शैल द्विजाधिया: । १७।
वैश्व देव्या पंच वेदावन्दय ४५।३२ चेष्ट कालस्यात् ॥ ५ ॥
गांधार्या पाणिगांयां वै पंच राम स्तथैव च।
इष्ट कालं जातकज्ञै बुधै प्रोक्तं नरस्य ही ॥ ६ ॥
चम्पक स्त्रज नाम्नावै यस्यांणाणि तले बुधै।
पंचतत्वांनि २५ च प्रोक्तमिष्ट कालो दिनिश्चित ॥ ७ ॥
दारिद्रदायां रूपंख कुग्रहिण्यां रविदव: १२।१।
चपलास्य युतायां च रत्नानि मुनय स्तथा ॥ ८ ॥
सेनाधिपत्या दायां च सप्त विंश तुरंगमा २६।७।
महाराज प्रदायां वै नव रत्नानि चक्रमात ६।१४ ॥ ९ ॥
सौराज्यदायां रेखायां नव वाणास्तथाग्नय: ५६।३।
सम्राज्य दायां रेखायां पाणी मायां नवाग्नय: ॥ १० ॥
इष्टकाल जन स्येदं प्रावत जातक कोविब:।
यत्र कुत्रापि पूर्वोयते, विषये इष्टंकाल जे ॥ ११ ॥

तस्मिन्षष्ठद्माधिके भाग षष्टचा कार्य बुधे: सदा ।
शषांके प्रोक्तं मिष्टं च नाम तज्ञैर्मनीषिमि ॥ १२ ॥
मतां तराणी सत्यत्र वहूनि विमलानि च ।
तान्यत्र प्रोक्ता निविस्ताराच्च समासत ।
सं दृश्या निचतान्यत्र ग्रन्थांतर मतेषुचेति ॥ १३ ॥

१-२. जगती और घृति हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में जगती और घृति नाम की हृदय रेखा हो तो उसका जन्म का इष्ट ५२।१५ पल हता है ।

३. कुमारी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में कुमारी हृदय रेखा हो तो उसका जन्म इष्ट ५५ घड़ी ५० पल होता है ।

४. कुमारी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में कुमारी हृदय रेखा हो तो उसका जन्म इष्ट ४४ घड़ी ४ पल होता है, कुछ आचार्य का मत है ४६ घड़ी ३ पल हुआ करता है ।

५. त्रिपदी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में त्रिपदी हृदय रेखा हो तो उनका जन्म इष्ट ३८ घड़ी ७ पल होता है ।

६. वासवी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में वासवी हृदय रेखा हो तो उसका इष्ट १७ घड़ी ० पल होता है ।

७. वैश्व देवी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में वैश्व देवी हृदय रेखा हो तो उसका जन्म इष्ट काल ४४ घड़ी ३ पल होता है ।

८. गांधारी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में गांधारी हृदय रेखा हो तो उसका इष्ट ३५ घड़ी ० पल होता है ।

९. चम्पक माला हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में चम्पक माला हृदय रेखा हो तो उसका जन्म इष्ट ५ घड़ी २५ पल होता है ।

१०. दारिद्रदा हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में दारिद्रदा हृदय रेखा हो तो उसका जन्म इष्ट काल १ घड़ी ० पल होता है ।

११. कुग्रहणी हृदय रेखा—जिस जातक के हाथ में कुग्रहणी हृदय रेखा हो तो उसका जन्म १२ घड़ी १ पल होता है ।

१२. **चपल वदना हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में चपल वदना हृदय रेखा हो तो उसका जन्म १४ वड़ी ७ पल इष्ट होता है।

१३. **सेनाधिप्रत्यदा हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में सेनाधिप्रत्यदा रेखा हो तो उसका इष्ट काल २७ घड़ी ७ पल होता है।

१४. **महाराज्य प्रद हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में महाराज्य प्रद रेखा हो तो उसका जन्म ९ घड़ी १४ पल पर होता है।

१५. **सौराज्यप्रद हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में सौराज्यप्रद हृदय रेखा हो तो उसका जन्म इष्ट ५९ घड़ी ३ पल होता है।

१६. **साम्राज्य हृदय रेखा**—जिस जातक के हाथ में साम्राज्य हृदय रेखा हो तो उसका इष्ट ३९ घड़ी ० पल होता है।

इस प्रकार व५, कास, पक्ष तथा तिथि एवं इष्ट का ज्ञान कर जन्माक निर्माण होता है।

हृदय रेखा का उद्गम स्थान

हृदय रेखा तीन स्थानों से प्रारम्भ होती है।

१. बुध के पर्वत और मंगल के पर्वत के मध्य से प्रारम्भ होकर तर्जनी अंगुली तक अर्थात् गुरु के पर्वत तक।

२. मंगल द्वितीय पर्वत से शनि और गुरु के पर्वतों के मध्य तक।

३. द्वितीया मंगल के पर्वत से ऊपर या बुध के पर्वत के नीचे से मध्यमा अंगुली या शनि के पर्वत तक।

प्रथम प्रकार की हृदय रेखा हो और ऐसी रेखा गुरु के पर्वत पर पहुंच कर कुछ गुरु के पर्वत की ओर झुक रही हो तो ऐसा जातक प्रबल प्रेमी होता है, वह जिसे प्रेम करते हैं उसके पीछे अपना तन, मन, धन सभी न्यौछावर कर देते हैं। वे तो अपने प्रेमी को प्रसन्न देखना चाहते हैं। यदि इसका जातक ईश्वर भक्ति करने लग जावे तो संसार की ओर से बिल्कुल मुख मोड़ लेता है दे० ५३—१

द्वितीय प्रकार की हृदय रेखा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक

जिससे प्रम किया करते हैं, उसे सच्चे हृदय से करते हैं, उनके प्रेम मार्ग में नाना प्रकार की रुकावटें आया करती है, परन्तु वे भी विघ्न बाधाओं पर विजय प्राप्त करते हुए आगे बढ़ते जाते हैं। यह अपने आदर्शों का पालन किया करते हैं। इनका प्रेम कोमल होता है।

दे० चि० ५३—२

तृतीय प्रकार की हृदय रेखा वाले जातक प्रेम वासना प्रिय होते हैं। यह हृदय रेखा जितनी अधिक शनि के पर्वत के निकट ही जातक उतना ही अधिक विषयी होता है, अपने मान और अपमान की परवाह न करते हुए प्रेम किया करते हैं इस कारण यह सर्वदा अपमानित

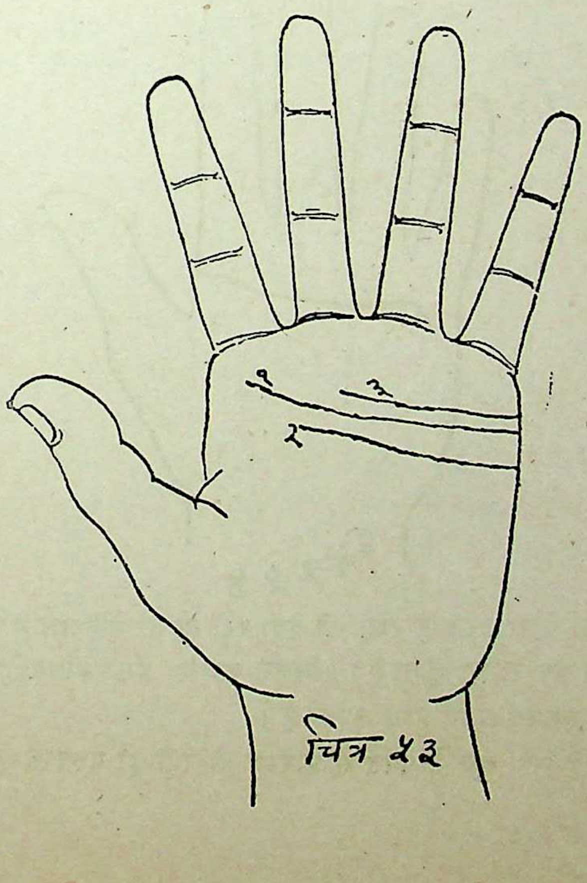

चित्र ५३

हुआ करते हैं। यदि यह रेखा गहरी और शाखा रहित हो तो यह बात और भी प्रबल हो जाती है। दे० चि० ५३—३

हृदय रेखा गुरु के पर्वत पर पहुँच रही हो अथवा लुप्त हो जावे तो इस प्रकार का प्रेम स्पर्धा में बदल जाता है। इस प्रकार के जातक अपने प्रेम पर अधिकार पाने की इच्छा रखते हैं। यदि इसका प्रेमी इच्छानुसार कार्य नहीं करता है तो वह उसको त्याग देते हैं।

हृदय रेखा गुरु के पर्वत पर पहुँच रही हो तो शुभ और नीचे गिरी हुई हृदय रेखा प्रेम मार्ग में अनेकों कठिनाइयों की सूचक होती है। दे० चि० ५४

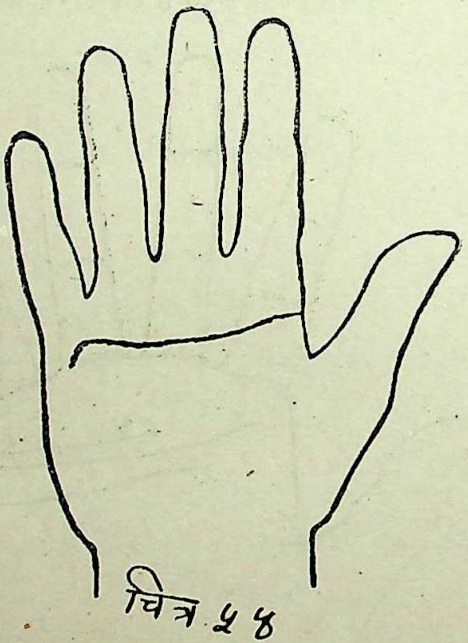

चित्र ५४

हृदय रेखा मस्तष्क रेखा को दबा रही हो तो ऐसे जातक के मस्तष्क पर हृदय का राज्य होता है। जिसके कारण प्रेम बनावटीपन, कपट, हृदय में धड़कन आदि हुआ करती हैं।

हृदय रेखा बुध के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो मस्तष्क रेखा इसके

पास ही में बलवान हो तो ऐसा जातक प्रेम में लाभ हानि का विचार किया करते हैं तथा प्रेम के कारण इन्हें हानि तथा अपयश भी मिला करता है।

हृदय रेखा गुरु की अंगुली के नीचे सर्प जिह्वा शनि पर्वत के नीचे से प्रारम्भ हो रही हो तो वह जातक शान्तिप्रिय तथा प्रेम के सम्बन्ध में सत्यता युक्त करते हैं।

हृदय रेखा तथा अन्य रेखायें—

हृदय रेखा के ऊपर की ओर छोटी २ सुन्दर रेखायें हों तो यह जातक प्रेम सम्बन्धों का प्रतीक है, जो मानव के जीवन पर स्थाई प्रभाव डालते हैं, चाहे यह प्रभाव सुखप्रद हो अथवा जातक को दुःख-प्रद रहा हो। यदि यह रेखायें हृदय रेखा को काट रही हो तो ऐसे जातक प्रेम सम्बन्ध के कारण दुख उठाया करते हैं, यदि यह छोटी रेखायें साफ और सुन्दर है तो सम्बन्ध सुख पूर्ण हुआ करते हैं। दे० चि० ५५

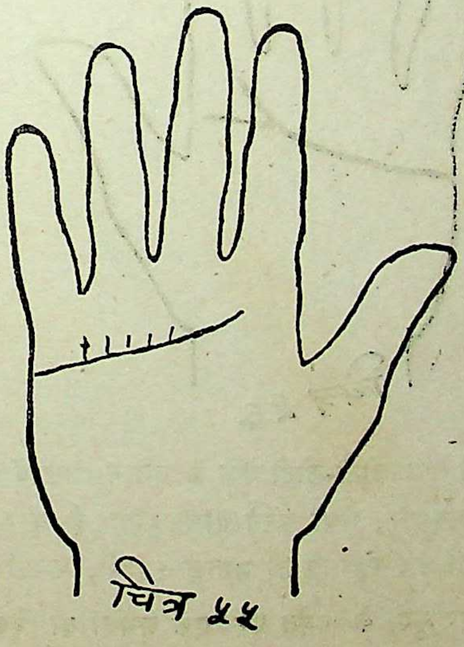

हृदय रेखा छोटी हो और विवाह रेखा स्वयं या सहायक रेखा लम्बी हो तो ऐसे जातक का विवाह सुन्दर, सुशील तथा उच्चकुल की कन्या के साथ होता है यदि इस प्रकार की रेखा को कोई अन्य रेखा काट रही हो तो ऐसा जातक सुन्दर स्त्री होते हुये भी दुराचारी होता है तथा परस्त्री गामी होता है।

हृदय रेखा से कोई शाखा निकलकर द्वितीय मंगल के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक प्रम में जल यात्रा करता है, अन्यथा रोगी और व्यर्थ में अपमान सहन किया करता है। दे० चि० ५६

चित्र ५६

हृदय रेखा से कुछ छोटी-छोटी केश के समान शाखायें निकल रही हो तो जातक मिलनसार, मैत्री करने वाला होता है, यदि इन रेखाओं के द्वारा हृदय रेखा कट रही हो तो जातक स्वार्थी, कपटी हो जाता है।

हृदय रेखा पर गुरु के पर्वत पर एक अथवा दो रेखायें प्रकट हो

रही हों तो ऐसा जातक भाग्यवान अधिक परिश्रम करने वाला अपने मित्र और स्त्री से प्रेम पूर्ण व्यवहार करने वाला होता है और वृद्धा अवस्था में ऐसे जातक को अच्छा सुख प्राप्त होता है सभी इसे प्रेम करते हैं।

हृदय रेखा से कोई शाखा निकलकर चन्द्र के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक यात्रा करता है और धन तथा यश का लाभ कमाता है। दे० चि० ५७

चित्र ५७

हृदय रेखा में से कोई रेखा निकलकर केतु के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक बीमार रहा करता है।

यदि इस प्रकार की शाखा शुक्र के पर्वत पर हो तो यह वीर्य विकार का रोगी होता है तथा स्वास्थ्य भी उत्तम रहता है।

हृदय रेखा से कोई रेखा निकलकर मंगल के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक रक्त विकार का रोगी होता है।

हृदय रेखा से कोई रेखा निकलकर गुरु के पर्वत पर पहुँच रही हो तो यह प्रेम की सूचना है। दे० चि० ५८

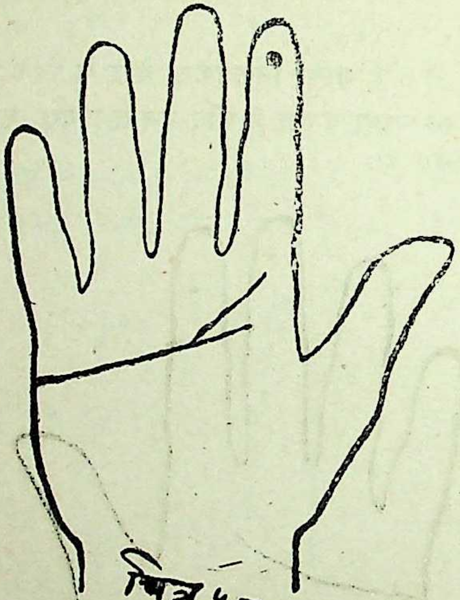

चित्र ५८

हृदय रेखा में से कोई रेखा निकलकर शनि के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक अपयश का भागी बनता है।

हृदय रेखा गुरु के पर्वत पर पहुँच रही हो और उसमें से कोई शाखा निललकर जीवन रेखा पर पहुँचे तो ऐसा जातक प्रेम में अथवा मित्रता में ही मारा जाता है। क्योंकि इसका प्रेमी इसके साथ विश्वास-घात कर देता है।

हृदय रेखा गुरु के पर्वत पर पहुचकर तर्जनी अंगुली के मूल में पहुँच रही हो तो ऐसा जातक यशवान, धनवान तथा राजा प्रदेश के मन्त्रीमण्डल में मन्त्री हुआ करता है।

इस प्रकार की कोई रेखा सूर्य के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक बलशाली तथा सभी कार्यों में सफलता प्राप्त किया करता है। दे० चि० ५६

चित्र ५९

इस प्रकार की रेखा बुध के पर्वत पर पहुंच रही हो तो जातक का स्वास्थ्य प्रायः निर्बल रहता है।

हृदय रेखा अस्पष्ट रूप से गुरु के पर्वत पर पहुंच रही हो और गुरु के क्षेत्र पर रेखा साफ न हो तो ऐसा जातक स्वार्थी, लोभी तथा कामी हुआ करता है।

हृदय रेखा गुरु और शनि के पर्वत के मध्य मस्तष्क रेखा में मिल रही हो तो ऐसे जातक पर स्त्री से व्यभिचार करने का आरोप लगाया जाता है और वह स्वयं भी अपनी स्त्री पर शंका किया करता है।

हृदय रेखा को कोई सीधी रेखा काटे तो शस्त्र तथा विष भय, यदि काटने वाली रेखा टेढ़ी हो तो जल भय, यदि दोनों ही रेखा हृदय रेखा को काटें तो जातक की भयंकर रोग से मृत्यु हुआ करती है।

दे० चि० ६०

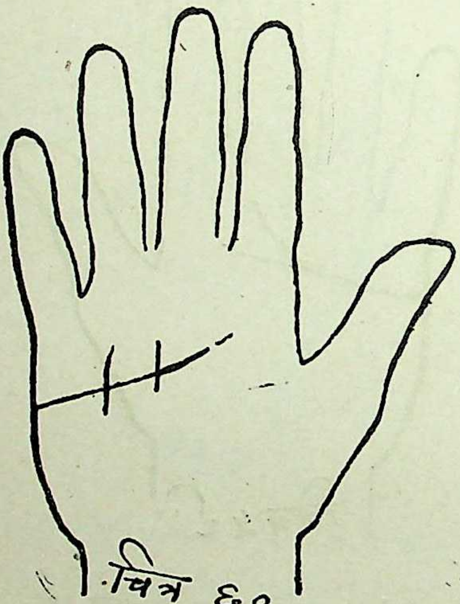

चित्र ६०

हृदय रेखा टेढ़ी शनि के पर्वत पर हो और फिर गुरु के पर्वत पर पहुँचे तो ऐसा जातक स्वार्थी, व्यसनी, धोखेबाजे तथा चालबाज होता है। यदि हृदय रेखा कुछ झुककर सीधी हो रही हो तो व्यासनी होगा तथा प्रेम के कारण नुकसान उठाया करता है।

छोटी हृदय रेखा मस्तष्क रेखा पर गिर रही हो तो जातक उस वर्ष-मान में अपयश, वृथापवाद, मानहानि तथा प्रेम के कारण कलंक का भागी होता है।

हृदय रेखा पर बिंदु अथवा चिह्न हो तो ऐसा जातक जीवन भर दुःख, घृणा तथा द्वेषमय जीवन व्यतीत करता है, सम्भव है कि इस वर्षमान में चोट लगे। दे० चि० ६१

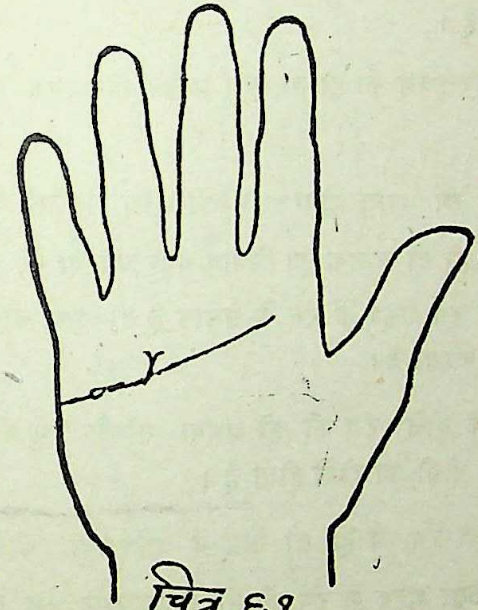

चित्र ६१

हृदय रेखा टूटी हो और उसका रंग लाल अथवा श्वेत हो तो जातक रोगी रहा करता है।

हृदय रेखा और मस्तष्क रेखा का मिलन शनि के पर्वत के नीचे हो रहा हो तो ऐसे जातक की मृत्यु अकस्मात ही हो जाती है।

हृदय रेखा पर वृत चिह्न हो तो ऐसे जातक की नेत्रों की ज्योति चली जाया करती है।

हृदय रेखा का रंग—

हृदय रेखा का रंग पीलापन लिए हो और जीवन रेखा पर यव का चिह्न हो तो जातक कफ तथा फुफ्फुस का रोगी होता है।

हृदय रेखा का रंग तांबे के रंग के समान हो तो ऐसा जातक वैराग्यशील होता है।

हृदय का रंग रक्तवर्ण का हो तो ऐसा जातक हिंसात्मक प्रकृति का होता है।

हृदय रेखा का रंग लाल होगा तो स्त्री शीघ्र मिलेगी यदि हृदय रेखा का रंग पीला हो तो जातक का विवाह बड़ी अवस्था में होता है।

हृदय रेखा का रंग शहद के रंग के समान है तो ऐसा जातक सुख-मय जीवन व्यतीत करता है।

हृदय रेखा हल्के नीले रंग की हो अथवा साँवले रंग की हो तो जातक पित्त जनित रोगों का रोगी होता है।

हृदय रेखा लाल रंग की हो तो प्रेम में अधिकता, पीले रंग की हो तो प्रेम में शुतकता शहद के रंग की हो तो स्वास्थ्य प्रेम, यदि काले रंग की हो तो प्रेम में छल कपट अधिक होता है।

हृदय रेखा पर चिन्ह—

हृदय रेखा पर श्वेत वृत चिन्ह हो तो ऐसा जातक सन्निपात का रोगी होता है। यदि वृत श्याम वर्ण का है तो विषपान से मृत्यु होती है यदि यह वृत चिन्ह लाल रंग का हो तो इस वर्षमान में अग्नि-भय तथा बुखार आदि की सम्भावना होती है।

हृदय रेखा पर शनि और गुरु के पर्वत मध्य द्वीप चिन्ह हो और हृदय रेखा आगे चले तो ऐसा जातक जीवन भर औषधी सेवन किया करता है। दे० चि० ६२

चित्र ६२

हृदय रेखा ६ यवों का निर्माण कर आगे बढ़े तो यवों के वर्ष के भाप्तिमान में क्रोध, घृणा तथा अनेक प्रकार के आर्थिक संकट आवेंगे, अगर दूसरी हृदय रेखा है तो जीवन सुखमय रहेगा।

हृदय रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा जातक इस वर्षमान में किसी घटनावश नेत्र ज्योति खो बैठता है।

हृदय रेखा पर बुरे चिन्ह जातक को दुःख दिया करते हैं। सुन्दर और शुभ चिन्ह सुखप्रद होते हैं।

हृदय रेखा पर क्रोस का चिन्ह हो तो ऐसा जातक प्रेम के कारण कष्ट उठाया करता है। दे० चि० ६३

चित्र ६३

हृदय रेखा पर शनि के पर्वत के नीचे टापू का चिन्ह हो तो ऐसे जातक को वृषण वृद्धि तथा स्नायु सम्बंधी रोग होता है।

यदि इस प्रकार का चिन्ह सूर्य के पर्वत के नीचे हो तो नेत्र पीड़ा तथा दृष्टि मन्दता का रोग जातक को होता है।

हृदय रेखा में यव चिन्ह शरीर को निर्बलता तथा ऐसे जातक का विवाह भाग्यहीन स्त्री से होता है ऐसा जातक गुप्त इंद्रिय का रोगी होता है।

हृदय रेखा पर पताका पालकी अथवा त्रिकोण का चिन्ह हो और गुरु के पर्वत पर क्रोस का चिन्ह हो, अथवा शत्रु के पर्वत पर त्रिकोण का चिन्ह हो तो ऐसा जातक महात्मा, ज्ञानी पुरुष होता है और उत्तम पदवी प्राप्त करता है। दे० चि० ६४

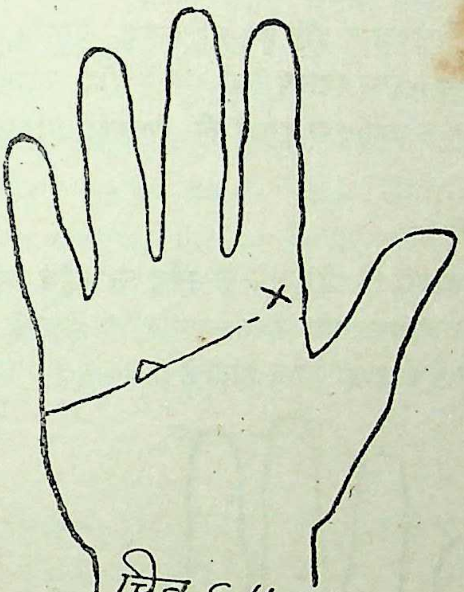

चित्र ६४

हृदय रेखा पर चतुष्कोण का चिन्ह हो तो जातक की रोग तथा प्रेम में निराश से जनित शोक में रक्षा किया करता है।

हृदय रेखा के द्वीप चिन्ह अनुचित प्रेम प्रकट किया करते हैं।

हृदय रेखा और भाग्य रेखा दोनों पर द्वीप चिन्ह हो तो ऐसा जातक प्रेम मार्ग में किसी भी प्रकार की परवाह नहीं किया करता है।

हृदय रेखा पर बुध के पर्वत पर क्रोस का चिन्ह हो और इस क्रोस को बनाने वाली रेखायें हृदय रेखा को काटती हों तो व्यापार में काफी नुकसान सूचक है।

हृदय रेखा का न होना—

हृदय रेखा हाथ में बिल्कुल न हो तो ऐसा जातक हृदय रोगी, पाप और पुण्य को मानने वाला कठोर तथा अल्पायु तथा लफंगा बदमाश होता है।

हृदय रेखा बिलकुल न होते हुए भी जातक दीर्घायु होता है, यदि उसके हाथ में जीवन रेखा स्वास्थ्य रेखा अच्छी और उत्तम प्रकार की हो तो ऐसा जातक स्वार्थी तथा दूसरों की बनावटी प्रतिष्ठा के कारण सफल होता है।

दोहरी हृदय रेखा—

हृदय रेखा दोहरी हो और शुक्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसे जातक धनवान, भाग्यवान तथा चंचल स्वभावप्रिय होता है। यदि अन्तर अधिक है तो प्रेम में निराशा प्राप्त होती है। दे० ६५

चित्र ६५

अगर हृदय रेखा में अन्तर कम है और मस्तष्क रेखा नीचे को झुक रही है तो ऐसा जातक परोकारी होता है।

"A double line of Heart" deetes the love nature in Ekeess of the line of Head is lovy and Slopie the love nature dewotes itself to the good of others. Such persons sacrifill themselves to ceuny out wonderful plans for uplifting and ropcmpli on of Humanity. see. p 65

दुहरी हृदय रेखा प्राकृतिक प्रेम की वृद्धि कर दिया करती है, लेकिन यदि मस्तष्क रेखा लम्बी और नीचे को झुक रही तो ऐसा प्रेम संसार अथवा दूसरों की भलाई के रूप में बदल जाता है, इस प्रकार के हाथ वाले जातक अपने आप को मानवता की सेवा तथा भलाई के लिए आश्चर्यजनक योजना बनाने और मानवता के उद्धार के लिए कार्य किया करते हैं।

समय निर्णय

पंचवर्षीय नियम—हृदय रेखा को सूत के धागे से नाप कर फिर उसके बीस भाग कर लें, एक भाग पांच वर्ष के वर्षमान के बराबर होता है।

दसवर्षीय नियम—हृदय रेखा को सामान्य जौ से नाप लें एक यव का आयुमान दस वर्ष के बराबर होता है।

सातवर्षीय नियम—इसका वर्णन 'समय निर्णय' के अन्तरगत देखिये।

—:०:—

द्वितीय परिच्छेद

भाग्य रेखा (The Line of Fate or Desting)

मानव के हाथ की यह बहुत ही महत्वपूर्ण रेखा है, इसके अभाव में मानव का हाथ कम महत्वपूर्ण रह जाता है, क्योंकि भाग्य रेखा न हो तो निर्धनता तथा कठिन परिश्रम के द्वारा जीवन यापन की घोषणा हैं। भाग्य रेखा का सम्बन्ध केवल धन से ही नहीं होता है, इसका संबंध विद्या, राज ऐश्वर्य तथा भाग्योदय से भी होता है। इस रेखा को नन्द रेखा, उर्ध्व रेखा, धन रेखा तथा प्रारब्ध रेखा भी कहते हैं।

त्यक्त्वाऽधो मणिबन्धया रेखा स्यात् कर गामिनी।
स्वर्ण रत्न राज्य श्री दायिका सात संशय ।। १ ।।

मणिबन्ध से उठकर हाथ की ओर जाने वाली रेखा स्वर्ण, रत्न, राज आदि देने वाली होती है इसमें सन्देह नहीं है। इस रेखा के ५ भेद होते हैं।

छोटी भाग्य रेखा—भाग्य रेखा छोटी हो तो यह नाना प्रकार के भाग्य उदय दिया करती है। दे० चि० ६६-१

२. बड़ी भाग्य रेखा— भाग्य रेखा सुन्दर और चौड़ी हो तो उसे महानदी के नाम से पुकारते हैं, यह नाना प्रकार के सुख, धन, यश, लाभ दिया करती है। दे० चि० ६६-२

२. पतला हृदय रेखा—भाग्य रेखा पतली हो तो महाराज्य प्रदान करने वाली होती है। दे० चि० ६६-३

४. मोटा भाग्य रेखा—भाग्य रेखा मोटी हो और गहरी हो तो जातक को सर्व प्रकार के सुख देती है। दे० चि० ६६-४

५. चिन्ह युक्त हृदय रेखा—भाग्य रेखा तिल के चिन्ह युक्त हो तो स्वराज्य प्रद होती है। दे० चि० ६६-५

यह रेखा सुन्दर हो तो—

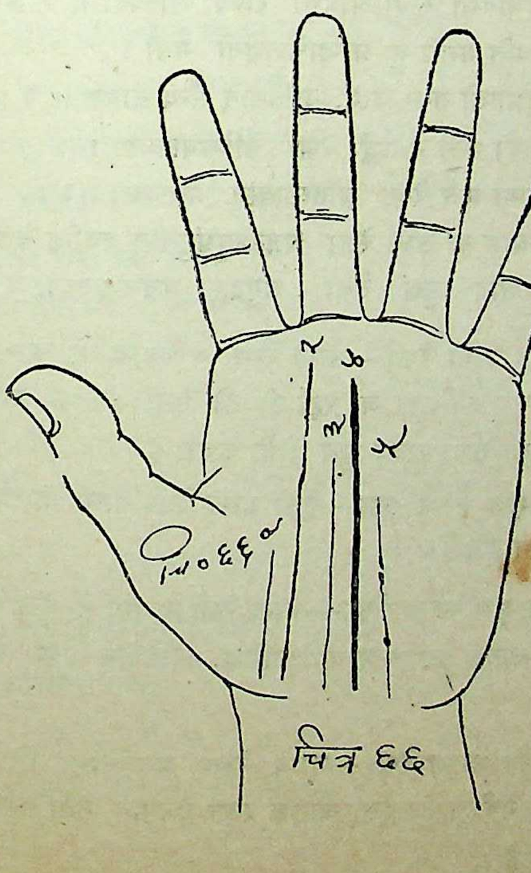

चित्र ६६

यह रेखा सुन्दर हो तो—

अखण्डा अस्फुटा पल्लव रहिता तथा अविच्छिवा ।
एषादि वह चोदर्व रेखा स्रहस्रजन पोषणी ज्ञेया ।। १ ।।

यह रेखा कटी न हो, शाखा रहित हो तथा छिन्न भिन्न न हो तो ऐसा उर्ध्व रेखा वाला जातक सहस्रों मनुष्यों के पोषण करने वाला होता है ।

मणिवंद्या दूर्द्ध रेखाया त्यगुष्यादि संमुखी ।
असौ पचविद्या राजा श्रयिणी राज्य सौख्यदा ।। १ ।।
नृपो नृपति मन्त्री वा प्राप्ताचेत्तर्जनी मसौ ।
ज्येष्टां प्राप्तो तथा चायं:ख्यातिमान् सैन्य नायक ।। २ ।।
सार्थ वाहो धनी नेताद्धं रेखा चेच्छिवाश्चता ।
कनिष्टायां मूल रेखा प्रतिष्ठावान् महायश: ।।३ ।।
मणिबन्धात् या उर्ध्व रेखा चतस्त्रषुग्रंगुतीषु भवन्ति चेत् ।
नाना भोग सुखं सेना समुद्र बचनाद्यया ।। ४ ।।

अंगुष्ठ मूल भाग्य रेखा—भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ होकर अंगुष्ठ की मूल की ओर जा रही हो तो ऐसा जातक राज्य के आश्रय रहने वाला तथा राज्य सुख भोगा करता है ।

२. **तर्जनी मूल भाग्य रेखा**—ऐसी भाग्य रेखा वाला जातक राज्य मंत्री हुआ करता है ।

३. **मध्यमा मूल भाग्य रेखा**—भाग्य रेखा मध्यमा के मूल की ओर जा रही हो तो जातक बड़ा धर्माचार्य प्रसिद्ध, कीर्तिवान तथा सेनापति होता है ।

४. **अनामिका भाग्य रेखा**—भाग्य रेखा अनामिका की अंगुली के मूल की ओर गई हो तो ऐसा जातक बहुत धनवान, नेता तथा वाहन युक्त रहा करता है ।

५. कनिष्ठिका मूल भाग्य रेखा—भाग्य रेखा कनिष्ठा के मूल की ओर गई हो तो ऐसा जातक प्रतिष्ठावान तथा महायशवान होता है।

भाग्य रेखा चारों अंगुलियों की ओर प्रथक २ हो गई हो तो ऐसा जातक नाना प्रकार के सुख भोगने वाला तथा अनेकों मनुष्यों पर अधिकार रखने सेनापति होता है।

समुद्र ऋषि का मत है—

अंगुष्ठस्यापि मध्येऽपि व्रतेनृपति युत्तयमम्।
सैव तर्जनिकां प्राप्त दन्ते साम्राज्य मग्रियमम्॥ १॥
सेना पतिर्धनेशो वा मध्यमा गत रेखाया।
अनामिका पुनः श्रेष्ठ धनवान् सर्वदा नर॥ २॥
सुखिनं सुभगं वापि सम्प्राप्ता सा कनिष्ठिकाम्।
करोति सत्यत्रेवैषा यद्यच्छिना सुवर्णभाक्॥ ३॥

भाग्य रेखा अंगुष्ठ और तर्जनी के मध्य में समाप्त हो रही है। और बलवान अवस्था में हो तो ऐसा जातक राजा होता है। तर्जनी के मूल में सुन्दर और बलवान अवस्था में जा रही हो तो राज्याधिकार मध्यमा के मूल में गई हो तो बहुत धनवान अनामिका के मूल में गई हो तो सर्वदा धनवान यदि कनिष्ठिका के मूल में गई हो तो सुखी सौभाग्यशाली तथा स्वर्ण भंडार वाला जातक होता है।

भाग्य रेखा के उद्गम क्षेत्र

१. मणिबन्ध अर्थात् केतु के पर्वत से
२. जीवन रेखा से
३. चन्द्र के पर्वत से
४. हथेली में मध्य राहु के क्षेत्र से

५. दोनों मंगल के क्षेत्र से

६. शुक्र के पर्वत से

७. केवल शनि के पर्वत पर

भाग्य रेखा मणिबन्ध से प्रारम्भ हो रही हो और वह सुन्दर और बलवान हो तो ऐसा जातक विद्वान, मधुर भावी, अच्छे विचार वाला परोपकारी हुआ करता है।

भाग्य रेखा मणिबन्ध की प्रथक रेखा से प्रारम्भ हो रही हो तो ऐसे जातक को बाल्यकाल में ही अपने परिवार का बोझ उठाना पड़ता है।

इस प्रकार की रेखा हृदय रेखा तक गई हो तो ऐसे जातक का प्रेम के कारण जीवन कष्टमय हो जाता है यदि कोई रोग चिन्ह हो तो हृदय रोगी हुआ करता है।

भाग्य रेखा मणिबन्ध रेखा से प्रारम्भ होकर मध्यमा अंगुली के तृतीय पर्वत तक पहुँच रही हो तो ऐसे जातक के भाग्य में काफी उलट फेर हुआ करता है। यदि हाथ में अन्य लक्षण शुभ है तो ऐसा जातक उत्तरोत्तर उन्नति करता चला जाता है।

भाग्य रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ हो रही हो तो ऐसा जातक उद्योग में सफलता प्राप्त करता है, परिवार के लोग उसे इतना योग्य बना देते हैं कि वह अपने पैरों पर खड़ा हो सके। दे० चि० ६७—२

जीवन रेखा के पास २ कुछ दूर तक भाग्य रेखा चले और जीवन रेखा का स्पर्श न करें तो जीवन के प्रारम्भिक काल में घर के लोगों का जातक पर विशेष अभाव रहता है।

भाग्य रेखा जीवन रेखा से स्पर्श करती हुई शुक्र के पर्वत से प्रारंभ हो मस्तष्क और हृदय रेखा को स्पर्श करती हुई मध्यमा अंगुली के प्रथम पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक प्रेम के वश रहता है, यदि मस्तष्क रेखा निर्बल हो तो जातक विशेष भोग विलास में रत रहती है।

भाग्य रेखा चन्द्र के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो और शनि तथा सूर्य के पर्वत के मध्य तक पहुँच रही हो तो ऐसा जातक प्रेम के बंधन में बंधकर नाना प्रकार के दुःख उठाया करता है। दे० चि० ६७-३

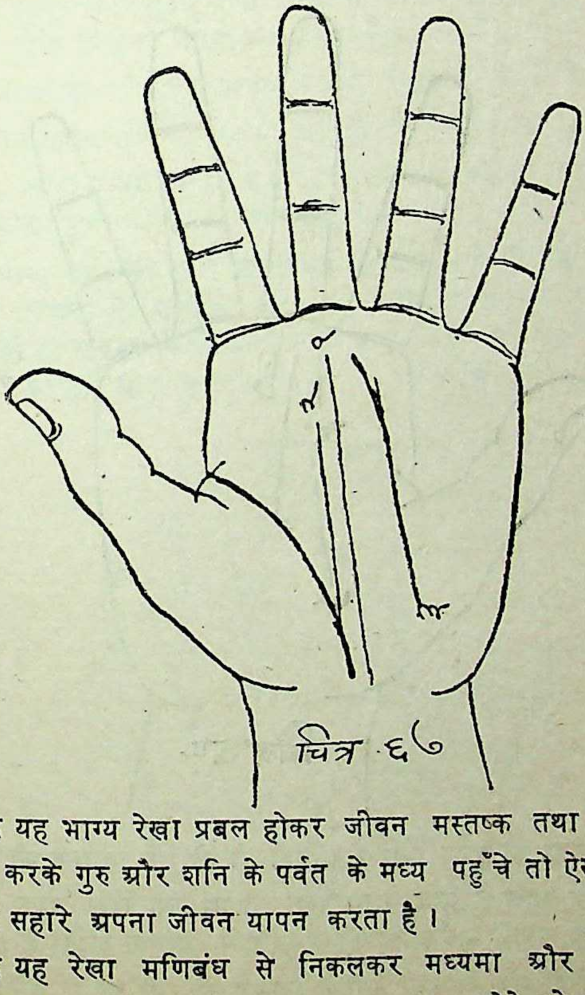

चित्र ६८

यदि यह भाग्य रेखा प्रबल होकर जीवन मस्तष्क तथा हृदय रेखा को पार करके गुरु और शनि के पर्वत के मध्य पहुँचे तो ऐसा जातक दूसरों के सहारे अपना जीवन यापन करता है।

यदि यह रेखा मणिबंध से निकलकर मध्यमा और अनामिका अंगुली के मध्य पहुंचे तो ऐसा जातक भाग्यवान होते हुये भी अनेकों गुप्त चिताओं से ग्रस्त रहता है।

भाग्य रेखा हथेली के मध्य से प्रारम्भ हो रही हो तो रेखा के वर्ष-मान का पूर्व का जीवन दु:खमय होता है, अगर भाग्य रेखा शनि के पर्वत की ओर जा रही हो तो ऐसा जातक कठिनाइयों का सामना करता हुआ आगे बढ़ता है। दे० चि० ६६—४

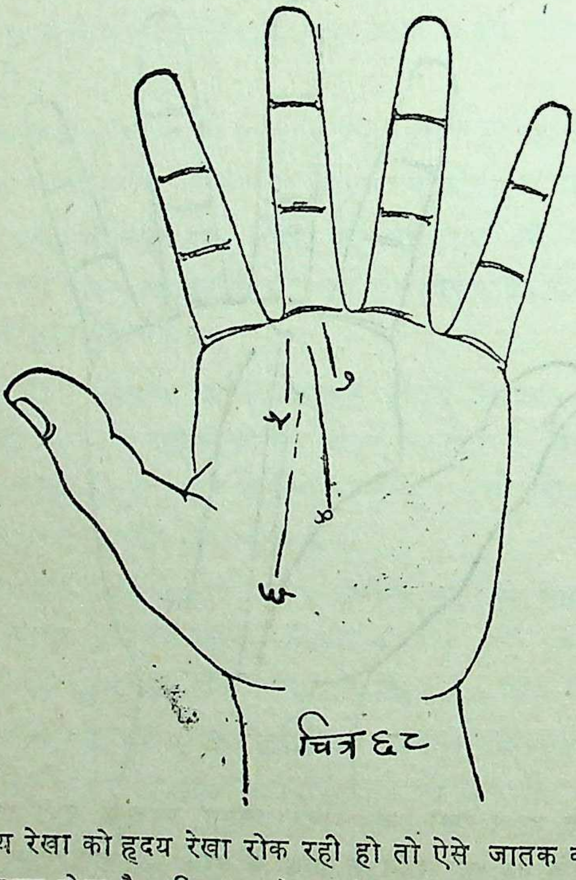

चित्र ६८

भाग्य रेखा को हृदय रेखा रोक रही हो तो ऐसे जातक की उन्नति में प्रेम बाधक होता है, यदि भाग्य रेखा को मस्तष्क रेखा रोक रही हो तो ऐसा पुरुष अपनी मूर्खतावश ही उन्नति में बाधक बनता है।

भाग्य रेखा शुक्र के पर्वत पर से प्रारम्भ हो रही हो तो ऐसे जातक का भाग्योदय होगा उसे आर्थिक सफलता प्राप्त होगी, परिवार के लोग उसकी उन्नति में सहायता देंगे। दे० चि० ६८—६

भाग्य रेखा केवल शनि के क्षेत्र पर हो तो ऐसे जातक के जीवन का मध्य भाग बहुत ही कठिनाई से व्यतीत होता है, भाग्योदय पचास वर्ष की अवस्था के बाद होता है। दे० चि० ६८—५

मस्तष्क रेखा हृदय रेखा से भाग्य रेखा प्रारम्भ हो तो ऐसा जातक अपनी बुद्धि के द्वारा भाग्योदय करता है।

भाग्य रेखा के द्वारा अथवा उसकी सहायक रेखा के द्वारा हृदय रेखा पर ऊपर नीचे दो त्रिकोण बने हों तो ऐसा जातक सर्वप्रिय, मधुर-भाषी, विद्या द्वारा भाग्योदय करने वाला तथा अनेकों प्रकार के कष्टों को उठाता हुआ जीवन यापन करता है।

भाग्य रेखा को स्पर्श करती हुई सीधी रेखा हो तो ऐसा जातक स्वयं अपनी योग्यता से उन्नति करता है, यदि इस प्रकार की भाग्य रेखा टूट रही हो अथवा किसी अन्य रेखा से कट रही हो तो ऐसे जातक के मार्ग में बाधायें आया करती हैं। दे० चि० ६९

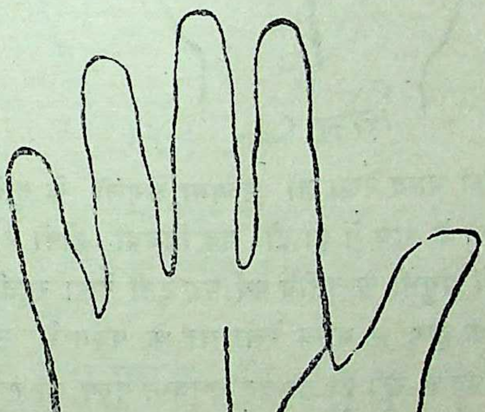

चित्र ६९

भाग्य रेखा मध्यमा अंगुली के तृतीय पर्व के ऊपर तक चली गई हो तो ऐसा जातक निर्धन होता है। दे० चि० ७०

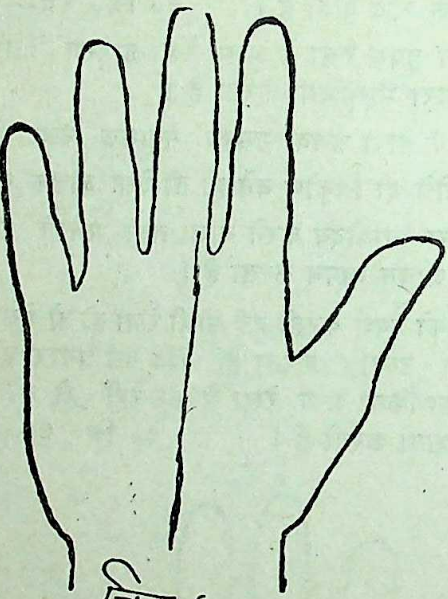

चित्र ७०

इस प्रकार की भाग्य रेखा जो मध्यमा अंगुली के तृतीय पर्व तक गई हो स्त्री जातक के हाथ में हो तो वह विधवा होती है, ऐसी स्त्री के हाथ में गुरु की अंगुली के तृतीय पर्व पर टूटी रेखा रहती है।

स्त्री जातक के हाथ में भाग्य रेखा चंद्र के पर्वत से उत्पन्न होकर गुरु के पर्वत पर पहुंच रही हो तो वह धनवान पुरुष की स्त्री होती है।

भाग्य रेखा मंगल के मैदान से उत्पन्न होकर बुध के पर्वत पर जाकर मिल जावे तो ऐसे जातक को व्यापार अथवा शास्त्रीय ज्ञान के द्वारा धन का लाभ हुआ करता है और वह श्रीमान हो जाता है।

भाग्य रेखा मंगल के मैदान से उत्पन्न होकर शनि के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसे जातक का बाल्यकाल निर्धनता में व्यतीत होता है। दे० चि० ६८—५

भाग्य रेखा टूटी हो, टेढ़ी हो, लहरदार हो तो ऐसा जातक धन का सञ्चय कर पाता है और न नियमित कार्य ही कर पाता है, ऐसे जातक के जीवन में काफी उलट फेर हुआ करते हैं। दे० चि ७१

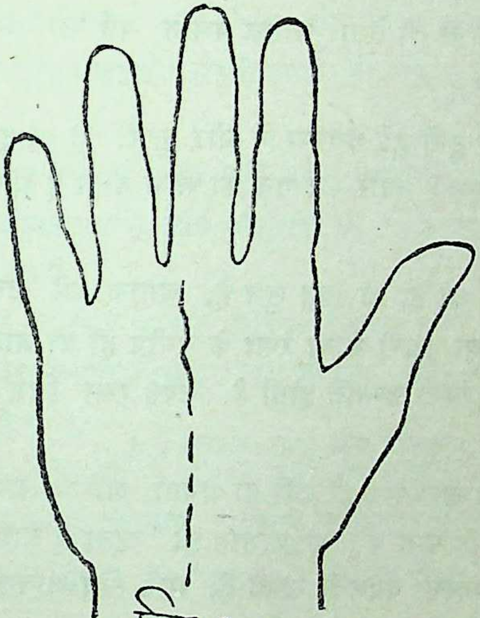

चित्र ७१

भाग्य रेखा किसी मुख्य रेखा के द्वारा रुक जाती है और वहाँ पुनः भाग्य रेखा प्रारम्भ होती है तो ऐसे जातक के जीवन के उक्त वर्षमान में काफी हेर फेर होते हैं।

भाग्य रेखा जीवन रेखा के अति समीप हो और उस स्थान पर मस्तिष्क रेखा भी मिलती हो तो ऐसा जातक डाक्टर, वैद्य, हकीम आदि होता है और अपने व्यवसाय में काफी यश और धन प्राप्त करता है। लोकप्रिय होकर बहुत धन कमा लेता है।

भाग्य रेखा को कोई आड़ी रेखा काट रही हो तो ऐसे जातक के भाग्योदय के मार्ग में अनेकों विघ्न आया करते हैं। यदि इस प्रकार

काटने वाली रेखायें जीवन रेखा को स्पर्श कर रही हो तो वह सम्बंधियों की मृत्यु की सूचना है।

भाग्य रेखा हृदय रेखा का उलंघन करके आगे निकल जावे और साफ तथा स्पष्ट हो तो ऐसा जातक पचास वर्ष मान से आगे धन का सुख भोगता है।

भाग्य रेखा टूटी हुई अवस्था में और दुहरी हो तो टूटे हुये वर्षमान में मर्यादा का महत्व बदल कर धन का लाभ होता है और नुकसान भी कम होता है।

भाग्य रेखा दो हो तो यह शुभ है, जातक की उस वर्षमान में जिसमें भाग्य रेखा दूसरी भाग्य रेखा के समीप हो तो जातक के जीवन में उलट फेर के बिना उन्नति होती है, उक्त रेखा जिस पर्व पर पहुँच रही हो उसी के अनुसार फल हुआ करता है।

भाग्य रेखा लहरदार हो टेढ़ी हो अथवा खण्डित अवस्थाओं में हो तो ऐसे जातक के पास धन का आभाव ही रहता है साथ ही व्यवसाय की गति और अवस्था बदलती रहती है, आये दिन जीवन में बदल फेर हुआ करते हैं।

भाग्य रेखा दो हो और दोनों खण्डित अवस्था में हो तो नुकसान कम हुआ करता है। टूटे हुये वर्षमान में मर्यादा का महत्व बदल जाता है और फिर आगे धन लाभ होता है।

भाग्य रेखा से कुछ रेखा निकलकर ऊपर की ओर जा रही हो तो वर्षमान में यह शाखा निकलती है तो उस वर्षमान में जातक को धन लाभ, उन्नति, व्यापार में सफलता, नवीन कार्य प्रारम्भ, साहस में वृद्धि हुआ करती है, इस प्रकार से निकलने वाली शाखायें खण्डित अवस्था में हो तो कम धन लाभ आदि होता है।

भाग्य रेखा यह रेखा निकलकर नीचे की ओर जा रही हो तो

रेखा निकलने वाले वर्षमान में जातक को धन हानि आदि हुआ करती है तथा अपयश मिला करता है।

भाग्य रेखा यह शृंखलाकार हो तो ऐसे जातक का जीवन दुखमय व्यतीत हुआ करता है अगर इस प्रकार की रेखा मस्तष्क रेखा पर समाप्त हो रही हो तो जातक अपनी स्वयं की मूल से जीवन दुखमय कर देता है।

भाग्य रेखा प्रारम्भ से लेकर अन्त तक शृंखलाकार हो और मणि-बंध से प्रारम्भ होकर गुरु के पर्वत तक गई हो तो जातक को परिश्रम धन का लाभ होता है।

भाग्य रेखा मणिबंध के मध्य प्रारम्भ होकर गुरु के पर्वत पर पहुंच रही हो तो जातक वकील बैरिस्टर हुआ करता है तथा भाग्यशाली तथा धनवान होता है।

भाग्य रेखा मणिबंध से होकर बुध और सूर्य के पर्वत के मध्य पहुंच रही हो तो जातक धनवान, यशवान, भाग्यवान होता है।

भाग्य रेखा से मिलने वाली रेखायें

शुक्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर जीवन रेखा को काटती हुई भाग्य रेखा को काटकर ठहर जाती है तो ऐसा जातक स्त्री प्रसँगवश आत्म हत्या कर लेता है।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर धन रेखा से स्पर्श कर रही हो अथवा मिल रही हो तो ऐसा जातक साझे का व्यवसाय करता है, और धन का लाभ करता है।

इस रेखा वाले पुरुष पर भार्या का प्रभाव रहता है और भार्या पक्ष से धन लाभ करता है।

इस प्रकार की रेखा निकलती तो है परन्तु भाग्य रेखा से स्पर्श नहीं करती है तो जातक को भार्या पक्ष से लाभ नहीं होता है और न साझे के व्यवसाय में ही लाभ करता है।

इस प्रकार की रेखा भाग्य रेखा को काटकर आगे निकल जाती है तो साझेदारी में नुकसान रहता है तथा भार्या से सम्बन्ध नहीं रह पाते है।

भाग्य रेखा से कोई शाखा निकलकर बुध के पर्वत पर जा रही हो तो ऐसे जातक को व्यवसाय, वैज्ञानिक कार्यों में सफलता प्राप्त होती है। दे० चि० ७२

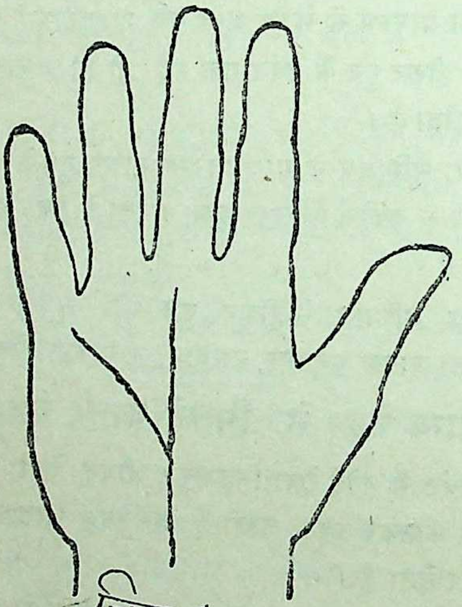

चित्र ७२

भाग्य रेखा चंद्र के पर्वत से प्राप्त हो रही हो और शनि के पर्वत पर पहुँच रही हो तो यह सुन्दर विवाह की सूचक है तथा ऐसा जातक अपने प्रेमी को विशेष प्रिय रहा करता है। यदि इस प्रकार की रेखा दोनों ही हाथ में हो तो इस जातक की उन्नति में उसके प्रेम अथवा भाग्य का हाथ होता है यदि यह रेखा स्त्री जातक के हाथ में हो तो इसको अपने पति का विशेष प्रेम प्राप्त होता है।

भाग्य रेखा से कोई शाखा निकलकर सूर्य के पर्वत पर जा रही हो तो जातक धन, यश का लाभ करता है। दे० चि० ७३

चित्र ७३

भाग्य रेखा शनि के पर्वत न जाकर सूर्य के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा काम कौशल का जानने वाला, यशवान, बुद्धिमान और सीधे द्रव्य का भोक्ता होता है। यह अपने मित्रों से धन का लाभ करता है तथा मित्र वर्ग में अधिक प्रिय होता है। यदि इस प्रकार की रेखा अधिक गहरी हो तो इसका प्रभाव विपरित होता है।

भाग्य रेखा मंगल के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो तो ऐसा जातक बहुत समय तक कष्ट भोगा करता है और बाद में सफलता प्राप्त करता है।

भाग्य रेखा मंगल के क्षेत्र से प्रारम्भ हो रही हो और बुध के पर्वत पर मिल जावे तो जातक व्यापार तथा शास्त्रीय ज्ञान में द्रव्य का लाभ कमाता है और श्रीमान हो जाता है।

भाग्य रेखा से कोई रेखा निकलकर शनि के पर्वत पर जा रही हो तो ऐसा जातक गुप्त विद्याओं द्वारा धन कमाता है। जीवन साधारण रहता है। दे० चि० ७४

चित्र ७४

भाग्य रेखा मंगल के क्षेत्र से प्रारम्भ हो रही हो और शनि के पर्वत पर पहुंच रही हो तो जातक बाल्यकाल में गरीबी में समय व्यतीत करता है और बाद में सुख पूर्वक रहा करता है।

भाग्य रेखा मंगल के पर्वत पर से प्रारम्भ होकर सूर्य के क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक ग्रंथकर्ता, नाटक, काव्य, लेखक तथा सम्पादक होता है।

भाग्य रेखा मंगल के पर्वत से प्रारम्भ होकर गुरु के पर्वत पर पहुंच रही हो तो जातक सम्मानीय, महत्वाकांक्षी, यशवान और धनवान हुआ करता है।

भाग्य रेखा से कोई रेखा निकलकर गुरु के पर्वत पर जा रही हो तो ऐसा जातक स्वाभिमानी होता है, धन तथा यशवान होता है।

दे० चि० ७५

चित्र ७५

भाग्य रेखा चंद्र के पर्वत से प्रारम्भ होकर गुरु के पर्वत पर जा रही हो तो जातक का भाग्योदय कुटम्बी जन तथा अन्य किसी के सहयोग से होता है और सुख भोगा करता है।

भाग्य रेखा पर आड़ी रेखायें हों तो जातक की उन्नति में बाधा आया करती है। यदि इस प्रकार की रेखाओं का सम्बंध जीवन रेखा से हो तो जातक के संबंधियों की मृत्यु का सूचक है।

भाग्य रेखा पर चिन्ह

भाग्य रेखा के प्रारम्भ में यव का चिह्न हो तो उस जातक के जन्म के समय भयानक प्रसंग आता है और जातक को कष्ट होता है।

दे० चि० ७६

चित्र ७६

भाग्य रेखा के मध्य में तारा का चिन्ह हो तो जातक को विशेष धन हानि हुआ करती है।

भाग्य रेखा के उदय स्थान पर तारा का चिन्ह हो तो जातक माता पिता को कष्ट दिया करता है।

भाग्य रेखा के उदय स्थान पर तारा चिन्ह और शुक्र के पर्वत पर तारा चिन्ह हो तो जातक के माता पिता बाल्य काल में ही मर जाते हैं तथा बाल्यकाल दुःखमय व्यतीत होता है।

भाग्य रेखा मध्य के भाग में यव का जुड़ा हुआ चिन्ह हो तो जातक की मानहानि होती है तथा यव वाले वर्षमान में धन तथा व्यवसाय की भी हानि होती है। दे० चि० ७७

चित्र ७६

भाग्य रेखा के मध्य भाग में यव चिन्ह हो तो ऐसे स्त्री पुरुष जातक एक दूसरे को देखते ही वश में हो जाते हैं।

भाग्य रेखा का यव चिन्ह जातक के दुःखमय जीवन का प्रतीक है।

भाग्य रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक को विशेष धन हानि हुआ करती है।

भाग्य रेखा पर यव का चिन्ह हो तो जातक का जीवन सुखहीन हो जाता है और जातक का स्वास्थ्य भी प्रायः खराब ही रहा करता है। यव के वर्षमान जातक को कठोर समय का सूचक होता है।

भाग्य रेखा शनि के पर्वत पर पहुंच रही हो और शनि के पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक की मृत्यु यकायक हो जाती है।

दे० चि० ७८

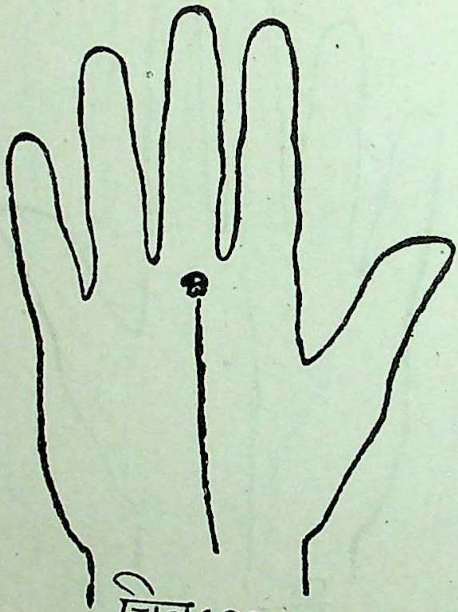

चित्र ७८

भाग्य रेखा पर मध्य में यव चिन्ह वाले जातक स्त्री पुरुष परस्पर एक दूसरे के देखते ही एक दूसरे के तत्काल वश में हो जाते हैं।

भाग्य रेखा दोहरी हो तो जातक को आयुष्य में अधिक सहायता दिया करती है। यदि दोहरी भाग्य रेखा स्त्री जातक के हाथ में हो तो वह स्वतंत्र विचार वाली होती है यह अपने पिता से उत्तम प्रकार का द्रव्य लाभ किया करती है।

भाग्य रेखा पर क्रोस का चिन्ह हो तो ऐसे जातक की परिस्थितियों में यकायक फेर बदल हुआ करता है तथा धन की हानि होती है।

दे० चि० ७६

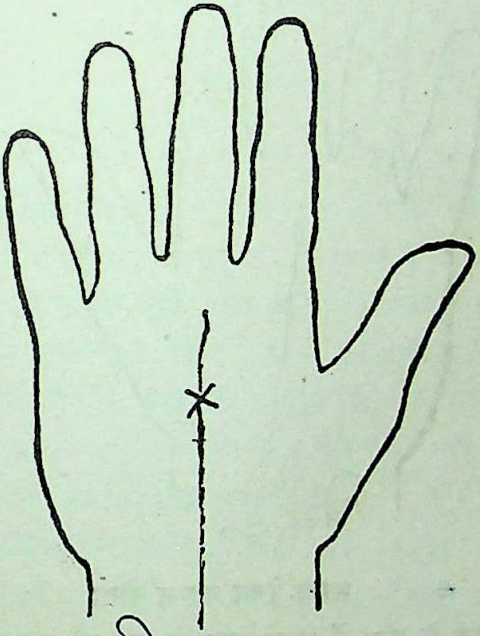

चित्र ७६

यदि क्रोस का चिन्ह भाग्य रेखा पर न होकर भाग्य रेखा के पास होता है तो जातक को किसी मित्र तथा सम्बंधी से भय होता है।

भाग्य रेखा के प्रारम्भ तथा शुक्र के पर्वत पर दोनों ही नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक के माता पिता का बाल्यकाल में स्वर्गवास हो जाता है।

भाग्य रेखा के अन्त में यव का चिन्ह हो तो ऐसा जातक स्त्री के वश में रहता है और धन लाभ करता है। दे० चि० ८०

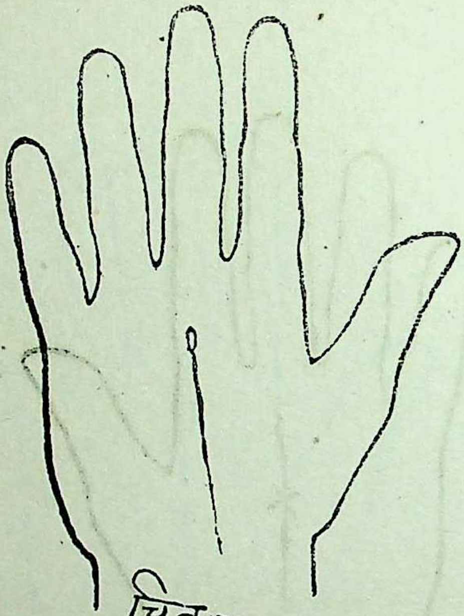

चित्र ८०

भाग्य रेखा का न होना

जिस जातक के हाथ में भाग्य रेखा न हो तो वह कठोर परिश्रम करने वाला निर्धन तथा यशहीन हुआ करता है।

समय निर्णय

पंचवर्षीय नियम—भाग्य रेखा को सूत के धागे से नापकर उसके बीस भाग कर लें, एक भाग पाँच वर्षमान के बराबर होगा।

दस वर्षीय नियम—भाग्य रेखा को साधारण जैसे नापें एक यव का वर्षमान दस वर्ष के बराबर होता है।

सप्तवर्षीय नियम—इसका पूर्ण वर्णन 'समय निर्णय' के अन्तर्गत देखिये।

तृतीय परिच्छेद

सूर्य रेखा

(The line of successor The line of sun)

सूर्य रेखा हाथ की बहुत ही महत्वपूर्ण रेखा है, यह रेखा हाथ रूपी रेगिस्तान के समान है। जिस प्रकार रेगिस्तान में छोटे से नवलिस्तान का महत्व है वही महत्व सूर्य रेखा का है। यह रेखा सभी रेखाओं को बल प्रदान करती है। जिस प्रकार सूर्य पृथ्वी के अन्धकार का विनाश कर देता है ठीक उसी प्रकार सूर्य रेखा मानव के जीवन अन्धकार का विनाश कर दिया करती है। इस रेखा को सूर्य रेखा, अर्द्ध रेखा तथा विद्या रेखा, यश रेखा कहते हैं।

अनभिकांत्य पर्वस्था यति रेवा प्रभुत्वकृः।
उर्ध्वा पुतस्त लेतस्या धर्म रेखाय मुच्छते ।।१।।
धन रेखायस्तदीर्घा तस्य धान्य महाद्भुत।
भिन्ना रेखा भवेद्भिन्न द्रव्य व्यय समाकुल ।।२।।
वज्र अनामिका मूले तत् प्रतिष्ठा विधायकं।
तस्मिन् भिन्ने भवेद् भेदो मध्ये रेखात्र मध्यमा ।।३।।

अनामिका के अन्तिम पर्व के नीचे जो उर्ध्व रेखा आती है वह भुत्व प्रदान करती है, इसी रेखा को धर्म रेखा कहते हैं।

जिस जातक के हाथ में धन रेखा लम्बी हो वह महाधनवान होता है, यदि यह रेखा टूटी, कटी अथवा छेद युक्त हो तो द्रव्य का व्यय अधिक करता है तथा धन कम रहा करता है।

अनामिका अंगुली के मूल में यह रेखा वज्र के समान हो तो जातक की प्रतिष्ठा बढ़ती है यदि यह रेखा छिन्न भिन्न हो तो प्रतिष्ठा नाशक, मध्यम हो तो प्रतिष्ठा मध्यम हुआ करती है। सूर्य रेखा से जातक यशवान तथा पुण्यशील होता है।

सूर्य रेखा के प्रारम्भिक स्थान

१. केतु के पर्वत मणिबंध से या उसके पास से।
२. चन्द्रमा के पर्वत से सूर्य के पर्वत तक।
३. जीवन रेखा से।
४. भाग्य रेखा से।
५. हथेली के मध्य भाग मंगल के पर्वत से।
६. मस्तष्क रेखा से।
७. हृदय रेखा से।

१. सूर्य रेखा मणिबन्ध केतु के पर्वत से प्रारम्भ होकर निर्दोष रूप से भाग्य रेखा के साथ निर्दोष स्वरूप से जा रही है तो जातक भाग्यशाली, यशस्वी, प्रतिभावान होता है, जिस कार्य में हाथ डालता है उसी कार्य में उसे पूर्ण सफलता प्राप्त होती है। दे० चि० ८१—१

२. सूर्य रेखा चन्द्र के पर्वत से प्रारम्भ होकर निर्दोष रूप से चल रही हो तो उस जातक का भाग्य और लोगों की सहायता से चमकता हैं, स्वयं अपने आप उन्नति नहीं कर पाता है। ऐसे जातक के जीवन में अस्थिरता रहती है, इसलिए वह दूसरों की सहायता से उन्नति करते हैं।
दे० चि० ८१—२

The line of success or of sun is at the sun is to the earth, where it appears on the hand it promise brightness, success and increase of

fortune positian is rising from the wrist to fose of the third finger.

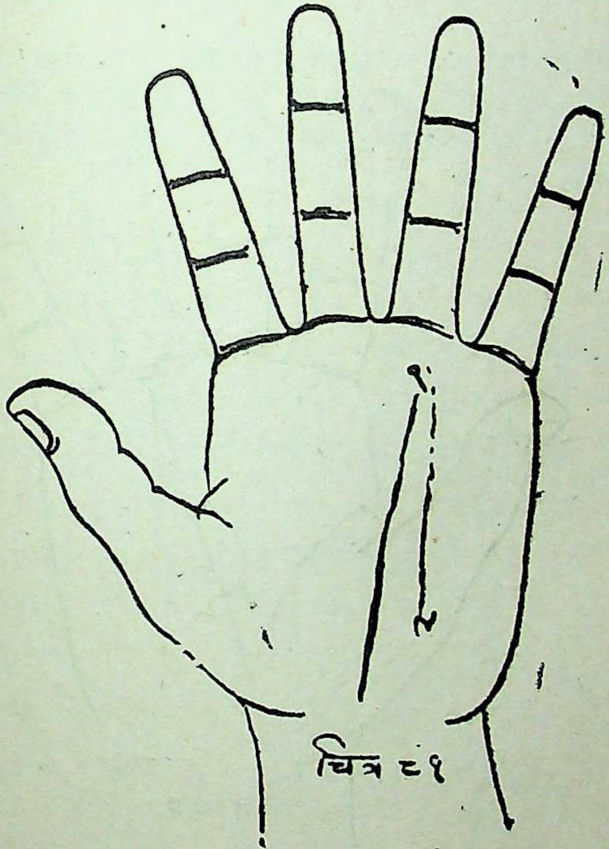

चित्र ८९

सफलता की रेखा अथवा सूर्य रेखा पृथ्वी पर सूर्य के समान है, जब यह हाथ में दिखाई देती है तो उज्जवल भविष्य, सफलता, उच्चता का वायदा है, जब यह हाथ की कलाई में तीसरी अंगुली तक जाती है, तो यह सर्वश्रेष्ठ है।

३. सूर्य रेखा जीवन रेखा से प्रारम्भ हो रही हो, तो जातक अपनी प्रतिभा अपनी ही योग्यता के सहारे उन्नति करता है। वह जातक सुन्दरता का पुजारी होता है, उसकी विचार शक्ति विशेष तेज होती है संकेत मात्र से सब कुछ समझ लेते हैं। दे० चि० ८२—३

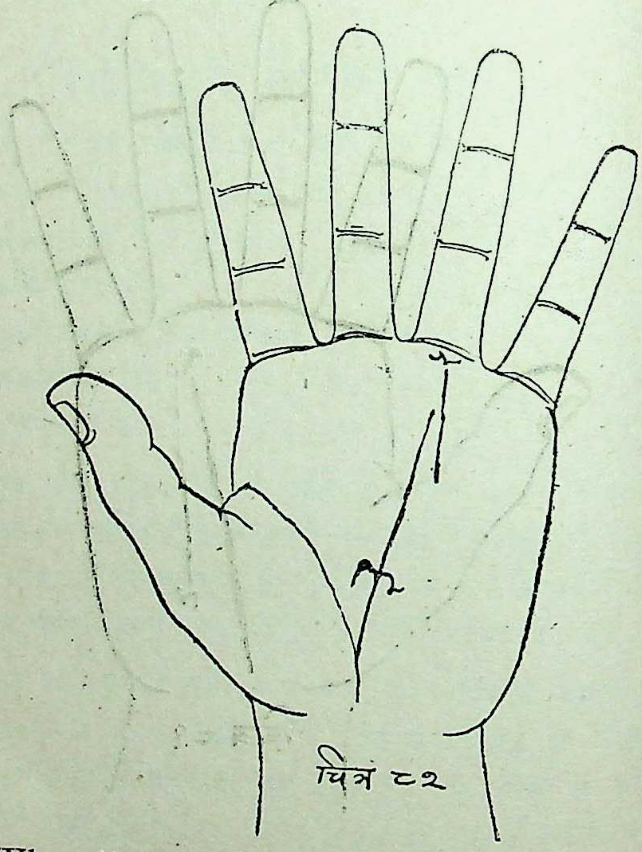

चित्र ८२

When line of sun rise on the inside of the line of Life. (Meunt venus) riches or success come through love such as produced by wealthy union.

सूर्य रेखा जीवन रेखा (शुक्र के पर्वत) से प्रारम्भ हो रही हो तो

धन और सफलता प्रेम के द्वारा प्राप्त होती है और आगे वृद्धि होती जातीं है।

४. सूर्य रेखा भाग्य रेखा से प्रारम्भ हो रही हो तो जातक उत्तरोत्तर जीवन में उन्नति करता चला जाता है, यह रेखा भाग्य रेखा के प्रभाव को दूना कर देती है। भाग्य रेखा के जिस स्थान पर यह रेखा प्रारम्भ होती है, वहाँ से जीवन में सफलता प्राप्त होना प्रारम्भ हो जाती है।

यह रेखा सुन्दर गहरी तथा साफ हो और भाग्य रेखा भी बलवान हो तो फिर सोने में गन्ध ही है, ऐसी रेखा वाला जातक सुन्दरता का प्रेमी, प्राकृतिक दृश्यों से प्रेम करता है और यशवान होता है।

दे० चि० ८३—४

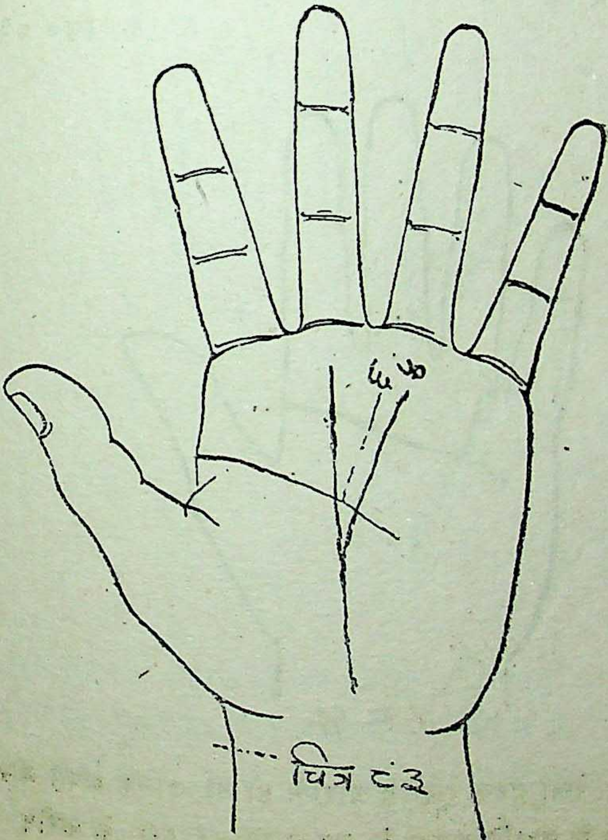

चित्र ८३

५. सूर्य रेखा मंगल के पर्वत से प्रारम्भ हो रही हो तो जातक अनेकों कष्ट भोगकर उन्नति करता है, यदि मंगल का क्षेत्र उन्नत हो तो प्रथम मंगल जनित कष्टों को भोगता है, और सूर्य रेखा से प्रारम्भ वर्षमान से उन्नति करता है। दे० चि० ८२—५

६. सूर्य रेखा मस्तष्क रेखा से प्रारम्भ हो रही हो तो जातक को उन्नति में मस्तिष्क शक्ति विशेष सहायक होती है, यह जातक ऐसे कार्य करते हैं जिसे बड़े बड़े विद्वान विचार भी नहीं कर सकते हैं, भले ही इस प्रकार के जातक निरंक्षर क्यों न हो, ऐसा जातक व्यापार क्षेत्र में कार्य करता है और ३५ वर्ष के बाद उन्नति करता है।

दे० चि० ८३—६

चित्र ८४

७. सूर्य रेखा हृदय रेखा से प्रारम्भ हो तो जातक अपने जीवन के अन्तिम काल में उन्नति करता है यह समय ५६ वर्ष के करीब होता

है, यदि यह रेखा साफ न हो तो अन्तिम भाग कष्टमय व्यतीत होता है, हृदय रेखा भाग्य रेखा तथा सूर्य रेखा बलवान हो तो सम्पूर्ण जीवन सुखमय व्यतीत होता है। दे० चि० ८४

सूर्य रेखा स्थान २ पर टूट रही हो, हाथ में बिल्कुल भी न हो, सूर्य पर्वत पर ३ छोटी छोटी रेखायें हों तो जातक यशवान नहीं होता है, बार २ व्यवसाय को बदलता रहता है, अनेक उद्योग करने पर भी यश की प्राप्ति नहीं हुआ करती है। दे० चि० ८५

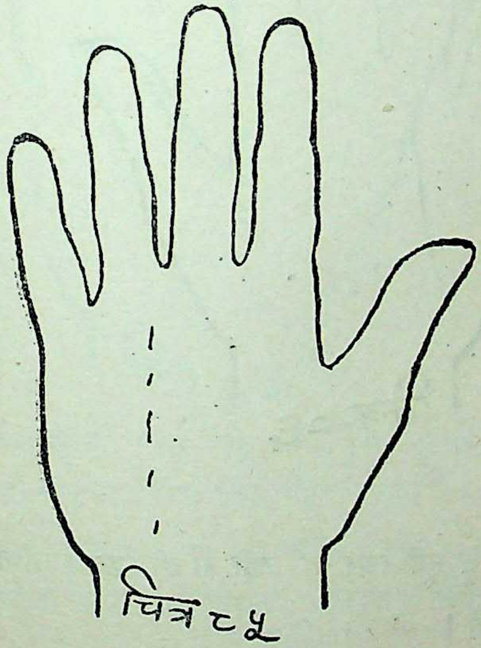

चित्र ८५

हाथ में भाग्य रेखा न हो तो सूर्य रेखा ही भाग्य का काम करती है। खण्डित सूर्य रेखा धन की हानि की प्रतीक है, दाहिने हाथ में खण्डित हो तो अपने धन की और बांयें हाथ में खण्डित हो तो परिवार के धन की हानि होती है।

चंद्र के पर्वत से सूर्य रेखा उदय हो रही हो तो ऐसे जातक को मित्र परिवार के लोगों से लाभ होता है। दे० चि० ८६

चित्र ८६

मंगल के पर्वत से सूर्य रेखा जा रही हो तो धन प्राप्ति के लिए झगड़ा हुआ करता है।

सूर्य रेखा बुध के पर्वत की ओर जा रही हो तो जातक व्यवसाय द्वारा धन प्राप्त करता है।

सूर्य के पर्वत पर स्वयं सूर्य रेखा जा रही हो तो जातक रोज़गार धंधे के द्वारा धन पाता है।

सूर्य रेखा सूर्य के पर्वत से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा की ओर जा रही हो, तो जातक लेखक, कलाकार होता है, जिस कार्य में हाथ डालता है उसमें अवश्य सफलता प्राप्त करता है। दे० चि ८७

चित्र ८७

सूर्य रेखा शनि के पर्वत पर पहुँच रही हो तो जातक धनवान होकर भी दुःखों और शारीरिक कष्ट भोगा करता है।

सूर्य रेखा शनि के पर्वत को पार करके गुरु के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक उच्च पदाधिकारी, धनवान तथा यशवाम होता है।

सर्य रेखा हो और वह भी अस्त-व्यस्त हो तो ऐसा जातक व्यव-साय से लाभ करता है।

सूर्य रेखा जिस रेखा के साथ अथवा सहयोग करे उसी से सम्बंधी व्यवसाय से लाभ करता है।

सूर्य रेखा शनि के पर्वत पर जा रही हो तो जातक को जमीन आदि खाद्यानों से धन की प्राप्ति होती है। दे० चि० ८८

चित्र ८८

सूर्य रेखा भाग्य रेखा दोनों ही साथ साथ चल रही हो तो जातक बिना किसी रुकावटों के निरन्तर नियमित उन्नति करता चला जाता है। जिस स्थान पर सूर्य रेखा भाग्य रेखा से अलग हो रही हो उस वर्ष से भाग्योदय का कार्य प्रारम्भ हो जाता है। इस प्रकार का जातक अनेकों प्रकार के कार्यों में सफलता प्राप्त किया करता है तथा सुखमय जीवन व्यतीत करता है।

सूर्य रेखा हाथ के मध्य भाग से प्रारम्भ हो रही हो तो जातक का आरम्भ काल कष्टमय तथा बाद का समय सुखमय व्यतीत होता है।

दे० चि० ८९

चित्र ८९

सूर्य रेखा अन्त में तीन रखा में बंटकर शनि, बुध के पर्वत पर जा रही हो तो ऐसा जातक बड़ा सम्पत्तिवान, यशवान, कीर्तिवान होता है।

सूर्य रेखा को अन्य रेखा काटती हो तो यह धन प्राप्ति के मार्ग में बाधायें आती हैं।

चन्द्र के पर्वत से कुछ रेखायें निकलकर सूर्य रेखा से मिलती हैं तो ऐसे जातक को पैतृक धन प्राप्त होता है। दे० चि० ६०

चित्र ६०

सूर्य रेखा हाथ में हों तो जातक एक से अधिक कार्यों के द्वारा धन कमाता है।

सूर्य रेखा और मस्तष्क रेखा बलवान हों तो जातक दीर्घायु होता है।

सूर्य रेखा अखण्डित स्वच्छ हों तो जातक धनवान तथा विलास पूर्व जीवन व्यतीत करता है ऐसा जातक धन सम्बन्धी चिताओं से मुक्त रहा करता है तथा आराम से विलासपूर्ण जीवन व्यतीत किया करता है।

सूर्य रेखा का प्रारम्भ मंगल रेखा से हो तो जातक को किसी प्रेमिका अथवा अपनी पत्नी से धन का लाभ होता है। दे० चि० ६१

चित्र ६१

सूर्य रेखा स्थान २ पर टूट रही हो और अनामिका अंगुली से बड़ी हो तो जातक को सट्टे के व्यवसाय में काफी हानि हुआ करती है।

सूर्य रेखा पूर्ण रूप से अथवा कुछ स्थान पर दुहरी हो तो दुहरी रेखा वाले वर्षमान में धन का विशेष लाभ होता है।

सूर्य रेखा का हाथ में न होना निर्धनता, अपयश, मंद बुद्धि, अप्रसिद्ध आदि के कारण दुःखी रहा करता है। तथा जातक कठोर परिश्रम द्वारा जीवन यापन करता है।

सूर्य रेखा और मध्य रेखा दोनों ही आपस में मिलकर चल रही हों तो जातक किसी विशेष योग्यता द्वारा धन कमाता है और धनवान तथा यशवान होता है। दे० चि० ६२

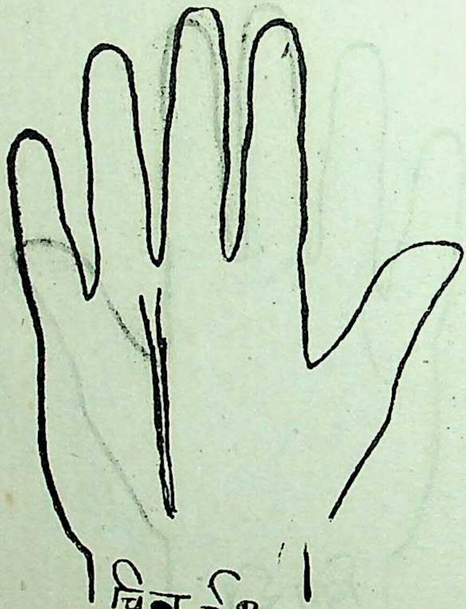

चित्र ६२

सूर्य रेखा को शुक्र अथवा मंगल के पर्वत से निकलती हुई कोई रेखा काट रही हो तो जातक दुष्ट स्वभाव वाले अपने सम्बंधी, मित्र के द्वारा नुकसान पाता है।

सूर्य रेखा जगह २ टूट रही हो अथवा हाथ में बिल्कुल भी न हो सूर्य के पर्वत पर छोटी २ दो या तीन खड़ी रेखायें हों तो ऐसा जातक यशवान नहीं होता है। यह बारम्बार अपने व्यवसाय को बदलता रहा करता है, इनको अनेकों उद्योग करने पर भी यश प्राप्त नहीं हुआ करता है।

सूर्य रेखा पर चिन्ह

सूर्य रेखा और मस्तष्क रेखा के संगम स्थान पर बिन्दु का चिन्ह हो तो जातक नेत्र रोगी होता है । दे० चि० ६३

चित्र ६३

सूर्य रेखा के प्रारम्भ में नीचे की ओर दो शाखायें निकल रही हैं तो जातक के धन प्राप्ति के मार्ग में अलग दो भागों में संकट आया करता है और इसके निवारण के विशेष प्रयत्न करने पड़ते हैं ।

सूर्य रेखा पर क्रोस का चिन्ह हो और चिन्ह साफ हो तो जातक को अनायास ही धन प्राप्त होता है ।

सूर्य रेखा पर यब का चिन्ह हो तो जातक को धन हानि, विवाद मुकदमा तथा दिवालिया हो जाता है। दे० चि० ९४

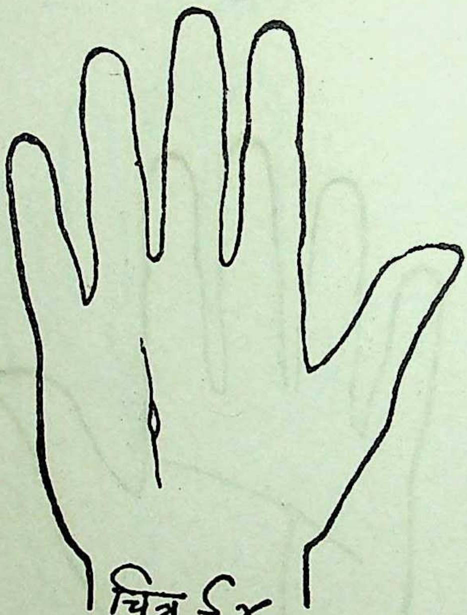

चित्र ९४

सूर्य रेखा पर जिस वर्षमान में यव होता है तो उसी वर्षमान में धन हानि विवाद तथा मुकदमा हुआ करते हैं और जिस वर्षमान में यव समान होता है। उस वर्षमान के बाद में जातक का जीवन सुखमय हो जाता है। सुख धन यश का लाभ होता है। सभी कष्ट दूर हो जाते हैं।

सूर्य रेखा प्रमाण से अधिक चौड़ी हो तो यह जातक के महत्व के कामों में अपयशकारक होती है, इस प्रकार की रेखा वाले जातक हमेशा चिन्तायुक्त धनहीन तथा बुद्धि-हीन रहा करते हैं।

सूर्य रेखा पर क्रोस का चिन्ह हो तो जातक को आकस्मिक धन प्राप्ति होती है। यदि चिन्ह बिलकुल साफ हो तो किसी अन्य रेखा को न काट रही हो तो धन प्राप्त होता है। देभ चि० ६५

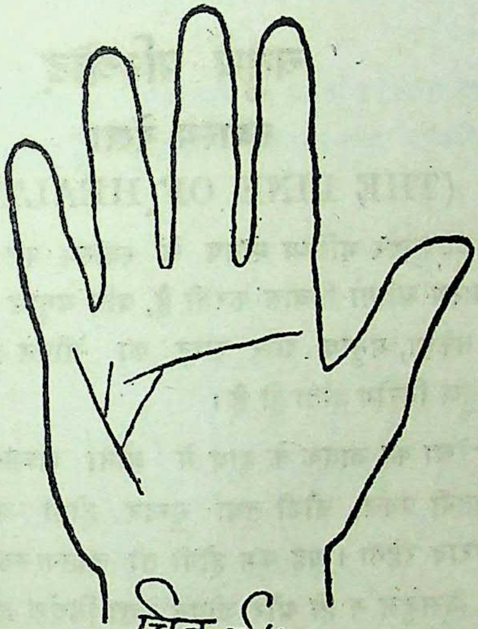

चित्र ६५

सूर्य रेखा पर नक्षत्र चिन्ह हों तो जातक को किसी मित्र से धन लाभ होता है।

सूर्य के पर्वत पर बिन्दु चिन्ह हो तो जातक धर्मवान सद्गुणी होता है।

हाथ के मध्य भाग में रेखाओं के संयोग से जो त्रिकोण बना है उस त्रिकोण के मध्य भाग में फुली का चिन्ह हो तो जातक के जीवन में धन की कमी आती है और जातक विशेष परेशान हुआ करता है।

चतुर्थ परिच्छेद

स्वास्थ रेखा

(THE LINE OF HEALTH)

मानव का सुन्दर भविष्य मानव के स्वास्थ पर निर्भर है स्वास्थ शरीर में स्वास्थ आत्मा निवास करती है, यदि मनुष्य रोगी है तो वह कुछ न कर सकेगा, मनुष्य और राष्ट्र का जीवन ही निरोगता है। और प्रथम सुख निरोग होना ही है।

स्वास्थ रेखा का जातक के हाथ में होना अच्छा नहीं है, क्योंकि यह रेखा जितनी प्रबल, चौड़ी तथा सुन्दर होगी जातक का स्वास्थ उतना ही खराब रहेगा। यह कम होगी तो जातक स्वास्थ रहेगा। यदि स्वास्थ रेखा बिलकुल न हो और जीवन रेखा निर्बल हो तो जातक का स्वास्थ ठीक रहेगा। जीवन रेखा जिस स्थान पर स्वास्थ रेखा से मिलती है, उस वर्षमान में जातक को रोग, दुःख एवं मृत्यु का सामना करना पड़ता है।

स्वास्थ रेखा मणिबन्ध से अथवा चन्द्र के पर्वत के नीचे के भाग से प्रारम्भ होकर बुध के क्षेत्र की ओर चलती है और बुध के क्षेत्र पर समाप्त होती है। कुछ विद्वान इसे "बुध रेखा" भी कहते हैं।

कनिष्ठिका या मूल रेखा प्रतिष्ठावान महाशय ।। १ ।। कनिष्ठका अंगुली की मूल की ओर जो रेखा जाती है वह मान, प्रतिष्ठा तथा यश प्रदायक होती है।

स्वांगुली मूल भवोर्द्ध रेखा पर्वष्य धस्तान्मुनिभिः प्रशस्ता ।
आरोग्य नामस्तुति लाभ पुत्रान् धत्ते कनिष्ठादि भव क्रमेण ॥ १ ॥

कनिष्ठा अंगुली के मूल में जो रेखा रहती है उसको आरोग्य रेखा कहते हैं। अविछन्न सुन्दर बलवान हो, स्वास्थ सुन्दर पुत्र, धन दायक होती है। दे० चि० ९६-१

स्वास्थ रेखा बिना टूटे सीधी बुध के पर्वत पर गयी हो तो जातक का स्वास्थ ठीक रहता है। बुद्धिमान, विलासी तथा यशस्वी होता है। दे० चि० ९६-२

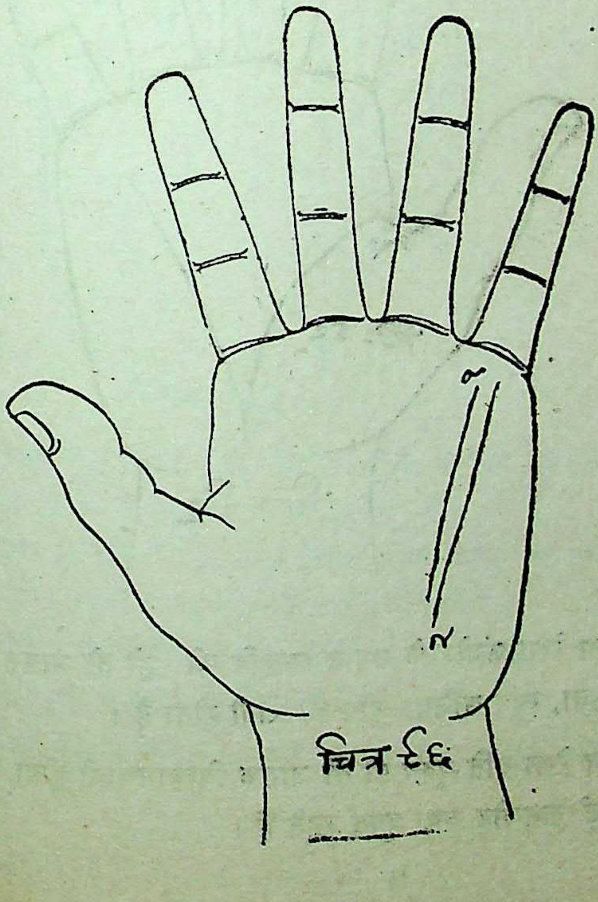

चित्र ९६

स्वास्थ रेखा जीवन रेखा के अन्तिम स्थान से प्रारम्भ हो रही हो तो जातक के फेफड़े कमजोर होते हैं। यदि स्वास्थ रेखा टूटी हो तो जातक की पाचन शक्ति कमजोर होती है। दे० चि० ६२

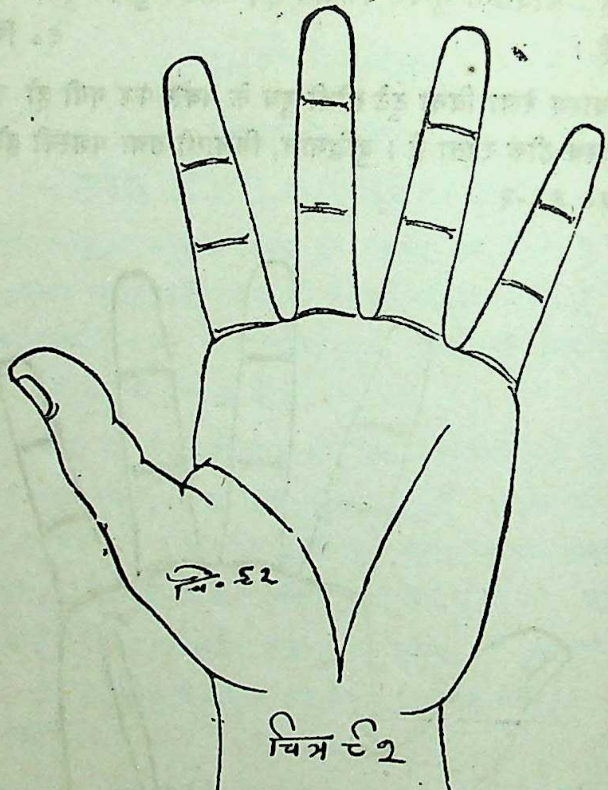

चित्र ६2

स्वास्थ रेखा जंजीर के समान आकृति की हो तो जातक सिर दर्द में सुई चुभना, म्यूर लजिया रोग का रोगी होता है।

स्वास्थ रेखा दांते युक्त हो तो जातक विश्वासघाती होता है। और उसके फेफड़े कमजोर तथा युक्त रहते हैं।

स्वास्थ रेखा कहीं मोटी कहीं पतली हो तो जातक पित्त प्रकृति का होता है।

स्वास्थ रेखा खण्डित हो और शनि का पर्वत उच्च हो तो ऐसा जातक दन्त रोगी होता है।

दे० चि० ६३

चित्र ६३

स्वास्थ रेखा स्थान २ पर छुट्टी हो तो ऐसा जातक पेट विकार तथा अपचन का रोगी होता है।

स्वास्थ रेखा पर यव चिन्ह हो तो ऐसा जातक अन्तरिक रोगों का रोगी होता है और इसके शरीर की चीर फाड़ तक होती है।

स्वास्थ रेखा व मस्तष्क रेखा पर यव चिन्ह हो और नखों के लक्षण भी अशुभ हो तो जातक क्षयरोगी होता है।

स्वास्थ रेखा उमेठी 'असम' हो तो ज़ातक की प्रकृति पित्तमय होती है।

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा से प्रारम्भ होकर हृदय रेखा तक ही जावे यह रेखा मस्तष्क रेखा के मध्य से प्रारम्भ हो तो जातक को दिमाग सम्बन्धी रोग होता है, ज्वर भी भोगना पड़ता है।

दे० चि० ६४

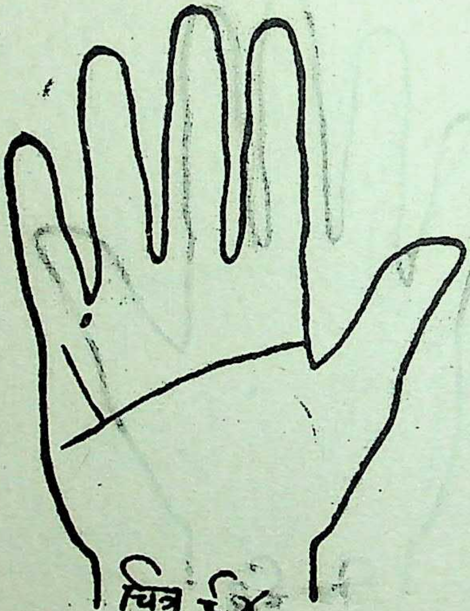

चित्र ६४

स्वास्थ रेखा बाल के समान पतली हो और सीधी हो तो जातक बड़ा निर्दयी होता है।

स्वास्थ रेखा पूर्ण होकर केवल हृदय रेखा और मस्तष्क रेखा के मध्य भाग में ही हो और यह रेखा दोनों रेखाओं को मिला रही हो तो ऐसे जातक का मस्तष्क खराब हो जाता है और ज्वर पीड़ा भोगा करता है।

स्वास्थ रेखा के ऊपर की ओर रेखायें निकल रही हों और कोई रेखा मस्तष्क रेखा से मिलकर त्रिकोण का निर्माण करें तो जातक सद्‌गुणी मनुष्यों से मान प्रतिष्ठा प्राप्त करता है। यह जातक गुप्त विद्या जानने वाला, विद्य ुत शक्ति शोधक, मकैनिक इन्जीनियर होता है। दे० चि० ६५

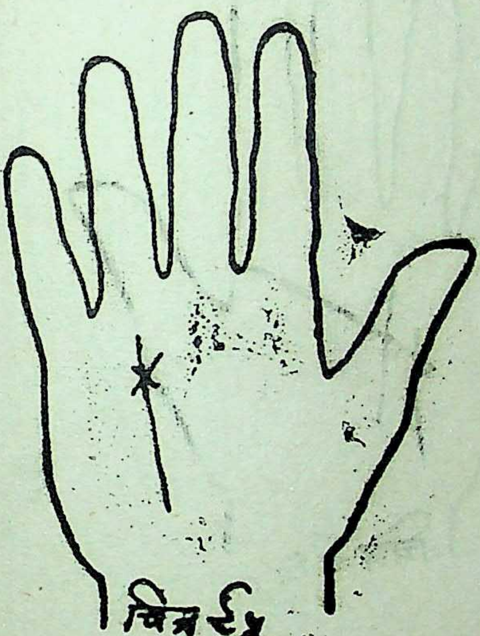

चित्र ६५

स्वास्थ रेखा चन्द्र के पर्वत पर चली गई हो तो जातक हमेशा चिन्ताग्रस्त रहा करता है।

स्वास्थ रेखा का आयु रेखा से मिलन हो और यह रेखा स्वास्थ रेखा से कट रही हो तो ऐसा जातक उस वर्षमान में पेट विकार अपचन का रोगी होता है। यह रोग बहुत ही कष्ट साध्य हुआ करता है। यह योग २८ वर्षमान में आता है।

स्वास्थ रेखा भाग्य रेखा तथा मस्तष्क के द्वारा मस्तष्क रेखा के नीचे त्रिकोण सा बन जावे तो ऐसा जातक मीमांसक तथा यशस्वी होता है। दे० चि० ९६

चित्र ९६

स्वास्थ रेखा बहुत ही पतली बारीक बाल के समान हो तो ऐसा जातक बहुत ही निर्दयी होता है।

स्वास्थ रेखा चक्कर खाकर चन्द्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक सर्वदा अत्यन्त चिन्ताग्रस्त रहा करता है।

—:०:—

स्वास्थ रेखा को छोटी २ रेखायें काट रही हों तो जातक पित्त जनित मस्तष्क रोग का रोगी होता है तथा रेखा वर्षमान कष्ट में ही भोगा करता है। दे० चि० ६७

चित्र ६७

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा और भाग्य रेखा के मिलने से एक त्रिकोण बन जावे तो ऐसे जातक को मृगी का दौरा तथा प्रकृति का गहरा सम्बन्ध हो जाता है। यदि इस प्रकार का जातक कुछ भी अधिक कार्य करता है तो घबड़ा जाता है।

स्वास्थ रेखा टूटी झुकी मुड़ी लहरदार हो तो ऐसा जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा यकृत और हृदय पीड़ा से रोगी रहा करता है।

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा और हृदय रेखा के मध्य में कट रही हो तो ऐसा जातक मृगी, मूर्छा तथा चक्कर आना आदि का रोगी होता है तथा दिवालिया होता है। दे० चि० ६८

चित्र ९८

स्वास्थ रेखा टूटी, मुड़ी तथा लहरदार हो तो जातक का स्वभाव चिड़चिड़ा यकृत और हृदय रोग का रोगी होता है।

स्वास्थ रेखा प्रायः ही बदला करती हैं जब जातक निरोग होता है तो यह प्रायः ही हाथ में दिखाई नहीं पड़ती हैं और जब रोगी होता है तो गहरी हो जाती है।

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा हृदय रेखा के मध्य में गहरी हो और एक सहायक रेखा जीवन रेखा से मिल रही हो और इसी स्थान से जीवन रेखा आगे बढ़े तो ऐसा जातक रोग ग्रस्त रहा करता है। रेखा मिलन वर्ष में मृत्यु हो जाती है।

स्वास्थ रेखा छोटी निर्बल व छोटी रेखाओं को काट रही हो तो जातक रोग ग्रस्त रहता है। थोड़े ही परिश्रम से थकान महसूस करने लगता है सिर में दर्द हो जाता है और अल्पआयु में स्वर्ग गमन करता है। दे० चि० ६६

चित्र ६६

स्वास्थ रेखा हृदय रेखा को पार करके सूर्य के पर्वत पर पहुंच रही हो भाग्य रेखा तथा मस्तष्क रेखा को न काटे तो जातक विद्वान, गुणवान, साहित्यकार होता है तथा अनेक प्रकार की गुप्त विद्याओं का ज्ञात होता है।

स्वास्थ रेखा पर यव के समान चिन्ह हो तो जातक को निद्रा अवस्था में जोर २ से बकने की आदत हो जाती है तथा ऐसे जातक को प्रवास या पर्यटन सम्बन्धी स्वप्न रात में बार-बार दिखाई देते हैं।

स्वास्थ रेखा पतली और छोटी हो और उसे समानान्तर रेखायें काट रही हो तो ऐसे जातक दुष्ट स्वभाव, कलह प्रिय, निर्दयी होते हैं, अपच तथा पेट सम्बन्धी रोग का शिकार रहा करते हैं।

दे० चि० १००

चित्र १००

स्वास्थ रेखा बिलकुल ही हाथ में न हो तो ऐसे जातक दृढ़ और निरोग रहा करते है, यह कार्य के महत्व के आगे अपनी सेहत तक की चिन्ता नहीं किया करते हैं, इस रेखा का हाथ में होना अच्छा नहीं माना जाता है।

किन्तु जातक के हाथ में सुन्दर उठावदार सूर्य रेखा हो और भाग्य रेखा हो और स्वास्थ रेखा भी सुन्दर उठावदार हो तो यह रेखा विशेष महत्वपूर्ण हो जाती हैं और जातक को यश, धन, गौरव प्रदान कराया करती हैं।

स्वास्थ रेखा छोटी समान्तर रेखाओं में चल रही हो और यह रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श न करें तो ऐसा जातक अनेकों कलाओं में प्रवीण, वेदान्ती, विचारवान तथा अपने व्यवसाय में यश पैदा किया करता है। दे० चि० १०१

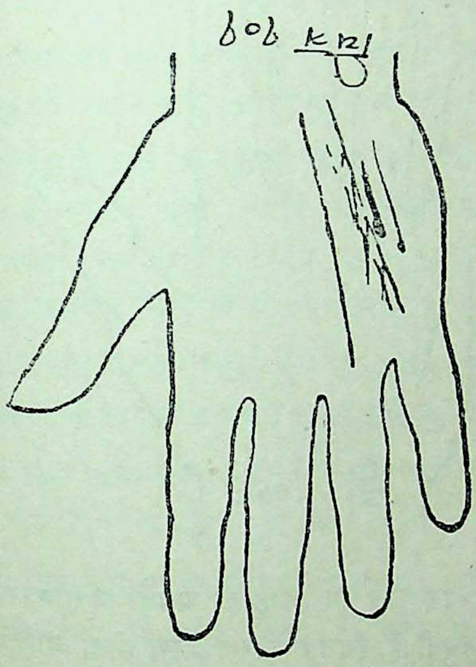

स्वास्थ रखा केवल बुध के क्षेत्र पर ही हो तो ऐसा जातक अपने हाथ में अनेक कार्य लिया करता है परन्तु किसी को पूर्ण नहीं कर पाता है।

स्वास्थ रेखा गहरी हो गुरु की अंगुली नुकीली हो और चन्द्र का पर्वत उठा हुआ हो तो जातक गुप्त विद्याओं का ज्ञान रखने वाला होता है और इसका गुप्त प्रभाव अधिक पड़ा करता है।

स्वास्थ रेखा पर चिन्ह

स्वास्थ रेखा पर बिन्दु चिन्ह हो तो ऐसा जातक पक्का चोर होता है। दे० चि० १०२

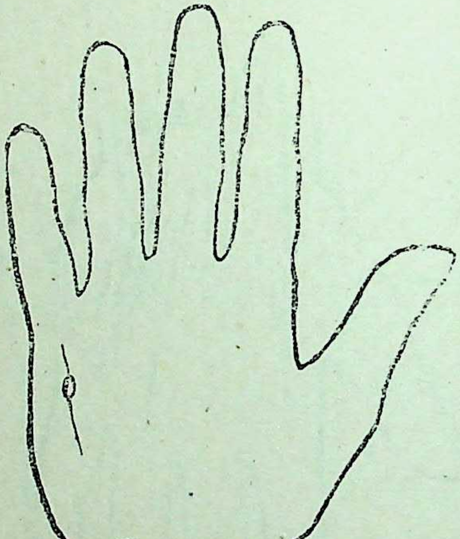

चि० १०२

स्वास्थ रेखा पर क्रास का चिन्ह हो अथवा वृत्ताकार चिन्ह हो तो जातक को चोट लगती है, जिसके कारण जख्म होना चाहिये।

स्वास्थ रेखा पर यव चिन्ह हो तो जातक को सोने के समय जोर जोर से बकने की आदत पड़ जाती है और यात्रा पर्यटन तथा प्रवास काल में स्वप्न अधिक दिखाई देते हैं।

स्वास्थ रेखा पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो जातक को किसी भीतरी रोग अथवा आपरेशन आदि के कष्ट की सूचना है।

स्वास्थ रेखा पर स्त्री जातक के हाथ में नक्षत्र का चिन्ह हो तो उसको प्रसव काल में अधिक कष्ट भोगना पड़ता है।

स्वास्थ रेखा और मस्तष्क रेखा पर चिन्ह हो और नाखून के लक्षण अशुभ हो तो जातक को क्षय रोग होता है।

स्वास्थ रेखा पर एक से अधिक यव चिन्ह हों तो यह चीर-फाड़ की सूचना है। जातक को 'गुदा' आदि की पीड़ा भी होती है।

स्वास्थ रेखा और बिन्दु चिन्ह हो और मंगल के क्षेत्र पर रेखा जाल हो तो जातक की आंतों में सूजन रहा करती है।

स्वास्थ रेखा पर बिन्दु चिन्ह हो और चन्द्र के पर्वत पर भी ऐसा रेखा जाल हो तो जातक बात विकार का रोगी होता है।

स्वास्थ रेखा के अन्त में जाल चिन्ह हो तो जातक का स्वास्थ खराब रहता है और व्यापार आदि में अपनी बदनियत के कारण सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है। यदि इस प्रकार जातक के हाथ में सूर्य के पर्वत पर बिन्दु चिन्ह हो तो वह दिवालिया हो जाता है।

स्वास्थ के अंत में क्रास चिन्ह हो तो ऐसा जातक धोखे बाज होता है तथा अपने कार्य में सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है।

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा को काटे और वहां पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो यह दिमाग की कमजोरी का लक्षण है।

स्वास्थ रेखा सर्पाकार हो और मस्तष्क रेखा को स्पर्श कर रही हो और जीवन रेखा पर नक्षत्र चिन्ह हो और शनि क्षेत्र उच्च हो तो अधिक परिश्रम नहीं करना चाहिए, अन्यथा ऐसे जातक आत्म हत्या भी करते हैं।

स्वास्थ रेखा के बुध के पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसा जातक रोगी रहा करता है।

स्वास्थ रेखा श्वेत रंग की हो और बिन्दु चिन्ह हो तो जातक चोर, दुष्ट स्वभाव वाला, उदर रोगी, राज्य की ओर से दुखी रहता है तथा बन्धु और सन्तान सुख नहीं भोग पाता है।

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा पर रक्तवर्ण की हो तो जातक मस्तष्क पीड़ा ज्वर अपचन, आदि का रोगी रहता है।

स्वास्थ रेखा का रंग काला है तो जातक को मोटर साईकिल तथा अन्य प्रकार की दुर्घटना का शिकार होना पड़ता है।

स्वास्थ रेखा पीले रँग की लहरदार हो और मस्तष्क रेखा को काटे तो ऐसा जातक मूर्ख, बेईमान, निर्लज्ज और अपने माता पिता का विरोध किया करता है। यकृत, वक्षास्थल तथा पेट रोग का रोगी रहता है।

स्वास्थ रेखा लाल रंग की हो तो जातक अहंकारी पशुवत् कार्य करने वाला होता है।

स्वास्थ रेखा प्रारम्भ लाल रंग की हो तो जातक को छाती का रोग रहता है।

स्वास्थ रेखा मध्य में लाल वर्णन की हो तो जातक को बारम्बर ज्वर कष्ट हुआ करता है।

स्वास्थ रेखा अन्त में लाल वर्ण की हो तो मस्तष्क शूल आदि का रोगी होता है।

--:o:--

पंचम परिच्छेद

विवाह रेखा

(The line of marriage)

विवाह रेखा छोटी परन्तु जीवन की एक बहुत ही महत्वपूर्ण रेखा है। हर जातक अपने जीवन साथी के विषय में जानना चाहता है। साथ ही उसके जीवन साथी के साथ उसका जीवन किस प्रकार व्यतीत होगा उसको जीवन साथी मिलेगा या नहीं ? मिलेगा तो कब ? साथी ही मिलेगा तो कैसा और किस दिशा से।

हाथ की सबसे छोटी अंगुली (कनिष्ठका) के नीचे हृदय रेखा से ऊपर बुध के पर्वत पर हाथ में बाहर की ओर विवाह रेखा होती है।

आयु रेखा कनिष्ठा रेखस्य गृहणी प्रदा: ।
समाभि: शुभ शीलास्ता विषमाभि कुशिलिका ॥१॥
कलत्रकातयों सौख्यं जीविताख्य कनिष्ठयो: ।
मध्ये विचतये दक्षे वाम हस्ते नर स्त्रियों: ॥२॥

—विवेक विलास

कनिष्ठिका अंगुली के नीचे, आयु रेखा (हृदय रेखा के ऊपर) जितनी अखण्ड लम्बी सुन्दर और साफ रेखायें हैं वह स्त्री दायक है, और उतनी स्त्रियाँ जाननी चाहिये। दे० चि० १०३

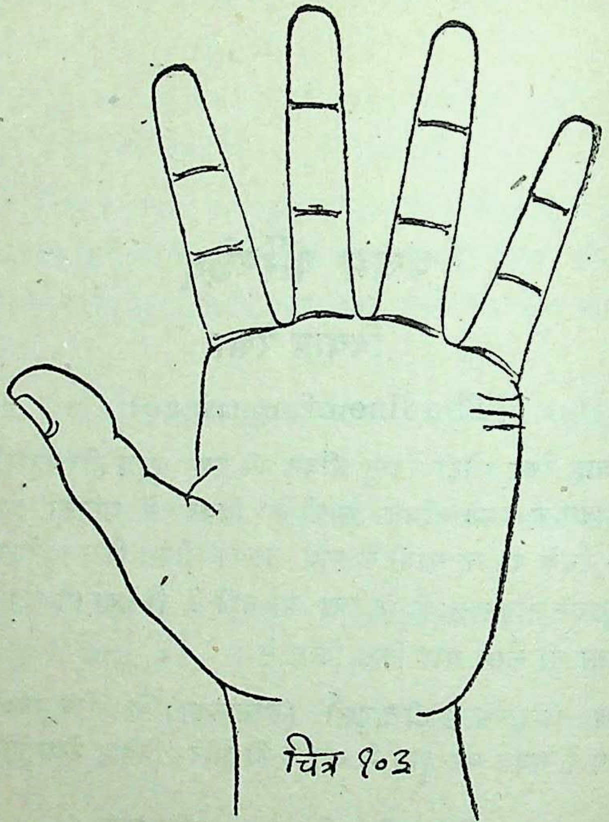

चित्र १०३

जितनी टूटी, फूटी, अस्पष्ट रेखायें हैं उतनी स्त्री सुख कारक हैं।

स्थिताचान्ते च चारेख:
कनिष्ठा जीवन रेखियो।
तावेन्त्यो महिला स्तम्भ स्त्रिया स्तार्वान्मिताधवा ॥१॥

—समुद्र कर्टाष

कनिष्ठका और जीवन रेखा के मध्य में जो रेखा होती है उनको विवाह रेखा कहते हैं पुरुष जातक के हाथ में जितनी रेखा हो उसकी उतनी भार्या और स्त्री जातक में हो उतने पति होते हैं।

स्त्री रेखा वामहस्ते स्यादायु रेखा स्वभावत ।
दक्षिणे पल्लवै स्तस्या सौख्यं दुःखंतु बामगैः ।।१।।

—हस्त संजीवनी

स्त्रीयों के बाँये हाथ में और पुरुषों के दाहिने हाथ में इन रेखाओं को देखकर निर्णय करना चाहिए, पल्लव युक्त रेखा दुःख, स्पष्ट रेखा सुख कारक पत्नी प्रदायक होती है।

स्युर्यावंत्योंतरे रेखामणि जीवित रेखियोः ।
तावंत्यो महिलास्तस्य स्त्रियास्तावन्मिताः प्रिया ।।१।।
स्त्रिया दक्षिणा पाणिस्थ पति रेखा प्रकीर्तितः ।
आयुरेखात्रतेद्भेदेयोगः स्याद्विधवा करः ।।२।।
तद्दक्षिणकरे तारा मूलादामणि बंधनं ।
रेखायावत्य उद्भूता स्त्रियास्तावत ईश्वराः ।।३।।
पुष्टयदेव देहेस्याल्लक्षणा वाप्यलक्षणं ।
इतराद्ब ध्यते तेन बल बल्फलंद भवेत् ।।४।।

मणिबंध रेखा से आयु रेखा के बीच में सुन्दर स्पष्ट रेखा हो तो पुरुष जातक के उतनी भार्या और स्त्री जातक के हाथ के अनुसार पति हुआ करते हैं। पुरुष जातक दाहिने हाथ से और स्त्री जातक का बाँये हाथ से विचार करना चाहिए। विवाह रेखा जीवन रेखा को छेदन कर रही हो तो यह विधवा कारक योग है। कनिष्ठका के मूल से मणिबंध तक स्त्री के हाथ में जितनी रेखा हो उतने उसके पति होते हैं शरीर के शुभ अशुभ लक्षण दिखाई दें यदि लक्षण अधिक हों त ो अशुभ दोषों को समाप्त कर देते हैं, यदि अशुभ बलवान हों तो शुभ लक्षणों के फल को समाप्त कर देते हैं।

रेखाः कनिष्ठकायुर्लेखा मध्ये नरकारस्त यावत्य ।
तावत्यो मसिलाः स्युर्महिलायाः पुनरपि मनुष्या ।।१।।
रेखा भिर्व्रिषषमाभर्षिषमा समाभिरथ समशीला ।
वीनतरा दीनामिध्र् बा माधिकतराः समधिकामि ।।२।।

पुष्टभिंदि पुनर्भ कन्याभिरेखाभि रथ सुद्रीर्धाभि ।
सुभगा सूक्ष्यमाभिः स्यात्स्फुटिताभि दुर्भु ग नारी ॥३॥

हृदय रेखा (आयु रेखा और कनिष्ठका के मध्य में जितनी रेखा होंगी उतनी ही स्त्रियाँ और स्त्री के उतने ही पति होंगे विषम रेखा हो तो विषम कुल को अर्थात् नीच वश की भार्या यदि सम हो तो सम-कुल की भार्या होती है। विवाह रेखा सुन्दर सूक्ष्म और दीर्घ हो तो सुन्दर तथा पतिव्रता कन्या से (जिसका पूर्व में विवाह न हुआ हो) विवाह रेखा महीन, छोटी, मोटी हो तो ऐसी कन्या से विवाह होता है जिसका पूर्व में विवाह हो चुका हो, विवाह रेखा फटी हो तो दुर्भगा कन्या से विवाह होता है।

पितृ रेखां गुष्ट रेखान्तरे योर्ध्व रेखिकाः ।
तत्संख्यादार भोगः स्याद्वेधेल्केशश्च तद्भवः ॥१॥
इत्यादिराना दार रेखा उक्त स्तत्सूत्रस्य पन स्त्री भोगपरंपुनः ।
परिणय नादि संस्कार प्राप्त स्त्री विषयं २॥
तारा भूलान्मणि याव द्रेखा यत्सख्यया स्फुटाः ।
ताव तिर्महिलास्तस्य राजयोगे विनिर्दिशेत् ॥३॥

जीवन रेखा और अंगुष्ठ के मूल में शुक्र के पर्वत के नीचे जितनी आड़ी रेखाये हों उतनी ही उसे भार्या का सुख होगा। यदि यह रेखायें कटी फटी हों तो उसका भार्या से क्लेश होता है।

विवाह रेखा में जितनी शाखा निकल रही हो उतनी ही भार्या होगी। विवाह रेखा दक्षिण की ओर निकली हो तो भार्या सुखी और यदि शाखा बाईं ओर निकल रही हो तो भार्या से क्लेश रहता है।

दीक्षा रेखा बलवती पुरस्याचेन्दत्तारा ।
बाधयेद्दार रेखांसा तथा मित्रोदय बदेत् ॥१॥

तर्जनी अंगुली की जड़ में जो टेढ़ी रेखा होती है तो उसको दीक्षा रेखा कहते हैं। जिस जातक के हाथ में दीक्षा रेखा रहती है तो उसका विवाह नहीं होता है, भले ही विवाह रेखा सुन्दर क्यों न हो। दीक्षा

रखा भार्या का प्रतिबन्ध कर देती है यदि विवाह रेखा सुन्दर बलवान है तो मित्र शिष्य आदि की वृद्धि कर देती है।

कनिष्ठका अंगुली के नीचे हृदय रेखा से कुछ ऊपर छोटी २ गहरी आड़ी रेखायें एक दो, तीन या अधिक भी हो सकती हैं इन रेखाओं को विवाह रेखा कहते हैं।

The line of marriage is found between the line of heart and the base of the fingers."

Whe found straght and clear its promises a happy marriage or union.

विवाह रेखा सुन्दर साफ दिखाई दे तो जातक का विवाह सुख-दायक और शुभ होता है।

विवाह रेखा जितनी गहरी, छेद रहित होगी, सम्बंधी उतना ही अधिक टिकाऊ होगा।

छोटी छोटी विवाह रेखा बारीक रेखा उप-पत्नी रेखा होती है।

विवाह रेखा बीच २ में टूटी हो और उस रेखा को लाँघकर दूसरी रेखा चली जावे और दूसरी रेखा हृदय रखा को स्पर्श कर रही हो तो जातक के विवाह में अनेक विघ्न आया करते हैं और विवाह सम्बन्ध बिगड़ जाया करते हैं। द० चि० १०४—१

विवाह रेखा से अन्दर की ओर शाखायें लटक रही हों तो ऐसे जातक की स्त्री को बार बार कष्ट, पीड़ा, दुःख सहन करने पड़ते हैं।

दे० चि० १०४—२

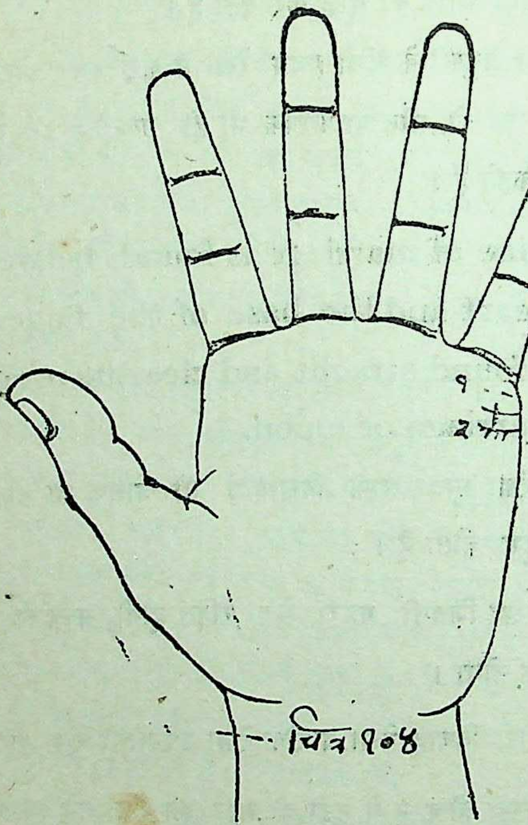

चित्र १०४

विवाह रेखा हृदय रेखा की ओर झुक रही हो अथवा विवाह रेखा की शाखा नीचे को झुक रही हो तो जातक का भार्या से बैर रहा करता है, ऐसा जातक पति पत्नी भाव को त्याग देता है।

विवाह रेखा की कोई शाखा हृदय रेखा को स्पर्श कर रही हो दम्पत्ति आपस में लड़ते रहते हैं, परन्तु सम्बंध विच्छेद नहीं हुआ करता है। इस प्रकार की विवाह रेखा स्त्री जातक के हाथ में हो तो उसका पति नशेबाज, शराबी होता है और पति पत्नी में क्लेह रहा करता है।

विवाह रेखा हृदय रेखा को काट रही हो तो बालक का जीवन साथी से प्रेम नहीं रहता है और एक दूसरे से प्रथक् हो जाते हैं।

दे० चि० १०५

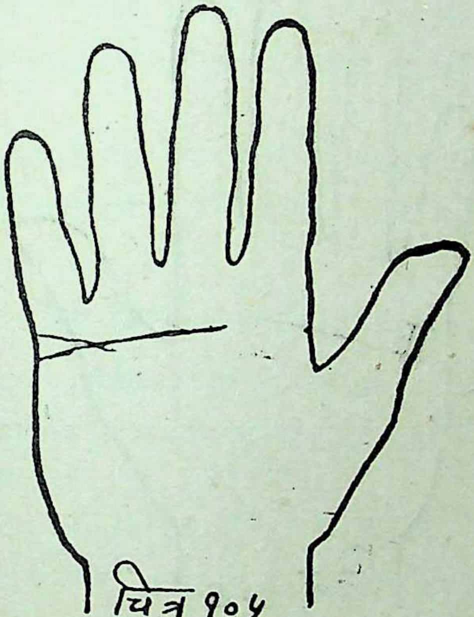

चित्र 105

विवाह रेखा सूर्य रेखा को काट रही हो तो पति पत्नी में द्वेष रहता है और दोनों ही जीवनभर दुःखी रहा करते हैं।

विवाह रेखा जितनी गहरी हो, छेद रहित हो तो जातक का स्त्री से प्रेम उतना ही अधिक तथा टिकाऊ होता है।

विवाह रेखा बुध के पर्वत का उल्लंघन कर रही हो तो जातक के उप-पत्नी हुआ करती है। परन्तु ऐसा देखने में आया है कि इस प्रकार के जातक का विवाह नहीं होतो है, ऐसा जातक स्त्रियों से प्रेम किया करता है और हिंदू रीती से विवाह नहीं होता है।

विवाह रेखा से बहुत सी रेखायें निकलकर हृदय रेखा को काट रही हों तो जातक की भार्या को बार-बार बिमारी होती है और अन्त में स्वर्गवास हो जाती है दे० चि० १०६

चित्र १०६

विवाह रेखा में बाहर की ओर प्रारम्भ में यव चिन्ह हो तो ऐसे जातक का प्रेम पत्नी से कुछ अल्पकाल उपभोग के बाद उस स्त्री के समीप के रिश्तेदारों की ओर से बाधा आया करती है और विरह भोगना होता है।

इस योग में अन्य योग भी देखने चाहिए १. रेखा लाल वर्ण की हो, २. रेखा में खांचे हो, ३. इस रेखा में मध्य भाग से नीचे की ओर से रेखा निकल रही हो, ४. शुक्र के पर्वत पर क्रोस चिन्ह हो, ५. बांये हाथ में गुरु के पर्वत के नीचे क्रास चिन्ह हो तो जातक का प्रेम सम्बंध में विरोध पैदा हुआ करता है।

विवाह रेखा कनिष्टका अंगुली की ओर ओर मुड़ आवे तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता है। दे० चि० १०७—१

शुक्र के पर्वत से कोई रेखा निकल कर जीवन रेखा मस्तष्क रेखा को काट कर हृदय रेखा से स्पर्श कर रही हो तो जातक के विवाह का सम्बन्ध निश्चय होकर टूट जाया करता हैं, यदि शुक्र के पर्वत की रेखा हृदय रेखा को काटकर कुछ आगे चल रही हो तो विवाह हो जाया करता है।

अंगुष्ठ के मूल से कोई रेखा निकल कर कनिष्ठका अंगुली तक जा रही हो तो ऐसा जातक अपने जीवन साथी की हत्या कर दिया करता है।

सर्प जिह्वाकार विवाह रेखा

विवाह रेखा सर्पजिह्वाकार बुध के पर्वत ही रहे और सीधे हो तो ऐसे जातक का आपस में झगड़ा रहा करता है परन्तु विवाह विच्छेद नहीं हुआ करता है।

विवाह रेखा हाथ में बाहर की ओर सर्पजिह्वाकार हो तो जातक के विवाह से पूर्व कठिनाई आया करती है और विवाह भी अधिक उम्र में होता है।

विवाह रेखा सर्पजिह्वाकार होकर हाथ की चौथी अंगुली (कनिष्ठका की ओर मुड़ गयी हो तो ऐसा जातक पर स्त्री गामी, व्यभिचारी कुकर्मी, आप्राकृतिक ढंग से मैथुन करने वाला तथा वीर्यविकार संबंधी रोग का रोगी होता है। दे० चि० १०७-२

इस प्रकार विवाह रेखा स्त्री जातक के हाथ में हो तो पर-पुरुष रत, धन के लोभ में दूसरी शादी करने वाली, अपने पति को विष दे दिया करती है।

विवाह रेखा सर्पजिह्वाकार हो और विवाह रेखा में यव चिन्ह हो तो जातक का बिवाह सम्बन्ध, धन, क्षय, अपयश का कारण हुआ

करता है और अन्त में एक दूसरे को त्याग देते हैं। इस प्रकार की रेखा पर यदि गुणक का चिन्ह हो तो जातक का विवाह नहीं होता है। यदि विवाह हो जाता है तो एक आत्महत्या कर लेता है।

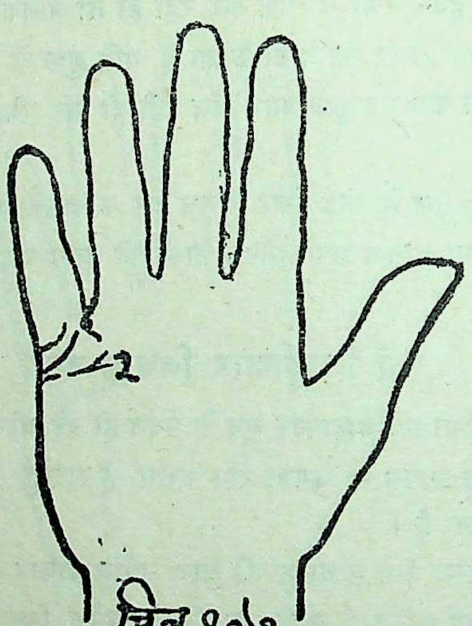

चित्र १०७

विवाह रेखा सर्प जिह्वाकार हो और कोई रेखा शुक्र के पर्वत से चलकर इस रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक तलाक ले लेता है और विवाहित जीवन दुखमय रहता है।

विवाह रेखा सर्पजिह्वाकार हो और मस्तष्क रेखा से कोई रेखा निकल कर इस सर्प जिह्वाकार रेखा का स्पर्श कर रही हो तो जातक का विवाहित जीवन बहुत दुःखमय व्यतीत होता है। इस प्रकार के जातक कभी भी तलाक लेते हुए नहीं देखे गये हैं, परन्तु इसके विवाहित जीवन का अन्त एक को राज्य की ओर से मृत्यु दण्ड घोषित हो जाने से होता है। दे० चि० १०७-२

विवाह रेखा सर्प जिह्वाकार हो और एक शाखा मस्तष्क रेखा से स्पर्श कर रही हो तो जातक के विरोधी विचारों के कारण पति पत्नी में कलह रहता है। इस प्रकार के हाथ वालों का विवाह अन्तर जातीय अथवा दूसरे धर्म के जातक से होता है।

सर्प जिह्वाकार विवाह रेखा हो और उसका अन्त भाग्य रेखा के अन्त में हो और वहां पर गुणक चिन्ह भाग्य रेखा के अन्त में हो तो ऐसे जातक का विवाह एक को फांसी हो जाने के कारण नहीं होता है।

विवाह रेखा में से नीचे की ओर उपरेखायें निकल रही हों तो जातक का दम्पत्ति जीवन रोग ग्रस्त बीता करता है।

विवाह रेखा पर चिन्ह

विवाह रेखा में छोटे-२ द्वीप चिन्ह हों, विवाह रेखा से छोटी-छोटी रेखा नीचे की ओर जा रही हो तो ऐसे जातक का विवाहित जीवन बहुत ही कष्टमय व्यतीत होता है। दे० चि० १०८

चित्र १०८

विवाह रेखा पर गुणक का चिन्ह हो तो जातक का विवाहित जीवन क्लेशमय रहता है।

विवाह रेखा बुध के पर्वत के नीचे की ओर मुड़कर अंकुश की तरह हो जावे तो जातक का जीवन साथी से प्रेम नहीं रहता है।

विवाह रेखा पर रेखा जाल हो तो जातक का विवाहित जीवन साथी पर मर जाता है और जातक अकेला ही रहता है।

दे० चि० १०९

चित्र १०८

विवाह रेखा पर काला बिन्दु हो तो जातक का जीवन साथी मर जाता है और जातक अकेला ही रहता है।

विवाह रेखा त्रिशूल के समान हो तो जातक रोगी बुरे कर्म करने वाला, वेश्या गामी, दुष्ट स्वभाव वाला होता है। पति पत्नी में प्रेम का अभाव रहता है। ऐसा जातक तलाक नहीं लेता है, परन्तु जीवन

सुखमय नहीं होता है। जातक की पत्नी पतिव्रता, सुशीला होती है, जातक जीवन के अन्तिम भाग में ठीक मार्ग पर आ जाता है।

विवाह रेखा सूर्य के पर्वत तक जा रही हो और वहां पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे जातक का विवाह सुन्दर विख्यात, धनवान परिवार से होता है। दे० चि० ११०

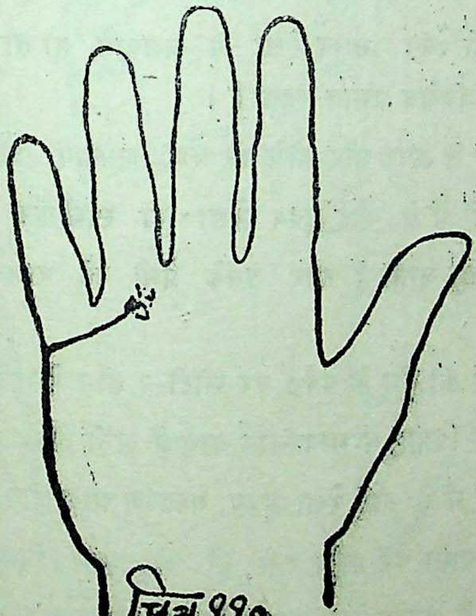

चित्र ११०

विवाह रेखा पर बिन्दु चिन्ह हो तो जातक के विवाह मार्ग में अनेक बाधा आया करती हैं।

विवाह रेखा के अन्य लक्षण

विवाह रेखा सुन्दर गहरी और पूर्ण हो तो यह शुभ फल-प्रद है।

विवाह रेखा सुन्दर और सीधी हो तो और कुछ हृदय रेखा की ओर झुक जावे तो जातक के जीवन साथी की मृत्यु प्रथम होती है।

चन्द्र के पर्वत से कोई रेखा निकल कर प्रथम सीधी चले और फिर मुड़कर भाग्य रेखा से स्पर्श करे तो जातक किसी विशेष कारणवश विवाह करता है, इसका प्रेम में कोई सम्बंध नहीं होता है।

चन्द्र क्षेत्र की रेखा भाग्य रेखा से बलवान हो तो जातक पर जीवन साथी का विशेष प्रभाव रहता है।

विवाह रेखा से ऊपर और नीचे की ओर शाखाएं चल रही हों और इन शाखाओं में से कोई हृदय रेखा को स्पर्श कर रही हो तो जातक की मृत्यु हो जाती है और उसके प्रेमी को राजदण्ड भोगना पड़ता है।

विवाह रेखा को बुध के पर्वत पर छोटी-२ तीन रेखायें काट रही हों तो जातक के विवाह में अन्य लोग बाधायें खड़ी किया करते हैं।

इन रेखाओं में से कोई रेखा हृदय, मस्तष्क और जीवन रेखा को काटकर शुक्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो प्रथम विवाह संबंध में विघ्न आ जाता है, परन्तु ऐसा जातक विवाह अवश्य कर लेता है, वह विवाह सिविल मेरिज, गन्धर्व, राक्षस ही क्यों न हो।

विवाह रेखा जितनी अधिक हृदय रेखा के पास होगी विवाह उतना ही शीघ्र होगा।

—:०:—

षष्टम परिच्छेद

बृहस्पति की मुद्रिका

१—गुरु की मुद्रिका

२—शनि की मुद्रिका

३—शुक्र की मुद्रिका

तर्जनी अंगुली के नीचे गुरु के पर्वत को अर्ध चन्द्राकार अवस्था घेरती है, उस रेखा को गुरु की मुद्रिका कहते हैं। दे० चि० ११२

चित्र ११२

गुरु की मुद्रिका बहुत कम हाथों में पाई जाती है, इस प्रकार की रेखा वाले जातक परलोक और मोक्ष की बात सोचा करते हैं, यह जातक धर्म चिन्तन, यज्ञ तप में अपना समय व्यतीत करते हैं और मोक्ष की इच्छा रखते हैं।

इस प्रकार की रेखा वाला जातक, भूत विद्या, प्रेत विद्या, जादूगरी ज्योतिष, तंत्र तथा मंत्रशास्त्र में विशेष रुचि रखते हैं। तथा इस प्रकार की विद्या में निपुणता प्राप्त किया करते हैं।

गुरु की मुद्रिका वाले जातक प्रायः विद्वान, हस्त रेखा परीक्षक, ज्योतिष तथा धार्मिक क्षेत्र में कार्य किया करते हैं। दे० चि० ११३

चित्र ११३

गुरु की मुद्रिका को शनि के क्षेत्र में प्रकट हुई रेखा काटे तो ऐसा जातक हृदय रोग का रोगी होता है।

गुरु की मुद्रिका पर दो खड़ी रेखा गुरु के क्षेत्र पर ही हो तो ऐसा जातक ख्याति प्राप्त करता है।

खड़ी रेखा सीधी न होकर लहरदार हो तो ऐसा जातक अपने कार्य में असफल हुआ करता है और व्यर्थ के कामों में अपनी शक्ति का व्यय किया करते हैं।

गुरु की मुद्रिका गुरु के पर्वत पर आने वाली रेखाओं को काट रही हो, अथवा मार्ग में बाधा डाल रही हो तो यह अशुभ लक्षण है यह उन रेखाओं के प्रभाव को नष्ट कर देती है। दे० चि० ११४

चित्र ११४

गुरु की मुद्रिका को हृदय रेखा काट रही हो तो ऐसे जातक का प्रेम सम्बंध दुर्भाग्य पूर्ण हुआ करता है। ऐसे जातक का अपने प्रेमी से मनमुटाव बना रहता है।

गुरु के पर्वत पर छोटी-२ कई आड़ी रेखा हो तो वह जातक को अपयश, हानि और दुर्भाग्य की सूचना देने वाली होती हैं।

गुरु की मुद्रिकाओं की संख्या तीन हो तो जातक शक्ति सम्पन्न, अत्यंत विषयी, कामुक होता है, यह बात रोगों का रोगी रहा करता है।

शनि की मुद्रिका
(RING OF SATURN)

मध्यमा शनि की अंगुली के नीचे शनि के पर्वत पर अर्ध-चन्द्राकार अवस्था में जो रेखा घेरती है उसे शनि की मुद्रिका कहते हैं।
दे० चि० १११

यह रेखा सब हाथों में नहीं पाई जाती है किसी भी व्यक्ति के हाथ में कभी-२ यह रेखा दो या दो से अधिक भागों में पाई जाती है। खण्डों में भी अर्धचन्द्राकार दिखाई देती है। दे० चि० ११५

चित्र ११५

शनि की मुद्रिका बहुत ही दुर्भाग्य पूर्ण रेखा है क्योंकि यह शनि ग्रह को काटती है। इस प्रकार की रेखा वाला जातक कोई भी सफलता प्राप्त नहीं कर सकता है, न काम को जमकर ही करता है एक काम को अपूर्ण छोड़कर दूसरा कार्य प्रारम्भ कर देता है इस कारण प्रायः असफल रहा करते हैं। यह जातक कभी भी एकाग्रचित नहीं हो पाता है। इनका जीवन प्रायः असफलताओं में व्यतीत हुआ करता है।

शनि और शुक्र के पर्वत उच्च हों, इन पर कोई अशुभ चिन्ह हो, साथ ही शनि की अंगुली और अंगुष्ठ का प्रथम पर्व बड़ा हो और शनि की मुद्रिका हो तो ऐसा जातक आत्मज्ञानी भगवत् सेवा पूजा में मग्न रहने वाला हुआ करता है ।

मंगल का प्रथम पर्व नीचा हो अंगूठा छोटा हो, स्वास्थ रेखा पर नक्षत्र, द्वीप चिन्ह हो तो ऐसा जातक अत्यन्त निराशपूर्ण जीवन यापन करता है तथा पागल हो जाता है अथवा आत्महत्या की भी अभिलाषा किया करते हैं ।

भाग्य रेखा खण्डित हो और दोष युक्त हो और शनि की मुद्रिका हो तो ऐसा जातक एक कार्य को अपूर्ण छोड़कर दूसरा कार्य किया करता है तथा जातक सफलता प्राप्त नहीं कर पाता है ।

दे० चि० ११६

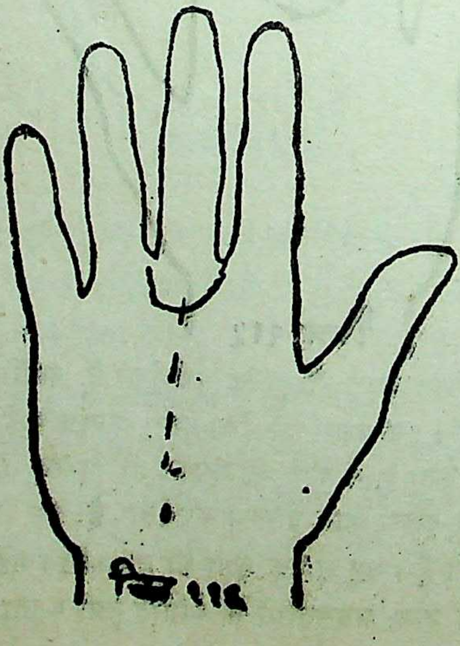

चित्र ११६

चन्द्र के पर्वत पर अशुभ चिन्ह हो और शनि की मुद्रिका हो तो जातक स्थिरता पूर्वक कोई कार्य कर पाता है। दे० चि० ११७

चित्र ११८

शनि और शुक्र के क्षेत्र उच्च हो और उन पर कोई भी अशुभ चिन्ह न हो और शनि की मुद्रिका हाथ में हो तो ऐसा जातक ब्रह्मनिष्ठ, आत्मज्ञानि, भगवत् साक्षात्कार करने वाला अविचल, ध्यान में मस्त रहने वाला तथा अलौकिक चमत्कार देखने वाला होता है, यह सगुण और निर्गुण दोनों ही प्रकार से ईश्वर उपासना किया करता है। यह महापुरुषों के साथ सत्संग तथा दर्शन का लाभ किया करता है।

शनि मुद्रिका खण्डित हो और शुक्र के क्षेत्र पर फुली चिन्ह हो तो जातक स्त्री के प्रेम के कारण ज्ञान मार्ग से विरक्त हो जाता है।

शुक्र की मुद्रिका
(The ring of Venus)

तर्जनी और मध्यमा अंगुली के मध्य से प्रारम्भ होकर अनामिका और कनिष्ठका अंगुली के मध्य तक जो रेखा धनुषाकृति के रूप में होती है, उस रेखा को शुक्र की मुद्रिका कहते हैं। दे० चि० १११—३

यह रेखा प्रायः सभी हाथों में नहीं हुआ करती है, यह केवल सौ दो सौ हाथों में से किसी एक हाथ में हुआ करती है।

यह रेखा गुरु और शनि के मध्य के क्षेत्र से प्रारम्भ होती है और सूर्य तथा बुध के क्षेत्र तक जाती है इसका शुक्र के क्षेत्र तथा ग्रह से कोई सम्बन्ध नहीं है फिर इसका नाम 'शुक्र की मुद्रिका' क्यों? शुक्र का सम्बन्ध काम वासना से है जिन हाथों में शुक्र का पर्वत विशेष उन्नत होता है उनकी कामवासना अधिक प्रबल होती है। जब यहाँ वासना बुद्धि से विशिष्ट संयोग करती है तो अनेक स्वरूप में जैसे सौंदर्य प्रियता, कला पटुता, संगीत प्रियता आदि प्रकट हुआ करती है। ज्योतिष के अनुसार शुक्र ग्रह स्त्री कारक माना जाता है। शुक्र की प्रधानता काम प्रियता की वृद्धि कर देता है। इस मुद्रिका का सम्बन्ध भी काम प्रियता से है और जिन हाथों में यह रेखा पाई जाती है उनके जन्मांक में शुक्र केंद्रगत होता है, इसी कारण इस रेखा का नाम 'शुक्र की मुद्रिका' रखा गया है।

शुक्र की मुद्रिका वाला जातक कामप्रिय होता है, क्योंकि मुद्रिका उसकी काम शक्ति को अधिक प्रबल कर देती है। यह जातक कितना भी वैराग्यप्रिय बने परन्तु उसकी रुचि कामक्रीड़ा में लगी रहती है। ऐसे जातक के विचार चंचल होते हैं, यह सुन्दर स्त्री पुरुषों की ओर विशेष ध्यान देता है।

शुक्र मुद्रिका विचारों में चंचलता दिया करती है, जातक का स्वभाव

चिड़चिड़ा हो जाता है वह छोटी २ बातों के आवेश में भी आ जाया करते हैं। यह जातक कभी २ उत्साह में भी आ जाया करते हैं।

शुक्र की मुद्रिका बुध के पर्वत पर हो तो ऐसा जातक झूठ बोलने वाला तथा धोखा देने में अधिक चतुर हुआ करता है।

शुक्र की मुद्रिका यदि विवाह रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसे जातक का विवाहित जीवन दुःखपूर्ण हो जाता है, वह अपने जीवन साथी के अनेक गुणों की इच्छा रखता है, परन्तु वह उसे प्राप्त नहीं हुआ करते हैं, इसलिए व्यर्थ में अपने जीवन साथी से विवाद किया करता है, इस कारण कभी २ मूर्छा रोग का शिकार हो जाता है।

दे० चि० ११८

चित्र ११८

शुक्र की मुद्रिका साफ और सुन्दर हो, ऐसा जातक चतुर, बुद्धिमान, दूरदर्शी तथा स्थिर स्वभाव वाला होता है।

शुक्र की मुद्रिका सूर्य और शनि की अंगुली के बराबर हो सूर्य के पर्वत पर सूर्य रेखा पहुँच रही हो तो ऐसा पुरुष बहुत धनवान, ऐश्वर्य-वान होता है तथा जुआ और सट्टे का शौक भी करता है।

शनि के पर्वत से निकलकर कई रेखा शुक्र की मुद्रिका को काट रही हो तो ऐसा जातक कामी, निर्लज्ज, शक्तिहीन होता है। वह अप्राकृतिक मैथून में रत रहता है, विवाह तथा प्रेम मार्ग में अनेक बाधायें आया करती हैं। दे० चि० ११६

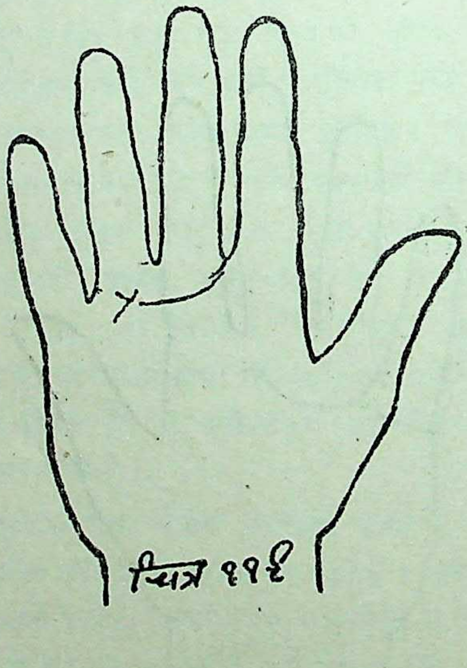

चित्र ११६

—:०:—

शुक्र की मुद्रिका खण्डित तथा कई खड़ी रेखाओं से कट रही हो तो ऐसा जातक भाव प्रधान तथा छोटी २ बातों में विचलित हो जाया करता है। इनका स्वभाव पागलों जैसा होता है। दे० चि० १२०

चित्र 120

शुक्र की मुद्रा अर्धगोलाकार हो, सूर्य तथा शनि के पर्वत को घेरती हुई हृदय रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक चित्रकार, कलाकार अभिनेता, कवि, लेखक, कुशल वक्ता, इन्द्रजाल से प्रेम करने वाला होता है। ऐसा जातक व्यभिचारी कामी नहीं होता है।

शुक्र की मुद्रिका जैसे हाथ में होती है उसी के अनुरूप फल दिया करती है। शुभ हाथ में शुभ फल और अशुभ हाथ में अशुभ फल देती है।

शुक्र की मुद्रिका पर शुभ चिह्न शुभ फलदायक होते हैं और अशुभ चिह्न अशुभ फल दिया करते हैं।

सप्तम परिच्छेद

सन्तान रेखा

(The line of sun and Daughters.)

सन्तान रेखा हाथ की छोटी परन्तु मानव जीवन की सबसे महत्व-पूर्ण रेखाओं में से हैं। प्रत्येक मानव संन्तान की इच्छा रखता है और वह हस्त परिक्षक से भी यह अभिलाषा रखता है कि वह उसको बतावें कि उससे कब २ सन्तान होगी उसमें जीवित कितने रहेंगी, साथ ही उसे किस सन्तान से सुख प्राप्त होगा तथा उसमें कितनी कन्या व पुत्र होंगे।

सन्तान रेखा विशेषकर स्त्रियों के हाथों में हुआ करती है, पुरुष के हाथ में यह रेखा उसी अवस्था में पाई जाती है जबकि उसकी स्वयं की इच्छा सन्तान के लिए विशेष प्रबल होती है। यह रेखायें प्रायः पुरुषों के हाथ में कम होती है।

कनिष्ठका अंगुली के मूल में बुध के पर्वत पर विवाह रेखा के मध्य हाथ के बाहर की ओर कनिष्ठका के मूल की ओर जाने वाली छोटी रेखाओं को सन्तान रेखा कहते हैं। सीधी और लम्बी रेखायें पुत्र, छोटी-२ और ढलवां रेखायें कन्या की सूचक हैं।

देο चिο १२१—१

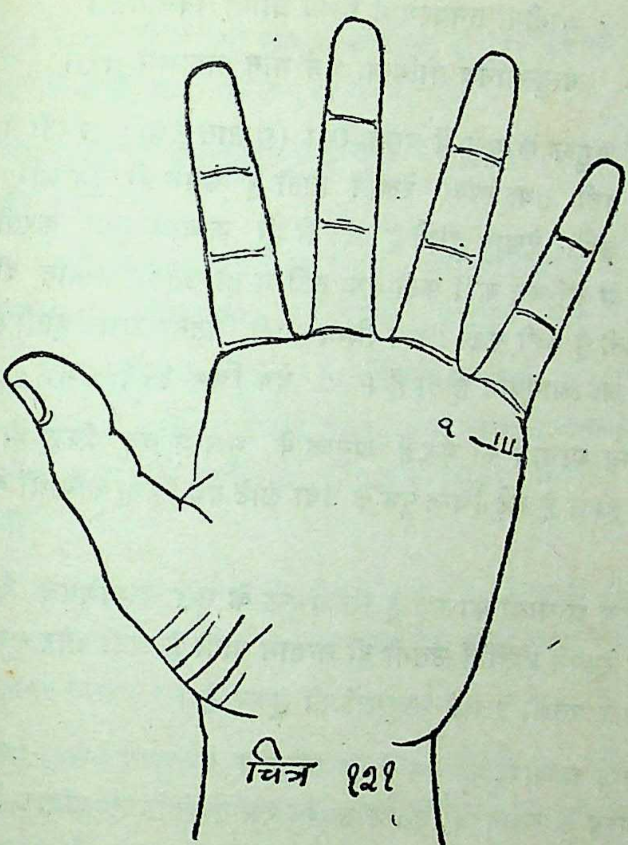

चित्र १२१

अंगुष्ठ मूले प्रसस्य रेखाः पुत्रावृहत्याः प्रमराप्तु तन्व्य ।
अछिन्नदीर्घा वृहदा युषांता स्वल्यायुषां छिन्न लघुप्रमाणाः ॥१॥
अपत्य रेखाः सर्वास्यु मस्हयां गुष्ट तलान्तरे ।
यवै रंगुष्ट मूलस्थैस्त सख्या सुनवो नृणां ॥२॥
मणि स्वभाव रेखान्त रेखाभि करभे नृणां ।
अपत्य संख्या निर्देश्या सम्प्रदाय मता श्रयात् ॥३॥
याकंत्य करमे रेखा ऊर्ध्या तावद पत्यदाः ।
ताः समांके तदाद्या स्त्री विषमांके नरं वदेत ॥४॥

योगीनां तनयस्थाने शिष्य प्राप्ति विचार्यते ।
पत्युस्थानेथ योगिन्या धर्म भोग मठाश्रम ।।५।।

अंगुष्ठ के मूल में प्रसव रेखा (सन्तान रेखा) रहती है, इनमें जितनी बड़ी तथा स्पष्ट रेखायें होती हैं उतने ही पुत्र और जितनी पतली छोटी रेखायें होती हैं उतनी ही कन्यायें हुआ करती हैं इन रेखाओं में अछिन्न कटी फटी तथा टूटी न हो उतनी सन्तान दीर्घआयु-वान होती है कटी फटी छिन्न भिन्न छोटी जितनी रेखायें होती हैं उतनी सन्तान अल्पआयुवान होती हैं । दे० चि० १२१—२

अन्य आचार्य का मत है अंगुष्ठ के मूल में यव चिह्न हो उतनी सन्तान होती है बड़े चिन्ह पुत्र के तथा छोटे यव चिन्ह कन्याओं के सूचक हैं।

अन्य आचार्यों का मत है कि अंगुष्ठ के मूल से मणिबंध रेखा तक जितनी रेखायें होती हैं उतनी ही सन्तान होती हैं, बड़ी और सुन्दर रेखा पुत्र छोटी पतली रेखायें कन्याओं की सूचक हैं ।

अन्य आचार्यों का मत है कि मणिबंध के हृदय रेखा (आयु रेखा पर्वत मध्य के स्थान में जितनी उर्ध्व रेखायें होती हैं जातक के उतनी ही संतान हुआ करती हैं । इन रेखाओं में जितनी बड़ी लम्बी गहरी रेखायें होती हैं उतने पुत्र तथा जितनी छोटी पतली रेखायें होती हैं उतनी ही कन्यायें हुआ करती हैं ।

योगियों के हाथ में जितनी पुत्र रेखायें होती हैं उतने ही शिष्य हुआ करते हैं, साध्वियों के पति के स्थान में जितनी रेखायें होती हैं उतने ही धर्म योग मठ तथा आश्रम हुआ करते हैं ।

मूलेऽङ्गुष्ठस्य नृणां स्थूला रेखा भवन्ति यावत्य ।
तावन्तः पुत्रः स्युः सूक्ष्याभिः पुत्रि कास्तिभिः ।।१।।

अंगुष्ठ के मूल में जितनी स्थूल रेखा होती हैं उतने पुत्र और जितनी सूक्ष्म रेखा होती है उतनी कन्या हुआ करती हैं।

'गुरूड़ पुराण' के मतानुसार स्त्री जातक के हाथ में इन्हीं को संतान रेखा माना है।

'ब्रहत्यां पुत्राः स्वल्पासु प्रमदाः परिकीर्तिताः।
स्वल्पायुषो लयुच्छिन्नाः दीर्घाच्छिन्ना महायुष ॥१॥

वृहद रेखा (बड़ी रेखा) पुत्र, छोटी रेखा कन्याओं की सूचक है। जितनी छोटी और टूटी हुई रेखायें होंगी, उतनी सन्तान अल्पआयु होगी जितनी रेखा साफ बड़ी बिना कटी फटी होगी उतनी सन्तान दीर्घआयु-वान होगी।

बुध के पर्वत पर सन्तान रेखा न हो तो हृदय रेखा के नीचे मंगल के पर्वत पर बाहर और भीतर की ओर गई हुई आड़ी रेखाओं को संतान रेखा मानना चाहिए।

यदि इन दोनों स्थान १. बुध का पर्वत २. मंगल का पर्वत हो तो हृदय रेखा के मूल से शाखायें उत्पन्न होकर नीचे की ओर जाती हैं उन्हें सन्तान रेखा मानना चाहिए।

कनिष्ठका अंगुली के मूल के तृतीयांश तक ही रेखाओं को मानना चाहिये, बाकी की बुध के पर्वत की रेखायें व्यापार तथा विद्या से संबंध रखने वाली बुध के क्षेत्र की रेखायें हैं।

बुध के पर्वत से बाहर की रेखायें शीघ्र सन्तान दायक होती है, बुध के पर्वत पर और भीतर की रेखायें ३० वर्ष के बाद की सन्तान की सूचक है।

सन्तान सम्बंधी मुख्य बिचार के लिए पति और पत्नी दोनों के हाथ में देखना चाहिये।

सन्तान रेखा प्रबल सीधी हो तो वह पुत्र सूचक है, कम गहरी, मुड़ी एवं झुकी हो तो कन्या सूचक है, यदि सन्तान रेखा बहुत ही निर्बल हो तो गर्भ क्षीण हो जाया करता है।

हृदय रेखा से छोटी २ शाखायें निकलकर ऊपर की ओर जा रही हो तो वह भी सन्तान रेखा है। दे० चि० १२२

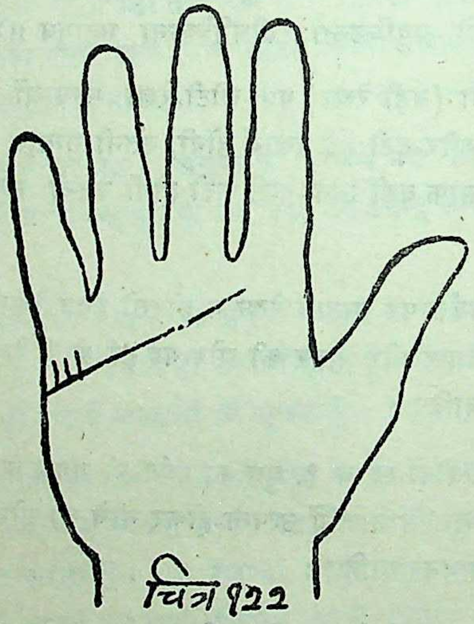

चित्र १२२

सन्तान रेखा प्रमाण से अधिक गहरी हो लाल या मैलापन लिये हो यह रेखा सन्तान में बाधक होती हैं।

सन्तान रेखा दोनों ही हाथों में हो तो विशेष शुभ होती है।

सन्तान रेखा साफ हो सुन्दर हो तो शुभ और अस्पष्ट रेखा अथवा कर्ण युक्त रेखा मृत संतान की सूचक है।

संतान रेखा बुध की अंगुली की ओर जा रही हो तो संतान जीवन में सफल होती है।

संतान रेखा हृदय रेखा से प्रारम्भ होकर विवाह रेखा की ओर जावे अथवा विवाह रेखा को स्पर्श करे तो ऐसे पुरुष को संतान से विशेष प्रेम होता है। दे० चि० १२३

चित्र १२३

संतान रेखा पर नक्षत्र, क्रास, समकोण चतुर्भुज आदि का चिह्न हो तो उसके फल भी अन्य रेखाओं के समान ही हो जाते हैं। शुभ और अशुभ चिह्न अशुभ फल देते हैं।

स्त्री जातक के हाथ में अंगुष्ठ के मूल में शुक्र के पर्वत पर रहने वाली और भीतर की ओर आने वाली रेखा संतानप्रद होती है। यदि यह रेखा बाहर की ओर जा रही हो तो स्वेच्छाचारी तथा प्रेमी पुरुष की द्योतक हो ती है।

संतान रेखा मोटी लम्बी तथा स्पष्ट हो तो इस बात का प्रतीक है कि संतान मता पिता को सुख देगी, यदि यह रेखा लहरदार कटी, टेढ़ी हो तो संतान रोगी होगी। दे० चि० १२४

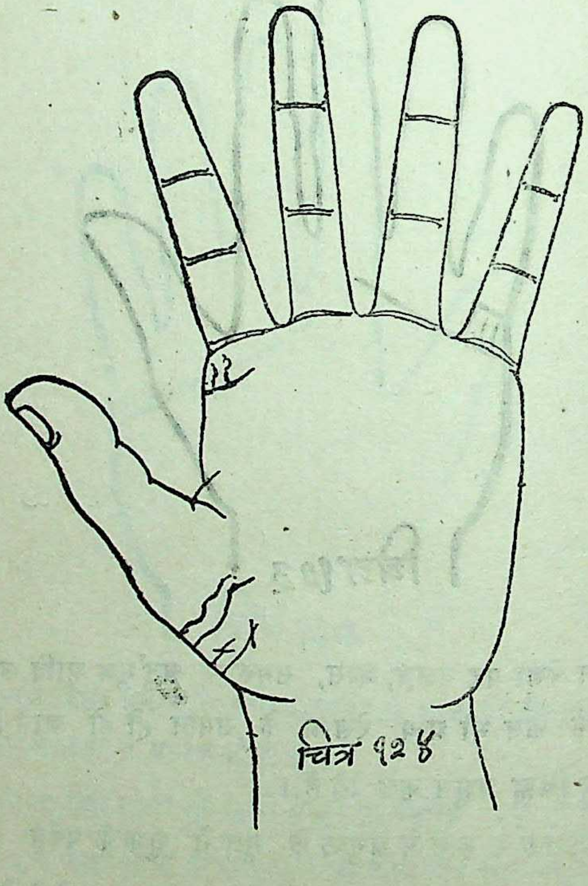
चित्र १२४

शुक्र के पर्वत उच्च हो और उस पर कोई रेखा न हो, परन्तु बुध के पर्वत पर कोई रेखा हो तो ऐसे जातक को पुत्र प्राप्ति अवश्य होती है।

संतान रेखा

विवाह रेखा के दोनों ओर की रेखाओं को गिनना चाहिए। जितनी प्रबल रेखायें हों उतने पुत्र, छोटी रेखायें हों उतनी कन्या जितनी निर्बल टूटी रेखा हो उतने गर्भ क्षय हुआ करते हैं।

संतान रेखाओं को सूक्ष्म दर्शक यन्त्र से देखना चाहिये।

भ्रात रेखा

(The Ring of Brothers and Sister)

प्रत्येक मानव की इच्छा रहती है कि उसकी सहायता कौन करेगा, इस विचार के मस्तष्क में आते ही मानव को भाई का स्मरण हो आता है, जीवन बिना किसी स्वार्थवश केवल कोई सहायता करता है तो भाई।

क्यों श्री राम भी अपने भाई लक्ष्मण को मूर्छित देखकर विलाप करते हुए कहते हैं—

सुत वित नारी भवन परिवारा, होंहि जाहि जग बारहिं बारा।
अस विचार जिय जागहु ताता, मिलइ न जगत सहोदर भ्राता॥

पुत्र, धन, स्त्री, महल, परिवार संसार में बार २ प्राप्त हो जाते हैं, परन्तु एक वस्तु 'भाई' संसार में केवल एक ही बार मिलता है अत; ऐसा विचार कर सहोदर भाई एक बार ही प्राप्त होता है। तुम जग जाओ, मूर्छा को त्याग दो। अत: यहां भाई सम्बंधी रेखाओं के ज्ञान के लिये इस रेखा पर प्रकाश डाला जा रहा है।

आयु र्लेखा बसानाभि लेखा भिर्माणि बंधत।
स्पष्ट मिभ्रातिरोऽस्पष्ट तराभि र्जामय: पुन: ।१।
अस्पष्टाभिर दीर्घाभी भ्रातिरस्य यस्यां स्त्रुटी:।
अंगुष्ट मूले रेखास्तु भ्रातृ भांडा निर्शसती ।२।
मणे रंगुष्ट मूलांतं या रेखास्तल संमुख।
सूक्ष्मा स्ताही भगिन्यास्तु भ्रातर: स्थूलरेखिता ।३।

ता सुया अस्फुटा रेखा स्तावतो निधनं गता: ।
या स्फुटा स्तेथ जीवंती इति सामुद्रिकवच ।४।

मणिबंध से जीवन रेखा के अन्त के बीच (हाथ में बाहर की ओर) जितनी रेखा स्पष्ट हो उतने भाई और जितनी अस्पष्ट रेखा हो उतनी बहन होती है। दे० चि० १२५

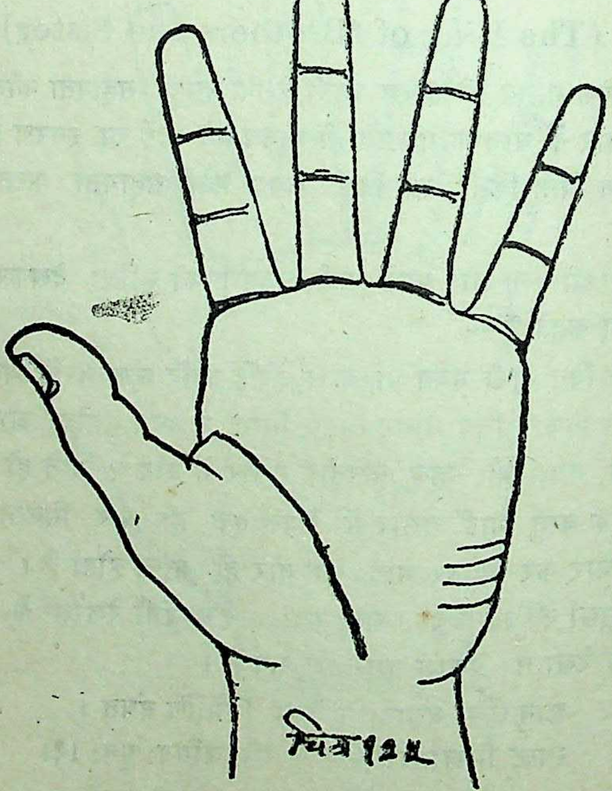

चित्र १२५

अस्पष्ट रेखा भाइयों की आयु की सूचक है।

दूसरे आचार्य का मत है कि मणिबंध से अंगुष्ठ की जड़ तक जितनी बाहर हो जाने वाली अच्छी मोटी रेखायें होती हैं उतने भाई और सूक्ष्म

छोटी रेखा बहनों की सूचक है जितनी रेखा अस्पष्ट हो उतने भाइयों की मृत्यु, साफ और सुन्दर रेखा पूर्ण आयु की सूचक हैं।

इसी स्थान पर पूर्व में संतान रेखाओं का वर्णन कर चुके हैं संतान रेखा हाथ में अन्दर की ओर जाती है और भाई बहन की रेखा हाथ के बाहर की ओर जाती है।

अंगुष्ठ के मूल में भाई बहन की रेखा होती हैं और टूटी बारीक रेखा भाई बहन की सूचक हैं। दे० चि० १२६

चि० १२६

भाई बहन की रेखाओं का रंग काला हो बारीक हो, तो यह भाई बहन की मृत्यु की सूचक है।

यावन्त्यो मनिबंधायु र्लेखयोरन्यरे स्थिता।
सहोदर गणस्तावान् विज्ञेय पाणि पल्लवे ॥

—स्कन्द पुराण

मणिबंध और आयु (हृदय रेखा) के मध्य जितनी रेखा होती है वह भाई बहिन रेखा है। ये रेखा हाथ में बाहर की ओर जाती है।

दे० चि० १२७

मावन्त्यो मणिबंध्यायुर्लेखान्त: प्रतिष्ठता: स्थुला।
ताषत्संख्या कान भ्रातृन वदन्ति सूक्ष्मा: पुनर्भगिनी ।१।
रेखाभिश्छिन्नाभि: संभवित मृतज्ञेवोया।
यावत्यारता पूर्णनियतं जीवन्ति तैन्सख्या ।२।

मणिबन्ध से आयु रेखा तक जितनी सुन्दर रेखा हो उतने सहोदर होता है, मोटी साफ रेखा सूक्ष्म रेखा बहन, छिन्न भिन्न, टूटी खण्डित रेखायें अल्पायु सुन्दर, पूर्ण रेखायें दीर्घायु भाई बहन की रेखा जातक के हुआ करती हैं।

अष्ठम परिच्छेद

चंद्र रेखा

(The line of Moon)

यह हाथ की छोटी परन्तु बहुत ही महत्त्वपूर्ण रेखा है। चंद्र के पर्वत पर रहने वाली रेखा को चंद्र रेखा कहते हैं। दे० चि० १२८

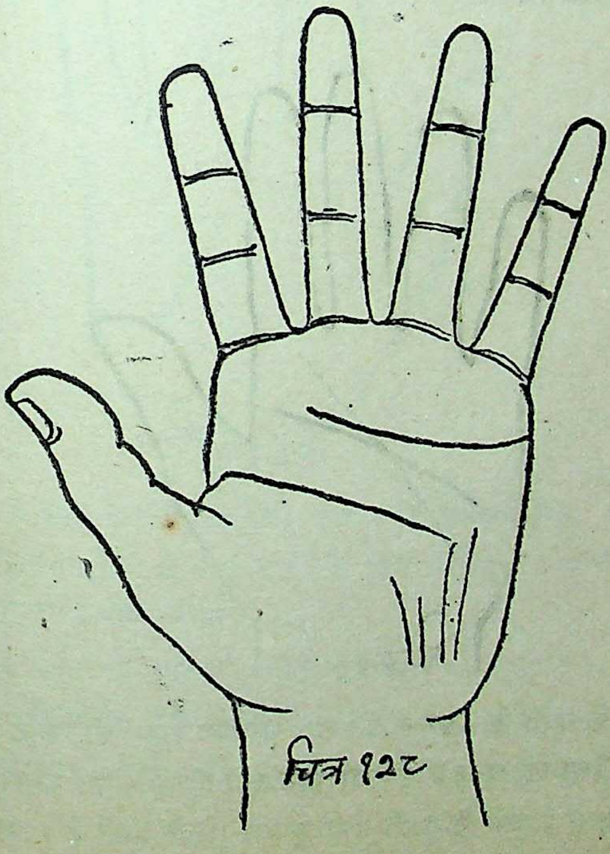

चित्र १२८

चन्द्र रेखा तथा अन्य रेखा

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर मस्तष्क रेखा से स्पर्श कर रही हो और वहां से अन्य रेखा निकले तो ऐसा जातक सदा शत्रुओं से घिरा रहता है और उसकी मृत्यु भी शत्रु के द्वारा होती है।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर मस्तष्क रेखा को काटती हुई गुरु के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक स्वतंत्र विचार वाला तथा अन्य लोगों के सहारे उन्नति करता है अगर इस प्रकार की रेखायें दो हों तो ऐसा जातक भाग्यशाली पराक्रमी तथा साहसी हुआ करता है। दे० चि० १२६

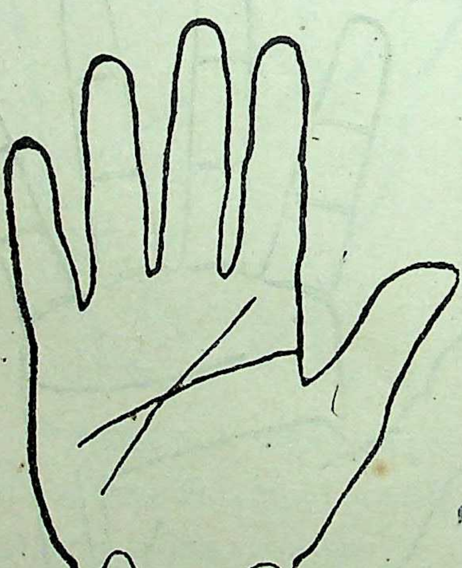

चित्र १२६

चंद्र के पर्वत के ऊपर कोई रेखा मस्तष्क रेखा को काट रही हो और उस रेखा को अन्य कोई रेखा काट रही हो तो ऐसा जातक सरल स्वभाव वाला शत्रुओं से दुःखी तथा कुपक्ष्य सेवी होती है। अगर इस

जातक की जीवन रेखा प्रबल है तो वृद्धावस्था में भाग्य उदय होता है यदि निर्बल है तो मध्य में जीवन समाप्त हो जाता है।

चंद्र पर्वत से कोई रेखा निकलकर मस्तष्क रेखा से स्पर्श कर रही हो तो जातक तान्त्रिक होता है, धार्मिक कार्यों द्वारा धन कमाता है।

दे० चि० १३०

चित्र १३०

चंद्र के पर्वत से टेढ़ी चंद्र रेखा निकलकर मस्तष्क रेखा को स्पर्श करती हुई जीवन रेखा से मिल जावे तो ऐसा जातक सदाचारी, बड़ों का सम्मान करने वाला होता है।

चंद्र के पर्वत पर अनेकों छोटी २ रेखायें हों तो ऐसा जातक दरिद्री ही दृष्टिगोचर दिखाई देता है यह स्वास्थ्य की ओर कम ध्यान देता है, इस कारण रोग ग्रस्त रहते हैं तथा सदैव मैले कुचैले रहा करते हैं।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर भाग्य रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसा जातक इस स्पर्श करने वाले वर्ष में अधिक खर्च करता है।

दे० चि० १३१

चित्र १३१

चँद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर मातृ रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसे जातक स्वयं किसी के सहारे अपनी उन्नति किया करते हैं।

चंद्र रेखा और ग्रह क्षेत्र

चंद्र के पर्वत पर दो तिरछी रेखायें हों तो ऐसा जातक सदा यात्रा किया करता है अथवा गृह से परे रहा करता है।

चंद्र के पर्वत पर आड़ी रेखायें अशुभ घटनाओं की सूचना दिया करती हैं और उपायों की ओर संकेत किया करती हैं।

चंद्र के पर्वत पर खड़ी रेखायें हों तो जातक अपने जनों की बुराई किया करता है। यदि यह रेखा चंद्र के पर्वत से नीचे की ओर जा रही हो तो जातक गठिया आदि का रोगी होता है।

चंद्र के पर्वत पर तीन आड़ी रेखायें हों तो जातक पत्नी, पुत्र, माता पिता, सास श्वसुर की चिंता से घिरा रहता है। दे० चि० १३२

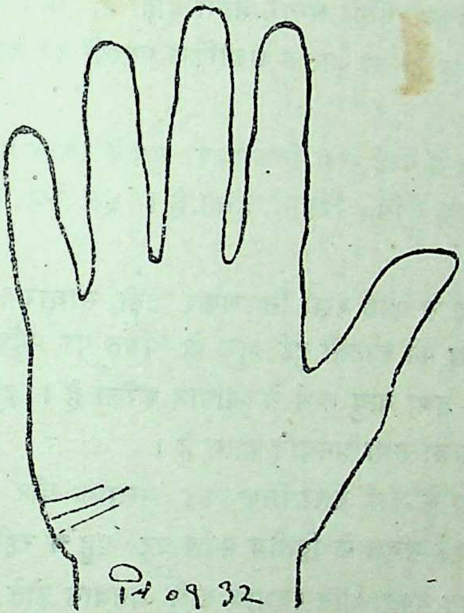

Fi० 132

चंद्र के पर्वत पर दण्ड के समान रेखा हो तो ऐसा पुरुष विद्वान, राज्य भोगने वाला एवं शत्रु रहित होता है।

चंद्र के पर्वत से रेखा निकलकर केतु के पर्वत मणिबंध की ओर जावे ऐसा जातक सुखी, वाहन युक्त तथा सामान्य सुख पूर्वक रहता है। इस रेखा को केतु रेखा करते हैं।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर बुध के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक साधारण पढ़ा लिखा हो परन्तु वह सिद्धि प्राप्त कर लेता है। देव शक्ति के प्रभाव से भविष्यवाणी कर सकता है। ऐसा जातक मोहन विद्या में निपुण होता है। इस रेखा को देव रेखा कहते हैं। इस प्रकार की रेखा बुरे हाथ में हो, अशुभ हो तो जातक शराबी, व्यभिचारी तथा ऐय्याश होता है।

मणिबंध से कोई रेखा चंद्र और मंगल को अर्धचंद्राकार अवस्था में घेरती है और यह रेखा बुध के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक उच्चकोटी का योगी अन्तर ज्ञानी होता है, यदि इस प्रकार की रेखा पर यव चिन्ह हो तो जातक अलौकिक पदार्थों को देखने की शक्ति रखता है।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर सूर्य के स्थान पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक कवि, विद्वान, होता है। इस रेखा को 'सरस्वती रेखा' कहते हैं।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर टेढ़ी, साधारण रेखा, भाग्य रेखा, जीवन रेखा को काटती हुई शुक्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक जल तथा वायु मार्ग से व्यापार करता है। हृष्ट पुष्ट तथा स्वतंत्र विचार वाला तथा धनवान होता है।

चंद्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर मस्तष्क और जीवन रेखा को पार करती हुई मंगल के द्वितीय पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसा जातक बंधु-बांधव युक्त, शांत स्वभाव वाले धनवान होते हैं।

यदि यह रेखा मंगल के पर्वत पर टेढ़ी हो गई हो तो जातक क्रोधी होता है, जीवन में अनेकों बार अपमान सहते हैं।

मणिबंध से कोई रेखा निकलकर मंगल तथा चंद्र के पर्वत को अर्ध चंद्राकार अवस्था में घेरती हो तो ऐसा जातक ज्योतिषी आदि जान कर योगी हुआ करता है। इस रेखा को 'अन्तर ज्ञान रेखा कहते हैं।

मंगल रेखा (The line of Marsor Luna)

यह छोटी रेखायें हैं परन्तु मानव जीवन के लिए यह वरदान हैं, जीवन के संकटों से छुटकारे का संदेश है। दुर्घटनाओं से बचाव का साधन है। यह जीवन रेखा की सहायक रेखा मंगल के द्वितीय पर्वत से प्रारम्भ होती है। इसी से इसका नाम मंगल पर्वत है।

दे० चि० १३३

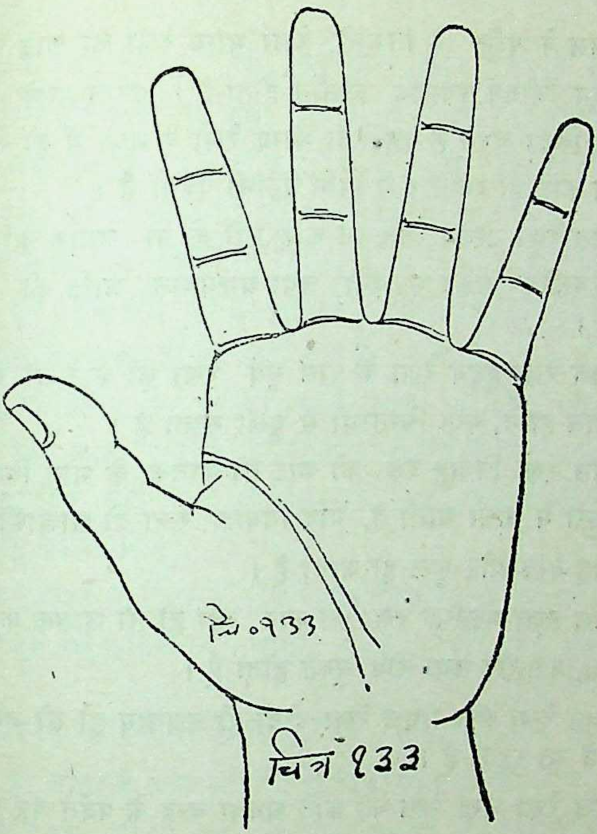

चित्र १३३

मंगल रेखा जीवन रेखा के बराबर चलती है। इसे जीवन रेखा की सहायक रेखा कहते हैं। यह रेखा बलवान होकर शुक्र क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो जातक तन्त्रशास्त्र ज्ञाता, कठिनाईयों में धैर्य धारण करने वाला है, पत्नी, पुत्र, बांधवों से युक्त योगाभ्यासी होता है।

यह रेखा मध्य में रह जाती है तो रेखा के वर्षमान का जीवन सुखमय में, बाद का जीवन दुख:मय में व्यतीत होता है।

मंगल के पर्वत पर मंगल रेखा को कई रेखायें काट रही हों तो जातक का जीवन सर्वदा झगड़ों में फंसा रहता है परन्तु इस प्रकार का जातक कभी भी हार नहीं मानता है।

मंगल के पर्वत से निकली रेखा भाग्य रेखा को काट रही हो तो जातक का जीवन कष्टमय व्यतीत होता है। परन्तु इसके पुत्र उसकी सहायता किया करते हैं यह रेखा भाग्य रेखा के मध्य में हो और भाग्य रेखा को काटे तो व्यापार में हानि उठानी पड़ती है।

मंगल रेखा जीवन रेखा को काट रही हो तो जातक को उक्त वर्ष में पारिवारिक संकट मुकदमा तथा आत्मघात आदि की सम्भावना रहती है।

मंगल रेखा हृदय रेखा के पास सूर्य रेखा को काटे तो जातक धन हानि, मान हानि, गुप्त चिन्ताओं से दुखी रहता है।

मंगल रेखा विवाह रेखा को काटे तो जातक के भोग विलास तथा विवाह सुख में बाधा आती है, यदि विवाह रेखा दो शाखाओं से युक्त हो तो यह बात और पुष्ट हो जाती है।

मंगल रेखा मस्तष्क रेखा को काट रही हो तो जातक का दिमाग दोष युक्त, कमजोर तथा रोग युक्त होता है।

जीवन रेखा और मंगल रेखा दोनों ही बलवान हो तो जातक भोग विलास में रत रहता है।

मंगल रेखा चन्द्र रेखा को काटे अथवा चन्द्र के पर्वत पर पहुँच रही हो तो जातक भोगी, विलासी, गाने बजाने का प्रेमी तथा आजाद स्वभाव का होता है।

मंगल के पर्वत पर आड़ी रेखा हों तो जातक कलह, चिन्ता लड़ाई आदि में समय व्यतीत करता है, प्रथम मंगल के पर्वत पर जितनी आड़ी रेखायें होती हैं उतने ही बाहर के शत्रु, द्वितीय मंगल पर जितनी रेखा होती हैं उतने घर के शत्रु होते हैं।

मंगल के पर्वत पर खड़ी रेखायें जातक की वीरता तथा सहास की परिचायका है। यदि रेखा दोनों ही क्षेत्रों पर है तो जातक उग्रस्वभाव वाला होता है और अपनी प्रतिष्ठा के लिए सब कुछ निछावर कर देता है।

मंगल के पर्वत से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा को स्पर्श करे और इस रेखा को कोई रेखा काट रही हो तो जातक व्यभिचारी होता है, साहसी स्त्री का जीवन नष्ट कर देता है, यदि इस रेखा को अनेक रेखा काट रही हों तो कारागार की यात्रा भी हो जाती है।

मंगल के पर्वत से कोई रेखा निकलकर हृदय रेखा को काटती हुई सूर्य पर्वत पर पहुँच रही हो तो जातक विद्वान होता है, यह विद्याजन कल्याण नहीं कर सकते हैं यह स्त्री सेवा में रत रहते हैं।

मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर दो आड़ी रेखायें हों और इन रेखाओं को कोई रेखा काट रही हो तो जातक ऊँचे स्थान से गिरता है और दुःख भोगता है। यदि रेखा न काट रही हो तो जातक की उक्त वर्ष मान में मृत्यु हो जाती है।

द्वितीय मंगल के पर्वत से तीन रेखायें निकलकर शुक्र के पर्वत पर पहुँच रही हों तो जातक व्यभिचारी, पैतृक धन को नाश करने वाला होता है।

इस प्रकार की रेखाओं से त्रिभुज बन जावे तो जातक कुछ समय बाद ठीक हो जाता है तथा व्यापार में दिवालिया हो जाया करता है।

मंगल रेखा, जीवन रेखा जहां पर समाप्त हो रही हों और वहाँ पर स्वास्थ रेखा निकले और चतुष्कोण बन जावे तो उक्त वर्ष में जातक का शरीर समाप्त हो जाता है। जातक को अपने अन्तिम समय का ज्ञान हो जाता है और अपना समय हरिभजन में लगाता है।

इस प्रकार के जातक महाधीश योगी, उच्चकोटि के सन्त हुआ करते हैं।

शुक्र रेखा (प्रभाव अथवा चिन्ता रेखा)
(The line of venus)

शुक्र के पर्वत पर कुछ रेखायें उठकर हाथ की ओर जाती हैं और यह रेखायें किसी प्रधान रेखा से सम्बन्ध करती हैं अथवा स्वतन्त्र रूप से रहती हैं। यह रेखा चिन्ताओं का कारण होती है, शुक्र क्षेत्र पर खड़ी

जीवन रेखा के समान्तर रूप रहती हैं और शुक्र के पर्वत पर रहती है, यहां पर कुछ और रेखायें होती हैं जो आड़ी होती हैं और शुक्र के पर्वत पर भी रहती हैं अथवा किसी प्रधान रेखा से सम्बन्ध करती हैं।

यदि देखा जाये तो मंगल रेखा भी शुक्र क्षेत्र की एक रेखा है। किन्तु मंगल रेखा के साथ २ चलती है और मंगल के द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होती है, बस यही अन्तर है जो शुक्र और मंगल रेखा को पृथक् करता है।

मणिबन्ध की ओर से शुक्र के क्षेत्र पर रेखा हो और जीवन रेखा के समान्तर चले और द्वितीय मंगल के पर्वत पर चली जावे तो जातक पर स्त्री पुरुष का प्रभाव रहा था परन्तु ऐसा जातक किसी अन्य व्यक्ति द्वारा धीरे २ समाप्त हो जाता है। दे० चि० १३४

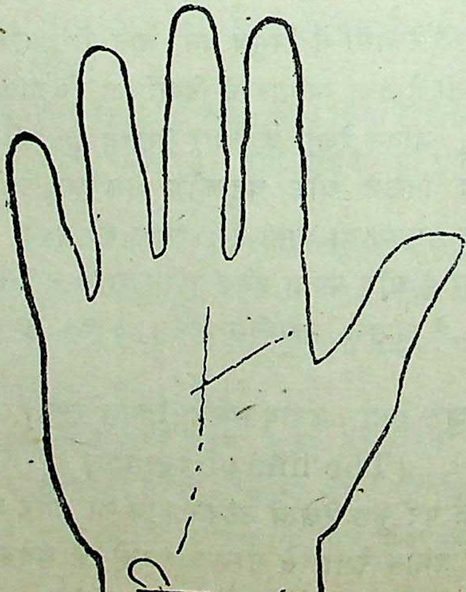

चित्र १३४

शुक्र क्षेत्र की रेखाओं को दो भागों में बांट सकते हैं।

१. शुक्र क्षेत्र पर जीवन के समान्तर रेखायें।

२. शुक्र क्षेत्र पर तिरछी रेखायें।

३. आड़ी अथवा खड़ी रेखायें।

शुक्र क्षेत्र पर जीवन के समान्तर रेखायें हों तो जातक पर स्त्री का विशेष प्रभाव है, अगर स्त्री जातक के हाथ में यह रेखा है तो पुरुष का प्रभाव उतना ही स्थायी और विशेष प्रभावशाली होती है।

जीवन रेखा से कोई रेखा प्रारम्भ होकर शुक्र के क्षेत्र पर होकर द्वितीय मंगल के क्षेत्र पर पहुँचे तो जातक का जीवन के प्रारम्भिक काल में किसी से गुप्त प्रेम होता है, प्रेम के कारण काफी कष्ट उठाने पड़ते हैं।

इस प्रकार की रेखायें एक से अधिक संख्या में हो और सब मिलकर फिर मंगल के द्वितीय क्षेत्र पर पहुँचे तो जातक का गुप्त प्रेमी बहुत ही कामुक होता है और उसके द्वारा लगातार कष्ट हुआ करता है।

शुक्र क्षेत्र पर अंगुष्ठ के द्वितीय पर्व से प्रारम्भ होकर कोई रेखा जीवन रेखा को काटे और फिर समाप्त हो जावे तो जातक को प्रियजन की मृत्यु अथवा विश्वासघात से घोर दुःख होता है।

यदि इस प्रकार की रेखा अंगुष्ठ के प्रथक पर्व से प्रारम्भ होती है तो जातक की मृत्यु शस्त्र से होती है।

२. तिरछी रेखा—

शुक्र क्षेत्र प्रारम्भ होकर रेखा सूर्य रेखा को काटे तो जातक का जीवन सम्बन्धियों के कारण कष्टमय हो जाता है, हाथ में अशुभ लक्षण हो तो जातक मान हानि, बदनामी भी उठाता है।

शुक्र रेखा से प्रारम्भ होने वाली रेखा भाग्य रेखा को काटे और वहां समाप्त हो जावे तो ऐसे जातक के सम्बन्धी, मित्र उन्नति में बाधक हुआ करते हैं।

शुक्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर रेखा जीवन रेखा को काटकर तर्जनी अंगुली के नीचे पहुँच रही हो तो जातक अभिमानी होता है, उसकी इच्छायें बहुत ही उच्च होती हैं।

शुक्र क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ होकर जीवन रेखा को काटे और शनि के क्षेत्र पर पहुंचे तो जातक जानवर, मोटर आदि से टकराता है।

शुक्र क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ होकर सीधी सूर्य के पर्वत पर पहुँच रही हो तो ऐसा जातक परिवार तथा मित्र वर्ग के द्वारा उन्नति करता है और यश प्राप्त करना है।

यदि इस प्रकार की रेखा बुद्ध के क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो जातक व्यापार अथवा वैज्ञानिक क्षेत्र में उन्नति करता है।

शुक्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर रेखा गुरु के पर्वत पर जावे फिर शनि के क्षेत्र पर पहुंचे तो जातक धार्मिक प्रवृति का होता है परन्तु वह कभी भी दिखावा पसन्द नहीं करता है।

शुक्र क्षेत्र से प्रारम्भ होकर जीवन रेखा भाग्य रेखा और मस्तष्क रेखा को काट कर मंगल के प्रथम क्षेत्र पर पहुंच रही हो तो जातक को मानसिक आघात अथवा सिर रोग, चोट आदि का भय रहता है।

शुक्र के क्षेत्र से रेखा प्रारम्भ होकर हृदय रेखा को दो शाखाओं वाली होकर काटे तो जातक का विवाह विच्छेद हो जाता है।

यह रेखा कुछ आगे बढ़कर जावे तो जातक अपनी इच्छा से विवाह करना चाहता है परन्तु उसके परिवार के लोग उसमें बाधा डाल दिया करते हैं।

—:०:—

नवम परिच्छेद

समय निर्णय

आयु में होने वाली घटनाओं का काल निर्णय

(How to fell time and dates of Events.)

हाथ की रेखाओं का शुभाशुभ फल वर्णन किया गया है। इस अध्ययन से जब तक कारगर सिद्ध नहीं हो सकता तब तक यह निर्णय

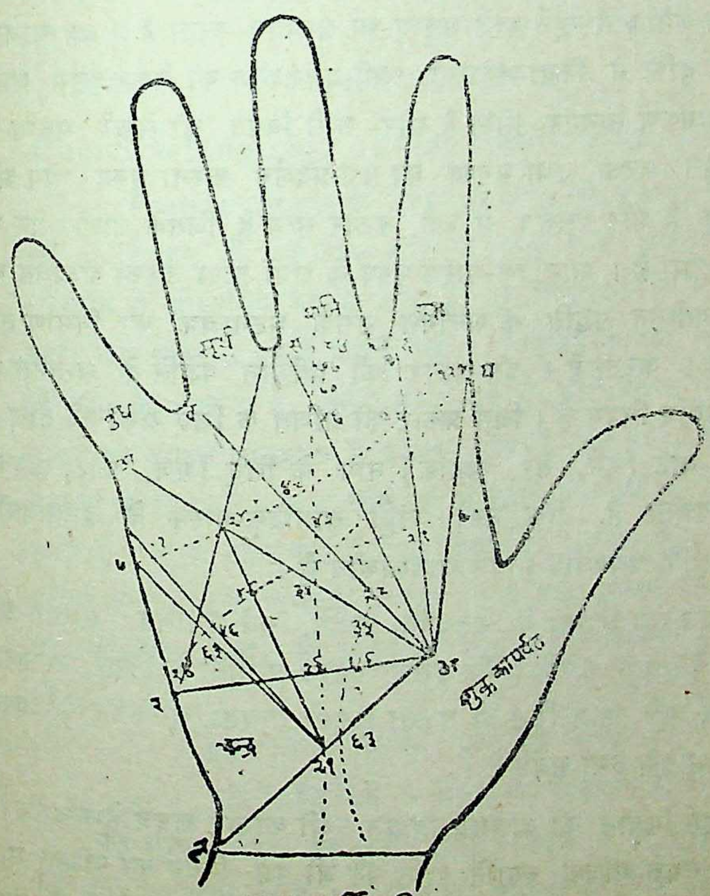

सप्त वर्षीय नियम

(चित्र १३५)

न हो जावे कि रेखा का किस समय क्या फल होगा। समय का ज्ञान बहुत ही महत्व का विषय है और जब इस शास्त्र और शास्त्रज्ञाता पर विश्वास हो सकता है। इस निर्णय के लिए सप्तवर्षीय, दशवर्षीय, द्वादसवर्षीय तथा त्रयवर्षीय नियम है। दे० चि १३५

कोई भी संसार का शास्त्र जब तक जीवित नहीं रह सकता जब तक कि उसकी सत्यता साबित करने के लिए कुछ नियम न हो। प्रत्येक शास्त्र समाज में रहने वाले मनुष्य का अध्ययन करता है। यह अध्ययन किस दृष्टि से किया जाता है, उसी दृष्टिकोण को लेकर उस शास्त्र का नामकर्ण संस्कार होता है और उसी विषय को लेकर मनुष्य का अध्ययन करना तथा मनुष्य का पथ-प्रदर्शन करना मुख्य ध्येय और उद्देश्य है और वास्तव में वही कठोर सत्य है, जिसके आधार पर वह खड़ा हुआ है। सामुद्रिक-शास्त्र पुरुष के अंगों द्वारा उसका अध्ययन कर और वर्तमान पद्धति के अन्तर्गत उसके घटनाचक्र का निर्माण तथा अध्ययन करता है। इस प्रकार की वर्षमान पद्धति के अन्तर्गत यह सप्तवर्षीय नियम हैं। जिस प्रकार की गणित के लिए अंकों की तोल के लिए बांट (मन, सेर, छटांक) नाप के लिए (गज, फीट, इन्च) आवश्यकीय है, ठीक उसी भांति सामुद्रिक-शास्त्र के द्वादसवर्षीय, सप्तवर्षीय, त्रयवर्षीय नियम आवश्यकीय है।

इन सब नियमों में सतवर्षीय नियम, सर्व प्रचलित आसान और सरल है। यही कारण है कि इसका प्रयोग आसानी से किया जा सकता है और वही सफल सिद्ध हो सकता है इसी सत्यता को लेकर इस प्रकार सबसे अधिक तथा सर्वत्र है।

इस विज्ञान का पांचात्य विद्वान (श्री काउन्ट लुइज हेम्मन किरो) जिसने सबसे अधिक ख्याति प्राप्त की जो इस विषय का पण्डित माना जाता है, वह इस नियम का प्रयोग करता था तथा उसने इसके विषय में कहा भी है—

"प्रथम तो वैद्यक और वैज्ञानिक दृष्किोण से सात का महत्वपूर्ण अंक है। प्रत्येक वस्तु सात वर्ष में पूर्णत: परिवर्तित हो जाती है। मानवीय मस्तिष्क बनने के पूर्व सात के अंक ने विश्व-इतिहास में महत्वपूर्ण भाग लिया है तथा सात मानवीय जातियों तथा साथ ग्रहों के सात देवता, सप्ताह में सात दिन, सात रंग, सात धातु, चेतना शक्ति के सात अंग, शरीर के तीन भाग अथवा भाग के सात भाग और संसार का सात भागों में भाग करना। पुन: (बाइ बिल) में साथ अंक अति श्रेष्ठ हैं," इससे अधिक आगे लिखना निरर्थक होगा।

·Cheire's language of the Hand, Page No. 182.

वैसे भी शरीर विज्ञान के द्वारा यह सिद्ध हो चुका है कि बालक गर्भ में (बालक के रूप तक आने के मार्ग) सात अवस्था या सात परिवर्तन में, वाँस्तविक रूप में आता है यह आन्तरिक बात रही है जो हमारे चक्षु दृष्टि से परे हैं परन्तु गर्भ से निकलने के बाद भी जहां की स्वास्थ्य का सम्बन्ध है, उसमें साथ वर्ष में कोई विशेष अन्तर नहीं आता जो बालक जन्मकाल में बलवान होता है वह सात वर्ष तक उसी अवस्था में रहता है। बाद सात वर्ष के उसके स्वास्थ्य में परिवर्तन हो जाता है। तीसरे सात वर्षों में फिर परिवर्तन हो जाता है। इस प्रकार प्रत्येक साथ वर्ष के अन्तर्गत मनुष्य का स्वास्थ एकसा रहा करता है, यह सातवर्षीय नियम की प्राकृतिक सिद्धता है शास्त्रीय दृष्टिकोण से भी—

ग्रहराज्यंप्रय छन्ति ग्रहराज्य हरंति च।
ग्रहे व्याप्तिमिदं सर्वत्रैलोक्य सचराचरम्॥

मत् आत्मा अपने इस कर्म क्षेत्रीय जीवन में ग्रह प्रभाव से जैसा कि उपरोक्त कहा भी है, सुख-दु:ख का अनुभव करता है ग्रह की संख्या सात ही है और इनको ही प्रधान मानकर सप्तवर्षीय नियम चला है, राहु-केतु तो उपग्रह ही हैं।

जो आचार्य नवग्रह मानते हैं और मानने भी चाहिए भले ही राहु-केतु उपग्रह रहें। इससे सप्तवर्षीय नियम में कोई अन्तर नहीं आता है, क्योंकि राहु सूर्य के केतु चन्द्र के अन्तर्गत आ जाता है, वैसे मुख्य ग्रह सात ही हैं।

वैसे राहु-केतु द्वारा बना हुआ २ का अंक बहुत ही महत्व का है, यह दो के अंक संसार व्याप्त हैं। संसार में केवल जन्म-मरण ही व्यथा है, जीवन सुख दुःख, हानि लाभ, जीवों में जीवात्मा-परमात्मा जड़-चेतन इस प्रकार २ के महत्वपूर्ण अंक को नौ में घटा दिया जावे (९—२=७) तो सात का अंक शेष बचेगा, सात का अंक ऐसा अंक है जिसमें गणित शास्त्र के अनुसार भाग नहीं हो सकता है, इसका यह कारण है कि आचार्यों ने सप्तवर्षीय नियम का प्रतिपादन किया है।

यह नियम सभी मुख्य रेखाओं को कुछ भागों में बांट देता हैं जीवन, भाग्य, मस्तष्क रेखा इस नियम से ७—७ भागों में बंट जाती है और हृदय रेखा १२ भागों में बंट जाती है। हाथ की बनावट के अनुसार कुछ थोड़ा अन्तर आता है।

इस नियम को निम्न प्रकार से प्रयोग में लाया जाता है :—

शुक्र के पर्वत मे रक्त की थैली होती है, जहां से सम्पूर्ण हस्त में रक्त का संचार होता है। शुक्र (वीर्य) ही मनुष्य के जीवन का आधार है, इस कारणवश शुक्र पर्वत के लिए केन्द्रित करता हुआ यह नियम चलता हैं।

बुध के पर्वत और शुक्र के स्थान के मध्य में अ+अ रेखा खिच जाये तो यह रेखा जीवन रेखा पर ३५ वर्ष भाग्य रेखा पर ३५ वर्ष, हृदय रेखा पर २४ वर्ष के स्थान पर काटती है।

सूर्य के पर्वत पर एक सीधी रेखा शुक्र के पर्वत के बिन्दु (अ) की ओर (ब) रेखा खिची हो तो यह रेखा जीवन रेखा २८ वर्ष, मस्तिष्क रेखा पर २८ वर्ष, भाग्य रेखा पर ४२ वर्ष, हृदय रेखा ४८ वर्ष के स्थान पर काटती है।

सूर्य की अनामिका और शनि की मध्यमा अंगुली अ बिंदु के लिये एक सीधी (स) रेखा खिची हो तो यह रेखा जीवन रेखा पर २१ वर्ष मस्तिष्क रेखा पर २१ वर्ष भाग्य रेखा ५६ तथा हृदय रेखा को ७२ वर्ष के स्थान पर काटती है।

शनि की मध्यमा अंगुली और गुरु की तर्जनी अंगुली मध्य से अगर (द) रेखा अ की ओर खिचे तो वह जीवन रेखा को १४ वर्ष मस्तष्क रेखा १४ वर्ष हृदय रेखा ९६ वर्ष के स्थान पर काटेगी।

तर्ज़नी के दूसरे बाहर के भाग में अगर एक रेखा (य) अ. बिंदु तक खिचे तो वह जीवन रेखा को ७ वर्ष, मस्तष्क रेखा ७ वर्ष, हृदय को १२० वर्ष पर्मायु पर काटेगी।

अ. बिन्दु से एक सीधी रेखा चन्द्र के पर्वत की ओर खिचे तो वह जीवन रेखा को ४९ वर्ष, भाग्य रेखा २९ वें वर्ष के स्थान पर काटेगी।

(अ) बिन्दु से एक ल. रेखा चन्द्र के नीचे के भाग रेखा के लिए खिची हो तो वह जीवन रेखा ६३ वर्ष तथा भाग्य रेखा को २१ वर्ष के स्थान पर काटती है।

जनता भविष्य फल

सूट, पाट, बारदाना, आलसी अरन्डी, सोना चाँदी कपास सीग—दाना, गेहूँ चना, गुड़, सरसों आदि व्यापारिक जिन्सों का आँकड़ों के सहित तेजी मन्दी मास के शकुन, राशि फल तथा प्रत्येक मास की अंक सारणी तथा प्रमुख पतों सहित, वर्ष में होने वाली घटनाओं का पूरा विवरण। मूल्य डाक व्यय सहित ५)

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता—

जनता प्रकाशन (पंजि०)

खारी बावली, दिल्ली-६

दशम परिच्छेद

योग प्रकरण

रोजगार, शिक्षा तथा व्यापार चुनने पर विचार

प्रत्येक माता-पिता की यह अभिलाषा होती है कि उनका अमुक पुत्र क्या कार्य करेगा, अपने पुत्र की जानकारी में माता-पिता कभी समय और धन नष्ट कर डालते हैं और जब उन्हें ज्ञात हो जाता है कि अमुक कार्य करेगा तो फिर उस व्यवसाय को कराते हैं।

बहुत से मनुष्य जीवन में प्राय: असफल सिद्ध होते हैं क्योंकि उन्हें अरुचिकर व्यवसाय अथवा धन्धा करने के लिये बाध्य किया जाता है। जब जातक की उपयुक्तता या उसकी व्यक्तिगत इच्छाओं की परवाह न करके माता-पिता उसको किसी पद पर सुशोभित देखने की इच्छा रखते हैं तो इस प्रकार की परिस्थिति में अथवा माता-पिता के विचार में भूल हो जाने से जातक की बहुत ही उपयोगी और आनन्द से व्यतीत करने योग्य जिन्दगी बरबाद हो जाती है, नष्ट हो जाती है।

जीवन के प्रारम्भ में बालक आविष्कार, अनुसन्धान, गाना, चित्रकारी तथा अन्य प्रकार के गुण प्रदर्शित करते हैं तो उनके लिए उपयुक्त व्यवसाय चुनने में कोई खास परेशानी नहीं होती है और उनके लिए मार्ग चुन लेना आसान है, परन्तु जब बालक किसी मार्ग की ओर कोई खास शक्ति अथवा किसी भी मार्ग की ओर अपनी रुचि प्रकट न करे तो फिर हाथ के द्वारा उसके मार्ग का ज्ञान हो सकता है, पता लग सकता है। जिस मार्ग के अबलम्बन में उसका स्वाभाविक झुकाव न करें तो फिर हाथ के द्वारा उसके मार्ग का ज्ञान हो सकता है, पता लग सकता है। जिस मार्ग में अवलम्बन में उसका स्वाभाविक झुकाव प्रेम, उन्नति करने के लिए स्थान प्राप्त कर सकेगा और तब उसकी मानसिक प्रकृति, शारीरिक शक्ति, स्वास्थ रूचि के अनुसार शिक्षा देनी

चाहिए, इस प्रकार मानव जीवन सुखमय तथा सन्तोषदायक हो जावेगा ।

जिस हाथ में शुक्र का पर्वत प्रधान हो तो जहाँ तक सम्भव होगा वह गाने बजाने का कार्य करेगा, वह यात्रा प्रेमी होगा, रंग साजी, गाने गाने वाला, माली, रत्न परीक्षक, बाजे आदि बनाना आदि २ धन्धे उपयुक्त होंगे ।

चन्द्र का पर्वत प्रधान होने से जातक उपन्यासकार नाटक कविता लेखक आदि बनता है, उसकी विचित्र वस्तुओं के संग्रह में रुचि रहती है अतः यह इसी प्रकार के कार्य करने योग्य होता है ।

सूर्य के पर्वत तथा सूर्य की अंगुली प्रधान होने से जातक साहित्यकार तथा कारीगर होगा, जिनका सूर्य का पर्वत अधिक उच्च हो तथा अंगुली अधिक पुष्ट हो तो ऐसा जातक डाक्टर, दांतों का डाक्टर, चित्रकार, सूत्राधार, रसायनिक होगा, मस्तष्क रेखा लम्बी तथा गहरी होनी चाहिए ।

मंगल का पर्वत श्रेष्ठ होने से जातक सैनिक, मल्लाह तथा शिकारी हुआ करते हैं, पशु चिकित्सा अपनी इच्छा से करते हैं। अगर पर्वत निम्न कोटि का है तो गाड़ी चलाना, इक्का आदि हाँकना, जमीन के अन्दर बस चलाना आदि कार्य करते हैं, यदि मस्तष्क रेखा श्रेष्ठ हो तो ऐसा जातक भवन निर्माण-कला में दक्ष होता है ।

बुध का पर्वत तथा बुध की अंगुली श्रेष्ठ होने से जातक जीवन के प्रत्येक कार्य में सफलता प्राप्त कर सकता है। अपने गुणों का प्रकाश तथा व्यवहार में लाने की शक्ति बुध की अंगुली में होती है यदि बुध का पर्वत बहुत निम्न श्रेणी का हो और बुध की अंगुली निकृष्ट हो तो ऐसे जातक का जीवन सुस्त रहेगा, सफलता के अवसर अपने हाथ से स्वयं निकाल देगा । इस प्रकार के मनुष्य आशावान होते हैं, बुध की श्रेष्ठता ही जीवन में उन्हें बार २ असफल होने पर भी कार्य की प्रेरणा देती रहती है । बुध का पर्वत श्रेष्ठ होने से विज्ञान की ओर झुकेगा । बुध के मध्यम श्रेणी वाले लोग व्यवसाय में अधिक रत रहते हैं, दलाली, अध्यापक, हिसाब के कार्यों में सफलता प्राप्त करते हैं ।

गुरु का पर्वत तथा गुरु की अंगुली की प्रधानता वाले पुरुष नेतृत्व में विश्वास रखते हैं, इस प्रकार के मनुष्य प्रत्येक अवस्था में दूसरों की निगरानी के कार्यों को अधिक पसन्द करते है, इस प्रकार के मनुष्य एकान्तप्रिय नहीं होते। देवालय, राजदूत, राजनीति, शिक्षक, विधान-सभा, लोक सभा के सदस्य आदि का कार्य करते हुए सफलता प्राप्त करते हैं।

शनि का पर्वत तथा शनि की अंगुली में उन्नति हो तो ऐसा जातक उन्नति की इच्छा रखने वाला नहीं होगा। एकान्तप्रिय भीड़-भाड़ से दूर रहना पसन्द करेगा, आविष्कार तथा गणित में रुचि रखेगा। कृषि, जमीन, खान आदि के कार्यों में सफलता प्राप्त करेगा, स्थान बनवाना, चाय तथा काफी की खेती में अधिक रुचि रखेगा।

शुक्र का पर्वत श्रेष्ठ होने से खान खोदना, खेत, जमीन सम्बन्धी कार्यों में सफलता प्राप्त कर सकेगा।

जिसका अंगुष्ठ दृढ़ हो, हथेली चपटी, बुध की अंगुली गोल चपटी पतली तथा नाखून बड़े हों तथा भाग्य रेखा सीधी हो तो ऐसा मनुष्य व्यापार की योग्यता रखता है, यदि हाथ की अंगुलियां सम हो सूर्य तथा भाग्य रेखा अच्छी हो तो ऐसा जातक व्यापार में अधिक सफलता प्राप्त करता है।

हाथ संकुचित हो, अंगुली लम्बी नुकीली व कोणदार और पास हो तो ऐसे मनुष्य नित्य नवीन कार्य करने वाले स्वतन्त्रता-प्रिय अधिक सहनशील तथा धैर्यवान होते हैं।

हाथ चौड़ा, अंगुली चौड़ी तथा एक दूसरे से दूर तथा उनके सिरे गोल चपटे तथा पतले हों तथा रेखायें कमजोर हों तो ऐसा जातक खुली हवा में रहता तथा स्वतन्त्रताप्रिय, अध्ययन न करने वाला होगा किसी भी कार्य-काल में कार्य नहीं कर सकते हैं, यदि विद्या अध्ययन तथा अन्य बन्धन युक्त कार्य अपने स्वाभाविक प्रवृतियों के दमन के बाद ही

कर सकेंगे। इस प्रकार के मनुष्य मानसिक तथा शारीरिक श्रम दोनों से सम्बन्ध रखने वाले कार्य जैसे सैनिक, मल्लाह, कृषक आदि कार्य कर सकते हैं।

औषधि शास्त्र ज्ञान

शुक्र चन्द्र के पर्वत उठे हुए हों, बुध की अंगुली हो तथा हाथ में अन्तरज्ञान रेखा हो तो ऐसा जातक औषधि शास्त्री विशेषज्ञ होता है। तथा उदार और सहानुभूति प्रवृति का होता है तथा टेली वृथी १ के द्वारा ही अपने रोगी के विचार ज्ञान कर सकता है और कभी कभी इसके द्वारा शरीर में रोग का स्थान भी तलाश कर लेता है।

वैद्य डाक्टर

बुध के पर्वत पर खड़ी रेखायें हों, अंगुष्ठ तथा सिर ढलवां हो बुध का अंश अधिक हो, हाथ की अंगुलियां गोल, पतली या चपटी पथक् २ हों तो ऐसा पुरुष वैद्य होता है।

चिकित्सक.

शुक्र बुध का पर्वत श्रेष्ठ हो, हाथ की अंगुलियां लम्बी हों और प्रथक् गांठें हों सूर्य रेखा साफ हो तो ऐसा पुरुष चिकित्सा करने वाला होता है।

वैद्य

बुध के पर्वत पर छोटी-२ तीन रेखायें हों अंगुलियां लम्बी तथा प्रथक् गांठे पुष्ट हो तो ऐसा वैद्य हकीम होता है।

किसी खास रोग का विशेषज्ञ

बुध का पर्वत अधिक ऊंचा हो, उस पर छोटी २ तीन खड़ी रेखायें हों अंगुलियां लम्बी तथा प्रथक और पुष्ट हों सूर्य रेखा अधिक प्रबल हो चन्द्र तथा शुक्र के पर्वक श्रेष्ठ हों, तो ऐसा जातक वैद्य, डाक्टर, हकीम किसी खास रोग की चिकित्सा करने वाला होता है।

नाड़ी विशेषज्ञ

चन्द्र का पर्वत बलवान साफ उच्च हो, सूर्य रेखा प्रबल हो, ऐसा जातक वैद्य नाड़ी देखने में विशेष योग्यता रखता है।

शास्त्र क्रिया विशेषज्ञ (सर्जन)

सिर तथा सूर्य रेखा साफ गहरी उठी हुई हो, मंगल, बुध के पर्वत बहुत ही उठे हों अंगुलियाँ लम्वी, चपटी पतली तथा आगे का भाग गोल हो, सभी अंगुलियों की दूसरी ग्रन्थी पुष्ट हो, हथेली दृढ़ तथा बुध के पर्वत पर तीन या चार रेखायें हों तो ऐसा जातक शास्त्र क्रिया विशेषज्ञ (सर्जन) होता हैं।

पशु चिकित्सक

हथेली पुष्ट हो, अंगुलियों के उर्ध्व भाग कड़े और मोटे हों, सूर्य रेखा अच्छी सुन्दर तथा प्रबल हो तो ऐसा पुरुष पशु चिकित्सक होता है।

औषधि शोधक

सूर्य रेखा अच्छी स्पष्ट बलवान हो, चन्द्र का पर्वत अधिक उच्च तथा पुष्ट हो तो ऐसा पुरुष रोगों की रामबाण औषधिशोषक होता है।

राष्ट्रपति

हथेली के मध्य अश्व, मृदंग, वृक्ष, यज्ञ, स्तम्भ, फूलमाला, कमल पुष्प, धनुष, ध्वजा, चक्र, चतुष्कोण आदि के चिन्ह हों तो ऐसा पुरुष राजा होता है।

चौड़ा ललाट, विशाल कमल दल के समान नेत्र, गोल मस्तष्क, जानु पर्यन्त भुजायें, गहरी नाभि, नासिका अग्रभाग सीधा, छाती रक्त वर्ण, पदतल कोमल और रक्त वर्ण के हो ऐसा पुरुष राष्ट्रपति होता है।

पुष्ठ रेखा हो, गुरु के पर्वत उच्च हों, केतु के स्थान से भाग्य रेखा शनि की अंगुली पर्यन्त अथवा शनि के पर्वत तक जावे, सूर्य की अंगुली

सीधी तथा उसका उर्ध्व भाग लम्बा हो तो इस प्रकार का महापुरुष यदि गरीब परिवार में जन्म ले तो भी वह सुख भोगता है।

प्रधान मंत्री

मछली, हाथी, सरोवर, अंकुश, वीणा, कमल, पुष्प के चिन्ह हाथ में हो तो ऐसा पुरुष प्रधान मंत्री होता है।

मस्तष्क रेखा स्पष्ट होकर गुरु के पर्वत पर पहुंच रही हो और झुक गई हो, वहां एक चतुंभुज बन जावे, सूर्य रेखा भी मस्तष्क को स्पर्श करे तो ऐसे हाथ वाला पुरुष मुख्य नेता अथवा प्रधान मंत्री होता है।

राज्यपाल

शनि के पर्वत पर त्रिशुल का चिन्ह हो तथा राज्य चिन्हों में से एक चिन्ह हो, चंद्र रेखा भाग्य रेखा से मिल रही हो अथवा कोई भाग्य रेखा हथेली के मध्य राहु के क्षेत्र से प्रारम्भ होकर दो शाखाओं में बट रही हो, उसकी एक शाखा गुरु तथा दूसरी सूर्य के पर्वत पर जावे तो ऐसी रेखा वाला पुरुष राज्यपाल होता है।

जिलाधीश (उच्चपदाधिकारी)

सूर्य रेखा साफ और प्रबल हो, मंगल का पर्वत उठ रहा हो, जिसकी दांये हाथ की तर्जनी तथा बुध की अंगुली बांये हाथ की अपेक्षा अधिक मोटी एवं बड़ी हो तो ऐसी रेखा वाला पुरुष उच्चपदाधिकारी होता है।

समुद्री जहाज चालक

बुध और शुक्र के पर्वत उच्च हो, चंद्र रेखा जीवन रेखा को स्पर्श कर रही हो और हृदय रेखा साफ हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष समुद्री जहाज चालक होता है।

चंद्र का पर्वत उच्च हो और मस्तष्क रेखा मंगल के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष समुद्री जहाज का सिपाही, जहाज में यात्रा करने वाला होता है।

वायुयान चालक

गुरु, चंद्र, बुध, सूर्य के पर्वत उच्च हों, सूर्य की मुद्रिका हो, ऐसे हाथ वाला पुरुष वायुयान चालक होता है।

रंग करने वाला

शुक्र और बुध का पर्वत उठा हो तो ऐसा पुरुष रंग करने वाला होता है।

बाबू क्लर्क

शनि की रेखा मस्तष्तक रेखा को स्पर्श कर रही हो, सूर्य पर्वत उठा हुआ हो, सूर्य अंगुली का प्रथम पर्व लम्बा हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष लेखक, क्लर्क बाबू होता है।

कृषक

चौड़ी हथेली व कठिन हाथ हो, शनि की अंगुली लम्बी हो दूसरा पर्व विशेष लम्बा हो तो ऐसा मनुष्य कृषक होता है।

मुख्तार

शनि की अंगुली लम्बी हो, गुरु की अंगुली सीधी अप्रधान हो तो ऐसा पुरुष किसी की ओर मुकदमे में व काम में मुख्तार होता है।

हुण्डी वाला

शनि तथा सूर्य की अंगुली लम्बाई में समान हो, हाथ गोल, पतला, चपटा हो, मस्तष्क रेखा सीधी हो तो ऐसा पुरुष हुंडी का लेन-देन करने वाला होता है।

राजदूत

मंगल तथा गुरु के पर्वत उच्च हो, मस्तष्क रेखा दो भागों में बटी हो, कनिष्ठका बुध की अंगुली नुकीली एवं लम्बी तथा नाखून चमकदार हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष राजदूत होता है।

पियानो तथा आरगन बजाने वाला

कोमल और छोटा हाथ, चौड़ी हथेली, गोल, पतली, चपटी अथवा चौरस अंगुलियां, शुक्र का पर्वत उठा हुआ सूर्य रेखा साफ हो तो ऐसा पुरुष पियानो आदि बाजे बजाने में निपुण होता है।

गायक

उपरोक्त सभी लक्षण तथा अंगूठे का निम्नकोण चिन्हित हो तथा शुक्र पर्वत दृढ़ हो तो ऐसा व्यक्ति गायक होता है।

रागदी रचने वाले (कवि)

गाने बजाने वालों के सभी लक्षण, अंगुलियाँ औरस और चौरस हों साथ ही सिर रेखा उच्च हो तो ऐसा पुरुष कवि हुआ करता है।

चित्रकार

अंगुलियाँ लम्बी हों, सूर्य की अंगुली का प्रथम पर्व अच्छा और पुष्ट हो, हाथ वड़ा हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष छोटे २ चित्र खींचने वाला चित्रकार होता है।

ऐतिहासिक चित्रकार

मस्तष्क रेखा सीधी हो, अनामिका अंगुली समकोण ो तथा हाथ की सभी अंगुलियाँ लम्बी हो इस प्रकार के हाथ वाला जातक पुरुष ऐतिहासिक चित्रकार होता है।

काल्पनिक चित्रकार

मस्तष्क रेखा लम्बी और टेढ़ी हो, अनामिका अंगुली पुष्ट हो तथा प्रथम पर्व चौड़ा हो तथा आगे का हिस्सा गोल तथा पतला हो, सभी अंगुलियाँ नुकीली बिना गांठ की हो, चंद्र का पर्वत उच्च हो और केतु का पर्वत दब रहा हो तो ऐसा पुरुष काल्पनिक चित्रकार होता हैं।

व्यंग चित्रकार

हाथ की सभी अंगुलियां लम्बी, गोल, पतली तथा चपटी हो, सूर्य का पर्वत बुध के पर्वत को दबा रहा हो, सूर्य की अंगुली सीधी तथा लम्बी हो तो इस प्रकार के हाथ वाला पुरुष व्यंग चित्रकार होता है।

उदास चित्रकार

शनि की अंगुली टेढ़ी हो अथवा सूर्य की ओर झुकी हो तो ऐसा पुरुष उदास चित्र खींचने वाला चित्रकार होता है।

युद्ध चित्रकार

हाथ की अंगुली गोल, पतली, चपटी हो, मंगल का पर्वत उच्च हो तो ऐसा पुरुष युद्ध, पशुयुद्ध आदि का चित्र खींचने वाला होता है।

सत्य चित्रकार

सूर्य की अंगुली औरस और चौरस हो ऐसा पुरुष सत्य अथवा असलियत वाले चित्र खींचता है।

साहित्यिक

स्वास्थ मस्तष्क रेखा हो, बुध की अंगुली पुष्ट प्रथम पर्व लम्बा हो, अंगुलियां चोकोर हो और उनके सिर मुलायम हों तो ऐसे हाथ वाला पुरुष साहित्यकार होता है।

समालोचक

तर्जनी अंगुली पुष्ट हो, नाखून छोटे हों तथा चंद्र का पर्वत उच्च हो तो पुरुष समालोचक होता है।

दर्जी (सिलाई करने वाला)

अंगुलियां औरस और चौरस हो, सूर्य की अंगुली अच्छी बलवान हो प्रथम पोर लम्बा सिरा गोल चपटा तथा पतला हो, हाथ बड़ा हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष दर्जी होता है।

राज (ईंट चुनने वाला)

शनि की अंगुली चपटी, गोल, पतली, सीधी, लम्बी हो और उसका प्रथम पोर लम्बा हो, मस्तष्क रेखा सीधी हो ऐसे हाथ वाला पुरुष राज होता है।

पशुओं का आकार खींचने वाला

अंगुलियां गोल, पतली, चपटी हो, सूर्य की अंगुली गोल, पतली और सीधी हो, सूर्य का पर्वत उच्च हो और बुध के पर्वत क्षेत्र को दबा रहा हो तो ऐसा पुरुष पशुओं का आकार खींचने वाला होता है।

ठप्पा छापने वाला

अंगुलियां नुकीली और चीकनी हो, सूर्य की अंगुली अच्छी और

बलवान हो, बुध का पर्वत उच्च हो, हाथ छोटा हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष ठप्पा छापने वाला होता है।

सैनिक

अंगुलियां छोटी, पतली, चपटी अथवा चौरस हों मंगल व बुध का पर्वत उच्च हो, अंगुठा भारी कुछ रेखाओं सहित हो चपटी हथेली कठोर त्वचा हो, गुरु की अंगुली लम्बी तथा प्रधान अथवा शनि प्रधान हो तो ऐसे हाथ वाला मनुष्य सैनिक होता है।

सैनिक जहाज चालक

चौड़ी हथेली, चंद्र का पर्वत उच्च हो, अंगूठे का प्रथम पोर उत्तम हो, मस्तष्क रेखा मंगल के पर्वत पर पहुंच रही हो और मंगल का पर्वत उच्च हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष समुद्री सैनिक जहाज का मल्लाह होता है।

न्यायाधीश (जज)

हथेली बड़ी, हाथ की अंगुलियां लम्बी तथा कोणदार हों, गुरु की अंगुली सीधी तथा बुध की अंगुली का उर्ध्व भाग बड़ा हो, सूर्य का पर्वत उत्तम उठा हुआ हो, मस्तष्क रेखा सीधी, स्पष्ट और साफ हो, हृदय रेखा और मस्तष्क रेखा के मध्य में चतुर्भुज हों तो ऐसा पुरुष न्याय-धीश होता है।

अधिकारी

बांये हाथ की अंगुलियों की अपेक्षा दाहिने हाथ की तर्जनी कनि-ष्ठिका अंगुली अधिक अच्छी तथा जोरदार हो, मंगल तथा राहु का पर्वत अधिक उठा हो तो ऐसा पुरुष आफिसर का काम करने वाला उच्च अधिकारी होता है।

दर्शन शास्त्री

दार्शनिक हाथ में गुरु की अंगुली लम्बी हो और गुरु का पर्वत उठा हुआ हो मस्तष्क रेखा नीचे की ओर झुकी हो, चंद्र का पर्वत

श्रेष्ठ तथा बुध की अंगुली नुकीली हो तो ऐसा पुरुष दर्शन शास्त्री, वेदान्ति तथा ब्रह्म ज्ञानी होता है।

धर्माचार्य

हाथ की अंगुलियां पास २ हो, बुध की अंगुली कोणदार तथा उर्ध्व भाग लम्बा एवं नोकदार हो, सूर्य की अंगुली उत्तम हो, गुरु, शुक्र, चंद्र के पर्वत उठे हुये हों, गुरु के पर्वत पर एक रेखा हो, अंगूठा कमजोर हो गुरु और शनि के बीच लम्बी हृदय रेखा गई हो तो ऐसा पुरुष धर्माधिकारी महाधीश, गद्दी आसीन, धर्माचार्य हुआ करता है।

धर्म उपदेशक

गुरु की अँगुली उत्तम हो, अंगूठा लम्बा, मोटा और टेढ़ा हो तो ऐसे पुरुष दूसरों को उपदेश देने में कुशल हुआ करते हैं।

निम्न श्रेणी के धर्माचार्य

सूर्य की निर्बल अंगुली वाले खाने की परवाह नहीं करते हैं, गुरु की अंगुली अच्छी होती है उनकी धर्म रुचि होती है। अंगूठा भारी व मोटा हुआ हो वे इच्छा विशेष शक्ति द्वारा शासन करते हैं और निम्न श्रेणी के धर्माचार्य होते हैं।

साधु

गुरु शनि के पर्वत उच्च हो, शनि के पर्वत पर त्रिकोण के चिन्ह हों, सूर्य रेखा साफ हो तो ऐसा पुरुष योगी, साधु होता है।

जीवन रेखा मस्तष्क रेखा से मिले और शुक्र के पर्वत पर कोई चिन्ह हो तो ऐसा पुरुष संसार से विरक्त रहता है और योग साधन करता है।

धाय, नर्स

हाथ गोल, पतला, चपटा, हथेली पुष्ट हो, बुध के पर्वत पर विज्ञान की रेखा में हो, चंद्र और शुक्र के पर्वत उठे हों तो ऐसी स्त्री धाय या उत्तम नर्स का काम करती है।

रसायन वेता

बुध के पर्वत पर छोटी २ दो या तीन रेखायें हों तथा मंगल के पर्वत की रेखा में हों ऐसा पुरुष रसायन शास्त्र की खोज करने वाला होता है।

इंजीनियर

हथेली चौड़ी, अंगुलियां नोकदार और मोटी हों, अंगूठा छोटा हो, गृह पर्वत गोल न होकर चपटे हों तो ऐसा पुरुष इन्जीनियर होता है। यदि हाथ में सभी लक्षण हों और हथेली नरम हो तो वह मशीनरी बेचने वाला होता है।

बिजली का कार्य करने वाला

अंगुलियां गोल एवं चपटी हों, हाथ रूड़ा हो और हथेली चौड़ी हो, चंद्र का पर्वत उठा हुआ हो, अन्य ग्रह पर्वत चपटे हों तो ऐसा पुरुष बिजली का काम करने वाला होता है।

शिल्पज्ञ

गुरु का पर्वत उठा हुआ हो, अंगुलियां चौकोर हों, सूर्य की अंगुली अच्छी सीधी तथा प्रथम पर्व लम्बा हो, सूर्य रेखा हो, गुरु की अंगुलियां नोकदार हो, चन्द्र का क्षेत्र उच्च हो, गुरु तथा शनि की अंगुलियों में कुछ दूरी हो तो ऐसा पुरुष शिलपज्ञ (अच्छा कारीगर) होता है।

वकील (साधारण कानून ज्ञाता)

मस्तष्क रेखा लम्बी एवं शाखा युक्त हो तथा हृदय रेखा से प्रथक हो, अंगुलियां लम्बी व समीप २ हों, अंगूठा लम्बा व सीधा हो, हथेली चपटी हो तो ऐसा परुष वकील कानून जानने वाला होता है।

(बैरिस्टर कानूनज्ञ)

हथेली चपटी, अंगुलियां लम्बी तथा पास २ हो, अंगूठा लम्बा और सीधा, मस्तष्क रेखा सीधी हो और दो भागों में बटी हो अथवा सूर्य रेखा लम्बी हो, चन्द्र, गुरु, बुध, सूर्य व शनि के पर्वत उच्च हो तो ऐसा मनुष्य कानून विशेषज्ञ, बैरिस्टर होता है।

उप-न्यायाधीश (मजिस्ट्रेट)

दार्शनिक हाथ हो, अंगुलियाँ लम्बी तथा गांठदार हो, बुध की अंगुली का उर्ध्व भाग बड़ा हो, मंगल का पर्वत उठा हो, मस्तष्क रेखा तथा सूर्य रेखा लम्बी और साफ हो तो इस प्रकार के हाथ वाला मनुष्य उप-न्यायाधीश हुआ करता है।

गणितज्ञ

अंगुलियाँ समकोण लम्बी तथा दुहरी गांठों वाली हो और पहला दूसरा पर्व पुष्ट हो, हथेली सीधी, पतली और लम्बी हो, शनि की अंगुली लम्बी मोटी हो, दूसरा भाग लम्बा हो, मस्तष्क रेखा साफ हो, चन्द्र रेखा को स्पर्श कर रही हो, शुक्र के पर्वत पर त्रिभुज हो तो ऐसा पुरुष गणित का महान पण्डित होता है।

शिक्षक

गुरु, शनि, सूर्य, बुध के पर्वत उठे हों, अंगुलियाँ लम्बी हों उसके अग्रभाग मोटे हों, मध्यमा का दूसरा पर्व लंबा हो, सूर्य रेखा साफ हो ऐसा पुरुष शिक्षक होता है।

ज्योतिषी

हाथ की हथेली लम्बी तथा पैर लम्बे हो, बुध और शनि का पर्वत उच्च हो, चन्द्रमा का स्थान दोष रहित हो, भाग्य रेखा के निकट त्रिकोण या चतुष्कोण हो, मस्तष्क रेखा साफ हो तो इस प्रकार के हाथ वाला पुरुष ज्योतिषी होता है।

फलित ज्योतिष

बुध, शुक्र, शनि के पर्वत उठे हों, अंगुलियां पुष्ट वर्ण वाली हों गुरु के पर्वत के नीचे गुरु की मुद्रिका हो तो ऐसा पुरुष फलित ज्योतिष का विशेषज्ञ होता है।

अन्तरज्ञानी

अंगुलियाँ लम्बी हो, गुरु और बुध की अंगुली विशेष नुकीली हो

तथा बुध का पर्वत उच्च हो, अन्तर बुद्धि रेखा हाथ में हो तो ऐसा पुरुष अन्तर ज्ञानी होता है।

अग्नि होत्री

बुध का पर्वत उच्च हो, हाथ दार्शनिक हो, शुक्र के क्षेत्र पर यज्ञ कुण्ड अथवा यज्ञ वेदी का चिन्ह हो तो ऐसा पुरुष यज्ञ कराने वाला होता है।

मन्त्रज्ञ

हाथ की अंगुलियां लम्बी हों, कनिष्ठ अंगुली के पोरों के मध्य सीधी रेखा हो बुध के पर्वत तथा मस्तष्क रेखा के नीचे सफेद चिन्ह हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष मन्त्रशास्त्र का जानने वाला होता है।

नाट्य कलाकार

मस्तष्क रेखा के एक शाखा से एक शाखा निकलकर बुध के पर्वत पर पहुंच रही हो अंगुलियां सभी समकोण हों, शुक्र का पर्वत उच्च हो उस पर रेखायें फैल रही हों तो ऐसे हाथ वाला पुरुष नाट्य कलाकार होता है।

नाटक में सुखान्तक दृश्य दिखाने वाला

बुध का पर्वत उच्च हो और बुध की अंगुली का नाखून छोटा हो, मस्तष्क रेखा और जीवन रेखा आपस में स्पर्श कर रही हों तथा मस्तष्क रेखा की कोई शाखा बुध के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष नाटक में सुखान्तक दृश्य दिखाने वाला कलाकार होता है।

नाटक में सुखान्तक दृश्य दिखाने वाला

शनि का पर्वत सूर्य के पर्वत की ओर झुक रहा हो, मस्तष्क रेखा की शाखा बुध के क्षेत्र पर पहुंच रही हो, भाग्य रेखा अन्त में सर्प जिव्हा के समान हो, शनि की अंगुली पुष्ट हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष दुखान्तक दृश्य दिखाने वाला होता है।

अभिनेता

अंगूठे तथा अंगुलियों के अग्रभाग नुकीले हों, शुक्र का पर्वत उठा हुआ हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष अभिनेता होता है।

सूत्रधार

अंगुलियां गोल, पतली तथा चपटी हो, तथा प्रथक-प्रथक रहने वाली हो, व लम्बी हो, सूर्य की अंगुली विशेष हो, अंगुठा सिरे पर पीछे लौटा हुआ हो, चन्द्र और बुध के पर्वत उच्च हो तो ऐसे हाथ वाला जातक सूत्रधार (नाटक संचालक) होता है।

संगीताचार्य

शुक्र का पर्वत उच्च हो, सूर्य रेखा हो और सूर्य की अंगुली नुकीली हो, अंगुलियां कोमल हों, अंगुलियां और अंगुष्ठ के कोण उठे हुए हों तो ऐसे हाथ वाला पुरुष गायक होता है।

हथेली चौड़ी, अंगुलियां कोमल हों, शुक्र का पर्वत, उच्च हो, सूर्य रेखा साफ हो तो ऐसा जातक छोटे बाजे वजाने में निपुण होता है। अगर हथेली छोटी होगी तो ऐसा जातक बड़ा बाजा बजाने में निपुण होता है।

सारंगी व बेला बजाने वाला

बड़ा तथा कोमल हाथ, अंगूठे के कोण उच्च हों और सूर्य रेखा साफ हो तो ऐसा जातक बेला बजाने वाला होता है।

प्रेम में विवाह न हो

प्रभाविक रेखा चन्द्र के पर्वत पर हो और भाग्य रेखा में न मिले तो ऐसे हाथ वाले जातक का प्रेम होता है परन्तु विवाह नहीं होता है।

विवाह में धन प्राप्ति

गुरु के पर्वत पर तारा अथवा गुणक चिन्ह हो तो विवाह में धन प्राप्त होता है और विवाह सुखमय होता है।

प्रेम में सर्वनाश

भाग्य रेखा टूटी, अथवा नक्षत्र वाली हृदय रेखा में शनि के पर्वत के नीचे मिले अथवा लहरदार मस्तष्क रेखा हृदय रेखा के अन्त में मिले, दुर्बल नक्षत्र के चिन्ह युक्त भाग्य रेखा अथवा सूर्य रेखा हो अथवा दो हृदय रेखा हों तो ऐसी रेखा वाला जातक प्रेम में अपना सर्वनाश कर लेता है।

आर्थिक कठिनाई

भाग्य रेखा शृंखला बद्ध हो, जीवन रेखा में से छोटी-छोटी रेखायें नीचे को निकल रही हों तो ऐसा जातक आर्थिक कठिनाईयां उठाया करता है।

शक्ति साधक

जीवन रेखा, भाग्य रेखा, मस्तष्क रेखा से त्रिकोण बने तो ऐसी रेखा वाला जातक काली, दुर्गा, सरस्वती, दशमहाविद्या, तारा आदि शक्तियों का साधक होता है।

जादूगर

शनि के उच्च पर्वत पर त्रिभुज का चिन्ह हो, साथ ही चन्द्र के पर्वत पर भी त्रिभुज का चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाला जातक जादूगर होता है।

अकाल मृत्यु

जीवन रेखा छोटी २ रेखाओं द्वारा कट रही हो तथा मस्तष्क रेखा तथा जीवन रेखा के मध्य में क्रोस × का चिन्ह हो तो ऐसे हाथ वाले की अकाल मृत्यु हुआ करती है।

जीवन रेखा दोनों हाथों में छोटी हो, हृदय रेखा और मस्तष्क रेखा बुध के पर्वत के नीचे आपस में मिल रही हों तो ऐसे जातक को अकाल मृत्यु होती है।

अंगुलियों के द्वितीय व तृतीय पर्व पर यव चिन्ह हो तो ऐसा जातक भोगी, विषयी तथा जल से मृत्यु को प्राप्त होता है।

दीर्घायु

जीवन रेखा गहरी लम्बी तथा शुद्ध हो, अंगुलियां रक्त वर्ण की हों, पर्वत के भिन्न स्थानों पर श्रेष्ठता हो तो ऐसी रेखा वाला जातक दीर्घायु होता है।

तीनों मणिबन्ध की रेखायें अच्छी तरह विकसित और साफ हों तो ऐसा जातक दीर्घायु होता है।

मुकदमे बाजी जायदाद का नष्ट होना

मंगल के पर्वत पर काला दाग अथवा तिल दोनों हाथों में हों, अन्य अशुभ चिन्ह हो तो मुकदमे बाजी में जायदाद नष्ट हो जाती है।

अकस्मात धन हानि

बुध के पर्वत पर काला दाग अथवा अशुभ चिन्ह हो तो अकस्मात धन हानि हुआ करती है।

धन नाश

मंगल का मैदान खोखला हो, सूर्य रेखा आड़ी रेखा से कट रही हो, सूर्य रेखा पर द्वीप चिन्ह हो अथवा सूर्य रेखा जगह-जगह टूटी हो, स्वास्थ रेखा भाग्य रेखा पर द्वीप चिन्ह हो, जीवन रेखा में से निकल कर नीचे की ओर चल रही हो तो ऐसे जातक का धन नष्ट हो जाता है।

शांत जीवन

सुन्दर भाग्य रेखा गुरु शनि के पर्वत के मध्य तक गई हो तो ऐसे जातक का जीवन शान्तमय व्यतीत होता है।

कारावास

शुक्र और मंगल के पर्वत पर चतुष्कोण हो, शनि के स्थान में जंजीर हो या अंगुली में चौथा पर्व हो तो ऐसा जातक कारावास की यात्रा करता है।

व्यापार में लाभ और यश

अनामिका अंगुली से कनिष्ठा अंगुली में ज्यादा उर्ध्व रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक व्यापार में यश तथा धन लाभ करता है।

खूनी

मंगल का पर्वत उठा हो और उस पर तारा का चिन्ह हो, शनि के पर्वत के नीचे मस्तष्क रेखा पर नीले रंग की रेखा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक खून कर दिया करता है।

शस्त्र से मृत्यु

मध्यमा अंगुली के तीसरे पोर पर नक्षत्र का चिन्ह हो तो ऐसे हाथ वाले जातक की मृत्यु शस्त्र से होती है।

मृत्यु की सजा

तर्जनी अंगुली से कोई रेखा निकलकर और अंगूठे के प्रथम सन्धि क्षेत्र तक जावे तो ऐसे जातक को मृत्यु की सजा होती है।

धर्म की रुचि

गुरु की अंगुली सीधी और नुकीली हो और बुध की अंगुली का प्रथम पोर लम्बा हो तो ऐसे हाथ वाला मनुष्य धर्म प्रेमी (धर्मिष्ठ) होता है।

मानसिक शक्ति

बुध की अंगुली बड़ी हो, मस्तष्क रेखा अच्छी हो, अंगूठे का प्रथम पोर बड़ा हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की मानसिक शक्ति प्रबल होती है।

विदेश में मृत्यु

जीवन रेखा अन्त में दो भागों में बटी हो और उसकी एक शाखा चन्द्र के पर्वत पर पहुंच रही हो तो ऐसी रेखा वाले की मृत्यु विदेश में होती है।

यात्री

जीवन रेखा से छोटी-छोटी रेखायें निकलकर शुक्र के पर्वत पर जावे तो ऐसी रेखा वाला पुरुष पृथ्वी पर यात्रा करने वाला होता है।

जल यात्रा

मणिबन्ध रेखा से कोई एक रेखा निकलकर शुक्र के पर्वत की ओर चले और चन्द्र के पर्वत पर पहुंचे तो ऐसी रेखा वाला पुरुष जल यात्रा समुद्र यात्रा करता है।

भलाई के लिए परिवर्तन

भाग्य रेखा टूटी हो और टूटने से पहले दूसरी भाग्य रेखा प्रारम्भ

हो जावे तो ऐसी रेखा वाले पुरुष के जीवन में परिवर्तन आता है और फिर उन्नति हुआ करती है।

फिजूल खर्च करने वाला

अंगुलियाँ लचीली हों अंगूठे का प्रथम पोर लम्बा हो, जीवन रेखा मस्तष्क रेखा से ज्यादा चौड़ी हो, मस्तष्क रेखा झुक रही हो, भाग्य रेखा और सूर्य रेखा अच्छी न हो, सूर्य का पर्वत साफ़ न हो तो ऐसा पुरुष फिजूल खर्च करने वाला होता है।

आत्म-हत्या

जीवन रेखा के अन्त में तथा चन्द्र के पर्वत पर क्रोस न हो तो ऐसा पुरुष आत्म-हत्या कर लेता है।

आरोग्य रेखा मस्तष्क रेखा से मिल रही हो और जीवन रेखा दूसरी रेखाओं से कट रही हो और शनि का पर्वत ऊँचा हो तो ऐसी रेखा वाला जातक आत्म-हत्या कर लेता।

मध्यम की अंगुली का प्रथम पोर लम्बा हो, बुध और मंगल के पर्वत पर क्रोस का चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाला पुरुष आत्म-हत्या करता है।

यश और सफलता

गुरु के पर्वत पर नक्षत्र का चिन्ह हो सूर्य रेखा के अन्त से भाग्य रेखा निकल कर मणिवन्ध अथवा मधिबन्ध से गुरु के तथा शनि के पर्वत पर सुन्दर भाग्य रेखा हो अथवा भाग्य रेखा सूर्य के पर्वत पर पहुंच रही हो, एक छोटी अथवा अन्य छोटी २ रेखायें सूर्य पर्वत पर हो, मस्तष्क रेखा, हृदय रेखा साफ हो, शनि और चन्द्र के पर्वत उच्च हो तो ऐसी रेखा वाला जातक यश का लाभ तथा सफलता प्राप्त करता है।

अनायास धन प्राप्ति

मस्तष्क रेखा से कोई रेखा निकलकर सूर्य के पर्वत पर जावे तो ऐसी रेखा वाले जातक को अकस्मात् धन मिलता है।

चन्द्र के स्थान से कोई रेखा निकलकर बुध के पर्वत पर जावे और वह रेखा रक्त-वर्ण की हो तो ऐसे जातक को जमीन से धन की प्राप्ति होती है।

चोर

हाथ में अधिक रेखायें व नक्षत्र चिन्ह हो, गुरु का पर्वत नीचा हो, चन्द्र के पर्वत का नीचे का भाग उठा हुआ हो, हाथ की सभी अंगुलियां निकृष्ट हों कनिष्ठ का अंगुली टेढ़ी अथवा बुध का पर्वत उठा हो तो ऐसे हाथ वाला पुरुष चोर होता है।

शराबी

चन्द्र का पर्वत अधिक उठा हुआ हो तो ऐसा पुरुष शराब पीता है।

अधिक शत्रु

केतु के पर्वत पर सर्पाकार रेखायें हों तो ऐसे पुरुष के शत्रु अधिक होता है।

केतु के पर्वत पर चतुष्कोण हो तो ऐसा जातक दबाव में नहीं आता है।

पतिव्रता योग

सूर्य की अंगुली उत्तम हो और प्रथम पर्व बड़ा हो, मंगल रेखा पर गुणक का चिन्ह हो, गुरु का पर्वत उच्च हो तो ऐसी स्त्री पतिव्रता होती है।

सांसारिक वासनाओं से युक्त

शुक्र के पर्वत पर कोई चिन्ह हो तो ऐसा जातक सांसारिक वासनाओं से युक्त होता है।

स्वार्थी

मस्तष्क रेखा, हृदय रेखा आपस में मिल रही हों अथवा मध्य भाग मोटा हो, राहु का पर्वत श्वेत रंग लिए हो तो ऐसा पुरुष स्वार्थी होता है।

धोखे बाज

नाखून छोटे हों तथा उनका रंग पीला हो, हृदय रेखा न हो अंगुलियां टेढ़ी और अनामिका की ओर झुक रही हों, ऐसे हाथ वाला जातक धोखे बाज निन्दक तथा दगाबाज होता है।

नीतिवान

मस्तष्क रेखा सीधी तथा स्पष्ट हो और अंगूठा सीधा तथा उठा हुआ हो तो ऐसे हाथ वाला जातक नीतिवान होता है।

निकट सम्बन्धियों से प्रेम

शुक्र रेखा बुध के पर्वत पर पहुंच रही हो, हृदय रेखा अथवा बुध के पर्वत पर द्वीप चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाला निकट सम्बन्धी स्त्री से प्रेम करने वाला होता है।

अन्य स्त्री से प्रेम

पितृ रेखा के भीतर अंगूठे की जड़ में जितनी आड़ी रेखायें हों तो जातक उतनी ही स्त्रियों से प्रेम किया करता है।

अविवाहित जीवन

विवाह रेखा बुध की अंगुली की ओर झुक रही हो तो ऐसे जातक का विवाह नहीं होता है।

व्यभिचारी

शुक्र रेखा जीवन रेखा को काट रही हो साथ ही भाग्य रेखा को काटे तथा दोनों ही हाथ की भाग्य रेखा पर द्वीप चिन्ह हो तो ऐसी रेखा वाला जातक व्यभिचारी होता है।

अवैध प्रेम

शुक्र रेखा स्वास्थ रेखा को काटे तथा दोनों ही हाथों में हृदय रेखा पर द्वीप चिन्ह हो तो ऐसे हाथ वाले जातक का किसी स्त्री से अवैध प्रेम होता है।

प्रेम में सुख

गुरु के पर्वत पर गुणक या तारे का चिन्ह हो, स्त्री के हाथ में मंगल रेखा हो तो प्रेम में सुख की प्राप्ति होती है।

प्रेम में बन्धन

शुक्र के पर्वत पर आड़ी रेखायें हों और जीवन रेखा को स्पर्श न करे तथा चन्द्र के पर्वत पर प्रभाविक रेखायें हों तथा यह रेखा भाग्य रेखा को स्पर्श कर रही हो तो ऐसी रेखा वाले जातक की शादी नहीं होती है, परन्तु ऐसे जातक का स्त्री से प्रेम होता है, जिसके कारण अनेक संकटों से ग्रस्त रहा करता है।

बाल्य-काल में माता-पिता की मृत्यु

भाग्य रेखा के प्रारम्भ काल में तिकोण हो तो ऐसे पुरुष के माता-पिता की मृत्यु बाल्यकाल में हो जाती है।

रोग व पीड़ाओं का ज्ञान

हस्त रेखा विज्ञान में मानव के जीवन के रोग तथा पीड़ा और दुर्घटनाओं का पता लगाना एक महत्वपूर्ण कार्य होता है। यह चिन्ह व रेखायें भूत-भविष्य तथा वर्तमान के संकट काल की सूचना दिया करते हैं तथा मानव के प्रवृति की सदैव सूचना दिया करते हैं, यदि रेखा और चिन्ह का ज्ञान करने और उनके द्वारा होने वाले फलित को यदि ध्यान में रखा जावे व तदनुसार कार्य किया जावे तो मानव का बहुत कुछ समय कष्ट व धन वच सकता है।

हाथ का रक्त वर्ण होना, सूर्य के पर्वत तिल, अथवा काला तिल होना, इस प्रकार का निशान सूर्य की अंगुली के प्रथम पोर में होना अंगुलियों के प्रथम पोर में छोटी २ रेखाओं का होना, आयु रेखा पर गुणक अथवा वृत चिन्ह होना, मस्तष्क रेखा पर द्वीप चिन्ह हो अथवा टूटी हो, स्वास्थ रेखा पर लाल रंग के चिन्ह हो, मस्तष्क रेखा पर काले अथवा नीले रंग के चिन्ह हों, नाखून लाल वर्ण के हों, रेखायें चौड़ी, पीली अथवा मलीन हो, नाखूनों पर अर्ध चिन्ह चन्द्र का पर्वत उच्च हो आदि २ ऐसे चिन्ह हैं जो यह बतलाते हैं कि इस प्रकार के जातक नाना प्रकार के रोगों से ग्रस्त रहा करते हैं। यहाँ पर कुछ ऐसे रोगों के योगों का वर्णन किया जावेगा।

सर्वदा बीमार रहना

चौड़ी पीली तथा मलीन रेखाओं वाला जातक रक्त की कमी, निर्बलता का रोगी रहता है।

मस्तष्क रेखा उठी हुई हो तो कमजोरी की सूचना है।

मस्तक रेखा शनि के पर्वत के नीचे सुन्दर रेखाओं से कट रही हो तो ऐसी रेखा वाला जातक वात ज्वर का रोगी होता है।

मस्तष्क रेखा टूटी हो, टापूदार हो तो ऐसी रेखा वाला जातक सिर दर्द व बुखार का रोगी रहता है।

जीवन रेखा पर क्रास, वृत अथवा समकोण चतुर्भुज हो तो ऐसा जातक रक्त-विकार तथा लाल ज्वर का रोगी रहता है।

रेखाओं का रंग बहुत रक्त वर्ण हो, हथेली खुश्क हो तो ऐसे जातक को छूत के रोगों से विशेष बचना चाहिए।

मस्तष्क रेखा पर काले अथवा नीले दाग हों तो यह विषम ज्वर के रोगी का लक्षण हैं।

स्वास्थ रेखा पर लाल दाग हो तो ऐसा जातक ज्वर का रोगी रहता है।

अंगुलियों के प्रथम पोर पर छोटी २ रेखा हों तो ऐसा जातक कभी निरोग नहीं रहता है।

चौड़ी, पीली तथा भद्दी रेखाओं वाला जातक निर्बल तथा रक्त की कमी का रोगी रहता है।

रेखाओं का रंग अनियमित हो तो ऐसे जातक का स्वास्थ कभी ऐकसा नहीं रहेगा।

रेखाओं का पीला रंग पीली त्वचा, पित्त प्रकृति तथा पांडु कामला रोग की सूचना है।

नाखून पर अर्ध चन्द्र हो, अधिक पुष्ट हों, नखों का रंग लाल हो तो ऐसा जातक रक्त-विकार का रोगी रहता है।

चिकनी रेशमी त्वचा व्याधी की सूचक है।

कोमल, आस पास घिसी त्वचा वाला गुप्त रोग का रोगी होता है।

अंधापन

हृदय रेखा पर सूर्य का चिन्ह हो तो ऐसे जातक की आंख किसी दुर्घटना में मारी जाती है।

शुक्र के पर्वत पर जाली का चिन्ह हो तो वह जातक अन्धा हो जाता है।

मध्यमा अंगुली के तीसरे पर्व के सन्धी भाग पर त्रिकोंण हो तो ऐसा जातक अन्धा होता है, तर्जनी अंगुली के तीसरे पर्व के सन्धी के ऊपर नक्षत्र का चिम्ह हो तो वह जातक अन्धा होता है।

मृगी रोग

हाथ की अंगुलियां टेढ़ी और नुकीली हों अथवा इनके नीचे गुरु, शनि, सूर्य, बुध के पर्वत दबे हुए हों तो इस प्रकार के जातक को मृगी का रोग होता है।

पागलपन

मस्तष्क रेखा लम्बी और ढालू हो, चन्द्र के पर्वत पर गुणक का चिन्ह हो, शनि का पर्वत निम्न हो और शनि की अंगुली टेढ़ी हो और तृतीय पर लहरदार रेखायें हों तो इस प्रकार की रेखा वाला जातक पागल होता है।

सिर पीड़ा

मस्तष्क रेखा को बहुत सी छोटी २ रेखायें काट रही हों तथा दांत जैसे चिन्ह प्रतीत हों तो इस प्रकार का जातक सिर दर्द का रोगी रहता है।

हिस्टीरिया

मस्तष्क रेखा जंजीर के समान हो, हाथ का बाहरी भाग सुकड़ा

हो, हथेली मुलायम हो तथा गर्म रहे ऐसी रेखा वाले जातक को हिस्टीरिया का रोग होता है।

गठिया

स्वास्थ रेखा टूटी हुई हो, हाथ की त्वचा अधिक मृदु हो, जीवन रेखा के अन्तर से कोई रेखा निकल कर चन्द्र के पर्वत पर पहुँचे या चन्द्र के पर्वत से कोई रेखा निकलकर जीवन रेखा को काटे तो ऐसे जातक की गठिया संधिवात का रोग होता है।

दंत रोग

स्वास्थ रेखा और भाग्य रेखा लहरदार और लम्बी हो, हाथ की अंगुलियों के द्वितीय एवं लम्बे हो, शनि का पर्वत उच्च हो हाथ में रेखायें अधिक हों तो ऐसे हाथ वाले जातक दांत और मसूड़ों के रोगी रहा करते हैं।

गुरदे का रोग

मस्तष्क रेखा पर मंगल के पर्वत के श्वेत छोटे २ दांत के चिन्ह हों तो ऐसा पुरुष गुरदे का रोगी होता है।

गले का रोग

मस्तष्क रेखा पर गुरु के पर्वत के नीचे द्वीप चिन्ह हो तो ऐसे पुरुष को गले का रोगी होता है।

खाँसी

स्वास्थ रेखा मस्तष्क रेखा आपस में मिल रहीं हों, शुक्र के पर्वत से एक रेखा निकल कर आयु रेखा को काटकर मंगल के पर्वत पर पहुँचे, बुध की रेखा निम्न हो और हथेली छोटी हो तो ऐसी रेखा वाले पुरुष खाँसी दमा के रोगी हुआ करते हैं।

हृदय शूल

जीवन रेखा पर द्वीप चिन्ह हो और उससे कोई शाखा निकलकर गुरु के पर्वत पहुँचे तो ऐसे पुरुष के वक्षस्थल पसली में दर्द हुआ करता है।

रीढ़ पीड़ा

जीवन रेखा पर शनि के पर्वत के नीचे द्वीप चिन्ह हो तो ऐसा पुरुष रीढ़ का रोगी होता है।

फेफड़े का रोग

मध्यमा अंगुली के नीचे शनि मुद्रिका हो तथा शनि के पर्वत के नीचे मस्तष्क रेखा जंजीर के समान हो तो ऐसे पुरुष को फेफड़े का रोग होता है।

—:o:—

जनता द्वादस राशिफल

व्यापारिक विद्यार्थी, प्रत्येक स्त्री के लिए वर्ष की होने वाली शुभाशुभ घटनाओं का पूर्ण विवरण मास फल, दैनिक राशि फल कौन सा ग्रह क्या फल और कब देगा इसका प्रभाविक उत्तर, ग्रह कष्ट और उसके निवारण के उपाय सहित। डाक व्यय सहित ४)

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता :

जनता प्रकाशन (पंजि०)

खारी बावली, दिल्ली-११०००६

एकादश परिच्छेद

शारीरिक लक्षण

भुजाएं

जिस पुरुष के बाहु घुटने के नीचे तक लम्बे हों, वह अजानुबाहु होता है। इसके फलस्वरूप वह महापुरुष होगा। जिसके बाहु कमर तक हों, वह क्षुद्र और नीच प्रकृति होगा, जिसके बाहु कटि के नीचे और जाँघों तक हों वह कार्यशील व्यवसायी और सिद्धहस्त होगा। जिसके बाहु घुटने से कुछ ही ऊपर रहें, समृद्धिशाली होगा परन्तु लोभी तथा बेईमान होगा। कभी २ वह पुरुष हिंसक भी हो सकता है। जिसके बाहु कमर से नीचे और जांघ के मध्य से ऊपर तक हों, वह दीन होता है।

जिसकी बाहु की कुहनी के नीचे का भाग ऊपर के भाग से बड़ा हो वह कार्यशील, आस्तिक और भक्त होता है। जिसका ऊपर का भाग बड़ा हो वह शूद्र और दस्यु प्रकृति का होता है। वह मनुष्य अत्यन्त विषयी और विलासी होता है। जिनके दोनों भाग बराबर हों (यह अपनी उंगलियों से नापे जाते हैं।) बाहु का आदि भाग आंख के ऊपर से और अन्तिम भाग पहुंचे तक होता है। वह व्यवसायी और परिश्रमी होता है। उसे पैतृक सम्पत्ति प्राप्त नहीं होती। अपने बल से ही धनोपार्जन करेगा।

जिसका हाथ लम्बा और भद्दा होता है वह दरिद्री होता है। जिसका हाथ लम्बा परन्तु देखने में सुडौल और गठीला होता है। वह आलसी होता है। वह धनी नहीं होता। जिसका हाथ लम्बा गठीला और सुन्दर होता है, वह मनुष्य भाग्यशाली होता है। पान के आकार वाला हाथ समृद्धिशाली और कीर्तिवान होता है भद्दी यानि बुरी आकृति वाला हाथ नीच का होता है चौकोर हाथ दस्यु का होता है और गोल हाथ व्यवसायी का, बन्दर की आकृति वाला हाथ यानि जिसकी हथेली, कलाई की त्वचा के समान्तर हों वह मनुष्य क्षुद्रबुद्धि और कुविचारी, विषयी तथा मूर्ख होता है परन्तु आस्तिक होता है।

गहरी हथेली वाले को सदैव धन की लालसा रहती है। जिसकी उंगलियां लम्बी व हथेली लम्बी व छोटी हो, वह मनुष्य मूर्ख होता है जिसकी बड़ी हों वह मनुष्य चतुर और भाग्यवान होता है जिसके दोनों भाग बराबर हों वह व्यवसायी और धनी होता है।

जिसकी उंगलियां मोटी, लम्बी और गठीली हों यह परिश्रम करने से सुखी रहेगा, वह भाग्यशाली होगा। जिसकी उंगलियों के पोरों की कुछ रेखायें मिलाकर १५ हों वह नीच, दस्यु और विश्वासघाती होता है। ऐसे मनुष्यों को मित्र न बनायें। १६ रेखा वाला मध्यम, पिता के समान। अठारह रेखा वाला सुपुत्र और १९ वाल पिता तथा स्वकुल की कीर्ति को बढ़ाता है और धनवान होता है। २० रेखा वाला धनी परन्तु क्रूर होता है। इक्कीस बाइस वाला उद्यमी एवं विचारवान होता है तथा प्रभावशाली भी होता है। इससे अधिक वाला दरिद्री तथा मूर्ख होता है अंगूठे की पोर की रेखायें नहीं गिनी जाती।

जिनके नखों की बनावट बिल्कुल गोल हो नख छोटे हों वह व्यवसायी होता है जिनके नख गोल और अर्द्ध चन्द्राकार कटे हों वह राज प्रतिनिधि, वैद्य अथवा आकाशवृत्ति को प्राप्त करने वाला होता है। जिसके नख लम्बे, गोल और कटे हों वह आदमी दीन होता है। जिसके

लम्बे परन्तु अर्द्ध चन्द्राकार कटे हों वह उद्यमी और विद्वान तथा विश्वसनीय होता है।

जिसकी उंगलियां टेढ़ी और मिलाने पर झिझरी हों वह अच्छा नहीं होता। जिसकी उंगली हाथ के विचार से गढ़ी हुई सुदृढ़ एवं सुन्दर हों, वह अच्छा होता है जिसका अंगूठा लम्बा हो और बीच की गांठ की चौड़ाई के आगे की तरफ पतला और गोल हो वह मनुष्य भक्त और शाँत चित होता है। जिसका अंगूठा गांठ के समान चौड़ा और छोटा तथा अर्द्ध चन्द्राकार हो वह मनुष्य मध्यम रहता है। जिसका अंगूठा पीछे की ओर झुका हुआ हो वह अच्छा होता है।

छाती और पेट

जिसके उरस्थल पर रोम अर्थात् बाल नहीं होते वह मनुष्य देखने में सीधा परन्तु कलुषित हृदय होता है। वह कार्यशील तथा विश्वासघाती होता है साथ ही यह मनुष्य कार्यशील तथा अवयवसायी होता है। जिसके उस उरस्थल में नाभी तक बालों की सुन्दर लकीर सी बनी हो वह प्रत्यक्ष हो तो मनुष्य देखने में सीधा परन्तु रसीला होता है। दो व्यक्तियों को लड़ाकर उसका आनन्द अनुभव करता है, कम बालों वाला साग्यवांन होता है। अधिक बालों वाला विषयी होता है, सुनहरे बालों वाला भाग्यवान परन्तु व्यसनी होता है। लम्बा पेट वाला आहारी क्रोधी परन्तु सच्चरित्र व भाग्यवान होता है। छोटे व मोटे पेट वाला दरिद्री होता है। मोटी कटि वाला आदमी अधिक विलासी तथा पतली कटि वाला आदमी साहसी तथा वीर होता है। पतली कटि की स्त्री प्रायः सच्चरित्र एवं सुन्दर होती है।

भाल में दो कटी फटी रेखाओं वाला अकर्मण्य होता है। जिसके भाल में एक ही रेखा हो और वह भी कटी-फटी हो तो वह कुविचारी होता है। जिसके भाल में इन तीनों रेखाओं के समान अन्य अनेक रेखायें हों वह त्यागी होता है।

ग्रीवा

जिसके गले में तीन रेखायें क्रमानुसार समान्तर बड़ी रेखायें तीन हों, वह राजा होता है। रेखायें छिन्न भिन्न होनी चाहिए। दो रेखाओं वाला भाग्यवान किन्तु आलसी होता है। बिना रेखा वाला भक्त और दृढ़ प्रतिज्ञ होता है।

जिसकी गर्दन में खड़ी रेखायें हों वह धनी और प्रतिभा सम्पन्न होता हैं। कटी-फटी रेखाओं वाला सदैव विपत्ति के चक्कर में रहता हैं।

उदर

जिसके उदर में तीन रेखायें समान्तर पड़ी हों वह विलासी एवं भाग्यवान होता है। जिसके दो हों, वह परिश्रमी और सिद्धहस्त होता है। एक वाला दरिद्री होता है। चार वाला लोलुप और अधिक वाला अभागा होता है। जिसके उदर में खड़ी रेखायें हों वह चक्रवर्ती होता है।

—:०:—

तेजी मन्दी ज्ञान

सट्टा लाटरी और रेस के ठीक नम्बर लाने वाली उत्तम किताब केवल मामूली गुणा भाग से ठीक नम्बर निकल आता है जो कभी खाली नहीं जाता। आज सट्टे की विद्या जानने वाले लाखों रुपया महीना कमा रहे हैं। कीमत ८) रुपये डाक व्यय माफ।

जनता प्रकाशन (पंजी०)

कूंचा चेलान, खारी बावली, दिल्ली-६

द्वादश परिच्छेद
हस्त चित्र उतरना

हाथ की रेखाओं के देखने को लिये यह आवश्यकीय है कि हाथ दिखाने वाले सामने बैठें और हाथ के ठीक प्रकार एक सी अवस्था जब तक रखें तब तक कि दैवज्ञ ठीक प्रकार से निर्णय के लिए हाथ की रेखाओं का नाप न ले ले, साथ ही अन्य नियमों के अनुसार घटना चक्र के लिए तैयार न हो जावें, क्योंकि हाथ दिखाने वाला चाहता है कि उसे शुभाशुभ फल के वर्षों का भी ज्ञान हो, ऐसी अवस्था में यह आवश्यक है कि हस्त चित्र हो।

दूसरी ओर हाथ दिखाने वाला दैवज्ञ के सामने न हो ऐसी अवस्था में हस्त चित्र आवश्यकीय हो जाता है।

सामुद्रिक कला भी है, इसलिए इसमें कुछ क्रियात्मक भी होना आवश्यक है। हस्त चित्र लेने की अथवा हस्त चित्र निर्माण की दो विधियां हैं।

१. प्राचीन हस्त चित्र विधि
२. नवीन हस्त चित्र विधि

प्राचीन हस्त चित्र विधि

प्राचीन काल में कपूर के धुएं से हस्त चित्र उतारा जाता है। यह विधि सरल है और इसमें खर्च भी कम ही होता है, साथ ही इस विधि में सबसे बड़ा दोष भी है कि इस प्रकार के हस्त चित्र स्थायी नहीं होते हैं। इस प्रकार के हस्त चित्र को रखा रहने पर अथवा उस पर कार्य करने से कुछ स्थानों से धुआं छूट जाता है जिस कारण यह चित्र बेकार हो जाता है।

इस प्रकार के चित्र लेने के लिए निम्न सामान की आवश्यकता होती है।

१. कपूर

२. कागज अथवा शीशा (कांच)

३. सीट

सर्व प्रथम कपूर को जला लें, अब कागज अथवा शीशा पर उसका धुआं चारों तरफ सावधानी से फैलावें, अब ध्यान रखें कि कपूर की लौ कांच की सीट पर न लगने पावे क्योंकि कांच के चटक जाने का भय है, साथ ही यदि कागज है तो जल जाने का भय है। जब चारों ओर धुआं एक सा फैल जावे तो कुछ समय के लिए कागज या शीशे को सीट पर रख दें, फिर साबुन से हाथ धोकर और पोंछकर उस पर ठीक प्रकार से हिलायें-जुलायें उठा ले, अब आपके हाथ का हस्त चित्र तैयार है। इस चित्र को सावधानी से प्रयोग में लाना चाहिए तथा सावधानी से रखना चाहिये नहीं तो धुआं छूट सकता है और छाया चित्र बेकार हो सकता है।

यदि आप इस चित्र को पक्का करना चाहते हैं तो चित्रकारी के प्रयोग में आने वाली रोशनाई को सावधानी से रेखाओं में भर दें। यह चित्र अब पक्का बन गया।

२. आधुनिक नवीन हस्त चित्र विधि

यह चित्र छापने की उत्तम विधि है इसको लिथोग्राफी के नाम से पुकारते हैं। यह सबसे उत्तम क्रिया है तथा हस्त चित्र भी सुन्दर आता है।

इसके लिए निम्न समान की आवश्यकता होती है।

१. रोलर

२. लिथो की रोशनाई (प्रेस की काली स्याही)

३. सफेद तथा चिकना कागज

४. रबर अथवा काठ का टुकड़ा सीट का टुकड़ा जो मध्य में कुछ उठा हुआ हो तथा चारों ओर को झुक रहा हो।

सबसे पहले साबुन से हाथ को साफ धोकर किसी वस्त्र से पोंछ लें, फिर रूलर पर लिथो की रोशनाई अच्छी प्रकार से लगावें, फिर रोशनाई वाले रूलर को हाथ पर अच्छी प्रकार से फेरें हाथ की अंगुलियों तथा अंगुष्ठ के पोर तथा हथेली एवं मणिबन्ध पर अच्छी प्रकार से लगा लें, अब रबर की सीट पर कागज का सफेद टुकड़ा हाथ के नाप से लड़ा रख लें और उसके ऊपर स्याही लगे हाथ को भली प्रकार से रखें, अब दूसरे हाथ के अंगुष्ठ से हाथ के प्रत्येक भाग को एकसार दबावें तथा अब कागज पर हाथ को सीधा कर हाथ उठा लें, हाथ के उठाते वक्त ध्यान रखें कि हाथ कागज पर दोबारा किसी भाग में न लगे और हाथ कागज पर हिलने नहीं पावे। यदि हाथ हिल गया तो रेखायें मिट जाने का भय है तथा रेखायें दुहरी भी हो सकती है। हाथ को उठाकर साबुन से भली प्रकार धो लें।

कागज पर आपका हाथ छप गया, वह जितना साफ होगा उतना ही सुन्दर होगा तथा कार्य में सुविधाजनक होगा।

इस प्रकार के चित्र को कुछ समय के लिए धूप में रख दें, जिससे यह शुष्क हो जावे।

यह दोनों विधियों से आसान विधि है। हाथ के कैमरे द्वारा फोटो, यह केवल व्यय साध्य अवश्य है अन्यथा यह सबसे सुन्दर विधि है।

॥ समाप्त ॥

मुद्रक :

वेद प्रिंटिंग एजेन्सी, ११३६, कूचा हरजसमल, बाजार सीताराम, द्वारा यादव प्रेस, दिल्ली-६

सचित्र चौदह विद्या चौसठ कला

१. वैद्य विद्या—सब प्रकार के रोगों के लक्षणों की औषधियां। २. कोक विद्या-स्त्री पुरुष के समस्त गुप्त विषयों का वर्णन। ३. शकुन विद्या—पक्षियों की बोली शकुन विचार। ४. योग विद्या—मृतक आत्माओं से बातचित करना। ५. यंत्र विद्या—बाल रक्षा स्तम्भन वशीकरण आदि मंत्र। ६. यंत्र विद्या—मोहन उच्चाटन रोग हरण मंत्रों की विधि। ७. तंत्र विद्या—इंद्रजाल की माया से जादू के अद्भुत खेल। ८. ज्योतिषियों के कर्म, फल व भविष्य जानने की विधि ९. शिल्प विद्या—हींग, इत्र, नमक सुलेमानी, बाल उड़ाने का साबुन, केश भूषण, तेल, तम्बाकू, अर्क, कपूर, खिजाब, मोहर, स्याही आदि अनेक चीजें बनाने की विधि। १०. राजनीति विद्या—न्याय पूर्ण राज्य करने के नियमों का वर्णन तथा माल गुजारी, कोर्ट फीस आदि के नियम। ११. वास्तु विद्या—ग्रह निर्माण संबंधी ज्ञान। १२. संगीत विद्या—नकली सोना चांदी बनाना और लोहा तांबा आदि धातुओं के फूंकने की विधि। १४. कृषि विद्या—खेती करने सम्बन्धी सब बातें देकर ६४ कलाओं का वर्णन। कीमत ८) डाक खर्च सहित।

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता :

जनता प्रकाशन (पंजि०)

खारी बावली, दिल्ली-६

केवल छः रुपए में १५ भाषाएं सीखिए

अपने ढंग की अनूठी पुस्तक जिसकी सहायता से हिन्दी या अंग्रेजी जानने वाले बिना शिक्षक की सहायता के असमिया, उड़िया, तेलगू, तमिल, कन्नड़, बंगला, मराठी, मलयालम, पंजाबी, कश्मीरी, सिंधी, उर्दू भाषायें सीख सकते हैं। मूल्य ६) पोस्टेज सहित।

नोट—हमारे यहाँ से हिन्दी-उर्दू उर्दू-हिन्दी टीचर, गुजराती-अंग्रेजी टीचर, हिन्दी-बंगला टीचर, बंगला हिन्दी टीचर, बंगला अंग्रेजी टीचर, मराठी-अंग्रेजी टीचर, पंजाबी-अंग्रेजी टीचर, हिन्दी-मराठी टीचर, मराठी-हिन्दी टीचर, हिन्दी-उर्दू टीचर, उर्दू-अंग्रेजी टीचर और सभी पुस्तकें अलग-अलग मंगाने पर ६) रु० प्रति पोस्टेज सहित मंगा सकते हैं। ५०० पुस्तकों का सूची-पत्र मुफ्त भेजा जाता है।

जनता ज्योतिष शास्त्र

इस किताब द्वारा जन्म-जन्मान्तर का हाल कहना। जन्म कुण्डली जानना और इसका हाल कहना, बीती जिन्दगी बताना गुप्त व मूक प्रश्नों का सही उत्तर देना, वर्षफल बनाना, साल की तेजी मन्दी तथा भविष्य फल कहना। सब प्रकार के मुहूर्त और शकुन बताना। विवाह शोधना, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना आदि गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया गया है। विद्वानों के तथा सरल साधारण जनता के ज्योतिष संबंधी ज्ञान का अपूर्व संग्रह है। मूल्य ८) मय पोस्टेज।

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता :

जनता प्रकाशन (पंजि०)

खारी बावली, दिल्ली-११०००६

अवश्य पढ़ने योग्य पुस्तकें

असली सचित्र

कोक शास्त्र

ग्रौरत के ग्रग-ग्रग से मस्कराते चित्रों से भरपूर छोटे-बडे रूपों से उपलब्ध यौन-विज्ञान पर एक सफल पस्तक जिसके प्रतिवर्ष ग्रनेक संस्करण प्रकाशित होते है
मराठी में भी मिलती है। मूल्य ६)

सांवरी तन्त्र

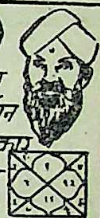

भूत विद्या, ओझा विद्या व गुप्त विद्या का अपूर्व वर्णन जो कि आप को अपने चमत्कार से आश्चर्य में डाल देगा
मूल्य ६)

दक्षिणी जादू

केवल एक सप्ताह में जादूगरों के गुरु बनिये ताश के खेल, बोतल से अन्डा निकालना आदि अनेक खेल दिये हैं। मूल्य ६)

सचित्र पहली सुहागरात

इस पुस्तक में नवदम्पत्तियों के जानने योग्य बातें जैसे संभोग रहस्य, सुहागरात का आनन्द गुप्त रोग व उनके इलाज आदि दिऐ हैं। मूल्य ७)

सचित्र एलबम

इस एलबम में से फिल्मी एक्ट्रों एक्ट्रसों के सुन्दर सुन्दर पोज़ेज़ में अति आकर्शक २०१ चित्र दिये गए हैं!
मूल्य ६) मय डाक खर्च

कामशास्त्र सचित्र

यह पुस्तक जिनका विवाह हो चुका हो या होने वाला हो उनको अवश्य ही पढ़ना एवं देखना चाहिये इसमें मैथुन, चुम्बन, संम्भोग आदि के लेखों के साथ साथ चित्र भी दिये गए हैं।
मूल्य ७) मय डाक खर्च

रति विज्ञान (काम कला)

इसके अन्दर पद्मनी, चित्रणी, शंखिनी, हस्थनी चारों प्रकार की स्त्रियों का वर्ण भेद है और ८४ आसनों का वर्णन हैं। स्त्री को वश में करने के सरल तरीके, गर्भ धारण करने की विधि, गर्भ रक्षा के उपाय व गर्भ न रहने के तरीके दिए हैं
मूल्य ७) मय डाक खर्च

वी० पी० द्वारा मंगाने का पता :-

जनता प्रकाशन (पंजीकृत)

खारी बावली दिल्ली-११०००६

अवश्य पढ़ने योग्य पुस्तकें

श्री मद् भागवत गीता

अट्ठारहों अध्यायों से भगवान श्री कृष्ण व श्री अर्जुन की वार्ता, कुरुक्षेत्र में श्री कृष्ण भगवान के उपदेश कई आरतियों व हनुमान चालीसा सहित।
मूल्य ८) मय पोस्टेज

बड़ा भक्ति सागर

ईश्वर प्रार्थना चालीसे, आरतियाँ, वेदों के मन्त्र भगवद विनय, सन्ध्या तथा नित्यकर्म की पद्दति का अनूठा संग्रह! मूल्य १०) मय डाक खर्च

रामायण बतर्ज राधेश्याम

राधेश्याम की तर्ज़ में मधुर गायन और सरल कविता पर सुन्दर रामायण

मूल्य १२) मय डाक खर्च

इलैक्ट्रिक वायरिंग

हाउस वायरिंग, पावर वायरिंग, ओवर हैड व अन्डर वायरिंग, डाइरैक्ट करन्ट, ट्युब वायरिंग, रेफरीजरेटर वायरिंग आदि का सचित्र वर्णन
मूल्य १०) मय डाक खर्च

मिस्मरेजम शिक्षा

मिस्मरेज़म द्वारा सुलाना, सवाल पूछना, बीमा-स्त्रियों का इलाज करना दूर की चीज़ें देखना तथा दूर दूर के हालात मालूम करना समझाया गया है!
मूल्य ७) मय पोस्टेज

कम्पाउंडरी शिक्षा

हर प्रकार की नर्सिंग, फर्स्ट-एड व दवाइयों का ज्ञान कराने वाली उपयोगी पुस्तक! मूल्य १०) मय डाक खर्च

वी॰ पी॰ [illegible] का पता

जनता प्रकाशन (पंजीकृत) खारी बावली देहली-६

काटेज इन्डस्ट्रीज़

कारखानों तथा इन्डस्ट्रीज से सुम्बन्धित व्यक्तियों के लिये भारत व विदेशों के अनुभवी इंजीनियरों के टैक्नीकल सहयोग से लिखी गई पुस्तक जिसमें भारत के लिए लाभदायक १०१ लघु उद्योग और दस्तकारी उद्योगों का पूरा विवरण, निर्माण क्रम फार्मूले, कच्चा माल और मशीनो का परिचय व हर बात को चित्र देकर समझाया गया है। कच्चा माल व मशीनें मिलने के पते सरकार से कम ब्याज पर नकद कर्जे व किस्तों पर मशीनें लेने के नियम, इम्पोर्ट एक्सपोर्ट, कोआपरेटिव सोसायटीज व लिमिटेड कम्पनियां बनाने के नियम आदि सब कुछ है। कीमत केवल २०) डाक खर्च सहित।

गृह उद्योग

यह पुस्तक क्या है। सोने की खान है। यदि आप यह रहस्य जानना चाहते हैं, जिसकी सहायता से तुच्छ भी धनाढय बने दीख पड़ते हैं तो इस किताब को आदि से अन्त तक पढ़ें इसमें लगभग २५ छोटे २ धंधों का वर्णन विस्तार पूर्वक दिया गया है। जैसे हर प्रकार का प्लास्टिक का सामान बनाना, सुगन्धित तेल व इत्र बनाना फिनायल बनाने के तरीके, आइसक्रीम जमाने के कई प्रकार के ढंग, अचार और मुरब्बे बनाना, रंग बिरंगी मिठाईयां बनाना, माथे की बिन्दी, कोल्डक्रीम, वैनशिंगक्रीम, स्नो, फेस पाउडर, नाखून पालिश, मोमबत्तियाँ बनाने की शिक्षा, सूत का धागा, रबड़ के गुब्बारे बनाना, स्कूल के चाक बनाना, रंग बिरंगी आतिशबाजी तथा बूट पालिश बनाना इत्यादि बताया गया है। मूल्य केवल १५) डाक व्यय सहित।

वी. पी. द्वारा मंगाने का पता

जनता प्रकाशन (पंजीकृत) खारी बावली दिल्ली-११०००६.

अवश्य पढ़ने योग्य पुस्तकें

रेडियो ट्रॉंजिस्टर गाइड

थोड़े से परिश्रम से रेडियो मैकेनिक बनिये- चित्रों सहित रेडियो को तैयार व मरम्मत करना आदि समझाया गया है।

मूल्य १०) मय डाक खर्च

महाभारत भाषा

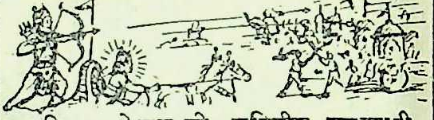

विद्वान लेखक की अद्वितीय चमत्कारी रचना है जो अल्पकाल में कई सहस्त्रों से अधिक बिक चुकी है अब नया संस्करण निराली सजधज और अपूर्व चमक दमक से निकाला है । इस पुस्तक का मूल्य २०) मय डाक खर्च ।

साईकिल मरम्मत शिक्षा

अपने ही घर में अपने ही हाथों से साईकिल का खोलना, मरम्मत करना तथा ओवर हालिंग करना चित्रों सहित दर्शाया गया है !

मूल्य १०) मय डाक खर्च

बड़ी कशीदा कारी

आधुनिक डिज़ाइनों में मेज़पोश चादरें, पलंगपोश तथा ब्लौज़ आदि पर कशीदाकारी का काम करना बहुत सुन्दर ढंग से बताया गया है हर घर के लिये आवश्यक पुस्तक

मूल्य १०) मय डाक खर्च

इलैक्ट्रिक गाइड

इस पुस्तक में हर प्रकार की इलैक्ट्रिक मोटर्स मैंग नेट - सरकिटस A.C. व D.C. मशीनों को बनाना व मरम्मत करना चित्रों सहित समझाया गया है !

मूल्य १०) मय डाक खर्च

साबुन तेल शिक्षा

तरह २ के सुगन्धित तेल व साबुनों का कम से कम लागत में तैयार करना तथा प्रयोग में लाने की विधियों का विस्तार पूर्वक वर्णन किया गया है। मूल्य ६) मय पोस्टेज

वी पी द्वारा मंगाने का पता

जनता प्रकाशन (पंजीकृत) खारी बावली देहली-६

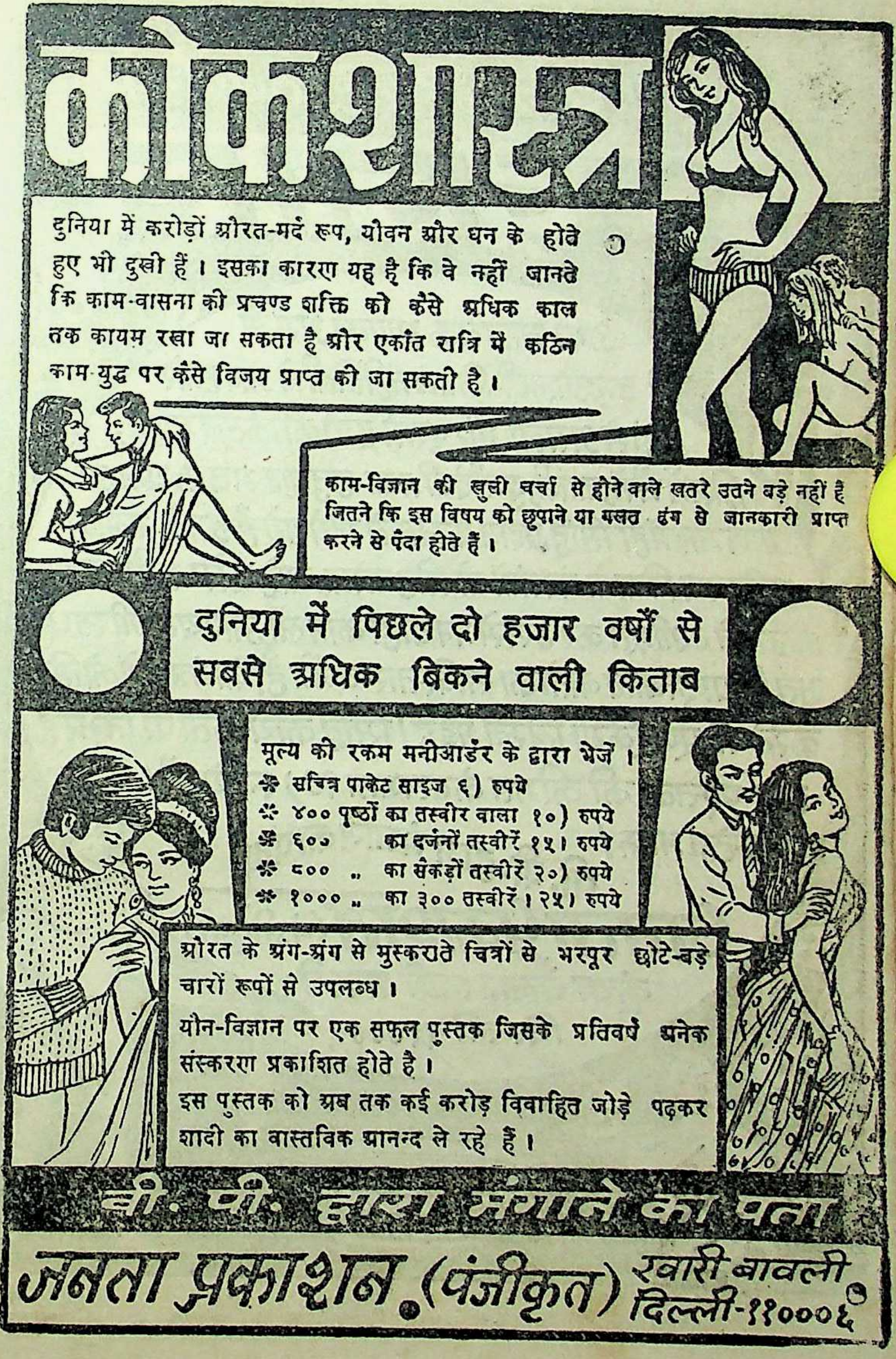
कोकशास्त्र
दुनिया में करोड़ों औरत-मर्द रूप, यौवन और धन के होते हुए भी दुखी हैं। इसका कारण यह है कि वे नहीं जानते कि काम-वासना की प्रचण्ड शक्ति को कैसे अधिक काल तक कायम रखा जा सकता है और एकांत रात्रि में कठिन काम-युद्ध पर कैसे विजय प्राप्त की जा सकती है।
काम-विज्ञान की खुली चर्चा से होने वाले खतरे उतने बड़े नहीं हैं जितने कि इस विषय को छुपाने या गलत ढंग से जानकारी प्राप्त करने से पैदा होते हैं।
दुनिया में पिछले दो हजार वर्षों से सबसे अधिक बिकने वाली किताब
मूल्य की रकम मनीआर्डर के द्वारा भेजें।
सचित्र पाकेट साइज ६) रुपये
४०० पृष्ठों का तस्वीर वाला १०) रुपये
६०० का दर्जनों तस्वीरें १५। रुपये
८०० „ का सैकड़ों तस्वीरें २०) रुपये
१००० „ का ३०० तस्वीरें। २५। रुपये
औरत के अंग-अंग से मुस्कराते चित्रों से भरपूर छोटे-बड़े चारों रूपों से उपलब्ध।
यौन-विज्ञान पर एक सफल पुस्तक जिसके प्रतिवर्ष अनेक संस्करण प्रकाशित होते है।
इस पुस्तक को अब तक कई करोड़ विवाहित जोड़े पढ़कर शादी का वास्तविक आनन्द ले रहे हैं।
वी. पी. द्वारा मंगाने का पता
जनता प्रकाशन (पंजीकृत) खारी बावली दिल्ली-११०००६

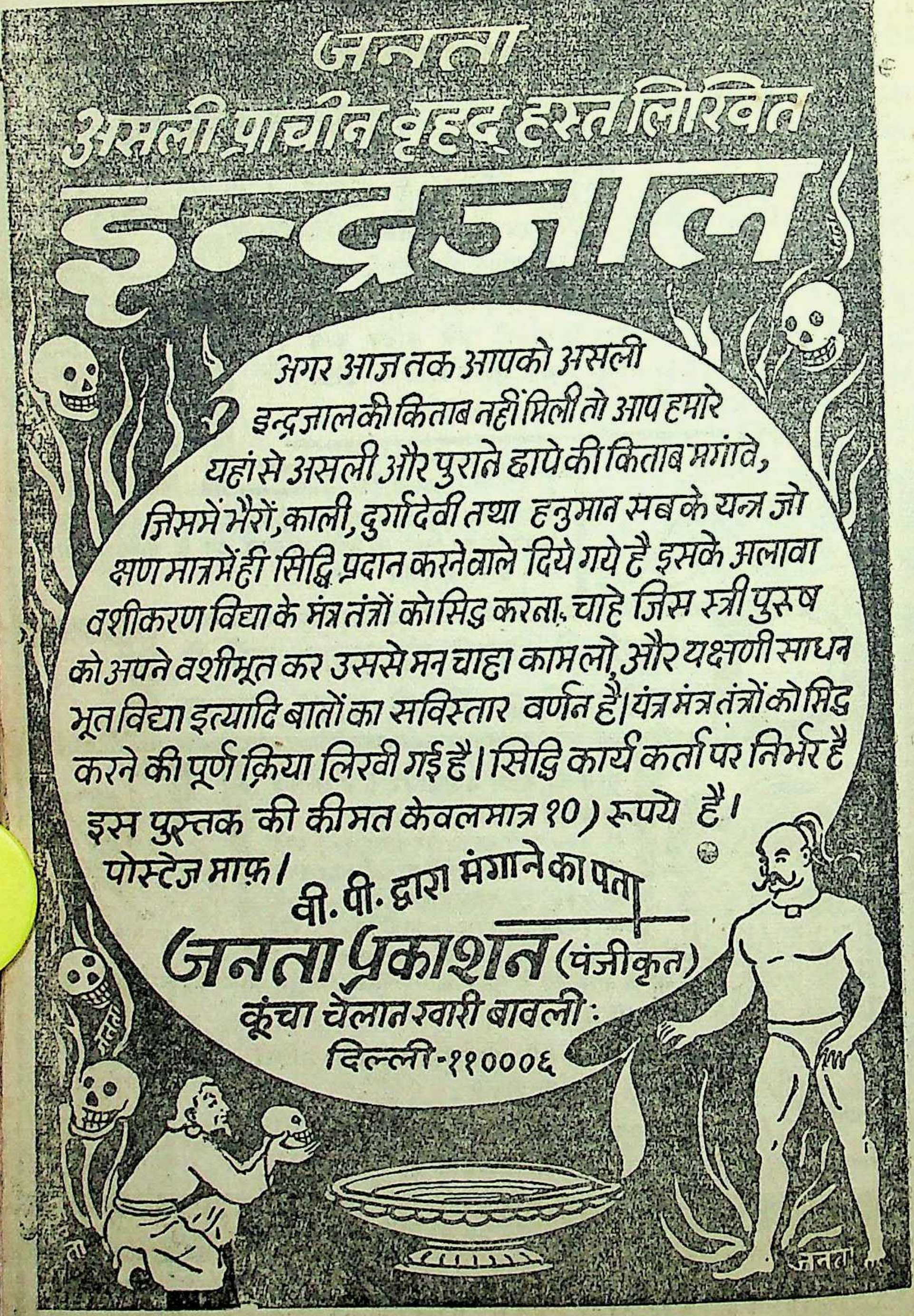
जनता
असली प्राचीन वृहद् हस्त लिखित
इन्द्रजाल
अगर आज तक आपको असली
इन्द्रजाल की किताब नहीं मिली तो आप हमारे
यहां से असली और पुराने छापे की किताब मगांवे,
जिसमें भैरों, काली, दुर्गा देवी तथा हनुमान सब के यन्त्र जो
क्षण मात्र में ही सिद्धि प्रदान करने वाले दिये गये है इसके अलावा
वशीकरण विद्या के मंत्र तंत्रों को सिद्ध करना, चाहे जिस स्त्री पुरुष
को अपने वशीभूत कर उससे मन चाहा काम लो, और यक्षणी साधन
भूत विद्या इत्यादि बातों का सविस्तार वर्णन है। यंत्र मंत्र तंत्रों को सिद्ध
करने की पूर्ण क्रिया लिखी गई है। सिद्धि कार्य कर्ता पर निर्भर है
इस पुस्तक की कीमत केवल मात्र १०) रूपये है।
पोस्टेज माफ़।
वी. पी. द्वारा मंगाने का पता
जनता प्रकाशन (पंजीकृत)
कूंचा चेलान खारी बावली:
दिल्ली-११०००६

जनता प्रकाशन द्वारा ज्योतिष की अनुपम पुस्तकें पढ़े

जनता ज्योतिष शास्त्र

इस किताब द्वारा जन्म जन्मान्तर का हाल कहना, जन्म कुण्डली बनाना और इसका हाल कहना, बीती जिन्दगी बताना, गुप्त मूक प्रश्नों का सही उत्तर देना वर्षफल बनाना, साल की तेजी मन्दी तथा भविष्य फल कहना, सब प्रकार के मुहुर्त और शकुन बताना, विवाह शोधन, बिना देखे जन्म समय का हाल कहना आदि गूढ़ रहस्यों को सरल भाषा में समझाया गया है। विद्वानों के तथा सरल साधारण जनता के ज्योतिष सम्बन्धी ज्ञान का अपूर्व संग्रह है। मूल्य ८) रु० मय पोस्टेज ;

विशाल हस्त सामुद्रिक शास्त्र

अपने हाथ की रेखाओं पर विश्वास करो। हमारी पुस्तक की मदद से आपका हाथ इन बातों का उत्तर देगा। १—आपकी आयु लगभग कितनी होगी ? २—आप रोगों से कब मुक्त होंगे ? ३—आपकी मृत्यु कब और कैसे होगी ? ४-आपका जीवन सुखमय या दुःखमय होगा ? ५-आपके जीवन में क्या कोई भयंकर घटना होगी ? ६—आपके कितने लड़के या लड़कियां होंगी ? ७—आपकी मृत्यु पत्नी से पहले या पीछे होगी ? ८—आप निर्धन या धनवान बनेंगे ? इत्यादि जीवन की रहस्यमयी बातों पर हस्त सामुद्रिक द्वारा प्रकाश डाला गया है। कपड़े की सजिल्द पुस्तक सचित्र कीमत १५) रु० डाक व्यय सहित। छोटी पुस्तक १०) रु०।

वी. पी. द्वारा मगांने का पता:-

जनता प्रकाशन [पंजीकृत] खारी बावली दिल्ली-११०००६

अवश्य पढ़ने योग्य पुस्तकें

बड़ा घर का वैद्य

हर रोग का इलाज स्वयं घर पर ही करना सस्ते से सस्ते दामों में स्वयं दवाइयाँ तैयार करना-प्रत्येक घर के लिये बहुत ही उपयोगी पुस्तक! मूल्य ६) मय डाक खर्च

जादूगरी शिक्षा

जादू के खेलों पर एक लाजवाब व अनमोल पुस्तक सैंकड़ों आश्चर्यजनक हैरत में डालने वाले कमाल - पूरा मैजिक प्रोफैसर बनाने वाली पुस्तक! मूल्य ७) मय डाक खर्च

पाक विज्ञान

हर प्रकार के स्वादिष्ट से स्वादिष्ट पकवान व मिठाइयाँ बनाने की विधियाँ दी गई हैं-हर गृहस्थी के लिये एक लाभदायक पुस्तक! मूल्य ८) मय डाक खर्च

चित्रकारी शिक्षा

हर प्रकार के सुन्दर २ चित्रों को सरल ढंग में बनाना, साइन बोर्ड लिखना, पैंसिल व ब्रुश से सुन्दर २ सीनरियाँ बनाना आदि चित्रों सहित समझाया गया है! मूल्य ८) मय डाक खर्च

फिल्मी अप्सरायें

भारत के प्रसिद्द फिल्मी एक्टरों व एक्ट्रसों के पूरे हालात उनका जन्म तालीम, खानदान, जीवन परिचय व उन्होंने कौन कौन सी फिल्मों में काम किया है, घर के पतों सहित पढ़िये। मूल्य ८)

व्यापार दस्तकारी

इस पुस्तक में तेल, साबुन उबटन-पोमेड, शर्बत, खिज़ाब, रोशनाइयाँ, हर प्रकार की पालिश तथा अनेकों पेटैंट दवाइयाँ बनाने की तरकीबें दी गई हैं। मूल्य ६) मय डाक खर्च

वी. पी. द्वारा मंगाने का पता

जनता प्रकाशन (पंजीकृत) खारीबावली, देहली-६